मुनाजातों, ना'तों और मन्क़बतों का मुअत्तर मुअत्तर म-दनी गुलदस्ता

Vasaaile Bakhshish (Hindi)

वसाइले बख़्शिश
(मुरम्मम)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब "**वसाइले बख़्शिश**"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **उर्दू** ज़बान में तह़रीर कर्दा कलामों का मजमूआ़ है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت،اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या sms) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی/ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ज़रूरी वज़ाहत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "वसाइले बख़्शिश" का एक एक मिस्रअ़ फ़न्नी तफ़्तीश से गुज़ारने की तरकीब बनी और येह काम माहे मीलाद रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1435 हि. (जनवरी 2014 ई.) में मुकम्मल हुवा, बा'ज़ अश्आ़र या मिस्रए़ मु–तबादिल लिखे या लिखवाए और कुछ ह़ज़्फ़ भी करने पड़े। नज़्रे सानी शुदा नुस्ख़े की पहली बार इशाअ़त जुमादल उख़्रा 1435 हि. में की गई। अगर्चे तफ़्तीश में निहायत दिक़्क़ते नज़र से काम लिया गया है ताहम येह कलाम ख़त़ाकार बन्दे का है और इस में अग़्लात़ का इम्कान हनूज़ मौजूद। अगर आ़शिक़ाने रसूल किसी शे'र में कोई शर–ई या फ़न्नी ग़–लत़ी पाएं तो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मअ़ नाम, पता और फ़ोन नम्बर मुदल्लल त़ौर पर मुझे मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत के ह़क़दार बनें।

आ़शिक़ाने रसूल की ख़िदमत में म–दनी इल्तिजा है कि वोह "वसाइले बख़्शिश" (मुरम्मम) ही को मे'यार बनाएं और मेरे क़ब्ल अज़ीं मत़्बूआ़ कलाम में से सिर्फ़ वोही शे'र पढ़ें जो इस नुस्ख़े के मुत़ाबिक़ हो।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

18 रबीउ़ल आख़िर 1435 सि.हि.
19-02-2014

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

कलाम तलाश करने का त़रीक़ा

"वसाइले बख़्शिश" को ह़म्दो मुनाजात, ना'त व इस्तिग़ासात, मनाक़िब, सलाम और मु–तफ़र्रिक़ कलाम के उ़न्वानात के तह़्त हुरूफ़े तहज्जी (ا-ب-پ वग़ैरा) के मुत़ाबिक़ मुरत्तब किया गया है लिहाज़ा इस में किसी भी कलाम को उस के पहले शे'र (मत़्लअ़) के पहले मिस्रए़ के आख़िरी ह़र्फ़ को देखते हुए तलाश किया जा सकता है।

ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़

अपने कमाल (म–सलन इ़ल्म या अ़मल या माल) को अपनी त़रफ़ निस्बत करना और इस बात का ख़ौफ़ न होना कि येह छिन जाएगा। गोया ख़ुद पसन्द शख़्स ने'मत को मुन्इ़मे ह़क़ीक़ी (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ मन्सूब करना ही भूल जाता है। (या'नी मिली हुई ने'मत म–सलन सिह़्ह़त या हुस्नो जमाल या दौलत या ज़िहानत या ख़ुश इल्ह़ानी या मन्सब वग़ैरा को अपना कारनामा समझ बैठना और येह भूल जाना कि सब रब्बुल इ़ज़्ज़त ही की इ़नायत है)

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ص۴۰۴)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

तिलावत की निय्यतें : क़ारी साहिब इस त़रह़ निय्यत करें और करवाएं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ. या'नी "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी निय्यत न हो तो अ़मल का सवाब नहीं मिलता इस लिये मैं निय्यत करता हूं कि हुसूले सवाब के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते हुए तिलावत करूंगा। आप सभी तिलावते कुरआने करीम की ता'ज़ीम की निय्यत से जब तक हो सके निगाहें नीची किये दो[2] ज़ानू बैठिये और मज़ीद येह भी निय्यत कीजिये कि रिज़ाए इलाही के लिये हुक्मे कुरआनी पर अ़मल करते हुए कान लगा कर ख़ूब तवज्जोह के साथ और अपने इख़्तियार में हुवा और दिल में इख़्लास पाया तो हुक्मे ह़दीस पर अ़मल करते हुए अश्कबारी करते हुए तिलावत सुनूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुनाजात की निय्यतें : मुनाजात–गो इस त़रह़ निय्यत करें और करवाएं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ.

या'नी "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी निय्यत न हो तो अ़मल का सवाब नहीं मिलता इस लिये मैं निय्यत करता हूं, **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते हुए, हुसूले सवाब के लिये क़ाज़िय्युल ह़ाजात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात या'नी दुआ़ करूंगा, आप भी निय्यत कीजिये कि मैं रिज़ाए इलाही के लिये आदाबे दुआ़ बजा लाते हुए जहां तक हो सका नीची निगाहें किये दो[2] ज़ानू बैठ कर और अगर दिल में खु़लूस पाया तो रोते हुए या इख़्लास के साथ रोने वालों से मुशा–बहत की निय्यत से रोने जैसी सूरत बना कर यक्सूई के साथ दुआ़ में शरीक रहूंगा और हर दुआ़इया शे'र के ख़त्म पर **आमीन** कहूंगा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ना 'त शरीफ़ की निय्यतें : ना'त ख़्वां इस त़रह़ निय्यत करें और करवाएं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ.

या'नी "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छी निय्यत न हो तो अ़मल का सवाब नहीं मिलता इस लिये मैं निय्यत करता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये ना'त शरीफ़ पढूंगा, आप भी निय्यत कीजिये कि हुसूले सवाब की ख़ात़िर जितना हो सका ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा के लिये निगाहें नीची किये दो[2] ज़ानू बैठ कर, गुम्बदे ख़ज़रा का तसव्वुर बांध कर निहायत तवज्जोह के साथ अपने बस में हुवा और दिल में ख़ुलूस पाया तो इ़श्क़े रसूल में डूब कर रोते हुए या इख़्लास के साथ रोने वालों से मुशा–बहत की निय्यत से रोने जैसी सूरत बनाए ना'त शरीफ़ सुनूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
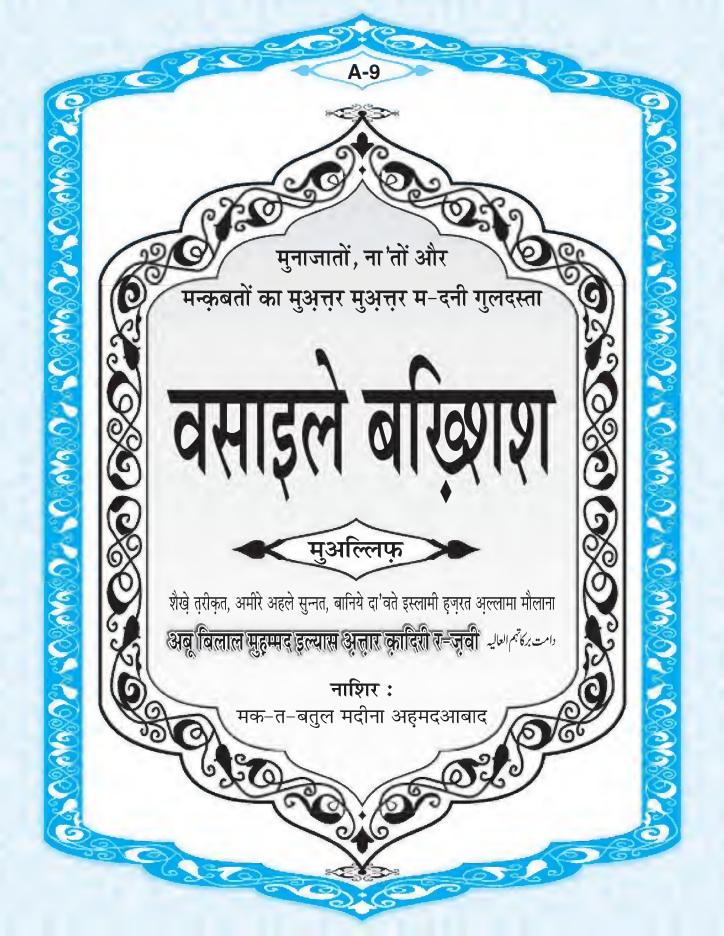
A-9

मुनाजातों, ना'तों और

मन्क़बतों का मुअ़त्तर मुअ़त्तर म-दनी गुलदस्ता

वसाइले बख़्शिश

मुअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नाम किताब : **वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम)**

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल**
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

साले इशाअ़त : **र-जबुल मुरज्जब 1436 सि.हि.**

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद**

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया महेल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली
फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/O) जामिअ़तुल मदीना,
कमाल शाह बाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा नागपुर
फ़ोन : 0712-2737290

अजमेर शरीफ : फलाहे दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार,
स्टेशन रोड, दरगाह,

Ph : 09327168200

Email : maktabaahmedabad@gmail.com

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

इन्तिसाब

ह़स्सानुल हिन्द इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن

और

हर उस ना'त गो और ना'त ख़्वां इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के नाम जो हुब्बे जाहो माल से बे नियाज़ हो कर मह़ूज़ ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की रिज़ा के लिये सना ख़्वानी करे ।

सनाए सरकार है वज़ीफ़ा क़बूले सरकार है तमन्ना
न शाइरी की हवस न परवा रवी थी क्या कैसे क़ाफ़िये थे

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़, मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

29 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 हि.

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

कुछ वसाइले बख़्शिश के बारे में....

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, पैकरे फ़ुनूनो ह़िक्मत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़स्सानुल हिन्द, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن जिन्हें 55 से ज़ाइद उ़लूम व फ़ुनून पर उ़बूर ह़ासिल था, बहुत बड़े मुफ़्ती, मुह़द्दिस, मुफ़स्सिर और फ़क़ीह होने के साथ साथ ना'तिया शाइरी में भी कमाल द-रजा महारत रखते थे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه फ़रमाते हैं : "ह़क़ीक़तन **ना'त शरीफ़** लिखना निहायत मुश्किल है जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में

तलवार की धार पर चलना है, अगर बढ़ता है तो उलूहिय्यत में पहुंचा जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस (या'नी शान में कमी या गुस्ताख़ी) होती है, अलबत्ता "**ह़म्द**" आसान है कि इस में रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ "**ह़म्द**" में एक जानिब अस्लन ह़द नहीं और "**ना'त शरीफ़**" में दोनों जानिब सख़्त ह़द बन्दी है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 227, मक-त-बतुल मदीना) اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ब फ़ैज़े रज़ा सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के क़लम से भी गाहे ब गाहे ह़म्दिया, ना'तिया और मन्क़बतिया अश्आ़र का सुदूर होता रहा है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'लीमात की ब-रकात हैं कि मैं ने अपना सारा **दीवान** उ़-लमाए किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की ख़िदमत में पेश कर के शर-ई तफ़्तीश करवाने की सआ़दत ह़ासिल कर ली है।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस "दीवान" की ख़ुसूसिय्यत बल्कि इन्फ़िरादिय्यत में से येह भी है कि पढ़ने वालों को सहूलत फ़राहम कर के सवाब कमाने की निय्यत से अल्फ़ाज़ पर जा बजा ए'राब

लगाए गए हैं नीज़ किताब के इब्तिदाई सफ़हात पर मौजूद "हल्ले लुग़ात" में मुश्किल अल्फ़ाज़ के वोह मआ़नी पेश करने की सअ़्य की गई है जो कि अश्आ़र में मुराद लिये गए हैं इलावा अज़ीं बा'ज़ कलामों का पस मन्ज़र भी और बा'ज़ जगह वज़ाह़ती ह़वाशी भी शामिल किये गए हैं। एक अ़जीब बात का बारहा मुशा–हदा हुवा है कि ना'तिया अश्आ़र बिल ख़ुसूस मक़्तअ़ (या'नी आख़िरी शे'र जिस में शाइ़र अपना तख़ल्लुस शामिल करता है उसे) पढ़ते वक़्त बा'ज़ ना'त ख़्वां अपनी मरज़ी से तरमीम व इज़ाफ़ा कर लेते हैं अगर शाइ़र कभी अपने कलाम में किसी को तसर्रुफ़ करता हुवा पाता है तो इस से अक्सर उस की दिल आज़ारी होती है लिहाज़ा ऐसों की ख़िदमत में म–दनी इल्तिजा है कि अगर तरमीम करना ज़रूरी ही हो तो पहले शाइ़र का अपना लिखा हुवा शे'र पढ़िये फिर तरमीम कर के पढ़ लीजिये जब कि वोह तरमीम शर–ई और फ़न्नी दोनों त़रह़ से दुरुस्त भी हो, अगर किसी के कलाम में यक़ीनी त़ौर पर शर–ई ग़–लत़ी हो तो दुरुस्त कर के ही पढ़िये कि ग़ैर शर–ई अल्फ़ाज़ वाला कलाम बिला मस्लह़ते

शर-ई पढ़ना सुनना **ना जाइज़** है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ना'तिया दीवान "ह़दाइके़ बख़्शिश" की मुना-सबत से हुसूले ब-र-कत की ख़ा़ति़र अपने ना'तिया दीवान का नाम "**वसाइले बख़्शिश**" रखा है।

दुआ़ए अ़त्ता़र : या रब्बे मुस्त़फ़ा ! "वसाइले बख़्शिश" को क़बूलिय्यत की सआ़दत इनायत करते हुए इस में से कलाम पढ़ने सुनने वाले और वाली नीज़ मुझ गुनहगारों के सरदार के वासिते़ भी इश्के़ रसूल का ख़ज़ाना पाने और बे ह़िसाब बख़्शे जाने का वसीला बना। या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

इम्तिहां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह
बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

29 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 हि.

19-02-2014

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ना'त व इस्तिग़ासात

मनाक़िब

सलाम

मु-तफ़र्रिक़ कलाम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ना'त ख़्वां और नज़राना

ना'ते मुस्त़फ़ा पढ़ना सुनना यक़ीनन निहायत उ़म्दा इ़बादत है मगर क़बूलिय्यत की कुन्जी इख़्लास है, ना'त शरीफ़ पढ़ने पर उजरत लेना देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बराहे करम ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के मक्तूब के सिर्फ़ (34 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ल्ब में इख़्लास का चश्मा मोजज़न होगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस

के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे।

(الترغیب و الترھیب ج۲ص ۳۲۸ حدیث۲۳ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी की जानिब से बुलबुले मदीना, **मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे......** سَلَّمَهُ الْبَارِی की ख़िदमत में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुअ़म्बरीं जबीं को चूमता हुवा, झूमता हुवा मुश्कबार व पुर बहार सलाम اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

21 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1425 को निगराने शूरा ने बाबुल मदीना कराची के ना'त ख़्वां इस्लामी भाइयों से "म-दनी मश्वरा" फ़रमाया। उन्हों ने जब ह़िर्सो त़मअ़ की मज़म्मत बयान कर के इस बात पर उभारा कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में हर ना'त ख़्वां अपनी बारी आने पर ए'लान कर दे : "मुझे किसी क़िस्म का

नज़्राना न दिया जाए मैं उस को क़बूल नहीं करूंगा।" इस पर आप ने हाथ उठा कर इस अ़ज़्म का इज़्हार फ़रमाया कि मैं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ए'लान कर दिया करूंगा। **येह ख़बरे फ़रह़त असर सुन कर मेरा दिल ख़ुशी से बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना बन गया। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को इस अ़ज़ीम म-दनी निय्यत पर इस्तिक़ामत बख़्शे। मेरे दिल से येह दुआ़एं निकल रही हैं कि मुझे और आप को और जिस जिस ने येह म-दनी निय्यत की है उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में ख़ुश रखे, ईमान की ह़िफ़ाज़त और ह़त्मी मग़्फ़िरत से नवाज़े, मदीने के सदा बहार फूलों की त़रह़ हमेशा मुस्कुराता रखे, हुब्बे जाह व माल की अन्धेरियों से निकल कर, इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रोशनियों में डूब कर, ख़ूब ना'तें पढ़ने सुनने की सआ़दत बख़्शे। काश ! ख़ुद भी रोते रहें और सामिईन को भी रुलाते और तड़पाते रहें। रियाकारी से ह़िफ़ाज़त हो और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत मिले।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ना'त पढ़ता रहूं, ना'त सुनता रहूं, आंख पुरनम रहे दिल मचलता रहे
उन की यादों में हर दम मैं खोया रहूं, काश ! सीना महब्बत में जलता रहे

ना'त शरीफ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल या दौराने ना'त लोग जब नज़राना ले कर आना शुरूअ़ हों उस वक़्त मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो इस त़रह़ ए'लान फ़रमा दीजिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के ना'त ख़्वां के लिये "म-दनी मर्कज़" की त़रफ़ से हिदायत है कि वोह किसी क़िस्म का नज़राना, लिफ़ाफ़ा या तोह़फ़ा ख़्वाह वोह पहले या आख़िर में या दौराने ना'त मिले क़बूल न करे । हम अल्लाह तआ़ला के आ़जिज़ व ना तुवां बन्दे हैं । बराहे करम ! नज़राना दे कर ना'त ख़्वां को इम्तिह़ान में मत डालिये, रक़म आती देख कर अपने दिल को क़ाबू में रखना मुश्किल होता है । ना'त ख़्वां को इख़्लास के साथ सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा

की त़लब में ना 'त शरीफ़ पढ़ने दें लिहाज़ा नोटों की बरसात में नहीं बल्कि बारिशे अन्वारो तजल्लियात में नहाते हुए ना 'त शरीफ़ पढ़ने दें और आप भी अदब के साथ बैठ कर ना 'ते पाक सुनें......

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये
शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

(ना'त ख़्वान येह ए'लान अपनी डायरी में मह़फ़ूज़ फ़रमा लें तो सहूलत रहेगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

प्यारे ना 'त ख़्वां ! ना'त ख़्वानी में मिलने वाला नज़राना जाइज़ भी होता है और ना जाइज़ भी। आयिन्दा सुत़ूर बग़ौर पढ़ लीजिये, तीन बार पढ़ने के बा वुजूद समझ में न आए तो उ़-लमाए अहले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये।

प्रोफ़ेश्नल ना 'त ख़्वां

मेरे आक़ाए ने 'मत, आ 'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, इमामे इश्क़ो

मह़ब्बत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में सुवाल हुवा : ज़ैद ने अपने पांच रुपै फ़ीस मौलूद शरीफ़ की पढ़वाई के मुक़र्रर कर रखे हैं, बिग़ैर पांच रुपिया फ़ीस के किसी के यहां जाता नहीं।

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ज़ैद ने जो अपनी मजलिस ख़्वानी ख़ुसूसन राग से पढ़ने की उजरत मुक़र्रर कर रखी है ना जाइज़ व ह़राम है इस का लेना उसे हरगिज़ जाइज़ नहीं, इस का खाना सरा-ह़तन ह़राम खाना है। उस पर वाजिब है कि जिन जिन से फ़ीस ली है याद कर के सब को वापस दे, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को फैरे, पता न चले तो इतना माल फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे और आयिन्दा इस ह़राम ख़ोरी से तौबा करे तो गुनाह से पाक हो। अव्वल तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का

ज़िक्रे पाक खुद उ़म्दा ता़आ़त व अजल्ल इ़बादात से है और ता़अ़त व इ़बादत पर फ़ीस लेनी **ह़राम**[1]...... सानियन बयाने साइल से ज़ाहिर कि वोह अपनी शे'र ख़्वानी व ज़म्ज़मा सन्जी (या'नी राग और तरन्नुम से पढ़ने) की फ़ीस लेता है येह भी मह़ूज़ **ह़राम** । फ़तावा आ़लमगीरी में है : गाना और अश्आ़र पढ़ना ऐसे आ'माल हैं कि इन में किसी पर उजरत लेना जाइज़ नहीं । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 724, 725, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

जो ना'त ख़्वां इस्लामी भाई T.V. या मह़फ़िले ना'त में ना'त शरीफ़ पढ़ने की फ़ीस वुसूल करते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है । मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं कहा, अहले सुन्नत के इमाम, वलिय्ये कामिल और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े सादिक़ का फ़तवा जो कि यक़ीनन हुक्मे शरीअ़त पर मब्नी है, वोह आप तक पहुंचाने की जसारत की है, हुब्बे जाह व माल के बाइ़स तै़श में आ कर, त्योरी चढ़ा कर, बल खा कर

1 : इमाम, मुअज़्ज़िन, मुअ़ल्लिमे दीनियात और वाइ़ज़ वग़ैरा इस से मुस्तस्ना हैं । (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 486)

उलटी सीधी ज़बान चला कर उ़-लमाए अहले सुन्नत की मुख़ा-लफ़त करने से जो ह़राम है, वोह ह़लाल होने से रहा, बल्कि येह तो आख़िरत की तबाही का मज़ीद सामान है।

तै़ न किया हो तो......

हो सकता है कि किसी के ज़ेह्न में येह बात आए कि येह फ़तवा तो उन के लिये है जो पहले से तै़ कर लेते हैं, हम तो तै़ नहीं करते, जो कुछ मिलता है वोह तबर्रुकन ले लेते हैं, इस लिये हमारे लिये जाइज़ है। उन की ख़िदमत में सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का एक और फ़तवा ह़ाज़िर है, समझ में न आए तो तीन बार पढ़ लीजिये :

तिलावते क़ुरआने अ़ज़ीम ब ग़-रज़े ईसाले सवाब व ज़िक्र शरीफ़ **मीलादे पाक** हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर मिन जुम्ला इबादात व ता़अ़त हैं तो इन पर इजारा भी ज़रूर ह़राम व मह़्ज़ूर (या'नी ना जाइज़)। और इजारा जिस त़रह़ सरीह़ अ़क़्दे ज़बान (या'नी वाज़ेह़ क़ौल व क़रार) से होता है, उ़र्फ़न

शर्त़ मा'रूफ़ व मा'हूद (या'नी राइज शुदा अन्दाज़) से भी हो जाता है म–सलन पढ़ने पढ़वाने वालों ने ज़बान से कुछ न कहा मगर जानते हैं कि देना होगा (और) वोह (पढ़ने वाले भी) समझ रहे हैं कि "कुछ" मिलेगा, उन्हों ने इस त़ौर पर पढ़ा, इन्हों ने इस निय्यत से पढ़वाया, इजारा हो गया, और अब **दो वज्ह से ह़राम** हुवा, (1) तो त़ाअ़त (या'नी इबादत) पर इजारा येह ख़ुद ह़राम, (2) दूसरे उजरत अगर उ़र्फ़न मुअ़य्यन नहीं तो उस की जहालत से इजारा फ़ासिद, येह दूसरा ह़राम। (मुलख़्ख़स अज़ : फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 19, स. 486, 487) लेने वाला और देने वाला दोनों गुनहगार होंगे। (ऐज़न, 495)

इस मुबारक फ़तवे से रोज़े रोशन की त़रह़ ज़ाहिर हो गया कि साफ़ लफ़्ज़ों में तै़ न भी हो तब भी जहां UNDERSTOOD हो कि चल कर मह़फ़िल में कुरआने पाक, आयते करीमा, दुरूद शरीफ़ या ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं, कुछ न कुछ मिलेगा रक़म न सही "सूट पीस" वग़ैरा का तोह़फ़ा ही मिल जाएगा और बानिये मह़फ़िल भी जानता है कि पढ़ने वाले को कुछ न कुछ

देना ही है। बस ना जाइज़ व ह़राम होने के लिये इतना काफ़ी है कि येह "उजरत" ही है और फ़रीक़ैन (या'नी देने और लेने वाले) दोनों गुनहगार।

क़ाफ़िलए मदीना और ना'त ख़्वां

सफ़र और खाने पीने के अख़राजात पेश कर के ना'तें सुनने की ग़रज़ से ना'त ख़्वां को साथ ले जाना जाइज़ नहीं क्यूं कि येह भी उजरत ही की सूरत है। लुत़्फ़ तो इसी में है कि ना'त ख़्वां अपने अख़राजात खुद बरदाश्त करे। ब सूरते दीगर क़ाफ़िले वाले मख़्सूस मुद्दत के लिये मत़्लूबा ना'त ख़्वां को अपने यहां तन-ख़्वाह पर मुलाज़िम रख लें। म-सलन **ज़ी क़ा'दतुल ह़राम, ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम** और **मुह़र्रमुल ह़राम** इन तीन महीनों का इस त़रह़ इजारा (AGREEMENT) करें : "फ़ुलां तारीख़ से ले कर फ़ुलां तारीख़ तक रोज़ाना इतने बजे से ले कर इतने बजे तक (म-सलन दोपहर तीन से ले कर रात नव बजे तक) इतने घन्टे (म-सलन छ घन्टे) का आप से हम ने हर त़रह़ की ख़िदमत के काम का इजारा किया और येह ख़िदमत आप से मक्के मदीने और मु-तअ़ल्लिक़ा सफ़र में ली जाएगी।" (अगर मुख़्तलिफ़ अय्याम में मुख़्तलिफ़ घन्टों में काम लेना है तो इन दिनों और घन्टों की ता'यीन (Fixing) के साथ बा क़ाइदा बयान किया जाए) अब इस दौरान चाहें तो उस से कोई सा भी जाइज़ काम ले लें या जितना वक़्त चाहें छुट्टी दे दें, ह़ज पर साथ ले चलें और अख़राजात भी आप ही बरदाश्त करें और ख़ूब ना'तें भी पढ़वाएं। याद रहे ! एक ही वक़्त के अन्दर दो जगह

नोकरी करना या'नी इजारे पर इजारा करना **ना जाइज़** है। अलबत्ता अगर वोह पहले ही से कहीं नोकरी पर लगा हुवा है तो अब सेठ की इजाज़त से दूसरी जगह काम कर सकता है।

दौराने ना'त नोट चलाना

सामिईन की त़रफ़ से ना'त शरीफ़ पढ़ने के दौरान नोट पेश करना और ना'त ख़्वां का क़बूल करना दुरुस्त है, अगर फ़रीक़ैन में तै़ कर लिया गया कि नोट लिफ़ाफ़े में डाल कर देने के बजाए दौराने ना'त पेश किये जाएं या तै़ तो न किया मगर दला-लतन साबित (या'नी UNDERSTOOD) हो कि मह़फ़िल में बुलाने वाला नोट लुटाएगा तो अब उजरत ही कहलाएगी और **ना जाइज़** । बानिये मह़फ़िल जानता है कि नोट नहीं चलाएंगे तो आयिन्दा ना'त ख़्वां नहीं आएंगे और ना'त ख़्वां भी इसी लिये दिल चस्पी से आते हैं कि यहां नोट चलते हैं तो कई सूरतों में येह लैन दैन भी उजरत बन जाएगा और सवाब के बजाए गुनाह व ह़राम का वबाल सर आएगा लिहाज़ा ना'त ख़्वां ग़ौर कर ले कि रिज़ाए

इलाही मक़्सूद है या महूज़ रुपै कमाना ? काश ! ऐ काश ! सद करोड़ काश ! इख़्लास का दौर दौरा हो जाए, और ना'त ख़्वानी जैसी अ़ज़ीम सआ़दत को चन्द ह़क़ीर सिक्कों की ख़ा़ति़र बरबाद करने वाली ह़िर्स की आफ़त ख़त्म हो जाए।

उन के सिवा किसी की दिल में न आरज़ू हो   दुन्या की हर त़लब से बेगाना बन के जाऊं

नोट लुटाने वालों को दा'वते फ़िक्र

सब के सामने उठ उठ कर नोट पेश करने वाला अपने ज़मीर पर लाज़िमी ग़ौर कर ले, कि अगर उस से कहा जाए : सब के सामने बार बार देने के बजाए ना'त ख़्वां को चुपके से इकट्ठी रक़म दे दीजिये कि ह़दीसे पाक में है : "**पोशीदा अ़मल, ज़ाहिरी अ़मल से सत्तर गुना अफ़्ज़ल है।**" (كَنْزُ الْعُمّال ج١٦ ص٢٨١ رقم ٤٦٢٦٤ دار الكتب العلمية بيروت)

तो वोह चुपचाप देने के लिये राज़ी होता है या नहीं ? अगर नहीं तो क्यूं ? क्या इस लिये कि "वाह वाह" नहीं होगी ! अगर वाह वाह की ख़्वाहिश है तो **रियाकारी** है और रियाकारी की तबाह कारी का आ़लम येह है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **जुब्बुल**

ह़ज़न से पनाह मांगो। अ़र्ज़ किया गया : वोह क्या है ? फ़रमाया : जहन्नम में एक वादी है कि जहन्नम भी हर रोज़ चार सो मर्तबा उस से पनाह मांगता है उस में क़ारी दाख़िल होंगे जो अपने आ'माल में रिया करते हैं। (سُنَنِ اِبن ماجه ج١ص ١٦٦ حديث ٢٥٦ دار المعرفة بيروت) बहर ह़ाल देने में रियाकारी पैदा होती हो तो रक़म ज़ाएअ़ न करे और आख़िरत भी दाव पर न लगाए, नीज़ अगर नोट चलाने से "मह़फ़िल गर्म" होती हो या'नी ना'त ख़्वां को जोश आता हो म-सलन नोट आने के सबब शे'र की बार बार तक्रार, उस के साथ इज़ाफ़ए अश्आ़र, आवाज़ भी पहले से ज़ोरदार पाएं तो 12 बार सोच लें कि कहीं इख़्लास रुख़्सत न हो गया हो, पैसों के शौक़ में पढ़ने वाले को देना सवाब के बजाए उस की ह़िर्स की तस्कीन का ज़रीआ़ बन सकता है इस लिये देने वालों को भी इस में एह़तियात़ करनी चाहिये और ना'त ख़्वां के इख़्लास का ख़ून करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। हां येह याद रहे कि देखने सुनने वाले को किसी मुअ़य्यन ना'त ख़्वां पर बद गुमानी की इजाज़त नहीं।

ना'त ख़्वानी और दुन्यवी कशिश

जहां ख़ूब नोट निछावर होते हों वहां ना'त ख़्वां का एहतिमाम के साथ जाना, इख़्तिताम तक रुकना मगर ग़रीबों के यहां जाने से कतराना, ह़ीले बहाने बनाना, या गए भी तो दुन्यवी कशिश न होने के सबब जल्द लौट जाना सख़्त मह़रूमी है और ज़ाहिर है कि इख़्लास न रहा। अगर पैसे, खाना या अच्छी शीरीनी मिलने की वज्ह से मालदार के यहां जाता है तो सवाब से मह़रूम है और येही खाना और शीरीनी उस का सवाब है। यूंही ग़रीबों से कतराना और मालदारों के सामने बिछे बिछे जाना भी दीन की तबाही का सबब है मन्क़ूल है : "जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की उस के ग़ना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा।" (كشف الخفاء ج٢ ص ٢١٥ دار الكتب العلمية بيروت) अ़-दमे शिर्कत (या'नी शरीक न होने) के लिये झूटे ह़ीले बहाने बनाना म-सलन थकन या मरज़ वग़ैरा न होने के बा वुजूद, मैं थका हुवा हूं, त़बीअ़त ठीक नहीं, गला ख़राब हो गया है वग़ैरा ज़बान या इशारे से कहना मम्नूअ़ व ना जाइज़ और ह़राम है।

ना जाइज़ नज़राना दीनी काम में सर्फ़ करना कैसा ?

अगर कोई ना'त ख़्वां सरा-ह़तन या दला-लतन मिलने वाली उजरत या रक़म का लिफ़ाफ़ा ले कर मस्जिद, मद्रसे या किसी दीनी काम में सर्फ़ कर दे तब भी उजरत लेने का गुनाह दूर न होगा। वाजिब है कि ऐसा लिफ़ाफ़ा या तोह़फ़ा वग़ैरा क़बूल ही न करे। अगर ज़िन्दगी में कभी क़बूल कर के ख़ुद इस्ति'माल किया या किसी नेक काम म-सलन मद्रसे वग़ैरा में दे दिया है तो ज़रूरी है कि तौबा करे और जिस जिस से जो लिया है उस को वापस लौटाए, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे वोह भी न रहे हों या याद नहीं तो फ़क़ीर पर तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे। हां चाहे तो पेश करने वाले को सिर्फ़ मश्वरा दे दे, कि आप अगर चाहें तो येह रक़म ख़ुद ही फ़ुलां नेक काम में ख़र्च कर दीजिये।

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चादर अ़ता फ़रमाई

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी

ना'त शरीफ़ सुन कर सय्यिदुना इमाम श-रफ़ुद्दीन बूसैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی को ख़्वाब में ''बुर्दे यमानी'' या'नी ''य-मनी चादर'' इनायत फ़रमाई और बेदार होने पर वोह चादर मुबारक उन के पास मौजूद थी। इसी वज्ह से इस ना'त शरीफ़ का नाम **क़सीदए बुर्दा** शरीफ़ मशहूर हुवा। अगर इस वाक़िए को दलील बना कर **कोई कहे कि ना'त ख़्वां को नज़राना देना सुन्नत और क़बूल करना तबर्रुक है तो इस का जवाब येह है** कि बेशक सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ता फ़रमाना सर आंखों पर। यक़ीनन सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़्आ़ले मुबा-रका ऐन शरीअ़त हैं। मगर याद रहे! सरकारे आ़लम मदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **बुर्दे यमानी** अ़ता करने का तै़ नहीं फ़रमाया था न ही **مَعَاذَاللّٰه** इमाम बूसैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने शर्त़ रखी थी कि चादर मिले तो पढ़ूंगा बल्कि उन के तो वह्मो गुमान में भी नहीं था कि **बुर्दे यमानी** इनायत होगी। आज भी इस की तो इजाज़त ही है

कि न उजरत तै़ हो और न ही दला–लतन साबित (या'नी UNDERSTOOD) हो और ना'त ख़्वां के वह्मो गुमान में भी न हो और अगर कोई करोड़ों रुपै दे दे तो येह लेना देना यक़ीनन जाइज़ है और जिस ख़ुश नसीब को सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ अ़ता फ़रमा दें, ख़ुदा की क़सम ! उस की सआ़दतों की मे'राज है । और रहा सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगना, तो इस में भी कोई मुज़ा–यक़ा नहीं । और अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगने में ना'त ख़्वां व ग़ैर ना'त ख़्वां की कोई क़ैद भी नहीं, हम तो उन्हीं के टुकड़ों पे पल रहे हैं । सरकारे वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इनायत निशान है : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّ اللّٰهُ يُعْطِى या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ता करता है और मैं तक़्सीम करता हूं । (صَحِيح بُخاری ج ۱ ص ۴۲ حديث ۷۱ دارالكتب العلمية بيروت)

रब है मुअ़्ती येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं पिलाते येह हैं

ना'त ख़्वां और खाना

क़ारी व ना'त ख़्वां को खाना पेश करने के सिल्सिले में **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इर्शाद फ़रमाया : पढ़ने के इवज़ खाना खिलाता है तो येह खाना न खिलाना चाहिये, न खाना चाहिये और अगर खाएगा तो येही खाना इस का सवाब हो गया और (या'नी मज़ीद) सवाब क्या चाहता है बल्कि जाहिलों में जो येह दस्तूर है कि पढ़ने वालों को आ़म हिस्सों से दूना (या'नी डबल) देते हैं और बा'ज़ अह़मक़ पढ़ने वाले अगर उन को औरों से दूना न दिया जाए तो इस पर झगड़ते हैं। येह ज़ियादा लेना देना भी मन्अ़ है और येही उस का सवाब हो गया قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی (या'नी अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है) :

لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ٝ (پ۱ البقرة ٤١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 663)

सब के लिये खाना

इसी सफ़हे पर एक दूसरे फ़तवे में इर्शाद फ़रमाया : जब किसी के यहां शादी में आ़म दा'वत है जैसे सब को खिलाया जाएगा, पढ़ने वालों को भी खिलाया जाएगा उस में कोई ज़ियादत व तख़्सीस न होगी (या'नी दूसरों के मुक़ाबले में न ज़ियादा मिलेगा न ही कोई स्पेश्यल डिश होगी) तो येह खाना पढ़ने का मुआ़-वज़ा नहीं, खाना भी जाइज़ और खिलाना भी जाइज़। (ऐज़न)

आ'ला ह़ज़रत के फ़तवे का ख़ुलासा

क़ारी और ना'त ख़्वां की दा'वत से मु-तअ़ल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के फ़तावा से जो उमूर वाज़ेह़ हुए वोह येह हैं : ﴾1﴿ खाना खिलाने वाले के लिये जाइज़ नहीं कि वोह इन नेक कामों की उजरत के तौ़र पर मज़्कूरा अफ़राद को खाना खिलाए ﴾2﴿ क़ारी और ना'त ख़्वां के लिये ना जाइज़ है कि वोह बतौ़रे उजरत दा'वत खाएं ﴾3﴿ उजरत की सूरतें पीछे

बयान कर दी गई लिहाज़ा "उजरत के खाने" को नफ़्स की ह़िर्स की वज्ह से "नियाज़" कह कर मन को मना लेना इस खाने को ह़लाल नहीं कर देगा लिहाज़ा मज़्कूरा अफ़राद में से कोई क़िराअत या ना'त शरीफ़ पढ़ने के बा'द "सरा-ह़तन या दला-लतन तै़ शुदा ख़ुसूसी दा'वत" क़बूल करते हुए खाएगा तो सवाबे उख़्रवी से मह़रूम रहेगा बल्कि येही खाना चाय बिस्किट वग़ैरा इस का अज्र हो जाएगा ﴾4﴿ अगर आ़म दा'वत हो (या'नी वोह ना'त ख़्वां ग़ैर ह़ाज़िर होता जब भी येह दा'वत होती) तो अब ज़िम्नन इन मज़्कूरा अफ़राद को खिलाने और इन अफ़राद के खाने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं ﴾5﴿ अगर दा'वत तो आ़म हो मगर क़ारी या ना'त ख़्वां के लिये ख़ुसूसी खाने का एहतिमाम हो म-सलन लोगों के लिये सिर्फ़ बिरयानी और इन के लिये सलाद, राइते और चाय का भी एहतिमाम हो या दीगर लोगों को एक एक ह़िस्सा और इन को ज़ियादा दिया जाए तो वोह ख़ुसूसिय्यत व ज़ियादत (या'नी मख़्सूस ग़िज़ा और इज़ाफ़ा) उजरत होने के बाइस फ़रीक़ैन के लिये **ना जाइज़ व ह़राम** और

जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लेकिन येह याद रहे कि इस में भी वोही शर्त़ है कि पहले से सरा-ह़तन या दला-लतन तै़ हो तब ह़राम है वरना अगर तै़ न था और इस के बिग़ैर ही एहतिमाम हुवा तो फिर जाइज़ है।

क्या हर ह़ाल में दा 'वत क़बूल करना सुन्नत है ?

अगर ना'त ख़्वां और क़ारी साहि़बान येह कहें कि हम ने न तो इस खु़सूसी दा'वत के लिये कहा था और न ही उजरत के तौ़र पर खाते हैं बल्कि दा'वत क़बूल करना सुन्नत है इस लिये तबर्रुक समझ कर नियाज़ खा लेते हैं, ऐसा कहने वालों को ग़ौर करना चाहिये कि अगर किसी इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त के मौक़अ़ पर नियाज़ के नाम पर[1] "खु़सूसी दा'वत" न की जाए तो क्या अपनी दिली कैफ़िय्यात में तब्दीली नहीं पाते ? क्या उन्हें इस बात का एह़सास नहीं होता कि कैसे अ़जीब (बल्कि مَعَاذَاللہ) कन्जूस लोग हैं कि पानी तक का नहीं पूछा ? क्या आयिन्दा

---

1 : अहलुल्लाह के ईसाले सवाब के लिये नियाज़ करना बड़ी नेकी है, मगर उजरत के हुक्म में आने वाली खु़सूसी दा'वत को नियाज़ का नाम नहीं दिया जा सकता।

उस जगह पर ना'त ख़्वानी के लिये आने में बे रग़बती नहीं होगी ? अगर मज़्कूरा अफ़राद अपनी दिली कैफ़िय्यात तब्दील नहीं पाते और आने वाले वसाविस को नफ़्सो शैत़ान की शरारत क़रार देते हुए ज़ियाफ़त न करने वाले की किसी के सामने न शिकायत करते हैं न ही आयिन्दा ऐसी जगह जाने से कतराते हैं, नीज़ दीगर ग़रीब इस्लामी भाइयों की दा'वत क़बूल करने में भी पसो पेश से काम नहीं लेते तो उन पर आफ़रीन है, ऐसे ना'त ख़्वां क़ाबिले सिताइश हैं मगर दिलों की ह़ालत ऐसी होती है...... या नहीं ? येह क़ारी व ना'त ख़्वां ह़ज़रात ख़ूब जानते हैं, अपने दिल की गहराई में झांक कर इस का फ़ैसला ख़ुद ही कर लें।

शायद कि उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात

वस्वसों में मत आइये

मोह़तरम ना'त ख़्वां ! मुम्किन है शैत़ान आप को त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाले, बहकाए और येह बावर करवाने की कोशिश करे कि तू तो मुख़्लिस है, तेरा कोई

कुसूर नहीं, लोग तुझे मजबूर करते हैं, और येह भी बेचारे महब्बत की वज्ह से बखुशी ऐसा करते हैं, किसी का दिल नहीं तोड़ना चाहिये, तू सब कुछ क़बूल कर लिया कर और यूं भी येह तेरे लिये तबर्रुक है। नीज़ अगर कोई ना'त ख़्वां नाबीना या मा'ज़ूर हो तो उस को वस्वसे के ज़रीए मात करना शैतान के लिये मज़ीद आसान होता है। देखिये ! **नाबीना** हो या बीना (या'नी देखता) हुक्मे शरीअ़त हर एक के लिये वोही है जो मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ के फ़तावा की रोशनी में बयान किया गया। हम सब का इसी में भला है कि **ह़राम** खाने, खिलाने से बचें। नफ़्स की चाल में आ कर शर-ई फ़तावा के मुक़ाबले में अपनी मन्तिक़ बघार कर सादा लौह अ़वाम को तो झांसा दिया जा सकता है मगर **ह़राम** फिर भी ह़राम ही रहेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को ह़राम खाने पहनने से बचाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़राम लुक़्मे की तबाह कारियां

मन्क़ूल है : आदमी के पेट में जब **ह़राम का लुक़्मा** पड़ा, तो ज़मीन व आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा, जब तक कि वोह **लुक़्मा** उस के पेट में रहेगा और अगर इसी ह़ालत में मरेगा तो उस का ठिकाना **जहन्नम** होगा। (مکاشَفَۃُ القُلُوب ص ۱۰)

ना'त ख़्वानी ए'ज़ाज़ है

प्यारे बुलबुले मदीना ! जो ना'त ख़्वानी की सआ़दत के ए'ज़ाज़ को समझने से मह़रूम हो उसे ह़ुब्बे माल व जाह वग़ैरा की आफ़तें, सरमाया दारों, वज़ीरों और अफ़्सरों वग़ैरा के यहां होने वाली मह़फ़िलों में तो (ख़ुदा न ख़्वास्ता नुमाइशी हुई तब भी) ख़ुशदिली से ले जाएंगी मगर ग़रीब इस्लामी भाई जो न ईको साउन्ड की तरकीब बना सके न आव भगत कर सके न ही ग़ुरबत के सबब बेचारा कसीर अफ़राद जम्अ़ कर सके वहां जाने में उस का दिल घबराएगा, जी उक्ताएगा और गला भी "बैठ" जाएगा ! जिन के दिल में वाक़ेई इश्क़ो मह़ब्बत

और ना'त ख़्वानी की ह़क़ीक़ी अ़-ज़मत है ऐसे आ़शिक़ाने रसूल को ग़रीबों के यहां त़ालिबे सवाब हो कर ह़ाज़िरी देने में कौन सी रुकावट आ सकती है ? अमीर हो या ग़रीब जो भी शर-ई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम करेगा उस का और उस में शरीक होने वाले हर मुसल्मान का اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार होगा।

मुस्त़फ़ा की ना'त ख़्वानी से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ दो जहां में अपना बेड़ा पार है

ना'त ख़्वानी ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ है

ना'त ख़्वानी हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और मह़ब्बत की निशानी है और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और मह़ब्बत आ'ला द-रजे की इबादत और ईमान की ह़िफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा जब भी इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में ह़ाज़िरी हो तो बा अदब रहना चाहिये और मक़्सूद रिज़ाए इलाही हो। जहां इख़्तिताम पर लंगर वग़ैरा का एहतिमाम होता हो ऐसी

जगह ताख़ीर से पहुंचना सख़्त मा'यूब और अपने लिये ग़ीबत, तोहमत और बद गुमानी का दरवाज़ा खोलने का सबब है ऐसों के बारे में बसा अवक़ात इस त़रह़ की गुनाहों भरी बातें की जाती हैं, खाने का लालची है, खाने के वक़्त ही पहुंचता है वग़ैरा। हां जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है।

ना'त ख़्वां की ह़िकायत

अब मुख़्लिस ना'त ख़्वां की फ़ज़ीलत और मा'मूली सी बे एह़तियाती की शामत पर मुश्तमिल निहायत ही इब्रत आमोज़ **ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन तरीन "मद्दाह़े रसूल" (या'नी ना'त ख़्वां) के मु-तअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि उन्हें जागते में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कीआमने सामने ज़ियारत होती थी। जब वोह सुब्ह़ के वक़्त रौज़ए अत़्हर ह़ाज़िर हुए तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم , ने उन से अपनी क़ब्रे अन्वर में से कलाम फ़रमाया। येह ना'त ख़्वां अपने इसी मक़ाम पर फ़ाइज़ रहे ह़त्ता कि एक शख़्स ने उन से दर-ख़्वास्त की, कि शहर के ह़ाकिम के पास उस की सिफ़ारिश करें आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ाकिम

के पास पहुंचे और सिफ़ारिश की। उस ह़ाकिम ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपनी मस्नद पर बिठाया। तब से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत का सिलसिला ख़त्म हो गया फिर येह हमेशा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ज़ियारत की तमन्ना पेश करते रहे मगर ज़ियारत न हुई। एक मर्तबा एक शे'र अ़र्ज़ किया तो दूर से ज़ियारत हुई, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ालिमों की मस्नद पर बैठने के साथ मेरी ज़ियारत चाहता है इस का कोई रास्ता नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि फिर हमें उन बुज़ुर्ग (ना'त ख़्वां) के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर न मिली कि उन को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई या नहीं ह़त्ता कि उन का विसाल हो गया।

(میزان الشریعة الکبریٰ ص ٤٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जो लोग ज़ाती मफ़ाद की ख़ातिर अरबाबे इक्तिदार के आगे पीछे फिरते, कभी किसी वज़ीर या सद्र वगै़रा के यहां मौक़अ़ मिले तो उड़ते हुए ह़ाज़िर हो जाते, सद्र तमग़ा पहना दे या हाथ मिला ले तो उस की तस्वीर आवेज़ां करते दूसरों को दिखाते और इस को बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ तसव्वुर करते हैं उन के लिये गुज़श्ता ह़िकायत में बहुत कुछ दर्से इब्रत है

اَلْعَاقِلُ تَكْفِيْهِ الْاِ شَارَةُ या'नी अ़क्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी है।

प्यारे ना'त ख़्वां ! अगर आप रूह़ानिय्यत चाहते हैं, तो सामिईन की कसरत व क़िल्लत को मत देखिये, चाहे हज़ारों का इज्तिमाअ़ हो या फ़क़त़ एक ही फ़र्द, उसी लगन और धुन के साथ आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, के तसव्वुर में डूब कर ना'त शरीफ़ पढ़िये, बल्कि तन्हाई में भी सना ख़्वानी की आ़दत बनाइये । ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के इस शे'र को सिर्फ़ रस्मी तौ़र पर पढ़ने के बजाए इस की ह़क़ीक़त की त़रफ़ भी

मु–तवज्जेह रहिये।

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फिर तो......

जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

अगर कोई बात ग़लत़ पाएं तो मेरी इस्लाह़ फ़रमा दीजिये। दुआ़ए मग़्फ़िरत का भिकारी हूं।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

29 स–फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 सि.हि.

"ग़ीबत कर के नेकियां बरबाद न करें" के पच्चीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वां के बारे में ग़ीबत के अल्फ़ाज़ की 25 मिसालें

❁ मीरासी है ❁ इस को **ना'त** पढ़ने का ढंग नहीं आता ❁ इस की आवाज़ बस ऐसी ही है ❁ इस की

आवाज़ बे सुरी है ❁ फटे हुए ढोल जैसी आवाज़ है ❁ दूसरे **ना 'त ख़्वानों** की तर्ज़ें चुराता है ❁ दूसरों के शे'र चुरा कर खुद शाइर बन बैठा है ❁ **पैसों के लिये ना 'त पढ़ता है** ❁ येह तो **प्रोफ़ेशनल** ना'त ख़्वां है ❁ सिर्फ़ **बड़ी पार्टियों** की महफ़िलों में जाता है ❁ इस में इख़्लास नहीं है ❁ ज़ियादा लोग हों या ❁ ईको साउन्ड हो जभी पढ़ता है ❁ जब आता है माईक नहीं छोड़ता ❁ दूसरों की बारी ही नहीं आने देता ❁ जान बूझ कर **रोने** जैसी आवाज़ निकालता है ❁ आहा ! बड़ा महंगा सूट पहन रखा है ज़रूर ना'त ख़्वानी करवाने वालों ने ले कर दिया होगा ❁ इस की अदाएं देखो ! लगता है गाना गा रहा है ❁ इस की आंखें नींद से भरी पड़ी हैं फिर भी पैसों के लालच में ना'त पढ़ने आ गया है ❁ जिस शे'र पर नोट आने शुरूअ़ हो जाएं बार बार उसी शे'र को पढ़ता रहता है ❁ बस किसी जगह महफ़िल का पता चल जाए, येह वहां पैसों के लालच में बिन बुलाए भी पहुंच जाता है ❁ रात गए तक ना'तें पढ़ता है, फ़ज्र मस्जिद में जमाअ़त से नहीं पढ़ता ❁ अब इस के पास टाइम कहां होगा इस के तो सीज़न के दिन हैं, बड़े नोट

दिखाओ तो आएगा ❁ पिछली बार शायद पैसे कम मिले थे तभी इस बार नहीं आया ❁ अपना केसिट निकलवाने के लिये कम्पनी वालों की बड़ी चापलूसी करता है।

"ग़ीबत से हम को बचा या इलाही" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानी/जल्से या इज्तिमाअ़ में होने वाली ग़ीबत की 19 मिसालें

❁ येह मुबल्लिग़ (या मौलाना या ना'त ख़्वां) कहां खड़ा हो गया अब तो येह माईक नहीं छोड़ेगा ❁ उस की आवाज़ अच्छी है इस लिये क़िराअत सुन कर लोग दाद देते हैं वैसे तज्वीद की काफ़ी ग़-लतियां करता है ❁ उस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ होते हैं ❁ इस को तक़रीर करनी ❁ या ना'त पढ़नी ही कहां आती है ❁ चलो ! चलो ! अब येह लम्बी करेगा ❁ नोट चलते हैं तो इस की आवाज़ खुल जाती है ❁ हमारे शहर में आने के लिये तो इस ने हवाई जहाज़ का रीटर्न टिकट मांगा था ❁ इस ना'त ख़्वां का मिज़ाज तो आस्मान पर रहता है ❁ इस को तो बस एक ही त़र्ज़ आती है ❁ येह तो दूसरे ना'त ख़्वानों की त़र्ज़ें चुराता है ❁ इस ने बयान की तय्यारी नहीं की इधर उधर की बातें कर के वक़्त गुज़ार रहा है

۞ आयतें तो पढ़ता नहीं बस क़िस्से कहानियां सुनाता है ۞ उस मुक़र्रिर की आवाज़ अच्छी है मगर उस की तक़रीर में ख़ास मवाद नहीं होता ۞ ख़िताब बड़ा जोशीला था मगर दलाइल में दम नहीं था ۞ हमारे ख़तीब साहिब अपने बयान में सुन्नत एक नहीं बताते बस लठ ले कर बद मज़्हबों के पीछे पड़े रहते हैं ۞ आज ख़तीब साहिब के बयान में मज़ा नहीं आया ۞ वोह मौलाना साहिब जल्से में देर से आने के आ़दी हैं ۞ फ़ुलां की तक़रीर में बस जोश ही जोश होता है अपने पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता।

"ग़ीबतें करने वाले क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेंगे" के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानों के माबैन होने वाली ग़ीबतों की 40 मिसालें

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 505 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़हा 410 ता 411 पर है : "ना'त ख़्वानी" निहायत उ़म्दा इबादत है, सुरीली आवाज़ बेशक रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इनायत है मगर इस में इम्तिहान बहुत सख़्त है, जिसे इख़्लास मिल गया वोही

कामयाब है। बा'ज़ ना'त ख़्वां مَاشَاءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़बर दस्त आशिक़े रसूल होते हैं जो कि बिग़ैर किसी दुन्यवी लालच के आंखें बन्द किये इश्क़े रसूल में डूब कर ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं और सामिईन के दिलों को तड़पा कर रख देते हैं जब कि बा'ज़ ला उबाली चन्चल और इन्तिहाई ग़ैर सन्जीदा होते हैं, इस त़रह़ के ना'त ख़्वानों में जिन बद नसीबों का दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ख़ाली होता है, वोह पीछे से एक दूसरे पर जी भर कर तन्क़ीदें करते, ख़ूब ख़ूब **ग़ीबतें** करते, आवाज़ों की नक़्लें उतार कर ठीकठाक मज़ाक़ उड़ाते और ऊपर से ज़ोरदार क़हक़हे लगाते हैं। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ीक़ी म-दनी ना'त ख़्वां ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सदक़े इन्हें भी इश्क़े रसूल में रोने रुलाने वाला मुख़्लिस ना'त ख़्वां बनाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे ना'त ख़्वानों की इस्लाह़ के जज़्बे के तह़त इन के दरमियान होने वाली मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** की 40 मिसालें अ़र्ज़ करता हूं : ۞ पता नहीं येह मौलवी **माईक** पर कहां से आ गया कि इतनी लम्बी तक़रीर शुरूअ़ कर दी है !

❁ लोग उक्ता कर उठ उठ कर जा रहे हैं मगर येह है कि माईक ही नहीं छोड़ता ❁ बानिये मह़फ़िल ने लाइट का इन्तिज़ाम ठीक नहीं करवाया ❁ मन्च (स्टेज) पर डेकोरेशन कम थी ❁ इस ने ना'त ख़्वानों को गरमी में मार दिया एक पेडेस्टल फ़ेन ही रख दिया होता ❁ यार ! येह साउन्ड वाला भी बिल्कुल बेकार साउन्ड लाया है ❁ कोर्डलेस (Cordless) माईक की तरकीब भी ठीक नहीं थी ❁ उस ना'त ख़्वां ने सारा वक़्त ले लिया हमारी बारी ही नहीं आने दी मुझे ताख़ीर से मौक़अ़ दिया ❁ मुझे कम वक़्त दिया ❁ यार ! येह ना'त ख़्वां माईक पर नहीं आना चाहिये था, इस ने रुलाने वाली ना'त पढ़ कर मह़फ़िल का रुख़ ही बदल डाला, लोग तो झुमाने वाली त़र्ज़ पर नोट लुटाया करते हैं ! ❁ यार ! इस ना'त ख़्वां ने नया कलाम सुना कर बड़ी चालाकी से जेबें ख़ाली करवा ली हैं हमारे लिये कुछ नहीं बचा ! ❁ अरे ! इस को माईक कहां दे दिया ! एक तो आवाज़ बे सुरी है और ऊपर से लम्बी करता है लोग उठ जाते हैं, हम किस के सामने ना'त पढ़ेंगे ? ❁ आ'ला ह़ज़रत का कलाम पढ़ना नहीं आता ❁ पुरानी त़र्ज़ में पढ़ता है ❁ पुरसोज़ त़र्ज़ें

ठीक से नहीं पढ़ पाता ❁ इस को झुमाने वाले कलाम पढ़ने नहीं आते ❁ अ़-रबी कलाम नहीं पढ़ पाता ❁ येह ना'त ख़्वां त़र्ज़ें बिगाड़ कर पढ़ता है ❁ फुलां ना'त ख़्वां जहां माल ज़ियादा हो वहीं जाता और वहां के ह़िसाब से कलाम पढ़ता है ❁ वोह जब ना'त पढ़ता है तो उस का मुंह कैसा बन जाता है ! ❁ अरे उस के ना'त पढ़ने का अन्दाज़ देखा है ऐसा टेढ़ा मुंह कर के गला फाड़ कर सुर बनाता है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है ❁ बानिये मह़फ़िल बड़ा कन्जूस है, जेब में हाथ ही नहीं डालता था ❁ फुलां की आवाज़ ज़रा अच्छी है तो मग़रूर हो गया है ❁ वोह तो भई बहुत बड़ा ना'त ख़्वां है, हम जैसे छोटे ना'त ख़्वानों को तो लिफ़्ट भी नहीं करवाता ❁ मन्च (स्टेज) पर मालदारों को बिठा रखा था ❁ इस के नख़रे बहुत हो गए हैं ❁ त़र्ज़ कलाम के मुत़ाबिक़ नहीं थी ❁ ईको साउन्ड पर इस का गला ज़ियादा काम करता है ❁ इस को नज़राने मिलने पर कैसा जोश चढ़ता है ❁ ज़ियादा लोगों में ज़ियादा खुलता है ❁ फुलां ना'त ख़्वां चूंकि फ़ारिग़ है, इस लिये नई नई त़र्ज़ें बनाता रहता है ❁ भई ! वोह तो जैसे बहुत बड़ा

ना'त ख़्वां हो महफ़िल में अपनी बारी के वक़्त ही आता और कलाम पढ़ कर चला जाता है ❁ इस और उस ना'त ख़्वां की जोड़ी है येह दोनों किसी को घास नहीं डालते ❁ बार बार एक ही कलाम पढ़ता है ❁ फुलां ना'त ख़्वां की नक़्क़ाली करता है ❁ न जाने किस शाइर का कलाम उठा लाया था ❁ बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों की कोई ख़िदमत ही नहीं की ❁ बानिये महफ़िल ने मुझे टेक्सी का किराया तक नहीं दिया, बहुत कन्जूस निकला ❁ गला फाड़ फाड़ कर खाना सारा हज़्म हो गया, बा'द को मा'लूम हुवा कि बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों के लिये खाने का कोई इन्तिज़ाम ही नहीं किया था ❁ कल जिस के यहां महफ़िल थी वोह बड़ा दिलेर था, कवर खोला तो 1200 रुपै थे ! मगर आज वाला बानिये महफ़िल कन्जूस है 100 रुपल्ली थमा दी !।

(इन के इलावा ग़ीबत की बे शुमार मिसालों की मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 505 सफ़हात की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" का मुता-लआ कीजिये)

الـف

अल्फ़ाज़	मआ़नी
अ–बदी	हमेशा के लिये
अब्र	बादल
अब्रे बारां	बरसने वाला बादल
अब्रे रह्मत	रह्मत का बादल
अत्क़िया	तक़ी की जम्अ़, परहेज़ गार लोग
इत्माम	ख़त्म होना
असासा	सरमाया, जम्अ़ किया हुवा माल
इजाबत	क़बूलिय्यत
अजल	मौत
एह्तिसाब	हिसाब किताब
एह्क़ाके़ ह़क़	ह़क़ का सुबूत देना
इख़्तिताम	ख़त्म होना
उख़ुव्वत	भाईचारा
अख़्यार	नेक लोग
इदराक	समझ
इज़्न	इजाज़त
इरम	जन्नत
अ–ज़ली	दवामी, जिस की कोई इब्तिदा न हो
इस्तिग़ासा	फ़रियाद
उस्तुवार	मज़्बूत, पाएदार
असरार	सिर की जम्अ़, राज़
अस्फ़ार	सफ़र की जम्अ़

असीराने क़फ़स	पिंजरे के क़ैदी
अश्जार	शजर की जम्अ़, बहुत से दरख़्त
अशरार	शरीर की जम्अ़
अश्के ख़ूनीं बहाना	कसरत से रोना
अस्फ़िया	सफ़ी की जम्अ़, बरगुज़ीदा लोग
अत़्वार	त़ौर की जम्अ़, त़ौर त़रीक़े
आ'दा	अ़दू की जम्अ़, दुश्मन
आ'दाए दीन	दुश्मनाने दीन
आ'ला इल्लिय्यीन	"जन्नत के निहायत ही बुलन्दो बाला मक़ानात" येह अहले ईमान की रूह के रहने का सब से आ'ला मक़ाम है

अग़िस्नी या रसूलल्लाह	ऐ अल्लाह के रसूल मेरी फ़रियाद को पहुंचिये
अग़्निया	ग़नी की जम्अ़, मालदार लोग
उफ़्ताद	ह़ादिसा, आफ़त
अफ़्सुर्दा	ग़मज़दा
अफ़्गार	ज़ख़्मी
अल ग़ियास	फ़रियाद, फ़रियाद है
अल फ़िराक़	जुदाई के वक़्त बोला जाने वाला ह़सरत व अफ़्सोस का लफ़्ज़
अलम	ग़म
अल वदाअ़	रुख़्सत, आख़िरी सलाम, जुदाई
इमामुल अस्ख़िया	सख़ियों का पेश्वा
अम्वाज	मौज की जम्अ़, लहरें

अम्बार	ढेर
अन्दौह गीं	ग़मगीन
औज	बुलन्दी
ऊजड़	वीरान

आस	उम्मीद
आशकार	ज़ाहिर
आ–गही	वाक़िफ़िय्यत
आलाम	अलम की जम्अ़, बहुत सारे ग़म
आंगन	घर के अन्दर का सेहन, अंगनाई

آ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
आबाओ अज्दाद	अब और जद की जम्अ़, बाप दादा
आबशार	ऊंची जगह से गिरने वाला पानी
आबगीनए दिल	कांच या शीशे की तरह नाज़ुक दिल
आठ पहर	रात दिन, हर वक़्त
आज़ार	तक्लीफ़, दुख

ب

अल्फ़ाज़	मआ़नी
बादे सबा	सुब्ह की हवा, वोह हवा जो मशरिक़ से चले
बादे मुख़ालिफ़	आगे बढ़ने से रोकने वाली हवा, आंधी, तूफ़ान
बा दीदए नम	रोती हुई आंख से

बारे दीगर	दोबारा
बारे गुनह	गुनाह का बोझ
बा शुऊ़र	समझदार
बा सफ़ा	पाकीज़ा, खरा
बाला	बुलन्द
बामे का'बा	का'बा शरीफ़ की छत के ऊपर का हिस्सा
बबूल	कांटों का दरख़्त
बजरा	एक क़िस्म की गोल ख़ूब सूरत किश्ती
पुचकार	प्यार, दिलासा
बह़रो बर	समुन्दर और ख़ुश्की

बख़्त बेदार	क़िस्मत वाला
बख़्त वर	ख़ुश नसीब
बख़्ते ख़्वाबीदा	सोया हुवा नसीब
बद अत़्वार	बुरे ढंगों का
बदरुद्दुजा	अंधेरी रात को रोशन करने वाला चांद
बद गुफ़्तार	बुरा बोलने वाला
बराअत	नजात
बुर्दे यमानी	यमन की चादर
बरज़ख़	मौत और क़ियामत का दरमियानी वक़्फ़ा
बर्क़	बिजली

बरखा	बारिश	बिला रैब	बेशक
बरह्ना पा	नंगे पाउं	बलिय्यात	बलाएं
		बन	जंगल
ब सूए मन	मेरी जानिब	बोरिया	चटाई
बिशारत	ख़ुश ख़बरी	भंवर	गिर्दाब, पानी का चक्कर
बशाशत	ताज़गी	बयाबान	जंगल
बसारत	आंखों की नज़र	बे बदल	बे मिसाल
बसीरत	दिल की नज़र	बेख़ुद	अपने आप से बे ख़बर, मस्त
बत़्ने मादर	मां का पेट	बेर	दुश्मनी
बईद	दूर	बीर	कूंआं
बक़ीए ग़रक़द	जन्नतुल बक़ीअ़ का नाम	बेड़ा	किश्ती
बक्की	बक्वासी, फ़ुज़ूल गो	बे अ़दद	ला ता'दाद

बेगाना	पराया
बे गुमां	बेशक
बे नवा	बेकस, मजबूर

پ

अल्फ़ाज़	मआनी
पारसा	परहेज़ गार
पारह पारह	टुकड़े टुकड़े
पट	किवाड़, दरवाज़ा
पज़ीराई	मन्ज़ूरी, इस्तिक़्बाल क़बूलिय्यत
परचार	तब्लीग़
पुर अन्वार	रोशन
परतौ	परछाईं, रोशनी
पुर ज़िया	रोशन
पज़ मुर्दा	मुरझाया हुवा, कुम्लाया हुवा
पिसर	फ़रज़न्द
पसे मर्ग	मरने के बा'द
पशेमानी	शरमिन्दगी, नदामत
पन्छी	परिन्दा
पिन्हां	छुपा हुवा, पोशीदा
पौ फटना	सुब्हे सादिक़ होना
फूहार	फुवार, हलकी हलकी बूंदें
फैर	धोकाबाज़ी, मक्रो फ़रेब
फैरा	गश्त, दौरा
पिया	प्यारा, महबूब

पियादा	पैदल चलने वाला
पेचो ख़म	चक्कर, बल, फैर
पेचीदा, गुथ्थी	उलझी हुई मुश्किल
पैराहन	लिबास
पैज़ार	जूती
पैके अजल	म-लकुल मौत
पैमाना	जाम, पियाला, तराज़ू
पैहम	लगातार

ت

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ताबिश	चमक, रोशनी
ता ब-के	कब तक
तार	धागा, तारीक
तारीक	अंधेरी
तबह्हुरे इल्मी	निहायत वुस्अ़ते इल्मी
तबस्सुम रैज़	मुस्कुराने वाला
तजल्ली	चमक, जल्वा
तज्हील	नादान कहना, जाहिल कहना
तुरबत	क़ब्र
तड़का	अ़लस्सबाह, सुब्ह़, सवेरा
तसल्सुल	सिल्सिला
तिश्नगाने दीद	दीदार के प्यासे
तिश्ना लबी	प्यास
तिश्नगी	प्यास

तसद्दुक़	क़ुरबानी, ख़ैरात
तसर्रुफ़	इख़्तियार, इस्ति'माल, ताक़त
तक्सीर	कसरत
तकना	देखना
तलातुम ख़ेज़	तूफ़ानी
तल्ख़ियों	बद मज़ा हालतों
तमाम	सब, मुकम्मल
तमस्ख़ुर	मज़ाक़ मस्ख़री
तम्हीद	इब्तिदा
तन्दही	कोशिश, जां फ़िशानी
तनज़्ज़ुल	कमी, ज़वाल
तन्वीर	रोशनी, चमक
तवंगर	मालदार
तहनियत	मुबारक बाद
थूहर	एक कांटेदार ज़हरीला पौदा जो दोज़ख़ियों की ग़िज़ा होगा, ज़क़्क़ूम
ती-रगी	सियाही, अंधेरा
तीरा	अंधेरा
तैग़ बकफ़	हाथ में तलवार लिये

ज

अल्फ़ाज़	मआ़नी
जा	जगह
जामए नूर	नूर का लिबास
जामे हस्ती	ज़िन्दगी का जाम, पैदा होना

जानां	मह्बूब	जिगर	कलेजा
जां बलब	मरने के क़रीब	जिला	सफ़ाई, रोशनी
जां फ़िज़ा	दिल ख़ुश करने वाला, मसर्रत अंगेज़	जल्वए ज़ैबा	ह्सीन जल्वा
		जमाल	हुस्न, ख़ूब सूरती
जां कनी	नज़्अ़, जां कन्दनी, सक्रात, दम टूटने का वक़्त	जन्जाल	वबाल, हैरानी परेशानी, आफ़त बखेड़ा
जां गुज़ा	जान को तक्लीफ़ देने वाली	जुनून	दीवानगी
जाने मुज़्तर	बे क़रार	जवार	पड़ोस
जिबाल	जबल की जम्अ़ या'नी पहाड़	जौहर	क़ीमती पथ्थर, कमाल
जबीने नियाज़	अ़क़ीदत भरी पेशानी	झाला	मक़ामी बारिश
जहीम	जहन्नम के एक तबके का नाम	झिल-मिलाते	जग-मगाते

چ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
चारा	इलाज
चारागर	त़बीब
चाक	चिरा हुवा
चांदना	उजाला, रोशनी
चाहत	मह़ब्बत
चढ़ाई	ह़म्ला, बुलन्दी
चश्मे बीना	देखने वाली आंख
चश्मे तर	रोने वाली आंख
चश्मे गिर्यां	रोने वाली आंख
चकाचौंद	जगमग जगमग
चौबदार	ख़बर देने वाला, तश्हीर करने वाला
चौ त़रफ़	चारों त़रफ़
चोकस	होशियार, चोकन्ना
चौखट	दरवाज़ा
चौ गिर्द	चारों त़रफ़

ح

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ह़ावी	ग़ालिब
ह़ुब्बे जाह	इ़ज़्ज़त व शोहरत और मर्तबे की मह़ब्बत
ह़ुज्जाज	ह़ाजी की जम्अ़
ह़जर	पथ्थर

ह़-जरे अस्वद	काला पथ्थर (जो का'बे में नस्ब है)
ह़ुस्साद	ह़ासिद की जम्अ़
ह़स्रता	अफ़्सोस का कलिमा
ह़-सनैन	सय्यिदुना इमामे ह़सन और सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا
ह़श्र	(क़ियामत में) उठाया जाना
ह़श्मत	शानो शौकत
ह़ुज़ूरी	ह़ाज़िरी, कुर्ब, नज़्दीकी
ह़क़ आशना	ख़ुदा परस्त, ह़क़ बात कहने वाला
ह़याते जाविदानी	हमेशा की ज़िन्दगी

ख़

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ख़ार	कांटा
ख़ारज़ार	कांटों भरा जंगल
ख़ाशिआ़ना	आ़जिज़ाना
ख़ावर	सूरज
ख़ुदाई	दुन्या, जहां
ख़र	गधा
ख़िरद	समझ, दानाई, अ़क़्ल
ख़ज़ीना	ख़ज़ाना, गोदाम
ख़स्ता जिगर	इश्क़ में ज़ख़्मी कलेजा, रन्जीदा

ख़स व ख़ाशाक	सूखी घास और कांटे, कूड़ा करकट
ख़सीस	ना लाइक़, कमीना
ख़स्लते बद	बुरी आ़दत
ख़ल्लाक़	अल्लाह का सिफ़ाती नाम, ख़ालिक़ के मुबा-लग़े का सीग़ा या'नी बहुत पैदा करने वाला
ख़ुल्द	जन्नत
ख़ुल्क़	अख़्लाक़
ख़ुल्क़े अ़ज़ीम	आ'ला अख़्लाक़
ख़म	तिरछा पन, झुकाव
ख़ुमार	नशा
ख़न्दए बे जा	फ़ुज़ूल हंसी
ख़्वान (ख़ान)	थाल, त़श्त
ख़्वाहां (ख़ाहां)	आरज़ू मन्द
ख़ुद रफ़्तगी	बेख़ुदी, मस्ती
ख़ुशा	कलिमए तह्सीन, मरह़बा, वाह वाह
ख़ुश ख़िसाल	अच्छी आ़दतों वाला
ख़ून रोना	बहुत ज़ियादा रोना
ख़ैर ख़्वाह	भलाई चाहने वाला

د

अल्फ़ाज़	मआ़नी
दाग़े मुफ़ा-रक़त	जुदाई का सदमा
दामाने तर	गुनह आलूद दामन
दर	दरवाज़ा, में, बीच

दरख़्शां	रोशन
दर्दे पिन्हां	छुपा हुवा दर्द
दरगह	दरगाह का मुख़फ़्फ़फ़
दर मांदगी	बे चा-रगी, आ़जिज़ी
दस्तार	इमामा, पगड़ी
दस्त बस्ता	हाथ बांध कर
दस्त गीर	हाथ थामने वाला, मददगार
दश्त	जंगल, रेगिस्तान
दिलदार	तसल्ली देने वाला, मह़बूब, प्यारा

दिल फ़िगार	ज़ख़्मी दिल वाला
दिलकश	दिल पसन्द
दिलकुशा	दिल को ख़ुश करने वाला, रोशन, फ़राख़
दम बदम	पै दर पै, हर घड़ी
दम लबों पर आना	मरने के क़रीब होना
दना	क़रीब होना
दिवाना	दीवाना का मुख़फ़्फ़फ़
दो गाम	दो क़दम, बहुत ही नज़्दीक
दुहाई	फ़रियाद, मदद त़लब करना
दहलीज़	दरवाज़ा
दहन	मुंह

धड़का	ख़ौफ़
धूल	मिट्टी, ख़ाक
दिया जलाना	चराग़ रोशन करना
दियार	शहर, मुल्क, अ़लाक़ा
दीदए तर	रोती आंख

ڈ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
डगर	रास्ता, रविश, अन्दाज़

ذ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ज़म	मज़म्मत, बुराई

ر

अल्फ़ाज़	मआ़नी
राएगां	ज़ाएअ़
रिह़लत	मौत
रुख़	चेहरा
रसाई	पहुंच, दख़्ल, गुज़र
रिज़ा	ख़ुशनूदी
रफ़ाक़त	साथ, हमराही
रिफ़्अ़त	बुलन्दी, बुज़ुर्गी
रन्जूर	ग़मगीन
रंगीं	रंग किया हुवा, दिल पसन्द
रू सियाह	काला चेहरा

रूदाद	ह़ालत, रिपोर्ट
रोशन ज़मीर	दिल के ह़ालात से आगाह
रिहा	आज़ाद
रिहाई	छुटकारा
रूए अन्वर	नूरानी चेहरा
रूए पुर अन्वार	रोशन चेहरा
रूए ताबां	रोशन चेहरा
रेगज़ार	रेगिस्तान

ز

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ज़ार	ज़लीलो रुस्वा, कमज़ोर
ज़ाहिद	दुन्या से बे रग़बत
ज़ाइर	ज़ियारत करने वाला
ज़र	सोना, रुपिया पैसा
ज़मन	ज़माना
ज़ुव्वार	ज़ाइर की जम्अ़, ज़ियारत करने वाले लोग
ज़ूर	धोका, फ़रेब
ज़ियादत	ज़ियादा होना
ज़ेरे नगीं	मा तह़्त
ज़ीस्त	ज़िन्दगी

س

साह़िल	समुन्दर या दरिया का कनारा

साग़र	जाम, पियाला
साक़िया	ऐ साक़ी, ऐ पिलाने वाले
सागर	समुन्दर
साले रफ़्ता	गया हुवा साल
सानिह़ा	सदमा पहुंचाने वाला वाक़िआ़, ह़ादिसा
साइले बे पर	आ़जिज़ भिकारी
साया गुस्तर	मेह्रबान, मददगार, ह़ामी
सिब्तै़न	इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا
सह़र	सुब्ह़
सुख़न	बात, क़ौल, शे'र, कलाम

सदा	हमेशा
सिदरा (सिद-रतुल मुन्तहा)	बैरी का दरख़्त, सातवें आस्मान पर मौजूद वोह बैरी का दरख़्त जिस से आगे कोई नहीं जा सकता यहां तक कि ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام भी नहीं जा सकते।
सरे बालीं	सिरहाने
सर बसर	सरासर, तमाम, यक्सां
सरफ़राज़	काम्याब, सुर्ख़-रू
सिरहाना	तक्या
सोख़्ता	जला हुवा
सफ़ीना	पानी का जहाज़
सक़र	जहन्नम के एक त़ब्क़े का नाम

सक्रात	नज़्अ़, जान निकलने का वक़्त
सग	कुत्ता
सलामे शौक़	महब्बत भरा सलाम
सल्बे ईमां	ईमान छिन जाना
संगम	इकठ्ठा होना
संगे दर	दरवाज़े का पथ्थर
संगरेज़ा	पथ्थर का टुकड़ा, कंकर, रोड़ा
सोज़	जलन, तपिश
सवेर	जल्दी, देर की ज़िद
सियाह़त	सैर
सीना तपां	जलता सीना
सीना सिपर	ख़तरनाक ह़ालात में डट कर मुक़ाबला करने वाला
सैले अश्क	आंसूओं का बहाव

ش

अल्फ़ाज़	मआनी
शाख़सार	दरख़्तों का झुन्ड
शाद	ख़ुश
शादां	ख़ुश
शादकाम	काम्याब, ख़ुशहाल
शादमां	ख़ुश
शादी	ख़ुशी, बियाह
शाक़	दुश्वार

शाइक़	शौक़ीन
शदाइद	शिद्दत की जम्अ, तक्लीफ़ें
शर	बुराई
शो'लाबार	जिस से शो'ले उठते हों
शक़ होना	फटना, चिरना, दराड़ पड़ना
शिक्वा	शिकायत
शिकैबाई	सब्र, तहम्मुल
शम्स	सूरज
शुमूल	शामिल होना
शनासाई	जान पहचान, वाक़िफ़िय्यत
शनावर	तैरने वाला
शोरीदा सर	दीवाना
शह सुवार	माहिर घोड़े सुवार
शही	बादशाही
शैख़ैन	हज़राते सिद्दीक़े अक्बर और फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہما
शीर ख़्वार	दूध पीता बच्चा

ص

अल्फ़ाज़	मआनी
साइम	रोज़ादार
सबा	हवा, मशरिक़ी हवा
सदा	आवाज़, पुकार
स-दक़ा	ख़ैरात
सदक़ा	वसीला

सुऊबत	मुश्किल
सग़ाइर	छोटे गुनाह
सनम	बुत

ض

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ज़ईफ़	बूढ़ा, कमज़ोर
ज़लालत	गुमराही
ज़म	शामिल करना, मिलाना
ज़िया	रोशनी

ط

अल्फ़ाज़	मआ़नी
त़रावत (तरावत)	नमी, ठन्डक, ताज़गी
तुग़यानी	सरकशी, सैलाब
त़ीनत	त़बीअ़त, आ़दत

ظ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ज़ुल्मत	अंधेरा

ع

अल्फ़ाज़	मआ़नी
आ़र	शर्म, ऐ़ब
आ़रिज़ी	वक़्ती, थोड़े वक़्त के लिये
आ़सी	ना फ़रमान, बदकार
आ़लमे ना पाएदार	फ़ानी दुन्या
अ़दू	दुश्मन
अ़र्सए ह़श्र	ह़श्र का मैदान

इस्यां	गुनाह
इस्यां शिआ़र	गुनहगार
अ़फ़ू	मुआ़फ़ करने वाला
अ़फ़्व	मुआ़फ़ी
उ़क़्बा	आख़िरत
उ़लुव्वे शान	बुलन्दिये शान
अ़न्दलीब	बुलबुल
इन्दिया	राय

غ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ग़ुबार	ख़ाक
ग़स्साल	ग़ुस्ल देने वाला
ग़श खाना	बेहोश होना
ग़ुसीले	ग़ुस्से वाले
ग़ुलग़ुला	शोरो ग़ुल, चरचा
ग़िल्मान	जन्नत के ख़ादिम
ग़मे रोज़गार	दुन्या का ग़म
ग़म ग़लत़ होना	ग़म दूर होना
ग़मनाक	ग़मगीन
ग़ुन्चा	फूल की कली
ग़मे हिज्र (ग़मे फ़ुरक़त)	जुदाई का सदमा
ग़ौसे आ'ज़म	बहुत बड़ा फ़रियाद सुनने वाला

ف

अल्फ़ाज़	मआ़नी
फ़ितन	फ़ितना की जम्अ़
फ़ुतूर	कमज़ोरी, ख़राबी, फ़साद
फ़िदाई	शैदाई
फ़िराक़	जुदाई
फ़िरावानी	कसरत
फ़रह़त	ख़ुशी
फ़ुरक़त	जुदाई
फ़ुज़ूं तर	बहुत ज़ियादा
फ़साना	सर गुज़श्त, माजरा, अह़वाल
फ़लाह़	काम्याबी
फ़िन्नार	जहन्नमी, आग में
फ़ैज़ान	बड़ा फ़ैज़, बड़ा नफ़्अ़, बड़ा फ़ाएदा

ق

अल्फ़ाज़	मआ़नी
क़ासिम	तक़्सीम करने वाला
क़ासिर	मजबूर, लाचार
क़ुरबत	नज़्दीकी, क़ुर्ब
क़रीना	ढंग, अन्दाज़
क़सावत	सख़्ती
क़िस्मत का धनी	मुक़द्दर वाला, ख़ुश क़िस्मत
क़ज़ा	मौत, तक़्दीर

क़ज़िय्या	झगड़ा
क़ल्बे मुज़्तर	बे क़रार दिल
क़ल्बे फ़िगार	ज़ख़्मी दिल
कुमरी	फ़ाख़्ता की क़िस्म का एक तौक़दार परिन्दा

अल्फ़ाज़	मआ़नी
कातिबे तक़्दीर	तक़्दीर लिखने वाला (किना-यतन अल्लाह तआ़ला)
कासा	भीक का ठेकूरा, पियाला, कटोरा
कासए दिल	दिल को भीक मांगने का पियाला बना लेना
काफ़ूर	ग़ाइब, दूर
काली घटा	काले बादल
कामदार	कारकुन, ओ़हदे दार
कामगार	खुश नसीब
कान (मुज़क्कर)	सुनने वाला उ़ज़्व।
कान (मुअन्नस)	वोह जगह जहां से खोद कर धात या जवाहिरात वग़ैरा निकालते हैं, मम्बअ़।
काहिल	सुस्त
कबाइर	बड़े गुनाह
कुटिया	झोंपड़ी
कश्कोल	भीक मांगने वालों का कासा
कुल्फ़त	बे क़रारी

किल्क	क़लम
कंगूरा	इमारत या मस्जिद वग़ैरा में ख़ूब सूरती के लिये लगाए जाने वाले ताक़्चे
कूचा	गली
कोशां	कोशिश करने वाला
कौनो मकां	दुन्या, जहान
कौनैन	दीन व दुन्या, दोनों जहां
कोहे अलम	ग़म का पहाड़
कूए यार	मह़बूब की गली
कहार	पालकी उठाने वाला
कोहसार	पहाड़ों की क़ितार

گ

अल्फ़ाज़	मआ़नी
गाम	क़दम
गामज़न	चलने वाला
गदा	भिकारी, मंगता
गिरां	भारी
गुरेज़	परहेज़, अ़ला-ह़-दगी
गिर्या	रोना
गिर्या कुनां	रोने वाला
गुफ़्तार	बातचीत
गुल इज़ार	फूल जैसे गाल वाला बच्चा, ख़ूब सूरत बच्चा

गुम्बदे ख़ज़रा	सब्ज़ गुम्बद
गोरे तीरा	अंधेरी क़ब्र
गोरे ग़रीबान	क़ब्रिस्तान
गौहर	मोती
घाइल	ज़ख़्मी
गेसूए ख़मदार	बल खाई हुई ज़ुल्फ़ें

ل

अल्फ़ाज़	मआ़नी
ला उबाली पन	बे परवाई
ला जरम	बेशक, यक़ीनन
ला रैब	बिला शुबा
लालाज़ार	गुलज़ार, बाग़
लब	होंट
लहूद	क़ब्र
लहूजा	लम्हा
लुआ़ब	थूक
लइ़ब	खेलकूद, सैर तमाशा
ला'ल	सुर्ख़ हीरा
लिल्लाह	अल्लाह के लिये
लिवाए ह़म्द	ह़म्द का झन्डा
लहक	शो'ला, चमक, ख़ुश्बू जो हवा के साथ फैले
लैलो नहार	रात और दिन

م

अल्फ़ाज़	मआ़नी
मा सिवा	इलावा
माह लिक़ा	चांद जैसी सूरत वाला

मुह़ीत़ होना	ह़ावी होना
मुख़्तार	बा इख़्तियार, पसन्द किया गया
मख़्ज़न	ख़ज़ाना, ज़ख़ीरा, गोदाम
मख़्मूर	नशे में मस्त
मुदाम	हमेशा
मुदावा	इलाज
मुदा-वमत	हमेशगी
मद्ह़त सरा	ता'रीफ़ करने वाला
मुद्दआ़	मक़्सद, ख़्वाहिश
मदफ़न	दफ़्न की जगह
मरह़ला	सफ़र, कूच

मुर्दार	अपनी मौत से मरा हुवा, मुर्दा
मुर्दन	मौत
मुर्शद	हिदायत किया गया।
मुर्शिद	हिदायत करने वाला, पीर
मुर्शिदी	मेरा पीर
मर्ग़-ज़ार	मर्ग़ या'नी हरी घास मत़लब कि जहां हरी घास फैली हुई हो।
मरग़ूब	पसन्दीदा
मुरीद	ख़्वाहिश मन्द, फ़रमां बरदार
मरीद	सख़्त सरकश, बड़ा शरीर

मुज़य्यन	आरास्ता, सजा हुवा
मुज़्दा	ख़ुश ख़बरी
मसरूर	ख़ुश
मस्कन	ठिकाना
मसीहा	हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह على نبينا و عليه الصلوٰة والسلام का लक़ब
मुश्त	मुठ्ठी
मश्रूब	पीने की चीज़
मशिय्यत	मरज़ी
मुस्हफ़	क़ुरआने पाक
मुज़्तरिब	बेचैन, बे क़रार

मुतीअ़	फ़रमां बरदार
मज़्हर	ज़ाहिर होने वाला
मुज़्हिर	मुख़्बिर, गवाह, बयान करने वाला
मुआ़–वनत	इमदाद, तआ़वुन
मुअ़त्तर	ख़ुश्बूदार
मुअ़म्बर	अ़म्बर की ख़ुश्बू में बसा हुवा
मुअ़ती	अ़ता करने वाला
मुग़ीलान	एक कांटेदार दरख़्त, बबूल, कीकर
मफ़्क़ूद	ग़ाइब, गुम
मुफ़्लिस	ग़रीब

मुक़ाबिल	सामने वाला, रू बरू	मम्लू	पुर, लबरेज़, भरा हुवा
मक़्हूर	क़हर किया गया	मम्नून	एह्सान मन्द
मक्रे शैतान	शैतान का धोका	मनाल	जाएदाद, धन, दौलत
मिल्लत	क़ौम	मम्बअ़	जारी होने या निकलने का मक़ाम
मुल्तजी	अ़र्ज़ गुज़ार, इल्तिजा करने वाला	मंजधार	दरिया के बीच की धार
		मन्क़बत	सहाबा व औलिया की शान में ता'रीफ़ी अश्आ़र
मल्जा	जाए पनाह, पनाह मिलने की जगह	मुन्कर	इन्कार किया गया
मल्हूज़	लिहाज़ किया गया, ख़याल रखा गया	मुन्किर	इन्कार करने वाला
		मौजज़न	ठाठें मारने वाला
मलूल	ग़मगीन	मए उल्फ़त (मए इश्क़)	उल्फ़त की शराब
मुमासिल	मानिन्द, मिस्ल	मह	चांद, महीना

महे ग़ुफ़्रान	मग़्फ़िरत का महीना
मैट कर	मिटा कर
मै	शराब
मीज़ां	तराज़ू
मयका	औरत के वालिदैन का घर
मीना	सुराह़ी

ن

अल्फ़ाज़	मआ़नी
नाब	ख़ालिस
ना-बकार	निकम्मा
ना तमाम	ना मुकम्मल
नाखुदा	मल्लाह़, जहाज़ का कपतान, रहनुमा
नादार	ग़रीब
नार	आग
ना रवा	ना जाइज़
नात़िक़	बोलने वाला
नात़ा	रिश्ता
नाक़ा सुवार	ऊंटनी सुवार
नामदार	आ़ली जनाब
नामा	रजिस्टर, आ'माल नामा
नाव	किश्ती
नायाब	वोह चीज़ जो न मिल सके। बेश क़ीमत
नित नया	ताज़ा ब ताज़ा
नख़्ल	खजूर का दरख़्त
नख़्वत	गुरूर

नज़ार	कमज़ोर	नफ़स	सांस
नज़्अ़	सक्रात, रूह् क़ब्ज़ होने का वक़्त	नफ़्से अम्मारा	बुराई पर उभारने वाला नफ़्स
नुज़ूल	नाज़िल होना	नफ़्सी नफ़्सी (नफ़्सा नफ़्सी)	अपनी अपनी करना और दूसरे की परवाह न करना
नुज़्हत	तरो ताज़गी		
नसीमे सह़र	सुब्ह़ की हवा	नक़्शे कफ़े पा	पाउं के तल्वे का निशान
नसीमे त़यबा	हवाए मदीना	नकीरों	मुन्कर व नकीर
ना'त	सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ता'रीफ़ी कलाम या अश्आ़र	नकीरैन	मुन्कर व नकीर
		निग्हत(नक्हत)	फूलों की ख़ुश्बू
		नगीं	नगीना
ना'श	लाश	नगीना	जवाहिर, क़ीमती पथ्थर
नग़्मा बार	नग़्मा सुनाने वाला	नम	तर, भीगी हुई

नमनाक आंख	रोती आंख
नवासन्ज	नग़्मा गाने वाला
नवाल	एह्सान, बख़्शिश
नौबत बजना	नक़्क़ारा बजना, ख़ुशी होना
नौ निहाल	बहुत छोटा बच्चा
नवीद	ख़ुश ख़बरी
निहां	पोशीदा
निहायत	ब कसरत, बेहद, हद
नय्या	किश्ती, नाव
नीम जां	अधमुवा, कमज़ोर

و

अल्फ़ाज़	मआनी
वा	खुला हुवा, कुशादा
वारफ़्तगी	दीवानगी, इश्क़ो मस्ती
वासिफ़	ता'रीफ़ करने वाला
वां	वहां का मुख़फ़्फ़फ़
वा होना	खुलना
वह्शत	हैबत, घबराहट, ख़ौफ़
वरअ़	परहेज़ गारी
विसाल	मिलना, मिलाप
वस्फ़	ख़ूबी, ता'रीफ़
वस्ल	मुलाक़ात, मिलाप
वईद	धमकी
विला	महब्बत

ہ

अल्फ़ाज़	मआनी
हिज्र	जुदाई

हज़्दा हज़ार आ़लम	अठ्ठारह हज़ार तरह की मख़्लूक़
हमदम	रफ़ीक़, यार, दोस्त
हम साएगी	पड़ोस
हम शबीह	हम शक्ल
हवस	ह़िर्स, लालच
हूक उठना	दर्द होना

ی ، ے

अल्फ़ाज़	मआ़नी
यावर	ह़िमायती, मददगार
यावह गोई	फ़ुज़ूल बातें
यलग़ार	ह़म्ला

एह़तियाती तज्दीदे ईमान कब कब करें ?

म-दनी मश्वरा है रोज़ाना कम अज़ कम एक बार म-सलन सोने से क़ब्ल (या जब चाहें) **एह़तियाती तौबा व तज्दीदे ईमान** कर लीजिये और अगर **ब आसानी** गवाह दस्त-याब हों तो मियां बीवी तौबा कर के घर के अन्दर ही कभी कभी एहतियातन **तज्दीदे निकाह़** की तरकीब भी कर लिया करें। मां, बाप, बहन, भाई और औलाद वग़ैरा आ़क़िल व बालिग़ मुसल्मान मर्द व औ़रत **निकाह़** के गवाह बन सकते हैं। (या'नी दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतें गवाह हो सकती हैं) **एह़तियाती तज्दीदे निकाह़** बिल्कुल मुफ़्त है इस के लिये मह्र की भी ज़रूरत नहीं।

ह़म्द व ना'त और मन्क़बत किसे कहते हैं ?

सुवाल : ह़म्द व ना'त और मन्क़बत के मा'ना बता दीजिये।

जवाब : तीनों के लफ़्ज़ी मा'ना क़रीब क़रीब एक ही हैं या'नी ता'रीफ़ व तौसीफ़ मगर मजाज़ी मा'ना जुदा जुदा हैं। लिहाज़ा "**ह़म्द**" का लफ़्ज़ ख़ुदा की ता'रीफ़ के लिये बोला जाता है। सरवरे काएनात की ता'रीफ़ की **ना'त** और सह़ाबए किराम व औलियाए उ़ज़्ज़ाम की ख़ूबियों के बयान को **मन्क़बत** कहते हैं। आज कल आ़म शु–अ़रा "ना'त" कम ही लिखते हैं। उ़मूमन इन के कलाम हिज्रो फ़िराक़, मदीनए मुनव्वरह की ह़ाज़िरी की तड़प या "इस्तिग़ासा" या'नी फ़रियाद पर मुश्तमिल होते हैं। बारगाहे रिसालत में फ़रियाद करना और इमदाद त़लब करना बेशक जाइज़ है। मु–तज़क्करा तमाम कलाम उ़र्फ़े आ़म में ना'त ही कहलाते हैं और इस में ह़रज भी नहीं। **ना'त** के मा'नवी ए'तिबार से ना'तिया अश्आ़र लिखना बहुत दुश्वार होता है।

ह़म्द व मुनाजात

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

या ख़ुदा मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा

या ख़ुदा मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा बाग़े फ़िरदौस मर्हमत फ़रमा

दीने इस्लाम पर मुझे या रब इस्तिक़ामत तू मर्हमत फ़रमा

तू गुनाहों को कर मुआ़फ़ अल्लाह ! मेरी मक़्बूल मा'ज़िरत फ़रमा

मुस्त़फ़ा का वसीला तौबा पर तू इनायत मुदा-वमत फ़रमा

मौत ईमां पे दे मदीने में और महमूद आ़क़िबत फ़रमा

तू शरफ़ ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा मुझ को मरने का मर्हमत फ़रमा

सरफ़राज़ और सुख़-रू मौला मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी हर क़दम पर मुआ़-वनत फ़रमा

मुझ को "कुफ़्ले मदीना" पर या रब तू इनायत मुदा-वमत फ़रमा

या ख़ुदा म-दनी क़ाफ़िलों पर भी तू इनायत मुदा-वमत फ़रमा

काश ! छोड़ूं न "म-दनी इन्आ़मात" तू इनायत मुदा-वमत फ़रमा

हो न अ़त्त़ार ह़श्र में रुस्वा
बे ह़िसाब इस की मग़्फ़िरत फ़रमा

हमारे दिल से ज़माने के ग़म मिटा या रब

हमारे दिल से ज़माने के ग़म मिटा या रब
हो मीठे मीठे मदीने का ग़म अ़ता या रब

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं
तेरी अ़ता का इशारा जो हो गया या रब

पए हुसैनो ह़सन फ़ाति़मा अ़ली ह़ैदर
हमारे बिगड़े हुए काम दे बना या रब

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं
मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब

मुझे दे खुद को भी और सारी दुन्या वालों को
सुधारने की तड़प और ह़ौसला या रब

हमेशा हाथ भलाई के वासिते़ उठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम
करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

गुनाहगार त़लब गारे अ़फ़्वो रह़मत है
अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब

करम से "नेकी की दा'वत" का ख़ूब जज़्बा दे
दूं धूम सुन्नते मह़बूब की मचा या रब

अ़त़ा हो दा'वते इस्लामी को क़बूले आ़म
इसे शुरूरो फ़ितन से सदा बचा या रब

मैं पुल सिरात़ बिला ख़ौफ़ पार कर लूंगा
तेरे करम का सहारा जो मिल गया या रब

कहीं का आह ! गुनाहों ने अब नहीं छोड़ा
अ़ज़ाबे नार से अ़त्त़ार को बचा या रब

मिटा दे सारी ख़ताएं मेरी मिटा या रब

मिटा दे सारी ख़ताएं मेरी मिटा या रब
बना दे नेक बना नेक दे बना या रब

बना दे मुझ को इलाही खुलूस का पैकर
क़रीब आए न मेरे कभी रिया या रब

अंधेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर
करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब

गुनाहगार हूं मैं लाइक़े जहन्नम हूं
करम से बख़्श दे मुझ को न दे सज़ा या रब

बुराइयों पे पशेमां हूं रह़्म फ़रमा दे
है तेरे क़ह्र पे ह़ावी तेरी अ़ता या रब

मुह़ीत़ दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा
दिमाग़ पर मेरे इब्लीस छा गया या रब

रिहाई मुझ को मिले काश ! नफ़्सो शैत़ां से
तेरे ह़बीब का देता हूं वासित़ा या रब

गुनाह बे अ़दद और जुर्म भी हैं ला ता'दाद
मुआ़फ़ कर दे न सह पाऊंगा सज़ा या रब

मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं
ह़क़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़ता या रब

सुनूं न फ़ोह़्श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब

करें न तंग ख़यालाते बद कभी, कर दे
शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़ता या रब

नहीं है नामए अ़त्त़ार में कोई नेकी
फ़क़त़ है तेरी ही रह़मत का आसरा या रब

हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब !

हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब आ़शिके़ मुस्त़फ़ा बना या रब

कर दे ह़ज का शरफ़ अ़ता या रब सब्ज़ गुम्बद भी दे दिखा या रब

है तेरी ही इनायतो रह़मत मुझ को मक्के बुला लिया या रब

आज है रू बरू मेरे का'बा सिल्सिला है त़वाफ़ का या रब

अब्र बरसा दे नूर का मैं लूं बारिशे नूर में नहा या रब

काश लब पर मेरे रहे जारी ज़िक्र आठों पहर तेरा या रब

चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्त़र दे अपनी उल्फ़त की मै पिला या रब

आह ! तुग़्यानियां गुनाहों की पार नय्या मेरी लगा या रब

नफ़्सो शैत़ान हो गए ग़ालिब इन के चुंगल से तू छुड़ा या रब

कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में हो ही जाता हूं मुब्तला या रब

नीम जां कर दिया गुनाहों ने मरज़े इस्यां से दे शिफ़ा या रब

किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला गर तू नाराज़ हो गया या रब
वक़्ते रिह़लत अब आ गया मौला जल्वए मुस्त़फ़ा दिखा या रब
क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है रोशनी हो पए रज़ा या रब
सांप लिपटें न मेरे लाशे से क़ब्र में कुछ न दे सज़ा या रब
नूरे अह़मद से क़ब्र रोशन हो वह़शते क़ब्र से बचा या रब
हाए ! हुस्ने अ़मल नहीं पल्ले ह़श्र में मेरा होगा क्या या रब
गर्मिये ह़श्र, प्यास की शिद्दत जामे कौसर मुझे पिला या रब
ख़ौफ़ दोज़ख़ का आह ! रह़मत हो ख़ाके त़यबा वासित़ा या रब
मेरा नाज़ुक बदन जहन्नम से अज़ त़ुफ़ैले रज़ा बचा या रब
त़ालिबे मग़्फ़िरत हूं या अल्लाह बख़्श ह़ैदर का वासित़ा या रब
सब ने ठुकरा दिया तो क्या परवा मुझ को तेरा है आसरा या रब
ज़ुल्फ़े मह़बूब का बना क़ैदी और हरगिज़ न फिर छुड़ा या रब
मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब
दे दे सोज़े बिलाल या अल्लाह अश्कबार आंख हो अ़त़ा या रब
आह ! आ'दा हैं ख़ून के प्यासे दुश्मनों से मुझे बचा या रब

दे शहादत मुझे मदीने में अज़ पए शाहे करबला या रब

सब्ज़ गुम्बद के ज़ेरे साया हो जां मेरी जिस्म से जुदा या रब

क़ब्र मेरी बने मदीने में तुझ से है येह मेरी दुआ़ या रब

ह़िर्से दुन्या निकाल दे दिल से बस रहूं त़ालिबे रिज़ा या रब

दे दे "कुफ़्ले मदीना" आंखों का वासित़ा चार यार का या रब

दे दे "कुफ़्ले मदीना" लब का भी वासित़ा चार यार का या रब

काश ! आ़दत फुज़ूल बातों की दूर हो अज़ पए रज़ा या रब

वासित़ा मेरे पीरो मुर्शिद का मुझ को तू मुत्तक़ी बना या रब

दिल का उजड़ा चमन हो फिर आबाद कोई ऐसी हवा चला या रब

हर बरस काश ! आ के मक्के में लुत़्फ़ उठाऊं त़वाफ़ का या रब

जिस किसी ने कहा, "दुआ़ करना" उस का पूरा हो मुद्दआ़ या रब

कर दे जन्नत में तू जवार उन का
अपने अ़त्ता़र को अ़ता या रब

मुआ़फ़ फ़ज़्लो करम से हो हर ख़त़ा या रब

मुआ़फ़ फ़ज़्लो करम से हो हर ख़त़ा या रब
हो मग़्फ़िरत पए सुल्त़ाने अम्बिया या रब

बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब
पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब

नबी का सदक़ा सदा के लिये तू राज़ी हो
कभी भी होना न नाराज़ या ख़ुदा या रब

तेरे ह़बीब अगर मुस्कुराते आ जाएं
तो बिल यक़ीन उठे क़ब्र जगमगा या रब

ख़ज़ां फटक न सके पास, दे बहार ऐसी
रहे ह़यात का गुलशन हरा भरा या रब !

हमारे दिल से निकल जाए उल्फ़ते दुन्या
दे दिल में इ़श्क़े मुह़म्मद मेरे रचा या रब

नबी की दीद हमारी है ईद या अल्लाह !

अ़त़ा हो ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा या रब !

तेरे ह़बीब की सुन्नत की धूम मच जाए

गली गली में फिरे "म-दनी क़ाफ़िला" या रब !

मेरी ज़बान पे "कुफ़्ले मदीना" लग जाए

फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब

अ़त़ा करम से हो ऐसी मुझे ह़या या रब

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और

सुनें न कान भी ऐ़बों का तज़्किरा या रब

तुलें न ह़श्र में अ़त़्त़ार के अ़मल मौला

बिला ह़िसाब ही तू इस को बख़्शना या रब

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब !
नेक कब ऐ मेरे **अल्लाह** ! बनूंगा या रब !

कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा
कब मैं बीमार, मदीने का बनूंगा या रब !

गर तेरे प्यारे का जल्वा न रहा पेशे नज़र
सख़्तियां नज़्अ़ की क्यूंकर मैं सहूंगा या रब !

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए मह़बूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब !

क़ब्र में गर न मुह़म्मद के नज़ारे होंगे
ह़श्र तक कैसे मैं फिर तन्हा रहूंगा या रब !

डंक मच्छर का सहा जाता नहीं, कैसे मैं फिर
क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !

घुप अंधेरे का भी वह्शत का बसेरा होगा
क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !

गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा
हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !

हाए ! मा'मूली सी गर्मी भी सही जाती नहीं
गर्मिये ह़श्र मैं फिर कैसे सहूंगा या रब !

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐ़ब
आह ! रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब !

पुल सिरात़ आह ! है तलवार की भी धार से तेज़
किस त़रह़ से मैं इसे पार करूंगा या रब !

क़ब्र मह़बूब के जल्वों से बसा दे मालिक
येह करम कर दे तो मैं शाद रहूंगा या रब !

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

दर्दे सर हो या बुख़ार आए तड़प जाता हूं
मैं जहन्नम की सज़ा कैसे सहूंगा या रब !

अ़फ़्व[1] कर और सदा के लिये राज़ी हो जा
गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

तू है मुअ़ती़[2] वोह हैं क़ासिम[3] येह करम है तेरा
तेरे मह़बूब के टुकड़ों पे पलूंगा या रब !

---

1 : दर गुज़र 2 : अ़त़ा करने वाला 3 : तक़्सीम करने वाला

चश्मे नम दे ग़मे सुल्ताने उमम दे मौला !
उन का कब आ़शिक़े सादिक़ मैं बनूंगा या रब !

दे दे मरने की मदीने में सआ़दत दे दे
किस त़रह़ सिन्ध के जंगल में मरूंगा या रब !

मुझ गुनहगार पे गर ख़ास करम हो जाए !
जाम, त़यबा में शहादत का पियूंगा या रब !

ह़ज का हर साल शरफ़ दे दे तो मक्के आ कर
झूम कर का'बे के चौगिर्द[1] फिरूंगा या रब !

काश ! हर साल मदीने की बहारें देखूं
सब्ज़ गुम्बद का भी दीदार करूंगा या रब !

इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हु़ज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब !

مدینہ

1 : चारों त़रफ़

शरफ़ दे ह़ज का मुझे मेरे किब्रिया या रब

शरफ़ दे ह़ज का मुझे मेरे किब्रिया या रब
रवाना सूए मदीना हो क़ाफ़िला या रब

दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की
बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब

मदीने जाएं फिर आएं दोबारा फिर जाएं
इसी में उ़म्र गुज़र जाए या ख़ुदा या रब

मेरा हो गुम्बदे ख़ज़रा की ठन्डी छाउं में
रसूले पाक के क़दमों में ख़ातिमा या रब

ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां
मुझे नसीब हो तौबा है इल्तिजा या रब

जो "दीं का काम" करें दिल लगा के या अल्लाह
उन्हें हो ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा या रब

तेरी मह़ब्बत उतर जाए मेरी नस नस में
पए रज़ा हो अ़त़ा इश्क़े मुस्त़फ़ा या रब !

ज़माने भर में मचा देंगे धूम सुन्नत की
अगर करम ने तेरे साथ दे दिया या रब

नमाज़ो रोज़ा व ह़ज्जो ज़कात की तौफ़ीक़
अ़त़ा हो उम्मते मह़बूब को सदा या रब

जवाब क़ब्र में मुन्कर नकीर को दूंगा
तेरे करम से अगर ह़ौसला मिला या रब

बरोज़े ह़श्र छलक्ता सा जाम कौसर का
ब दस्ते साक़िये कौसर हमें पिला या रब

बक़ीए़ पाक में अ़त्तार दफ़्न हो जाए
बराए ग़ौसो रज़ा अज़ पए ज़िया या रब

या रब ! फिर औज पर येह हमारा नसीब हो

(ह़-रमैने शरीफ़ैन की जुदाई के चन्द रोज़ बा'द 8 मुह़र्रमुल ह़राम 1415 सि.हि. को येह कलाम तह़रीर किया)

या रब फिर औज पर येह हमारा नसीब हो
सूए मदीना फिर हमें जाना नसीब हो

मक्का भी हो नसीब मदीना नसीब हो
दश्ते अ़रब नसीब हो सह़रा नसीब हो

ह़ज का सफ़र फिर ऐ मेरे मौला नसीब हो
अ़-रफ़ात का मिना का नज़ारा नसीब हो

अल्लाह ! दीदे गुम्बदे ख़ज़रा नसीब हो
या रब ! रसूले पाक का जल्वा नसीब हो

चूमूं अ़रब की वादियां ऐ काश ! जा के फिर
सह़रा में उन के घूमना फिरना नसीब हो

का'बे के जल्वों से दिले मुज़्त़र हो काश ! शाद
लुत़्फ़े त़वाफ़े ख़ानए का'बा नसीब हो

मक्के में उन की जाए विलादत पे या खुदा
फिर चश्मे अश्कबार जमाना नसीब हो

किस त़रह़ शौक़ से वहां करते थे हम त़वाफ़
फिर गिर्दे का'बा झूम के फिरना नसीब हो

हम जा के ख़ूब लोटें मदीने की धूल पर
आंखों में ख़ाके त़यबा लगाना नसीब हो

सद आफ़रीन ! गुम्बदे ख़ज़रा की ताबिशें[1]
जल्वों में उस के खुद को गुमाना नसीब हो

वां चिलचिलाती धूप का भी इक सुरूर है
जूते उतार कर वहां चलना नसीब हो

नमनाक आंख गुम्बदे ख़ज़रा को चूम ले
झुक जाए फिर अदब से वोह लम्ह़ा नसीब हो

مدینہ

1 : चमक, रोशनियां, नूर

कर दूं मैं काश ! जालियों पर अपनी जां फ़िदा
रौज़े का उन के जिस घड़ी जल्वा नसीब हो

मेह़राबो मिम्बर और वोह हरियाली जालियां
और मस्जिदे ह़बीब का जल्वा नसीब हो

जन्नत की प्यारी क्यारी की थीं ख़ूब रौनक़ें
फिर बैठना वहां पे ख़ुदाया नसीब हो

छुप छुप के देखूं मिम्बरे अक़्दस की फिर बहार
शायद कभी तो शाह का जल्वा नसीब हो

हिज्रे रसूल में हमें या रब्बे मुस्त़फ़ा
ऐ काश ! फूट फूट के रोना नसीब हो

अ़त्त़ार की हो ह़ाज़िरी हर साल या ख़ुदा
आख़िर को त़यबा में इसे मरना नसीब हो

तू ही मालिके बह़रो बर है या अल्लाहु या अल्लाह

तू ही मालिके बह़रो बर है या अल्लाहु या अल्लाह
तू ही ख़ालिक़े जिन्नो बशर है या अल्लाहु या अल्लाह

तू अ-बदी है तू अ-ज़ली है तेरा नाम अ़लीमो अ़ली है
ज़ात तेरी सब से बरतर है या अल्लाहु या अल्लाह

वस्फ़ बयां करते हैं सारे संगो शजर और चांद सितारे
तस्बीह़े हर ख़ुश्को तर है या अल्लाहु या अल्लाह

तेरा चरचा हर घर आंगन सह़रा सह़रा गुलशन गुलशन
वासिफ़ हर फूल और समर है या अल्लाहु या अल्लाह

ख़ल्क़त जब पानी को तरसे रिमझिम रिमझिम बरखा बरसे
हर इक पर रह़मत की नज़र है, या अल्लाहु या अल्लाह

रात ने जब सर अपना छुपाया चिड़ियों ने येह ज़िक्र सुनाया
नग़मा बार नसीमे सह़र है या अल्लाहु या अल्लाह

बख़्श दे तू अ़त्तार को मौला वासित़ा तुझ को उस प्यारे का
जो सब नबियों का सरवर है या अल्लाहु या अल्लाह

अल्लाह हमें कर दे अ़ता क़ुफ़्ले मदीना[1]

अल्लाह हमें कर दे अ़ता क़ुफ़्ले मदीना
हर एक मुसल्मां ले लगा क़ुफ़्ले मदीना

या रब न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूं !
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

बक बक की येह आ़दत न सरे ह़श्र फंसा दे
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

हर लफ़्ज़ का किस त़रह़ ह़िसाब आह ! मैं दूंगा
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मुह़म्मद
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता क़ुफ़्ले मदीना

बढ़ता है ख़मोशी से वक़ार ऐ मेरे प्यारे
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा क़ुफ़्ले मदीना

---

1 : "क़ुफ़्ले मदीना" दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह़ है किसी भी उ़ज़्व को गुनाह और फ़ुज़ूलियात से बचाने को **क़ुफ़्ले मदीना** लगाना कहते हैं। म-सलन फ़ुज़ूल गोई से जो परहेज़ करता है और ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये ह़स्बे ज़रूरत इशारों से या लिख कर गुफ़्त-गू करता है उस के बारे में कहा जाएगा कि "इस ने ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाया है।"

है दबदबा ख़ामोशी में हैबत भी है पिन्हां
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुफ़्ले मदीना

रख लेते थे पथ्थर सुन अबू बक्र दहन में[1]
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुफ़्ले मदीना

चुप रहने में सो[100] सुख हैं तू येह तजरिबा कर ले
ऐ भाई ! ज़बां पर तू लगा कुफ़्ले मदीना

आक़ा की ह़या से झुकी रहती नज़र अक्सर[2]
आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना

---

1 : ग़ैर ज़रूरी गुफ़्त-गू से बचने के लिये सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुंह में पथ्थर रख लेते थे। (احیاء العلوم ج۳ص ۱۳۷) **2 :** जब सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते तो पूरे मु-तवज्जेह होते, मुबारक नज़रें नीची रहती थीं, नज़र शरीफ़ आस्मान के बजाए ज़ियादा तर ज़मीन की त़रफ़ होती थी, अक्सर आंख मुबारक के कनारे से देखा करते थे। (الشمائل للترمذی ص ۲۳ حدیث ۷) मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 312 ता 314 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

गर देखेगा फ़िल्में तो क़ियामत में फंसेगा

आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना

आंखों में सरे ह़श्र न भर जाए कहीं आग

आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना

बोलूं न फ़ुज़ूल और रहें नीची निगाहें

आंखों का ज़बां का दे ख़ुदा कुफ़्ले मदीना

आएं न मुझे वस्वसे और गन्दे ख़यालात

दे ज़ेह्न का और दिल का ख़ुदा कुफ़्ले मदीना

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरदार का दे दे

हर उ़ज़्व का दे मुझ को ख़ुदा कुफ़्ले मदीना

दोज़ख़ की कहां ताब है कमज़ोर बदन में

हर उ़ज़्व का अ़त्तार लगा कुफ़्ले मदीना

हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की

हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
हो इलाही मग़्फ़िरत हर बे कसो मजबूर की

या इलाही ! कर दे पूरी अज़् पए ग़ौसो रज़ा
आरज़ूए दीदे सरवर बे कसो मजबूर की

ज़िन्दगी और मौत की है या इलाही कश्मकश
जां चले तेरी रिज़ा पर बे कसो मजबूर की

आ'ला इल्लिय्यीन में या रब ! इसे देना जगह
रूह चल दे जब निकल कर बे कसो मजबूर की

हो बक़ीए पाक की अल्लाह ! पूरी आरज़ू
अज़् पए ह़-सनैनो ह़ैदर बे कसो मजबूर की

वासित़ा नूरे मुह़म्मद का तुझे प्यारे ख़ुदा
गोरे तीरह कर मुनव्वर बे कसो मजबूर की

आप के मीठे मदीने में पए ग़ौसो रज़ा
ह़ाज़िरी हो या नबी ! हर बे कसो मजबूर की

आमिना के लाल ! सदक़ा फ़ातिमा के लाल का
दूर शामे रन्जो ग़म कर बे कसो मजबूर की

नफ़्सो शैतां ग़ालिब आए लो ख़बर अब जल्द तर
या रसूलल्लाह ! आ कर बे कसो मजबूर की

कहते रहते हैं दुआ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

जिस किसी ने भी दुआ के वासित़े या रब ! कहा
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

बहरे ख़ाके करबला हों दूर आफ़ातो बला
ऐ ह़बीबे रब्बे दावर ! बे कसो मजबूर की

आप ख़ुद तशरीफ़ लाए अपने बेकस की त़रफ़
"आह" जब निकली तड़प कर बे कसो मजबूर की

ऐ मदीने के मुसाफ़िर ! तू वहां ग़म की कथा[1]
उन से कहना ख़ूब रो कर बे कसो मजबूर की

हूक उठी, रूह तड़पी, जब मदीना छुट गया
जान थी ग़मगीनो मुज़्तर बे कसो मजबूर की

आप के क़दमों में गिर कर मौत की या मुस्त़फ़ा
आरज़ू कब आएगी बर, बे कसो मजबूर की

नामए अ़त्त़ार में हुस्ने अ़मल कोई नहीं
लाज रखना रोज़े मह़शर बे कसो मजबूर की

1 : कथा, कहानी, अफ़्साना, बात ।

गुनाहों की नुहूसत बढ़ रही है दम बदम मौला

(25 जुल हिज्जतिल ह़राम 1434 हि.)

गुनाहों की नुहुसत बढ़ रही है दम बदम मौला
मैं तौबा पर नहीं रह पा रहा साबित क़दम मौला

कमर तोड़ी है इस्यां ने, दबाया नफ़्सो शैतां ने
न करना ह़श्र में रुस्वा, मेरा रखना भरम मौला

गुनाहों ने मुझे हाए ! कहीं का भी नहीं छोड़ा
करम हो अज़ तुफ़ैले सय्यिदे अ़-रबो अ़जम मौला !

अंधेरी क़ब्र का एह़सास है फिर भी नहीं जातीं
गुनाहों की ख़ुदाया आ़दतें, फ़रमा करम मौला

न करना ह़श्र में पुरसिश मेरी हो बे सबब बख़्शिश
अ़त़ा कर बाग़े फ़िरदौस अज़ पए शाहे उमम मौला

गुनह करते हुए गर मर गया तो क्या करूंगा मैं
बनेगा हाए मेरा क्या करम फ़रमा करम मौला

ख़िरद करती नहीं अब काम इलाही ! मैं हुवा नाकाम
तुझी से इल्तिजा है मुझ पे कर रह़मो करम मौला

मुसल्मां हूं अगर्चे बद हूं, सच्चे दिल से करता हूं
तेरे हर हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म मौला

तू डर अपना इनायत कर रहें इस डर से आंखें तर
मिटा ख़ौफ़े जहां दिल से मिटा दुन्या का ग़म मौला

तू बस रहना सदा राज़ी, नहीं है ताबे नाराज़ी
तू नाख़ुश जिस से हो बरबाद है तेरी क़सम मौला

चलूं दुन्या से मैं इस शान से ऐ काश ! या अल्लाह
शहे अबरार की चौखट पे सर हो मेरा ख़म मौला

सुनहरी जालियों के सामने ऐ काश ! ऐसा हो
निकल जाए रसूले पाक के जल्वों में दम मौला

अ़ता कर आ़फ़ियत तू नज़्ओ़ क़ब्रो ह़श्र में या रब
वसीला फ़ाति़मा ज़हरा का कर लुत़्फ़ो करम मौला

इलाही पुल सिरात़ इक पल के अन्दर पार कर जाऊं
तू कर ऐसी इनायत अज़ पए शाहे ह़रम मौला

मैं रह़मत, मग़्फ़िरत, दोज़ख़ से आज़ादी का साइल हूं
महे र-मज़ान के सदक़े में फ़रमा दे करम मौला

बराअत दे अ़ज़ाबे क़ब्र से नारे जहन्नम से
महे शा'बान के सदक़े में कर फ़ज़्लो करम मौला

इबादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल
रजब का वासित़ा देता हूं फ़रमा दे करम मौला

बना मुझ को मुह़म्मद मुस्त़फ़ा का आ़शिक़े सादिक़
तू दे दे सोजे़ सीना कर इनायत चश्मे नम मौला

नहीं दरकार वोह ख़ुशियां, जो ग़फ़्लत का बनें सामां
अ़त़ा कर अपनी उल्फ़त अपने प्यारे का तू ग़म मौला

ग़मे इश्क़े नबी ऐसा अ़त़ा फ़रमा पए मुर्शिद
हो ना'ते मुस्त़फ़ा सुनते ही मेरी आंख नम मौला

बचें बेकार बातों से पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे मह़बूब पर हर दम दुरूदे पाक हम मौला

हमारी फ़ालतू बातों की आ़दत दूर हो जाए
लगाएं मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना लब पे हम मौला

जिसे नेकी की दा'वत दूं उसे दे दे हिदायत तू
ज़बां में दे असर कर दे अ़त़ा ज़ोरे क़लम मौला

इलाही हर मुबल्लिग़ पैकरे इख़्लास बन जाए
करम हो दा'वते इस्लामी वालों पर करम मौला

ज़माने के मसाइब ने इलाही घेर रख्खा है
पए शाहे मदीना दूर हों रन्जो अलम मौला

रसूले पाक की दुख्यारी उम्मत पर इनायत कर
मरीज़ों, ग़मज़दों, आफ़त नसीबों पर करम मौला

पए शाहे मदीना अब मुशर्रफ़ ह़ज से फ़रमा दे
चले अ़त्त़ार फिर रोता हुवा सूए ह़रम मौला

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

येह अश्आर और इस के बा'द वाले तमाम वोह कलाम जिन में "अ़ता, गुमा, गया वग़ैरा" क़ाफ़िया और "या इलाही" रदीफ़ है, सफ़रे मदीना 1421 सि.हि. में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल हुई ।

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
बुरी आ़दतें भी छुड़ा या इलाही

ख़त़ाओं को मेरी मिटा या इलाही
मुझे नेक ख़स्लत बना या इलाही

मुत़ीअ़[1] अपना मुझ को बना या इलाही
सदा सुन्नतों पर चला या इलाही

तुझे वासित़ा सारे नबियों का मौला
मेरी बख़्श दे हर ख़त़ा या इलाही

ग़मे मुस्त़फ़ा दे ग़मे मुस्त़फ़ा दे
हो दर्दे मदीना अ़त़ा या इलाही

मैं इ़श्क़े नबी में रहूं गुम हमेशा
तू दीवाना ऐसा बना या इलाही

मदीने की मस्ती रहे मुझ पे छाई
सदा या इलाही सदा या इलाही

दिखा हर बरस तू ह़रम की बहारें
तू मक्का मदीना दिखा या इलाही

शरफ़ हर बरस ह़ज का पाऊं ख़ुदाया
चले त़यबा फिर क़ाफ़िला या इलाही

जो रोते हैं हिज्रे मदीना में उन को
मदीने की गलियां दिखा या इलाही

ज़बान और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना
अ़त़ा हो पए मुस्त़फ़ा या इलाही

तू मुर्शिद के सदक़े दिवाना बना दे
शहन्शाहे बग़दाद का या इलाही

---

1 : फ़रमां बरदार

मुझे सुन्नियत पर तू दे इस्तिक़ामत पए शाहे अह़मद रज़ा या इलाही

तू अंग्रेज़ी फ़ेशन से हर दम बचा कर मुझे सुन्नतों पर चला या इलाही

मुतीअ़ अपने मुर्शिद का मुझ को बना दे मैं हो जाऊं इन पर फ़िदा या इलाही

मुतीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का हर इक हुक्म लाऊं बजा या इलाही

सदा पीरो मुर्शिद रहें मुझ से राज़ी कभी भी न हों येह ख़फ़ा या इलाही

बना दे मुझे एक दर का बना दे मैं हर दम रहूं बा वफ़ा या इलाही

तुझे वासिता सय्यिदह आमिना का बना आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही

मुझे मालो दौलत की आफ़त ने घेरा बचा या इलाही बचा या इलाही

न दे जाहो ह़श्मत न दौलत की कसरत गदाए मदीना बना या इलाही

मुझे ग़ीबतो चुग़्लियो बद गुमानी की आफ़ात से तू बचा या इलाही

येह दिल गोरे तीरह से घबरा रहा है पए मुस्त़फ़ा जगमगा या इलाही

बक़ीए़ मुबारक में तदफ़ीन मेरी हो, ह़-सनैन का वासित़ा या इलाही

तू अ़त्त़ार को चश्मे नम दे के हर दम
मदीने के ग़म में रुला या इलाही

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर

हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इ़बादत

रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही

हमेशा निगाहों को अपनी झुका कर

करूं ख़ाशिआ़ना दुआ़ या इलाही

न "नेकी की दा'वत" में सुस्ती हो मुझ से
बना शाइक़े क़ाफ़िला या इलाही

सआ़दत मिले दर्से "फ़ैज़ाने सुन्नत"
की रोज़ाना दो[2] मर्तबा या इलाही

मैं मिट्टी के सादा से बरतन में खाऊं
चटाई का हो बिस्तरा या इलाही

है आ़लिम की ख़िदमत यक़ीनन सआ़दत
हो तौफ़ीक़ इस की अ़ता या इलाही

"सदाए मदीना" दूं रोज़ाना सदक़ा
अबू बक्रो फ़ारूक़ का या इलाही

मैं नीची निगाहें रखूं काश अक्सर
अ़ता कर दे शर्मो ह़या या इलाही

हमेशा करूं काश पर्दे में पर्दा
तू पैकर ह़या का बना या इलाही

लिबास अपना सुन्नत से आरास्ता हो
इमामा हो सर पर सजा या इलाही

सभी रुख़ पे इक मुश्त दाढ़ी सजाएं
बनें आ़शिके़ मुस्त़फ़ा या इलाही

हर इक "म-दनी इन्आ़म" ऐ काश ! पाऊं
करम कर पए मुस्त़फ़ा या इलाही

हो अख़्लाक़ अच्छा हो किरदार सुथरा
मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

गुसीले मिज़ाज और तमस्ख़ुर की ख़स्लत
से अ़त्त़ार को तू बचा या इलाही

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही — न पाऊं मैं अपना पता या इलाही
रहूं मस्तो बेखुद मैं तेरी विला में — पिला जाम ऐसा पिला या इलाही
मैं बेकार बातों से बच के हमेशा — करूं तेरी हम्दो सना या इलाही
मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम — तेरे ख़ौफ़ से या खुदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा — मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही
मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर — कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही
तू अपनी विलायत की ख़ैरात दे दे — मेरे ग़ौस का वासिता या इलाही
गुनाहों ने मेरी कमर तोड़ डाली — मेरा हश्र में होगा क्या या इलाही
गुनाहों के अमराज़ से नीम जां हूं — पए मुर्शिदी दे शिफ़ा या इलाही
बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा — गुनाहों से हर दम बचा या इलाही
मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो — कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही
इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी — करम हो करम या खुदा या इलाही

मुसल्मां है अत्तार तेरी अता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

मैं मक्के में फिर आ गया या इलाही

मैं मक्के में फिर आ गया या इलाही
करम का तेरे शुक्रिया या इलाही

न कर रद कोई इल्तिजा या इलाही
हो मक़्बूल हर इक दुआ़ या इलाही

रहे ज़िक्र आठों पहर मेरे लब पर
तेरा या इलाही तेरा या इलाही

मेरी ज़िन्दगी बस तेरी बन्दगी में
ही ऐ काश गुज़रे सदा या इलाही

न हों अश्क बरबाद दुन्या के ग़म में
मुह़म्मद (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلّم) के ग़म में रुला या इलाही

अ़ता कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

मुझे औलिया की मह़ब्बत अ़ता कर
तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही

मैं यादे नबी में रहूं गुम हमेशा
मुझे उन के ग़म में घुला या इलाही

मेरे बाल बच्चों पे सारे क़बीले
पे रह़मत हो तेरी सदा या इलाही

दे अ़त्तारियों बल्कि सब सुन्नियों को
मदीने का ग़म या ख़ुदा या इलाही

ख़ुदाया अजल[1] आ के सर पर खड़ी है
दिखा जल्वए मुस्त़फ़ा या इलाही

मेरी लाश से सांप बिच्छू न लिपटें
करम अज़ तुफ़ैले रज़ा या इलाही

तू अ़त्तार को सब्ज़ गुम्बद के साए
में कर दे शहादत अ़ता या इलाही

مدینہ

1 : मौत

मुझे बख़्श दे बे सबब या इलाही

(येह कलाम 7 रबीउ़ल आख़िर 1432 हि. को मौज़ूं किया)

मुझे बख़्श दे बे सबब या इलाही
न करना कभी भी ग़ज़ब या इलाही

गुनाहों ने हाए ! कहीं का न छोड़ा
मैं कब तक फिरूं ख़्वार अब या इलाही

पए शाहे बत़्ह़ा मेरी छूट जाएं
बुरी आ़दतें सब की सब या इलाही

बड़ा ह़ज पे आने को जी चाहता है
बुलावा अब आएगा कब या इलाही

मैं मक्के में आऊं मदीने में आऊं
बना कोई ऐसा सबब या इलाही

मैं देखूं मदीने का गुलशन दिखा दे
तू दश्तो[1] जिबाले[2] अ़रब या इलाही

करम ऐसा कर दे मदीने में आ कर
गुज़ारूं मैं फिर रोज़ो शब या इलाही

दिखा दे बहारे मदीना दिखा दे
पए ताजदारे अ़रब या इलाही

सलीक़ा शिआ़री[3] का मैं हूं भिकारी
मिटे ख़ूए शोरो शग़ब[4] या इलाही

मिले बे क़रारी करूं आहो ज़ारी
तेरे ख़ौफ़ से प्यारे रब या इलाही

---

1 : मैदान, जंगल 2 : जबल की जम्अ़। पहाड़। 3 : तमीज़ दारी। 4 : शोरो गुल।

करूं आ़लिमों की कभी भी न तौहीन
बना दे मुझे बा अदब या इलाही

हुसैन इब्ने है़दर के सदके़ में मौला
टलें आफ़तें मेरी सब या इलाही

ज़माने की फ़िक्रों से आज़ाद कर दे
मिटा ग़म अ़ता कर त़रब[1] या इलाही

जो मांगा वोह दे मुझ को वोह भी अ़ता कर
नहीं कर सका जो त़लब या इलाही

मुसल्मां मुसल्मान के ख़ूं का प्यासा
हुवा वक़्त आया अ़जब या इलाही

सभी एक हो जाएं ईमान वाले
पए शाहे आ़ली नसब या इलाही

कभी तो मुझे ख़्वाब में मेरे मौला
हो दीदारे माहे अ़रब या इलाही

खुदाया बुरे ख़ातिमे से बचा ले
गुनहगार है जां बलब[2] या इलाही

नज़र में मुह़म्मद के जल्वे बसे हों
चलूं इस जहां से मैं जब या इलाही

पसे मर्ग[3] हो रोज़े रोशन की मानन्द
मेरी क़ब्र की तीरह शब[4] या इलाही

गुनाहों से अ़त्तार को दे मुआ़फ़ी
करम कर, न करना ग़ज़ब या इलाही

1 : खुशी । 2 : मरने के क़रीब । 3 : मरने के बा'द । 4 अंधेरी रात ।

मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही

मिटा मेरे रन्जो अलम या इलाही
अ़ता कर मुझे अपना ग़म या इलाही

शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे
कभी भी नशा हो न कम या इलाही

मुझे अपना आ़शिक़ बना कर बना दे
तू सर ता पा तस्वीरे ग़म या इलाही

फ़क़त़ तेरा त़ालिब हूं हरगिज़ नहीं हूं
त़लब गारे जाहो ह़शम या इलाही

न दे ताजे शाही न दे बादशाही
बना दे गदाए ह़रम या इलाही

जो इ़श्के़ मुह़म्मद में आंसू बहाए
अ़ता कर दे वोह चश्मे नम या इलाही

शरफ़ ह़ज का दे दे चले क़ाफ़िला फिर
मेरा काश ! सूए ह़रम या इलाही

दिखा दे मदीने की गलियां दिखा दे
दिखा दे नबी का ह़रम या इलाही

चले जान इस शान से काश येह सर
दरे मुस्त़फ़ा पर हो ख़म या इलाही

मेरा सब्ज़ गुम्बद के साए में निकले
(صَلَّی اللّٰہ تعالیٰ علیہ والہ وسلّم)
मुह़म्मद के क़दमों में दम या इलाही

इ़बादत में लगता नहीं दिल हमारा
हैं इ़स्यां में बद मस्त हम या इलाही

मुझे दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत पए सय्यिदे मुहूतशम या इलाही
मेरे सर पे इस्यां का बार आह मौला ! बढ़ा जाता है दम बदम या इलाही
ज़मीं बोझ से मेरे फटती नहीं है येह तेरा ही तो है करम या इलाही
हुक़ूक़ुल इबाद ! आह ! होगा मेरा क्या ! करम मुझ पे कर दे करम या इलाही
बड़ी कोशिशें की गुनह छोड़ने की रहे आह ! नाकाम हम या इलाही
मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे पए ताजदारे ह़रम या इलाही
जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही
मुझे नारे दोज़ख़ से डर लग रहा है हो मुझ ना तुवां पर करम या इलाही
सदा के लिये हो जा राज़ी खुदाया हमेशा हो लुत्फ़ो करम या इलाही
खुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना पढ़ूं कल्मा जब निकले दम या इलाही
गुनाहों से भरपूर नामा है मेरा मुझे बख़्श दे, कर करम या इलाही
तुलें मेरे आ'माल मीज़ां पे जिस दम पड़े इक भी नेकी न कम या इलाही
मैं था लाइक़े नारे दोज़ख़ खुदाया दी जन्नत है कितना करम या इलाही

बरोज़े क़ियामत हो ऐसी इनायत रहूं पुल पे साबित क़दम या इलाही

जला दे न नारे जहन्नम करम हो पए बादशाहे उमम या इलाही

गुनाहों की आ़दत बढ़ी जा रही है करम या इलाही करम या इलाही

गुनाहों की तारीकियां छा गई हैं करम या इलाही करम या इलाही

चले क़ब्र में सब अकेला लिटा कर करम या इलाही करम या इलाही

नकीरैन भी क़ब्र में आ चुके हैं करम या इलाही करम या इलाही

क़ियामत की गर्मी में कैसे सहूंगा करम या इलाही करम या इलाही

यहूदो नसारा को मग़्लूब कर दे हो ख़त्म उन का जोरो सितम या इलाही

मुझे दोनों[2] आ़लम की खुशियां अ़ता हों मिटा दे ज़माने के ग़म या इलाही

जो बीमार आए शिफ़ा पा के जाए सिखा दे मुझे ऐसा दम या इलाही

मैं तह़रीर से दीं का डंका बजा दूं अ़ता कर दे ऐसा क़लम या इलाही

तू अ़त्तार को बे सबब बख़्श मौला
करम कर करम कर करम या इलाही

या रब्बे मुहम्मद मेरी तक्दीर जगा दे

या रब्बे मुहम्मद मेरी तक्दीर जगा दे सहराए मदीना मुझे आंखों से दिखा दे

पीछा मेरा दुन्या की महब्बत से छुड़ा दे या रब मुझे दीवाना मदीने का बना दे

रोता हुवा जिस वक्त मैं दरबार में पहुंचूं उस वक्त मुझे जल्वए महबूब दिखा दे

दिल इश्के मुहम्मद में तड़पता रहे हर दम सीने को मदीना मेरे अल्लाह बना दे

बहती रहे अक्सर शहे अबरार के ग़म में रोती हुई वोह आंख मुझे मेरे खुदा दे

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे

देता हूं तुझे वासिता मैं प्यारे नबी का उम्मत को खुदाया रहे सुन्नत पे चला दे

अल्लाह मिले हज की इसी साल सआदत बदकार को फिर रौज़ए महबूब दिखा दे

अत्तार से महबूब की सुन्नत की ले ख़िदमत
डंका येह तेरे दीन का दुन्या में बजा दे

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

(हिफ़्ज़ व नाज़िरा के त़-लबा की मुनाजात)

अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे
क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

हो जाया करे याद सबक़ जल्द इलाही !
मौला तू मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ बना दे

सुस्ती हो मेरी दूर उठूं जल्द सवेरे
तू मद्रसे में दिल मेरा अल्लाह ! लगा दे

हो मद्रसे का मुझ से न नुक़्सान कभी भी
अल्लाह ! यहां के मुझे आदाब सिखा दे

छुट्टी न करूं भूल के भी मद्रसे की मैं
अवक़ात का भी मुझ को तू पाबन्द बना दे

उस्ताद हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़
आ़दत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे

ख़स्लत हो मेरी दूर शरारत की इलाही !

सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे

उस्ताद की करता रहूं हर दम मैं इताअ़त

मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा दे

कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़

मौला तू मदीना मेरे सीने को बना दे

फ़िल्मों से डिरामों से दे नफ़रत तू इलाही

बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें

अल्लाह ! इबादत में मेरे दिल को लगा दे

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं

और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

हर काम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मैं करूं काश !

या रब तू मुबल्लिग़ मुझे सुन्नत का बना दे

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं

अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा

चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा

महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

उस्ताद हों, मां बाप हों, अ़त्तार भी हो साथ

यूं ह़ज को चलें और मदीना भी दिखा दे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :
जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ** दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो साल** के गुनाह मुआ़फ़ होंगे ।
(كَنْزُ الْعُمّال ج۱ ص۲۵٦ حديث۲۲۳۸)

अल्लाह ! मुझे आ़लिमए दीन बना दे[1]

(दा'वते इस्लामी के कई मद्र-सतुल मदीना (लिल बनात) और जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) हैं, खुसूसन उन की त़ालिबात और उ़मूमन तमाम दीनी त़ालिबात के लिये नज़्म)

अल्लाह ! मुझे आ़लिमए दीन बना दे[2]
कुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

हो जाया करे काश मुझे जल्द सबक़ याद
मौला तू मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ बना दे

सुस्ती हो मेरी दूर मैं उठ जाऊं सवेरे
तू दिल मेरा ता'लीम में अल्लाह लगा दे

हो जामिआ़ का मुझ से न नुक़्सान कभी भी
अल्लाह ! यहां के मुझे आदाब सिखा दे

---

1 : वाज़ेह़ रहे कि साबिक़ा सफ़ह़ात में येह कलाम कुछ तग़य्युर के साथ मुज़क्कर के लिये कहा गया है उम्मीद है कि ज़रूरी तफ़्रीक़ के साथ दोनों कलाम अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा होने में क़ारिईन को सहूलत रहेगी।

2 : ह़िफ़्ज़ करने वाली त़ालिबात येह मिस्रअ़ यूं भी पढ़ सकती हैं "अल्लाह ! मुझे ह़ाफ़िज़ा कुरआं की बना दे"

छुट्टी न करूं भूल के पढ़ने की कभी भी
मौला मुझे अवक़ात की पाबन्द बना दे

उस्तानी हों मौजूद या बाहर कहीं मसरूफ़
आ़दत तू मेरी शोर मचाने की मिटा दे

ख़स्लत हो शरारत की मेरी दूर इलाही !
सन्जीदा बना दे मुझे सन्जीदा बना दे

उस्तानी की करती रहूं हर दम मैं इत़ाअ़त
मां बाप की इ़ज़्ज़त की भी तौफ़ीक़ ख़ुदा दे

कपड़े मैं रखूं साफ़ तू दिल को मेरे कर साफ़
अल्लाह ! मदीना मेरे सीने को बना दे

फ़िल्मों से डिरामों से अ़त़ा कर दे तू नफ़रत
बस शौक़ मुझे ना'तो तिलावत का ख़ुदा दे

अवक़ात के अन्दर ही पढ़ूं सारी नमाज़ें
अल्लाह ! इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे

पढ़ती रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

सुन्नत के मुताबिक़ मैं हर इक काम करूं काश !
तू पैकरे सुन्नत मुझे अल्लाह ! बना दे

मैं झूट न बोलूं कभी गाली न निकालूं !
अल्लाह मरज़ से तू गुनाहों के शिफ़ा दे

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

अख़्लाक़ हों अच्छे मेरा किरदार हो सुथरा
महबूब का सदक़ा तू मुझे नेक बना दे

उस्तानी हों मां बाप हों अ़त्तार भी हो साथ
यूं ह़ज को चलें और मदीना भी दिखा दे

अल्लाह ! कोई ह़ज का सबब अब तो बना दे

अल्लाह ! कोई ह़ज का सबब अब तो बना दे
जल्वा मुझे फिर गुम्बदे ख़ज़्रा का दिखा दे

ग़म ऐसा मदीने का अ़त़ा कर दे इलाही
खुशियों[1] के गुलिस्तान को जो मेरे जला दे

या रब ! मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम
दीवाना शहन्शाहे मदीना का बना दे

जब ना'त सुनूं झूम उठूं इश्क़े नबी में (صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم)
ऐसा मुझे मस्ताना मुह़म्मद का बना दे

सदक़े में मेरे ग़ौस के तू ख़्वाब में या रब
जल्वा मुझे सुल्त़ाने मदीना का दिखा दे

---

1 : यहां अल्लाह व रसूल से दूरी का सबब बनने वाली ग़फ़्लत भरी "खुशियां" मुराद हैं।

सक्रात में गर रूए मुह़म्मद पे नज़र हो
हर मौत का झटका भी मुझे फिर तो मज़ा दे

जब ह़श्र में आक़ा नज़र आएं मुझे ऐ काश !
बे साख़्ता क़दमों में मेरा शौक़ गिरा दे

उफ़ ह़श्र की गर्मी भी है और प्यास बला की
ऐ साक़िये कौसर मुझे इक जाम पिला दे

हर वक़्त जहां से कि उन्हें देख सकूं मैं
जन्नत में मुझे ऐसी जगह प्यारे ख़ुदा दे

अल्लाह ! मुझे सोज़ो गुदाज़ ऐसा अ़ता कर
तड़पा दे बयां ना'ते नबी मुझ को रुला दे

तू पीछे न हटना कभी ऐ प्यारे मुबल्लिग़ !
शैत़ान के हर वार को नाकाम बना दे

अ़त्तार हूं मैं उन का गदा अब तो तवज्जोह
बस जानिबे शाहाने जहां मेरी बला दे

तू ने मुझ को ह़ज पे बुलाया या अल्लाह मेरी झोली भर दे

तू ने मुझ को ह़ज पे बुलाया या अल्लाह मेरी झोली भर दे

गिर्दे का'बा ख़ूब फिराया या अल्लाह मेरी झोली भर दे

मैदाने अ़-रफ़ात दिखाया या अल्लाह मेरी झोली भर दे

बख़्श दे हर ह़ाजी को खुदाया या अल्लाह मेरी झोली भर दे

बहरे कौसरो बीरे ज़मज़म कर दे करम ऐ रब्बे अकरम

ह़श्र की प्यास से मुझ को बचाना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

मौला मुझ को नेक बना दे अपनी उल्फ़त दिल में बसा दे

बहरे सफ़ा और बहरे मर्वा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

या अल्लाहु या रह़मानु या ह़न्नानु या मन्नानु

बख़्श दे बख़्शे हुओं का सदक़ा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

वासिता़ नबियों के सरवर का वासिता़ सिद्दीक़ और उ़मर का

वासिता़ उ़स्मानो ह़ैदर का या अल्लाह मेरी झोली भर दे

नारे जहन्नम से तू बचाना खुल्दे बरीं में मुझ को बसाना

या रब अज़ पए शाहे मदीना या अल्लाह मेरी झोली भर दे

साइल हूं मैं तेरी विला[1] का फेर दे रुख़ हर रन्जो बला का

---

1 : महब्बत

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
वासिता शाहे कर्बो बला का

आंखें तर हों फटता जिगर हो
जिस दम सूए त़यबा सफ़र हो

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
और अ़त़ा हो सोज़िशे सीना

क़ल्बो जिगर हों पारा पारा
सामने जब हो गुम्बदे ख़ज़रा

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
बह निकले अश्कों का धारा

सोज़ दे और दर्दो रिक़्क़त दे
शाहे मदीना की उल्फ़त दे

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
इ़श्क़े नबी में ख़ूब रुलाना

तू है क़ादिर मैं नाकारा
मैं हूं बन्दा तू है मौला

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
मैं मंगता तू देने वाला

ग़ौस का सदक़ा मुझ को बना दे
सोज़े उवैसो बिलाल ख़ुदा दे

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
शाहे मदीना का दीवाना

या रब ! तेरा ही है सहारा
ह़ाज़िरे दर हूं मैं दुखियारा

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
रन्जो अलम ने मुझ को मारा

है येह दुआ़ हो क़ब्र न सूनी
है तेरा फ़रमां اُدْعُوْنِیْ [1]

या अल्लाह मेरी झोली भर दे
जल्वए यार से इस को बसाना

---

1 : इस आयते करीमा की त़रफ़ इशारा : وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پ۲٤ المؤمن:٦٠) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** "और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।"

दे हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत — कर दे अ़ता इख़्लास की ने'मत
मुझ को ख़ज़ाना दे तक़्वा का — या अल्लाह मेरी झोली भर दे
बख़्श दे मेरी सारी ख़ताएं — खोल दे मुझ पर अपनी अ़ताएं
बरसा दे रह़मत की बरखा[1] — या अल्लाह मेरी झोली भर दे
दा'वते इस्लामी की क़य्यूम — इक इक घर में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा — या अल्लाह मेरी झोली भर दे
यूं मेरा दुन्या से सफ़र हो — उन की चौखट[2] मेरा सर हो
पेशे नज़र हो उन का जल्वा — या अल्लाह मेरी झोली भर दे
ताजो तख़्तो हुकूमत मत दे — कस्रते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा[3] का दे दे मुज़्दा[4] — या अल्लाह मेरी झोली भर दे

जन्नत में आक़ा का पड़ोसी
बन जाए अ़त्तार इलाही
मौला अज़ पए क़ुत़्बे मदीना
या अल्लाह मेरी झोली भर दे

---

1 : बारिश 2 : दरवाज़ा 3 : राज़ी होना 4 : ख़ुश ख़बरी

या इलाही ! दुआ़ है गदा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(16 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि. ब मुता़बिक़ 12-12-2011)

या इलाही ! दुआ़ है गदा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
जल्वए सरवरे अम्बिया की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

सब्ज़ गुम्बद की महकी फ़ज़ा की दीदे दरबारे ख़ैरुल वरा की
बागे़ त़यबा की ठन्डी हवा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

भीक दे उल्फ़ते मुस्त़फ़ा की सब सह़ाबा की आले अ़बा[1] की
ग़ौसो ख़्वाजा की अह़मद रज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

कोई ह़ज का सबब अब बना दे मुझ को का'बे का जल्वा दिखा दे
दीदे अ़-रफ़ातो दीदे मिना की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

दे मदीने की मुझ को गदाई हो अ़त़ा दो जहां की भलाई
है सदा आ़जिज़ो बे नवा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

हा़ज़िरी के लिये जो भी तड़पे सब्ज़ गुम्बद का दीदार कर ले
उस को त़यबा की महकी फ़ज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

आ़ज़िमे राहे बग़दाद कर दे जल्वए ग़ौस से शाद कर दे
मुझ को दीदारे कर्बो बला की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

हर दम इब्लीस पीछे लगा है हि़फ़्ज़े ईमान की इल्तिजा है

---

1 : सय्यिदुना अ़ली, सय्यि-दतुना बीबी फ़ाति़मा, सय्यिदुना इमामे ह़सन और सय्यिदुना इमामे हुसैन عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को "आले अ़बा" कहते हैं।

हो करम अम्ने रोज़े जज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
मग़्फ़िरत कर बरोज़े क़ियामत तू करम कर अ़ता कर इनायत
ख़ुल्द में क़ुर्बे ख़ैरुल वरा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
बारह मह के मुसाफ़िर बने हैं या जो "वक़्फ़े मदीना"[1] हुए हैं
उन को इश्क़े शहे दोंसरा[2] की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
वोह बिचारे कि बीमार हैं जो जिन्नो जादू से बेज़ार हैं जो
अपनी रह़मत से उन को शिफ़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
वोह कि आफ़ात में मुब्तला हैं जो गिरिफ़्तारे रन्जो बला हैं
फ़ज़्ल से उन को सब्रो रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
ला दवा कह चुके सब त़बीब अब दम लबों पर है रब्बे मुजीब अब
जल्वए शाहे अर्ज़ो समा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
क़ब्र तेरे करम से बनेगी बाग़, रह़मत की चादर तनेगी
रोज़े मह़शर भी लुत़्फ़ो अ़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
रूह़, अ़त्तार की जब जुदा हो सामने जल्वए मुस्त़फ़ा हो
उन के क़दमों में इस को क़ज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

1 : ऐसे बे शुमार आ़शिक़ाने रसूल हैं जिन्हों ने दीन के म-दनी कामों की ख़ात़िर अपने आप को उ़म्र भर के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी मर्कज़ के ह़वाले कर दिया है। ऐसे ख़ुश नसीबों को दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में "वक़्फ़े मदीना" कहते हैं।

लाज रख मेरे दस्ते दुआ़ की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(16 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि. ब मुताबिक़ 12-12-2011)

लाज रख मेरे दस्ते दुआ़ की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
अपनी रह़मत की अपनी अ़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

क़ल्ब में याद तेरी बसी हो ज़िक्र लब पर तेरा हर घड़ी हो
मस्तियो बे ख़ुदी और फ़ना[1] की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

करना रह़मत ख़ुदा मुझ पे अपनी रख इनायत सदा मुझ पे अपनी
दाइमी[2] और ह़त्मी[3] रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

नफ़्स ने लज़्ज़तों में फंसाया मुझ पे लुत्फ़ो करम हो ख़ुदाया
दिल से चाहत मिटा मा सिवा[4] की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म विलायत अपनी रह़मत से फ़रमा इनायत
अपनी, अपने नबी की विला की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

---

1 : फ़ना फ़िल्लाह। 2 : हमेशा के लिये 3 : मुस्तक़िल 4 : ख़ास इस्तिलाह़ के ए'तिबार से हर वोह चीज़ जो ख़ुदा से दूर ले जाने वाली है उसे "मा सिवा" कहते हैं।

हा़ल आ़सी का बेह़द बुरा है तेरी रह़मत का बस आसरा है

अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

मैं गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं बद से बदतर हूं बिगड़ा हुवा हूं

अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

है येह तस्लीम सब से बुरा हूं मैं सुधरना ख़ुदा चाहता हूं

अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

हो करम अज़ तुफ़ैले मदीना मैं न हरगिज़ फिरूं कर के तौबा

अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़ता की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

बात इ़स्यां से मैं ने बिगाड़ी दिल की हाथों से बस्ती उजाड़ी

लुत़्फ़ो रह़मत की अ़फ़्वो[1] अ़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

---

1 : मुआ़फ़ी

तेरे डर से सदा थर-थराऊं
खौ़फ़ से तेरे आंसू बहाऊं
कैफ़ ऐसा दे, ऐसी अदा की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

मक्रे शैत़ान से तू बचाना
साथ ईमां के मुझ को उठाना
नज़्अ़ में दीदे बदरुद्दुजा की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

फिर अ़रब की ह़सीं वादियां हों
काश ! मक्के की शादाबियां हों
मुझ को दीदारे सौरो ह़िरा की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

दे दे पर्दा बहू बेटियों को
मांओं बहनों सभी औ़रतों को
हम सभी को ह़क़ीक़ी ह़या की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

अब तक औलाद से जो हैं महरूम
उन की भर गोद ऐ रब्बे क़य्यूम
सब को रह़मत की अपनी अ़ता की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

जग-मगाती रहे क़ब्रे अ़त्तार
ऐ रह़ीम और सत्तारो ग़फ़्फ़ार
ता अबद फ़ज़्लो रह़मो अ़ता की
मेरे मौला तू खै़रात दे दे

ह़ज का शरफ़ हो फिर अ़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

(15 जुमादल उख़्रा 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 25-04-2013)

ह़ज का शरफ़ हो फिर अ़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा
मीठा मदीना फिर दिखा या रब्बे मुस्त़फ़ा

मिल जाए अब रिहाई फ़िराके़ मदीना से
हो येह करम, हो येह अ़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

दे दे त़वाफ़े ख़ानए का'बा का फिर शरफ़
फ़रमा येह पूरा मुद्दआ़ या रब्बे मुस्त़फ़ा

रुख़ सूए का'बा हाथ में ज़मज़म का जाम हो
पी कर मैं फिर करूं दुआ़ या रब्बे मुस्त़फ़ा

फिर क़ाफ़िला इलाही बने "चल मदीना" का
अह़मद रज़ा का वासित़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

सब अहले ख़ाना साथ में हों काश ! चल पड़े
सूए मदीना क़ाफ़िला या रब्बे मुस्त़फ़ा

हों साथ में नवासियां और इन के वालिदैन
चल दे मदीने क़ाफ़िला या रब्बे मुस्त़फ़ा

हों साथ पोते पोतियां और इन के वालिदैन
चल दे मदीने क़ाफ़िला या रब्बे मुस्त़फ़ा

दीवाने मुस्त़फ़ा के मेरे साथ साथ हों
चल दे मदीने क़ाफ़िला या रब्बे मुस्त़फ़ा

रोती रहे जो हर घड़ी इश्क़े रसूल में
वोह आंख दे दे या ख़ुदा या रब्बे मुस्त़फ़ा

ऐ काश ! मुझ को ख़्वाब में हो जाए एक बार
दीदारे शाहे अम्बिया या रब्बे मुस्त़फ़ा

हों ख़त्म मेरे मुल्क से तख़रीब कारियां
अम्नो अमान हो अ़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

दुन्या के झगड़े ख़त्म हों और मुश्किलें टलें
सदक़ा ह़सन हुसैन का या रब्बे मुस्त़फ़ा

गो जां को ख़त्रा है मेरी इमदाद पर है तू
फिर दुश्मनों का ख़ौफ़ क्या या रब्बे मुस्त़फ़ा

इस त़रह़ फैले नेकी की दा'वत कि नेक हो
हर एक छोटा और बड़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

बे पर्दगी का ख़ातिमा हो औ़रतों को दे
ज़ेवर ह़या व शर्म का या रब्बे मुस्त़फ़ा

हर माह म-दनी क़ाफ़िले में सब करें सफ़र
अल्लाह ! जज़्बा कर अ़ता या रब्बे मुस्त़फ़ा

अह़कामे शर-अ़ पर मुझे दे दे अ़मल का शौक़
पैकर ख़ुलूस का बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

"कुफ़्ले मदीना" लब पे हो और येह शरफ़ मिले
हर दम करूं तेरी सना या रब्बे मुस्त़फ़ा

हो जाएं मौला मस्जिदें आबाद सब की सब
सब को नमाज़ी दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

ग़ीबत से और तोह्मतो चुग़ली से दूर रख
ख़ूगर तू सच का दे बना या रब्बे मुस्त़फ़ा

उ़ज्बो तकब्बुर और बचा हुब्बे जाह से
आए न पास तक रिया या रब्बे मुस्त़फ़ा

अमराज़े इस्यां ने मुझे कर नीम जां दिया
मुर्शिद का सदक़ा दे शिफ़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

जूं ही गुनाह करने लगूं, तेरे ख़ौफ़ से
फ़ौरन उठूं मैं थरथरा या रब्बे मुस्त़फ़ा

तेरी ख़शिय्यत और तेरे डर से, ख़ौफ़ से
हर दम हो दिल येह कांपता या रब्बे मुस्त़फ़ा

दे नज़्ओ़ क़ब्रो ह़श्र में हर जा अमान, और
दोज़ख़ की आग से बचा या रब्बे मुस्त़फ़ा

आंखों में जल्वा शाह का और लब पे ना'त हो
जब रूह़ तन से हो जुदा या रब्बे मुस्त़फ़ा

ऐ काश ! ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा पए ज़िया

ईमान पर हो ख़ातिमा या रब्बे मुस्त़फ़ा

मुझ को बक़ीए़ पाक में मदफ़न नसीब हो

ग़ौसुल वरा का वासित़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

जिस दम वोह आएं क़ब्र में, मेरी ज़बान पर

बस मरह़बा की हो सदा या रब्बे मुस्त़फ़ा

मह़शर में पुल सिरात़ पे मेरे क़दम कहीं

जाएं फिसल न या ख़ुदा या रब्बे मुस्त़फ़ा

फ़िरदौस में पड़ोस दे अपने ह़बीब का

मौला अ़ली का वासित़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

तू बे ह़िसाब बख़्श दे अ़त्तारे ज़ार को

तुझ को नबी का वासित़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

सर है ख़म हाथ मेरा उठा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

(येह कलाम 8 शव्वालुल मुकर्रम 1431 हि. को कम्पोज़ किया गया)

सर है ख़म हाथ मेरा उठा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

फ़ज़्ल की रहूम की इल्तिजा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

क़ल्ब में याद लब पर सना है
मेरे हर दर्द की येह दवा है

कौन दुखियों का तेरे सिवा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

क़ल्ब सख़्ती में हद से बढ़ा है
बन्दा तालिब तेरे ख़ौफ़ का है

इल्तिजाए ग़मे मुस्तफ़ा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

हुब्बे दुन्या में दिल फंस गया है
नफ़्से बदकार हावी हुवा है

हाए शैतां भी पीछे पड़ा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

आह ! बन्दा दुखों में घिरा है
इस को तेरा ही बस आसरा है

इल्तिजाए करम या ख़ुदा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

तेरा इन्आम है या इलाही
कैसा इक्राम है या इलाही

हाथ में दामने मुस्तफ़ा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

इश्क़ दे सोज़ दे चश्मे नम दे
मुझ को मीठे मदीने का ग़म दे

वासिता गुम्बदे सब्ज़ का है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

हर गुनह से बचा मुझ को मौला
नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला

तुझ को र-मज़ान का वासिता है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

फ़ज़्ल कर रह्म कर तू अ़ता कर
और मुआफ़ ऐ खुदा हर ख़ता कर

वासिता पन्जतन पाक का है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

अ़फ़्वो रह़मत का बख़्शिश का साइल
हूं निहायत गुनहगारो ग़ाफ़िल

मेरा सब ह़ाल तुझ पर खुला है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

हूं ब ज़ाहिर बड़ा नेक सूरत
कर भी दे मुझ को अब नेक सीरत

ज़ाहिर अच्छा है बातिन बुरा है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

बे सबब ऐ खुदा कर दे बख़्शिश
ह़श्र में मुझ से करना न पुरसिश

नाम ग़फ़्फ़ार मौला तेरा है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

मुझ ख़ताकार पर भी अ़ता कर
बे सबब बख़्श दे रब्बे अक्बर

मुझ को दोज़ख़ से डर लग रहा है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

नज़्अ़ में रब्बे ग़फ़्फ़ार तुझ से
मौत से क़ब्ल बीमार तुझ से

त़ालिबे जल्वए मुस्त़फ़ा है
या खुदा तुझ से मेरी दुआ है

क़ब्र में मुझ को तन्हा लिटा कर — चल दिये हाए सारे बरादर
दिल अंधेरे में घबरा रहा है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मग़्फ़िरत का हूं तुझ से सुवाली — फेरना अपने दर से न ख़ाली
मुझ गुनहगार की इल्तिजा है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

मेरे मुर्शिद जो ग़ौसुल वरा हैं — शाह अह़मद रज़ा रहनुमा हैं
येह तेरा लुत्फ़ तेरी अ़ता है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

नारे दोज़ख़ से मुझ को अमां दे — मग़्फ़िरत कर के बाग़े जिनां दे
कर दे रह़मत मेरी इल्तिजा है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

वासित़ा तुझ को प्यारे नबी का — और अस्ह़ाबो आले नबी का
बख़्श दे मुझ को येह इल्तिजा है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

या खुदा माहे र-मज़ां के सदक़े — सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
नेक बन जाऊं जी चाहता है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

दर्दे इ़स्यां मिटा या इलाही — दे दे कामिल शिफ़ा या इलाही
तुझ से बीमार की इल्तिजा है — या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

जो हैं बीमार सिह़ह़त के त़ालिब — उन पे फ़रमा करम रब्बे ग़ालिब

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
तुझ से रहमो करम की दुआ है

किस का हूं ? तेरा हूं मैं तेरा हूं
मैं ने माना कि सब से बुरा हूं

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
नाज़ रह़मत पे मुझ को बड़ा है

ह़श्र में भी न अब आंच आए
ऐब दुन्या में तू ने छुपाए

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
आह ! नामा मेरा खुल रहा है

हाए ! फिर भी नहीं शर्मसारी
उ़म्र बदियों में सारी गुज़ारी

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
बख़्श महबूब का वासित़ा है

और ईमान पर ख़ातिमा हो
विर्दे लब कल्मए त़य्यिबा हो

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
आ गया हाए ! वक़्ते क़ज़ा है

काश मक्के मदीने में जाऊं
या ख़ुदा ऐसे अस्बाब पाऊं

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
मुझ को अरमान ह़ज का बड़ा है

या इलाही मुझे दे सहारा
आह ! रन्जो अलम ने है मारा

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
एक ग़मगीन दिल की सदा है

मूज़ी अमराज़ से भी बचाना
मेरी जान आफ़तों से छुड़ाना

या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
तुझ को सिद्दीक़ का वासित़ा है

मेरे अख़्लाक़ भी ठीक कर दे तू अ़ता हि़ल्म की भीक कर दे
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है तुझ को फ़ारूक़ का वासिता़ है

इस से ले फ़ज़्ल से रब्बे ग़फ़्फ़ार गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है

पर है सैलाब[1] की आई आफ़त तेरे प्यारे की दुख्यारी उम्मत
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है रह़्म कर बस तेरा आसरा है

आफ़तों ने लगाया है डेरा हर त़रफ़ से बलाओं ने घेरा
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है तू ही अब मेरा ह़ाजत रवा है

उस के ह़क़ में जो बेहतर हो कर दे उस की झोली मुरादों से भर दे
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है जिस ने मुझ से दुआ़ का कहा है

हुब्बे दुन्या से खुद को बचाऊं इ़श्क़े अह़मद में आंसू बहाऊं
या खुदा तुझ से मेरी दुआ़ है ऐसी तौफ़ीक़ दे इल्तिजा है

दीनो ईमां भी रखना सलामत मेरी दुश्मन से फ़रमा ह़िफ़ाज़त

---

1 : यहां "सैलाब" की जगह ह़स्बे ह़ाल "महंगाई" भी पढ़ सकते हैं।

दस्त बस्ता मेरी इल्तिजा है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
मेह्रबां तू ही, तू ही मददगार　　उस दुखी दिल का तू ह़ामिये कार
जिस को दुन्या ने ठुकरा दिया है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
सख़्त गोई की मिट जाए ख़स्लत　　नर्म गोई की पड़ जाए आ़दत
वासित़ा ख़ुल्क़े मह़बूब का है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
सुन्नतों की करूं ख़ूब ख़िदमत　　हर किसी को दूं नेकी की दा'वत
नेक मैं भी बनूं इल्तिजा है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
क़ाफ़िलों में सफ़र की हो कसरत　　हम से यूं दीन की ले ले ख़िदमत
आ़जिज़ाना इलाही दुआ है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है
मेरी बकबक की आ़दत मिटा दे　　और आंखें ह़या से झुका दे
सदक़ा उ़स्मां का जो बा ह़या है　　या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

या इलाही कर ऐसी इ़नायत
दे दे ईमान पर इस्तिक़ामत
तुझ से अ़त्त़ार की इल्तिजा है
या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ है

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है

ठन्डी ठन्डी हवा ह़रम की है बारिश अल्लाह के करम की है
आमिना के मकां पे रोज़ो शब बारिश अल्लाह के करम की है
जो ह़रम का अदब करें उन पर बारिश अल्लाह के करम की है
नूरी चादर तनी है का'बे पर बारिश अल्लाह के करम की है
मुल्तज़म और बीरे ज़मज़म पर बारिश अल्लाह के करम की है
बाबो मीज़ाबो ह़जरे अस्वद पर बारिश अल्लाह के करम की है
मुस्तजार और रुक्ने शामी पर बारिश अल्लाह के करम की है
कैसा रुक्ने इराक़ी है निखरा बारिश अल्लाह के करम की है
मुस्तजाबो ह़त़ीम पर बेशक बारिश अल्लाह के करम की है
रह़मतें हैं मत़ाफ़ पर भी और बारिश अल्लाह के करम की है
पाक घर के त़वाफ़ वालों पर बारिश अल्लाह के करम की है
मक्कए पाक पर मदीने पर बारिश अल्लाह के करम की है
सब्ज़ गुम्बद पे रह़मतें हैं और बारिश अल्लाह के करम की है
का'बए पाक पर मनारों पर बारिश अल्लाह के करम की है
उन के मेह़राब और मिम्बर पर बारिश अल्लाह के करम की है
या इलाही ! ग़मे मदीना दे इल्तिजा मुस्त़फ़ा के ग़म की

क़ल्बे मुज़्तर की लाज रख मौला
येह सदा मेरी चश्मे नम की है

जो नज़र आ रही है हर जानिब
सब बहार उन के दम क़दम की है

मेरे मौला ग़मे मदीना ही
आबरू मेरी चश्मे नम की है

सोज़िशे सीना व जिगर दे दे
आरज़ू मुझ को चश्मे नम की है

ख़ूं रुलाए सदा तेरी उल्फ़त
आरज़ू ऐसी चश्मे नम की है

आफ़तों से बचा ले या अल्लाह
मुझ पे यलग़ार[1] रन्जो ग़म की है

बिगड़ी तक़्दीर अभी संवर जाए
देर इक जुम्बिशे क़लम की है

"क़ाफ़िलों" में सफ़र करो यारो !
बिल-यक़ीं राह येह इरम की है

सारे अपनाओ "म-दनी इन्आमात"
गर तुम्हें आरज़ू इरम की है

लाइक़े नार हैं मेरे आ'माल
इल्तिजा या ख़ुदा करम की है

अपनी उम्मत की मग़्फ़िरत हो जाए
आरज़ू शाफ़ेए उमम की है

बख़्श दे अब तो मुझ को या अल्लाह
येह दुआ तुझ से चश्मे नम की है

दे दे "क़ुफ़्ले मदीना" या अल्लाह
हो करम इल्तिजा करम की है

काश ! हर साल हज करे अत्तार
अर्ज़ बदकार पर करम की है

---

1 : हम्ला

ना'तिया शाइरी करना कैसा ?

सुवाल : ना'तिया शाइरी करना कैसा है ?

जवाब : सुन्नते सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان है। या'नी बा'ज़ सहाबा म-सलन हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और हज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ वग़ैरहुमा से ना'तिया अश्आर लिखना साबित है। ताहम येह ज़ेहन में रहे कि **ना'त शरीफ़** लिखना निहायत मुश्किल फ़न है, इस के लिये माहिरे फ़न आलिमे दीन होना चाहिये, वरना आलिम न होने की सूरत में रदीफ़, क़ाफ़िया और बह्र (या'नी शे'र का वज़्न) वग़ैरा को निभाने के लिये ख़िलाफ़े शान अल्फ़ाज़ तरतीब पा जाने का ख़दशा रहता है। अ़वामुन्नास को **शाइरी** का शौक़ चराना मुनासिब नहीं कि नस्र के मुक़ाबले में नज़्म में **कुफ़्रिय्यात** के सुदूर का ज़ियादा अन्देशा रहता है। अगर शर-ई अग़लात़ से कलाम मह़फ़ूज़ रह भी गया तो "फ़ुज़ूलियात" से बचने का ज़ेहन बहुत कम लोगों का होता है। जी हां आज कल जिस त़रह़ आ़म गुफ़्त-गू में फ़ुज़ूल अल्फ़ाज़ की भरमार पाई जाती है इसी त़रह़ "बयान" और "ना'तिया कलाम" में भी होता है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 232, मक-त-बतुल मदीना)

ना'त व इस्तिग़ासात

आमदे मुस्त़फ़ा मरह़बा मरह़बा

आमदे मुस्त़फ़ा मरह़बा मरह़बा अह़मदे मुज्तबा मरह़बा मरह़बा
या शफ़ीअ़ल वरा मरह़बा मरह़बा ख़ा-तमुल अम्बिया मरह़बा मरह़बा
या रसूले ख़ुदा मरह़बा मरह़बा जान तुम पर फ़िदा मरह़बा मरह़बा
आए शम्सुद्दुह़ा मरह़बा मरह़बा शाहे बदरुद्दुजा मरह़बा मरह़बा
आए नूरुल हुदा मरह़बा मरह़बा शाहे ख़ैरुल वरा मरह़बा मरह़बा
आए मुश्किल कुशा मरह़बा मरह़बा मेरे ह़ाजत रवा मरह़बा मरह़बा
रहबरो रहनुमा मरह़बा मरह़बा शाहे हर दो सरा मरह़बा मरह़बा
रह़मते किब्रिया मरह़बा मरह़बा शाहे अर्ज़ो समा मरह़बा मरह़बा
या ह़बीबे ख़ुदा मरह़बा मरह़बा सय्यिदुल अत्क़िया मरह़बा मरह़बा
राह़ते आमिना मरह़बा मरह़बा वालिदे फ़ात़िमा मरह़बा मरह़बा
आए सदरुल उ़ला मरह़बा मरह़बा सब लगाओ सदा मरह़बा मरह़बा
ऐ सिराजे मुनीर ऐ अ़लीमो ख़बीर सरवरे अम्बिया मरह़बा मरह़बा
आमिना के यहां शाहे कौनो मकां आए गुल पड़ गया मरह़बा मरह़बा
सर पे ताजे शफ़ाअ़त है जिन के वोह आज आ गए मरह़बा मरह़बा मरह़बा
आए प्यारे नबी हर त़रफ़ थी ख़ुशी चार सू शोर था मरह़बा मरह़बा

ठन्डी ठन्डी हवा महकी महकी फ़ज़ा — गुनगुनाती सबा मरहबा मरहबा
फूल खिलने लगे ना'त कहने लगे — हर शजर झूम उठा मरहबा मरहबा
अब्रे रहमत उठा और बरसने लगा — कैफ़ सा छा गया मरहबा मरहबा
चार सू चांदनी हर तरफ़ रोशनी — जा बजा नूर था मरहबा मरहबा
थी हवा मुश्कबार आई हर सू बहार — निखरी निखरी फ़ज़ा मरहबा मरहबा
वाइज़े खुश बयां उन का हर ना'त ख़्वां — कहता है कहता था मरहबा मरहबा
है बड़ा मर्तबा माहे मीलाद का — इस में क्या शक भला मरहबा मरहबा
मुंह उजाला हुवा बोलबाला हुवा — हर मुसल्मान का मरहबा मरहबा
हर सनम[1] गिर पड़ा का'बा कहने लगा — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
दूर अंधेरा हुवा लो सवेरा हुवा — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
धूम सल्ले अ़ला की मची चार सू — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
बे क़रारो सुनो दिल फ़िगारो[2] सुनो — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
मर्ग़-ज़ारो[3] सुनो रेगज़ारो सुनो — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
गुल इज़ारो[4] सुनो माह पारो सुनो — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा
शानदारो सुनो जानदारो सुनो — आ गए मुस्तफ़ा मरहबा मरहबा

---

1 : बुत 2 : ज़ख़्मी दिल वालो 3 : मर्ग़ या'नी हरी घास "मर्ग़-ज़ार" या'नी जहां हरी घास फैली हुई हो। 4 : फूल जैसे गाल वाला बच्चा, ख़ूब सूरत बच्चा

ऐ दुलारो सुनो मेरे प्यारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
मेरे यारो सुनो दोस्त दारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
आबशारो सुनो तेज़ धारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
शाख़सारो[1] सुनो ख़ारज़ारो[2] सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
ऐ बहारो सुनो तुम नज़ारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
चांद तारो सुनो तुम भी ग़ारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
लालाज़ारो[3] सुनो तुम बहारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
ताजदारो सुनो मालदारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
ऐ कहारो[4] सुनो तुम सुनारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
हो-नहारो सुनो होशियारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
राज़दारो सुनो रोज़ादारो सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
कामदारो[5] सुनो कामगारो[6] सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
शह सुवारो[7] सुनो नामदारो[8] सुनो आ गए मुस्तफ़ा मरह़बा मरह़बा
ईदे मीलाद है किस क़दर शाद है क़ल्बे, अ़त्तार का मरह़बा मरह़बा

---

1 : दरख़्तों का झुन्ड 2 : कांटों भरा जंगल 3 : या'नी गुलज़ार
4 : पालकी उठाने वाला 5 : कारकुन, ओ़हदे दार 6 : खुश नसीब
7 : घोड़े सुवार 8 : आ़ली जनाब

ताजदारे अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ताजदारे अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
राज़दारे किब्रिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आ गए ख़ैरुल वरा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
आए शाहे अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

मज़्हरे रब्बुल उ़ला, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
मुस्त़फ़ा व मुज्तबा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

पेश्वाए अम्बिया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
मुर-सलीं के मुक़्तदा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

सय्यिदे अर्ज़ो समा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा
सरवरे हर दो सरा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

खल्क़ के हाजत रवा, अहलंव व सहलन मरहबा

दाफ़ेए रन्जो बला, अहलंव व सहलन मरहबा

सय्यिदो सरदारे मा, अहलंव व सहलन मरहबा

बे कसों के आसरा, अहलंव व सहलन मरहबा

मालिको मुख़्तारे मा, अहलंव व सहलन मरहबा

हामिये हर बे नवा, अहलंव व सहलन मरहबा

मशरिक़ो मग़रिब में इक इक बामे का'बा पर भी एक

नस्ब परचम हो गया, अहलंव व सहलन मरहबा

चांद सा चमकाते चेहरा नूर बरसाते हुए

आ गए बदरुद्दुजा, अहलंव व सहलन मरहबा

आमिना के घर में आक़ा की विलादत हो गई

मरहबा सल्ले अ़ला, अहलंव व सहलन मरहबा

झुक गया का'बा सभी बुत मुंह के बल औंधे गिरे
दबदबा आमद का था, अह्लंव व सह्लन मरहबा

चौदह[14] कंगूरे गिरे आतश कदा ठन्डा हुवा
सटपटा शैतां गया, अह्लंव व सह्लन मरहबा

सोई क़िस्मत जाग उठी और सब की बिगड़ी बन गई
बाबे रह़मत वा हुवा, अह्लंव व सह्लन मरहबा

आते ही सज्दा किया और رَبِّ هَبْ لِی اُمَّتِی[1]
की ज़बां पर थी दुआ, अह्लंव व सह्लन मरहबा

ख़ूब झूमो आसियो ! वोह मुस्कुराते आ गए
शाफ़ेए रोज़े जज़ा, अह्लंव व सह्लन मरहबा

---

1 : आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में सज्दा किया। उस वक़्त होंटों पर येह दुआ जारी थी : رَبِّ هَبْ لِی اُمَّتِی या'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे।
(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 30, स. 717)

ईदे मीलादुन्नबी है चार जानिब रोशनी
हर त़रफ़ है गुलगुला, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

छट गए ज़ुल्मत के बादल नूर हर सू छा गया
आ गए नूरे ख़ुदा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

जिन के परतौ से है सारी जग-मगाती कहकशां
आए वोह शम्सुद्दुह़ा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आस्मानों पर गए और ख़ुल्द की भी सैर की
शाह का येह मर्तबा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ह़ाज़िरो नाज़िर भी हैं और बात़िनो ज़ाहिर भी हैं
कुछ नहीं उन से छुपा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

क़ब्र में अ़त्त़ार की, आमद हो जब सरकार की
हो ज़बां पर या ख़ुदा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ह़श्र में अ़त्त़ार उन को देखते ही बोल उठा
मरह़बा या मुस्त़फ़ा, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ अ़रब के ताजदार अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ अ़रब के ताजदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ रसूले ज़ी वक़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आए शाहे नामदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

सब पुकारो बार बार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ ह़बीबे किर्दिगार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ खु़दा के शाहकार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आमिना के गुल इज़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ऐ हमारे शह्र यार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

अम्बिया के ताजदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

त़यबा के नाक़ा सुवार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

बहरे उम्मत अश्कबार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

शाफ़ेए़ रोजे़ शुमार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

रह़मते परवर दगार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ह़क़ के तुम आईना दार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आए शाहे ज़ी वक़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ग़ैब तुम पर आशकार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

या शहे आ़ली वक़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

बादशाहे नामदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

ग़मज़दों के ग़म गुसार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

बे क़रारों के क़रार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

दो[2] जहां के ताजदार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

सरवरे बा इख़्तियार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

मर्‌हमे क़ल्बे फ़िगार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

मेरा बिगड़ा दिल संवार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

इ़ज़्ज़ते रुस्वा व ज़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

कुव्वते ज़ारो नज़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

नूर की बरसी फुवार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

आया हर शै पर निखार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

कर मुनव्वर क़ल्बे तार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

दूर हो दिल का गुबार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

सब से बढ़ कर कामगार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

बाइ़से बाग़ो बहार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

जल्वा कर दे आशकार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

हो फ़िदा अ़त्तारे ज़ार, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

सब पुकारो झूम कर मीठा मदीना मरह़बा

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 1414 सि.ही. की ह़ाज़िरी में ब तारीख़ 27 जुल ह़िज्जा मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठ कर येह कलाम क़लम बन्द किया)

सब पुकारो झूम कर मीठा मदीना मरह़बा
कर के ख़म सब अपना सर मीठा मदीना मरह़बा

डूबा रहता है मदीना रोशनी में हर घड़ी
शाम हो या हो सह़र[1] मीठा मदीना मरह़बा

नूर बरसाते मनारे सब्ज़ गुम्बद की बहार
दिल हो रोशन देख कर मीठा मदीना मरह़बा

जानते हो सब्ज़ गुम्बद क्यूं ह़सीं है इस क़दर
इस में है आक़ा का घर मीठा मदीना मरह़बा

फूल महके, धूल चमके, ख़ूब सूरत हर बबूल
पुर कशिश हर इक ह़जर[2] मीठा मदीना मरह़बा

पौ फटी तड़का हुवा और चह्चहाई बुलबुलें
है समां रंगीन तर मीठा मदीना मरह़बा

---

1 : सुब्ह़ 2 : पथ्थर

जब कि चलती है सबा आक़ा का रौज़ा चूम कर
झूम उठते हैं शजर मीठा मदीना मरह़बा

बर्क़[1] चमकी, लहर उभरी, अब्र[2] बरसा और गया
गुम्बदे ख़ज़रा निखर मीठा मदीना मरह़बा

अ़ज़मतें हैं रिफ़अ़तें हैं ने'मतें हैं ब-र-कतें
रह़मतें हैं हर डगर मीठा मदीना मरह़बा

फूल तो फिर फूल हैं कांटे भी इस के हुस्न में
ख़ूब से हैं ख़ूब तर मीठा मदीना मरह़बा

संगरेज़ों[3] की चमक के सामने सब हेच हैं
दुन्यवी ला'लो गुहर मीठा मदीना मरह़बा

हैं फ़ज़ाएं खुश गवार इस की हवाएं मुश्कबार
है मुअ़त्त़र किस क़दर मीठा मदीना मरह़बा

इस लिये तो हम को प्यारा है मदीना रहते हैं
इस में शाहे बह़रो बर मीठा मदीना मरह़बा

खुल्द की रंगीनियां शादाबियां तस्लीम हैं
येह सब अपनी जा मगर मीठा मदीना मरह़बा

---

1 : बिजली 2 : बादल 3 : पथ्थर के टुकड़ों

नूर की बरसे फ़ुवार इस में रहे हर दम बहार
ख़ूब सूरत है नगर मीठा मदीना मरह़बा

हुस्ने पेरिस का फ़िदाई भी यहां पर झूम उठे
सब्ज़ गुम्बद देख कर मीठा मदीना मरह़बा

बकरियां तो बकरियां, चिड़ियां भी इस की मोह़तरम
और कबूतर बख़्त वर[1] मीठा मदीना मरह़बा

हिज्रे त़यबा में जो रोते हैं ख़ुदाया हो नसीब
उन को त़यबा का सफ़र मीठा मदीना मरह़बा

या रसूलल्लाह कहते ही टलेंगी मुश्किलें
ग़मज़दो आओ इधर मीठा मदीना मरह़बा

रात रोशन दिन मुनव्वर सब समां पुरनूर है
देख लो अहले नज़र मीठा मदीना मरह़बा

झूम कर तारे करें दीदारे त़यबा रोज़ और
हों फ़िदा शम्सो क़मर मीठा मदीना मरह़बा

जो मदीने आ गया अ़त्तार आ कर मर गया
वोह बड़ा है बख़्त वर मीठा मदीना मरह़बा

1 : नसीब दार

काश ! दश्ते त़यबा में मैं भटक के मर जाता

काश ! दश्ते त़यबा में, मैं भटक के मर जाता
फिर बक़ीए ग़रक़द में दफ़्न कोई कर जाता

काश ! जानिबे त़यबा आह ! यूं अगर जाता
चाक चाक मैं ले कर सीना व जिगर जाता

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़ते ही
खा के ग़श मैं गिर जाता फिर तड़प के मर जाता

ज़ाहिदीने दुन्या भी रश्क करते आ़सी पर
मुस्त़फ़ा के क़दमों में दफ़्न हो अगर जाता

या नबिय्ये रह़मत येह मेरे दिल की ह़सरत है
ख़ाक बन के त़यबा की काश ! मैं बिखर जाता

काश ! ऐसा मिल जाता इश्क़ नाम सुनते ही
आंख भी उमंड आती दिल भी ग़म से भर जाता

दिल से उल्फ़ते दुन्या बिल-यक़ीं निकल जाती
ख़ार उन के सह्‌रा का दिल में गर उतर जाता

जज़्बए ग़ज़ाली दो वल्वला बिलाली दो
काश मुर्शिदी जैसा मिल तपां जिगर जाता

ज़ाइरे मदीना तू चल रहा है हंस हंस कर
काश ! ले के मुज़्तर क़ल्ब और चश्मे तर जाता

बे धड़क मदीने में दाख़िला हुवा तेरा
काश ! पाउं के बदले सर के बल अगर जाता

रोते रोते मर जाता वक़्ते रुख़्सते तृयबा
काश ! मैं मदीने से लौट कर न घर जाता

काश ! फ़ुरक़ते तृयबा से मैं रहता रन्जीदा
हर ख़ुशी का लम्हा भी रोते ही गुज़र जाता

काम मेरा बन जाता जो तेरी नज़र होती
मेरा डूबा बेड़ा भी या नबी उभर जाता

लाज़िमी है हर सूरत छोड़ना गुनाहों का
भाई मौत से पहले काश ! तू सुधर जाता

ग़ैर के तू फ़ेशन को छोड़ दे मेरे भाई
उन की सुन्नतें अपना क्यूं है दर बदर जाता

बे अ़दद गुलाम आक़ा खुल्द जा रहे हैं काश !
मैं भी साथ उन के या शाहे बह़रो बर जाता

या खुदा ! मुबल्लिग़ मैं सुन्नतों का होता काश !
तेरे दीन की ख़िदमत कुछ जहां में कर जाता

उन का आ गया अ़त्तार उन का आ गया अ़त्तार
शोर था येह हर जानिब ह़श्र में जिधर जाता

काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता

(नज़्अ की सख़्तियों, क़ब्र की होल नाकियों, महशर की दुश्वारियों और जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादियों का तसव्वुर बांध कर ख़ौफ़े ख़ुदा عزوجل से लरज़ते हुए अश्कबार आंखों से इस कलाम को पढ़िये)

काश के न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता

क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

मैं न फंस गया होता आ के सूरते इन्सां

काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता

ऊंट बन गया होता और ईदे कुरबां में

काश ! दस्ते आक़ा से नह़्र हो गया होता

काश ! मैं मदीने का कोई दुम्बा होता या
सींग वाला चित्कब्रा मेंढा बन गया होता

तार बन गया होता मुर्शिदी के कुरते का
मुर्शिदी के सीने का बाल बन गया होता

दो[2] जहां की फ़िक्रों से यूं नजात मिल जाती
मैं मदीने का सचमुच कुत्ता बन गया होता

काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता

फूल बन गया होता गुलशने मदीना का
काश ! उन के सह़रा का ख़ार बन गया होता

मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता

गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा
या मैं बन के इक तिन्का ही वहां पड़ा होता

मर्ग़-ज़ारे त़यबा का काश ! होता परवाना
गिर्दे शम्अ़ फिर फिर कर काश ! जल गया होता

काश ! ख़र या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और
आप ने भी खूंटे से बांध कर रखा होता

जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता

आह ! कस्रते इ़स्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! मैं न दुन्या का इक बशर बना होता

शोर उठा येह मह़शर में ख़ुल्द में गया अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

काश ! फिर मुझे ह़ज का, इज़्न मिल गया होता

काश ! फिर मुझे ह़ज का, इज़्न मिल गया होता
और रोते रोते मैं, काश ! चल पड़ा होता

हाए ! फूटी क़िस्मत ने, ह़ाज़िरी से रोका है
काश ! मैं मदीने में, फिर पहुंच गया होता

इस सफ़र की तय्यारी, कर चुका था मैं सारी
काश ! मेरी क़िस्मत ने साथ दे दिया होता

मेरे क़ल्बे मुज़्त़र को भी क़रार आ जाता
ह़ज का मुज़्दा कोई काश ! आ के दे गया होता

मुझ को छोड़ कर तन्हा क़ाफ़िला चला त़यबा
काश ! साथ में ले कर मुझ को भी गया होता

काश ! इन की राहों को फूल और कांटों को
चूमता गया होता झूमता गया होता

मिस्ले साले रफ़्ता फिर काश ! चश्मे तर ले कर
सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू बरू खड़ा होता

मुझ को फिर मदीने में इस बरस भी बुलवाते
आप का बड़ा एह्सां मुझ पे येह शहा होता

ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा अश्कबार आंखों ने
काश ! मेरी फ़ुरक़त का दाग़ धो दिया होता

काश ! गुम्बदे ख़ज़रा के ह़सीन जल्वों में
मेरा रोते रोते ही दम निकल गया होता

दम निकल गया होता मेरा उन क़दमों में
साथ गर मुक़द्दर ने मेरा दे दिया होता

जिन दिनों मदीने में ह़ाज़िरी हुई थी काश !
मर के उन के कूचे में दफ़्न हो गया होता

काश ! ऐसा हो जाता गोरे गोरे क़दमों में
गिर कर आप का अ़त्तार आप पर फ़िदा होता

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता

दिल हाए गुनाहों से बेज़ार नहीं होता
मग़्लूब शहा ! नफ़्से बदकार नहीं होता

शैत़ान मुसल्लत़ है अफ़्सोस ! किसी सूरत
अब सब्र गुनाहों पर सरकार नहीं होता

ऐ रब के ह़बीब आओ ! ऐ मेरे त़बीब आओ
अच्छा येह गुनाहों का बीमार नहीं होता

गो लाख करूं कोशिश इस्लाह़ नहीं होती
पाकीज़ा गुनाहों से किरदार नहीं होता

येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है
दिल आह ! मगर अब भी बेदार नहीं होता

सुन्नत की त़रफ़ लोगो तुम क्यूं नहीं आ जाते
क्यूं सर्द गुनाहों का बाज़ार नहीं होता

सरकार का आ़शिक़ भी क्या दाढ़ी मुंडाता है !
क्यूं इश्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता

आक़ा की इत़ाअ़त से जी अपना चुराते हैं
जो, ऐसों से खुश रब्बे ग़फ़्फ़ार नहीं होता

जीने का मज़ा उस को मिलता ही नहीं जिस का
दिल इश्क़े मुह़म्मद से सरशार नहीं होता

जो यादे मदीना में दिन रात तड़पते हैं
दूर उन से मदीने का दरबार नहीं होता

मग़मूम है ग़म जिस को आक़ा का नहीं मिलता
बीमार है जो उन का बीमार नहीं होता

खुशियों में मसर्रत में आसाइशो राह़त में
असरारे मह़ब्बत का इज़्हार नहीं होता

वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दोचार नहीं होता

ऐ ज़ाइरे त़यबा ! तू दम तोड़ दे चौखट पर
दीदार, मदीने का हर बार नहीं होता

कौन ऐसी करे जुरअत कह सकता नहीं आ़क़िल
सरकार का दीवाना हुशियार नहीं होता

आ जाए मदीने में ले जाए ज़रा सी ख़ाक
जो ठीक किसी सूरत बीमार नहीं होता

ऐ साइलो ! आ जाओ और झोलियां फैलाओ
दरबारे रिसालत से इन्कार नहीं होता

वोह बहूरे सख़ावत हैं वोह क़ासिमे ने'मत हैं
तयबा का गदा हरगिज़ नादार नहीं होता

दुन्या में भी ठन्डा है उ़क़्बा में भी ठन्डा है
जो उन का है दीवाना वोह ख़्वार नहीं होता

दुन्या में भी जलता है उ़क़्बा में भी जलता है
मैं कैसे कहूं मुन्किर फ़िन्नार नहीं होता

छोड़ो ऐ फ़िरिश्तो वोह, आते हैं शफ़ाअ़त को
वोह जिस के भी ह़ामी हैं फ़िन्नार नहीं होता

अफ़्सोस नदामत भी इस्यां पे नहीं होती
नेकी की त़रफ़ माइल अ़त्त़ार नहीं होता

आक़ा का गदा हो कर अ़त्त़ार तू घबराए
घबराए वोही जिस का ग़म ख़्वार नहीं होता

मदीने हमें ले गया था मुक़द्दर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

(4 मुहर्रमुल ह़राम 1416 सि.हि. को सफ़रे मदीना से वापसी हुई, 7 मुहर्रमुल ह़राम 1416 सि.हि. को अपने जज़्बात को अश्आ़र के सांचे में ढाला)

मदीने हमें ले गया था मुक़द्दर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

न हम काश ! आते यहां लौट कर घर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

वहां बारिशे नूर होती थी पैहम
न दुन्या की झन्जट ज़माने का था ग़म

मिला था हमें कुर्बे मह़बूबे दावर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

ख़ुशी भी ख़ुशी से वहां झूमती थी
मसर्रत मेरे चौ त़रफ़ घूमती थी

मज़ा भी मज़े ले रहा था वहां पर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

कभी रू बरू सब्ज़ गुम्बद का मन्ज़र
कभी तक्ते हम उन के दीवार और दर

कभी सामने होते मेह़राबो मिम्बर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

वहां राह चलते थे हम दस्त बस्ता
दुरूद उन पे पढ़ते कभी सारा रस्ता

कभी ना'त पढ़ते थे हम रास्ते भर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

कभी बैठते उन की मस्जिद में जा कर
कभी दूर से तक्ते मेह़राबो मिम्बर

नमाज़ों का भी लुत़्फ़ था क्या वहां पर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

फ़ज़ाएं मुनव्वर हवाएं मुअ़त्तर समां था वहां किस क़दर कैफ़ आवर

जहां में कहीं भी नहीं ऐसा मन्ज़र मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

मदीने का सहरा भी रश्के गुलिस्तां तसद्दुक़ मुग़ीलां[1] पे बादे बहारां

तनी थी पहाड़ों पे नूरानी चादर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

कभी मस्त हो कर शजर झूमते थे तो झड़ झड़ के पत्ते ज़मीं चूमते थे

उठा लेते उन को कभी हम भी बढ़ कर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

वहां तो अंधेरे में भी रोशनी है यहां पर उजाले में भी ती-रगी[2] है

वहां दिन थे रोशन तो शब भी मुनव्वर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

ख़ुशा ! धूप थी ठन्डी ठन्डी वहां पर थी क्या छाउं भी महकी महकी वहां पर

वहां ज़र्रा ज़र्रा है सद रश्के गौहर मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

यक़ीनन मदीना है सद रश्के जन्नत मदीने में है मीठे आक़ा की तुरबत

ऐ अ़त्तार क्यूं छोड़ कर आए वोह दर
मदीने में कैसा सुरूर आ रहा था

---

1 : कांटेदार झाड़ी या कांटेदार दरख़्त 2 : अंधेरा

दिल पे ग़म छा गया या रसूले ख़ुदा

दिल पे ग़म छा गया, या रसूले ख़ुदा क्या बनेगा मेरा, या रसूले ख़ुदा

ज़ोरे तूफ़ान है, फंस गई जान है अल मदद नाख़ुदा, या रसूले ख़ुदा

आह ! ना कामियां, हाए बरबादियां होगा अब मेरा क्या, या रसूले ख़ुदा

छाईं तारीकियां, उफ़ ! येह अंधियारियां कीजिये चांदना[1], या रसूले ख़ुदा

नाउ मंजधार[2] में, डूबा सरकार मैं आह ! ऐ नाख़ुदा, या रसूले ख़ुदा

धंस गया धंस गया, फंस गया फंस गया तुम निकालो शहा, या रसूले ख़ुदा

क़ल्ब ग़िरबाल[3] है, ह़ाल बे ह़ाल है तेरे बीमार का, या रसूले ख़ुदा

क़ल्ब नाशाद[4] है, चैन बरबाद है हो करम सय्यिदा, या रसूले ख़ुदा

दे दो दिल को क़रार, ऐ शहे ज़ी वक़ार सदक़ा सिद्दीक़ का, या रसूले ख़ुदा

बिगड़ी क़िस्मत संवार, ऐ मेरे ताजदार सदक़ा फ़ारूक़ का, या रसूले ख़ुदा

---

1 : रोशनी 2 : दरिया के बीच की धार 3 : ज़ख़्मों से छलनी 4 : रन्जीदा

दूर आफ़ात हों, ठीक ह़ालात हों | सदक़ा उ़स्मान का, या रसूले खुदा
हम सभी एक हों, एक हों नेक हों | अज़ पए मुर्तज़ा, या रसूले खुदा
ऐसे बरबाद हों, फिर न आबाद हों | दुश्मनाने खुदा, या रसूले खुदा
जिस क़दर ह़ासिदीं, हैं मेरे शाहे दीं | सब का दिल हो सफ़ा[1], या रसूले खुदा
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम | वासित़ा ग़ौस का, या रसूले खुदा
मैं सरापा ख़त़ा, हूं बड़ा रू सियाह | ह़श्र में होगा क्या, या रसूले खुदा
या शफ़ीए उमम, तुम ही रखना भरम | रोज़े मह़शर मेरा, या रसूले खुदा
सरवरे काएनात, अपनी जन्नत में साथ | ले के चलना शहा, या रसूले खुदा
शाहे दुन्या व दीं, काम करता नहीं | ज़ेह्न अ़त्त़ार का, या रसूले खुदा

हो करम या नबी, पार बेड़ा अभी
होगा अ़त्त़ार का, या रसूले खुदा

---

1 : पाक

अ़त्त़ार ने दरबार में दामन है पसारा

अ़त्त़ार ने दरबार में दामन है पसारा
है इ़ज़्ने मदीना का त़लब गार बिचारा

चमका दो शहा ! मेरे मुक़द्दर का सितारा
फिर ह़ज का शरफ़ मुझ को अ़त़ा कर दो खुदारा

मैं साले गुज़श्ता भी तो आया था मदीने
इस साल भी हो जाए मदीने का नज़ारा

मक्के की ह़सीं शाम की देखूं मैं बहारें
फिर देखूं मदीने की शहा सुब्ह़े दिलआरा

"सामाने मदीना" तो शहा ! ला के रखा है
अब दे दो सफ़र का भी हमें इ़ज़्न खुदारा

मायूस नहीं तुम से येह दीवाने तुम्हारे
अब कर दो करम तुम न करो देर खुदारा

ताख़ीर हुई जाती है क्यूं कूच में आख़िर ?
तश्वीश में त़यबा का मुसाफ़िर है बिचारा

बिगड़ा हुवा हर काम संवर जाएगा मेरा
कर देंगे शहा ! आप जो अब्रू का इशारा

सरकार ! मदीने में इसी साल बुला लो
ऐ शाह ! बड़ी आस से है तुम को पुकारा

या रब हमें मक्के की फ़ज़ाओं में बुला ले
और ख़ानए का'बा का करें जम के नज़ारा

हो जाए मेरी ह़ाज़िरी अ़रफ़ातो मिना में
और मुज़्दलिफ़ा का भी करूं खूब नज़ारा

जो हिज्रे मदीना में तड़पते हैं शबो रोज़
कर लें कभी त़यबा का शहा ! वोह भी नज़ारा

किस त़रह़ मदीने में मेरा दाख़िला होगा
आलूदा वुजूद आह ! गुनाहों से है सारा

ऐ काश ! मेरी आंख हो दीदार के क़ाबिल
जी भर के करूं गुम्बदे ख़ज़रा का नज़ारा

मरने दो मदीने में मुझे क़ाफ़िले वालो
ऐ चारा गरो ! तुम भी न करना कोई चारा

हम जाएं कहां और शहा किस को पुकारें
हमदर्द नहीं तेरे सिवा कोई हमारा

दुखियों का नहीं तेरे सिवा कोई भी हमदम
है किस को ग़रज़ दूर करे दर्द हमारा

गो बद हूं गुनहगार हूं बदकार बुरा हूं
जैसा भी हूं सरकार तुम्हारा हूं तुम्हारा

हम क्यूं करें हुक्काम की उ-मरा की खुशामद
जब आप के टुकड़ों पे हमारा है गुज़ारा

शैत़ान ने बहका के गुनाहों में फंसाया
और नफ़्से बद अत़्वार ने इस्यां पे उभारा

इस्यां के समुन्दर में फंसी नाउ हमारी
तुम आ के संभालो है बहुत दूर कनारा

अफ़्सोस ! गुनाहों से है पुर नामए आ'माल
रखियेगा मेरी लाज क़ियामत में खुदारा

अ़त्तार का बस आप के हाथों में भरम है
कह दीजिये अ़त्तार हमारा है हमारा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم: जो किसी मुसल्मान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में उस दरवाज़े से दाख़िल फ़रमाएगा जिस में से उस जैसे लोग ही दाख़िल होंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبرانی ج ۲۰ ص ۸۵ حدیث ۱۶۲)

आज त़यबा का है सफ़र आक़ा

आज त़यबा का है सफ़र आक़ा　दे दो तोशे में चश्मे तर आक़ा

ग़मज़दा हूं मैं किस क़दर आक़ा　तुम को मेरी है सब ख़बर आक़ा

मुझ को बीमारियों ने घेरा है　आप हैं मेरे चारागर आक़ा

चन्द अश्कों के मा सिवा पल्ले　कुछ नहीं तोशए सफ़र आक़ा

ताजे शाही का मैं, नहीं त़ालिब　कर दो रह़मत की इक नज़र आक़ा

तेरी उल्फ़त का मैं भिकारी हूं　मेरा कश्कोल जाए भर आक़ा

क़ल्बे मुज़्त़र दो चश्मे तर दो और　चाक सीना तपां जिगर आक़ा

"चल मदीना" का वोह भी लें मुज़्दा　जिन के पल्ले नहीं है ज़र आक़ा

क्या इमामे की हो बयां अ़-ज़मत　तेरे ना'लैन ताजे सर आक़ा

तेरे होते हुए भला क्यूं हो　वार दुश्मन का कारगर आक़ा

इस त़रह़ से छुपा लो दामन में　न अ़दू की पड़े नज़र आक़ा

मो'तरिफ़ हूं गुनाह करने में　कोई छोड़ी नहीं कसर आक़ा

फंस गया हूं गुनह की दलदल में
हो करम शाहे बह्रो बर आक़ा

मैं गुनहगार हूं मगर क़ुरबां
तेरी रह़मत की है नज़र आक़ा

वासित़ा मेरे ग़ौसे आ'ज़म का
हर ख़त़ा कर दो दर गुज़र आक़ा

तुम उसे भी गले लगाते हो
जिस को धुत्कारे हर बशर आक़ा

मैं जहन्नम में गिर गया होता
न बचाते मुझे अगर आक़ा

काश ! नीची नज़र रहे, बेकार
मैं न देखूं इधर उधर आक़ा

जान छूटे फ़ुज़ूल बातों से
अज़ पए ह़ज़रते उ़मर आक़ा

मौला मुश्किल कुशा के सदक़े में
इस्तिक़ामत दो दीन पर आक़ा

अज़ पए मुर्शिदी ज़ियाउद्दीन
मेरे दिल में बनाओ घर आक़ा

काश ! इस शान से येह दम निकले
तेरी दह्लीज़ पर हो सर आक़ा

इज़्न दे दो बक़ीए़ ग़रक़द का
तेरे जल्वों में जाऊं मर, आक़ा

क्या बनेगा बजाए त़यबा के
सिन्ध में मर गया अगर आक़ा

मौत अ़त्तार को मदीने में
आए अब तो न जाए घर आक़ा

साहिबे इ़ज़्ज़तो जलाल आक़ा

साहिबे इ़ज़्ज़तो जलाल आक़ा तू है बा अ़ज़मतो कमाल आक़ा
हर सिफ़त तेरी ला ज़वाल[1] आक़ा बिल-यक़ीं तू है बे मिसाल आक़ा
मैं हूं बद ख़ुल्क़ो बद ख़िसाल[2] आक़ा तुम हो ख़ुश ख़ुल्क़ो ख़ुश मक़ाल[3] आक़ा
रन्जो ग़म ने किया निढाल आक़ा आक़ा आक़ा मुझे संभाल आक़ा
मैं हूं बे रूपो बे जमाल आक़ा कुछ नहीं ढंग और कमाल आक़ा
तेरी रह़मत ही से मिली इ़ज़्ज़त ख़ाक मुझ में है कुछ कमाल आक़ा
क़त्ल करने अ़दू चढ़ आया था बच गया हूं मैं बाल बाल आक़ा
तेरे होते हुए मेरा अब क्यूं कोई बीका[4] करेगा बाल आक़ा
ठोकरें दर बदर की क्यूं खाऊं तेरे दम से हूं मालामाल आक़ा
ह़क़ के प्यारे हैं आप और प्यारा आप का रब्बे ज़ुल जलाल आक़ा
सब ह़सीनों से बिल-यक़ीं बढ़ कर ह़ुस्न तेरा तेरा जमाल आक़ा
तुम ने ही सर बुलन्दियां बख़्शीं मुझ में कुछ भी न था कमाल आक़ा
बद ख़साइल[5] निकाल कर सरवर दो बना मुझ को ख़ुश ख़िसाल आक़ा

---

1. जिस में कभी कमी न आए 2. बुरी आ़दतों वाला 3. उ़म्दा गुफ़्त-गू
4. टेढ़ा 5. ख़स्लत की जम्अ़ ख़साइल या'नी आ़दतें

अपने ग़म में रुलाइये हर दम अज़ पए ह़ज़रते बिलाल आक़ा
मेरा सीना मदीना बन जाए अज़ पए रब्बे ज़ुल जलाल आक़ा
आप ने सिर्फ़ अपनी रह़मत से बख़्शी इ़ज़्ज़त दिया जलाल आक़ा
गन्दे गन्दे वसाविस आते हैं मेरे दिल से इन्हें निकाल आक़ा
यादे त़यबा में गुम रहूं हर दम तेरा हर दम रहे ख़याल आक़ा
अहले इस्लाम ग़ालिब आएं और काफ़िरों को लगे ज़वाल[1] आक़ा
काश ! इस साल मैं मदीने में देखूं र-मज़ान का हिलाल आक़ा
हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी दो दूर हो ख़ूए इश्तिआ़ल[2] आक़ा
सब्ज़ गुम्बद के साए में मेरा काश ! हो जाए इन्तिक़ाल आक़ा
लड़खड़ाए मेरे क़दम जब भी तुम ने बढ़ कर लिया संभाल आक़ा
इस मरज़ से भी तुम शिफ़ा दे दो झड़ते रहते हैं मेरे बाल आक़ा
लब खुलें गुल झड़ें फ़ज़ा महके तुम पे क़ुरबां मैं, ख़ुश मक़ाल आक़ा

काश ! अ़त्तार का हो त़यबा में
तेरे जल्वों में इन्तिक़ाल आक़ा

---

1 : पस्ती । 2 : ख़ूए इश्तिआ़ल या'नी गुस्से की आ़दत

क़िस्मत मेरी चमकाइये चमकाइये आक़ा

क़िस्मत मेरी चमकाइये चमकाइये आक़ा ! मुझ को भी दरे पाक पे बुलवाइये आक़ा

सीने में हो का'बा तो बसे दिल में मदीना आंखों में मेरी आप समा जाइये आक़ा

बेताब हूं बेचैन हूं दीदार की ख़ातिर लिल्लाह मेरे ख़्वाब में आ जाइये आक़ा

हर सम्त से आफ़ातो बलिय्यात ने घेरा मजबूर की इमदाद को अब आइये आक़ा

सकरात का आ़लम है शहा ! दम है लबों पर तशरीफ़ सिरहाने मेरे अब लाइये आक़ा

वह्शत है अंधेरा है मेरी क़ब्र के अन्दर आ कर ज़रा रोशन इसे फ़रमाइये आक़ा

मुजरिम को लिये जाते हैं अब सूए जहन्नम लिल्लाह ! शफ़ाअ़त मेरी फ़रमाइये आक़ा

अ़त्तार पे या शाहे मदीना हो इनायत

वीरानए दिल आ के बसा जाइये आक़ा

इस्राफ़ की ता'रीफ़

ग़ैरे ह़क़ में सर्फ़ (या'नी ख़र्च) **करना ।** (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 690, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर) म-सलन ना फ़रमानी की जगहों पर ख़र्च करना ।

या मुस्तफ़ा अ़ता हो अब इज़्न ह़ाज़िरी का

(اَلْحَمْدُلِلّٰہ 20 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1414 सि.हि. को येह कलाम क़लम बन्द किया गया)

या मुस्तफ़ा अ़ता हो अब इज़्न, ह़ाज़िरी का
कर लूं नज़ारा आ कर मैं आप की गली का

इक बार तो दिखा दो र-मज़ान में मदीना
बेशक बना लो आक़ा मेहमान दो घड़ी का

रोता हुवा मैं आऊं दाग़े जिगर दिखाऊं
अफ़्साना भी सुनाऊं मैं अपनी बे कसी का

मैं सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की देख लूं बहारें
अब इज़्न दे दो आक़ा तुम मुझ को ह़ाज़िरी का

मौला ग़मे मदीना दे दे ग़मे मदीना
दीवाना तू बना दे मुझ को तेरे नबी का

ख़ूने जिगर से सींचा है बाग़ सुन्नियत का
कर दो करम वसीला उस म-दनी मुर्शिदी का

या सय्यिदे मदीना ! बस आप ही निभाना
गो हूं बड़ा कमीना पर हूं तो आप ही का

या मुस्तफ़ा ! गुनाहों की आ़दतें निकालो
जज़्बा मुझे अ़ता हो सुन्नत की पैरवी का

हों दूर अब बलाएं देता हूं वासित़ा मैं
मज़्लूमे करबला की सरकार ! बे कसी का

अल्लाह ! हुब्बे दुन्या से तू मुझे बचाना साइल हूं या खुदा मैं इश्क़े मुहम्मदी का

फ़ख़्रो गुरूर से तू मौला मुझे बचाना या रब ! मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का

ईमां पे रब्बे रह़मत दे दे तू इस्तिक़ामत देता हूं वासित़ा मैं तुझ को तेरे नबी का

हो हर न-फ़स[1] मदीना धड़कन में हो मदीना जब तक न सांस टूटे सरकार ज़िन्दगी का

दुन्या के ताजदारो ! तुम से मुझे ग़रज़ क्या मंगता हूं मैं तो मंगता सरकार की गली का

अल्लाह ! इस से पहले ईमां पे मौत दे दे नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

उल्फ़त की भीक दे दो देता हूं वासित़ा मैं सिद्दीक़ का उ़मर का उ़स्मान का अ़ली का

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

मीज़ां[2] पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं
रख लो भरम ख़ुदारा ! अ़त्तार क़ादिरी का

---

1 : सांस 2 : तराज़ू

आया है बुलावा फिर इक बार मदीने का

आया है बुलावा फिर इक बार मदीने का
फिर जा के मैं देखूंगा दरबार मदीने का

गुलशन से ह़सीं तर है कोह्सार मदीने का
बे मिस्ल जहां में है गुलज़ार मदीने का

मैं फूल को चूमूंगा और धूल को चूमूंगा
जिस वक़्त करूंगा मैं दीदार मदीने का

आंखों से लगा लूंगा और दिल में बसा लूंगा
सीने में उतारूंगा मैं ख़ार[1] मदीने का

सीने में मदीना हो और दिल में मदीना हो
आंखों में भी हो नक़्शा सरकार ! मदीने का

लाती है सरे बालीं[2] रह़मत की अदा उन को
जिस वक़्त तड़पता है बीमार मदीने का

1 : कांटा 2 : सिरहाने

रोते हैं जो दीवाने बेताब हैं मस्ताने
उन सब को दिखा दीजे दरबार मदीने का

रोता है जो रातों को उम्मत की महब्बत में
वोह शाफ़ेए महशर है सरदार मदीने का

रातों को जो रोता है और ख़ाक पे सोता है
ग़म ख़्वार है, सादा है मुख़्तार मदीने का

क़ब्ज़े में दो[2] आलम हैं पर हाथ का तक्या है
सोता है चटाई पर सरदार मदीने का

दुख दर्द जहां भर के सब दूर शहा कर के
मुझ को तो बना लीजे बीमार मदीने का

इस दर के भिकारी की झोली में दो[2] आलम हैं
शाहों से भी बढ़ कर है नादार मदीने का

मक़्बूल जहां भर में हो "दा'वते इस्लामी"
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का

तक़्दीर चमक उठ्ठे क़िस्मत ही तो खुल जाए
बन जाए जो अदना सग, अत्तार मदीने का

इज़्न मिल जाए गर मदीने का

इज़्न मिल जाए गर मदीने का काम बन जाएगा कमीने का
जा के उन को दिखाऊंगा मैं तो ज़ख़्मे दिल और दाग़ सीने का
क़ल्बे आ़शिक़ उठा धड़क इक दम ज़िक्र जब छिड़ गया मदीने का
आंख से अश्क हो गए जारी जब चला क़ाफ़िला मदीने का
उस की क़िस्मत पे रश्क आता है जो मुसाफ़िर हुवा मदीने का
तुझ पे रह़मत हो ज़ाइरे त़यबा ! जा, निगहबां ख़ुदा सफ़ीने का
हम को भी वोह बुलाएंगे इक दिन इज़्न मिल जाएगा मदीने का
हो ग़मे मुस्त़फ़ा अ़त़ा या रब ! दर्द बढ़ता रहे मदीने का
नज़्अ़ में, क़ब्र में, क़ियामत में तुम्हीं रखना भरम कमीने का
दूर रन्जो अलम हों दुन्या के हम को मिल जाए ग़म मदीने का
लुत़्फ़ से है तेरे भरम वरना काम कोई नहीं क़रीने का
एक मुद्दत से दिल में अरमां है या नबी ! जामे दीद पीने का
मौत गर आए तेरे क़दमों में लुत़्फ़ आ जाए फिर तो जीने का

अपने अ़त़्त़ार पर करम कर दो
सग बना लो इसे मदीने का

मदीने की त़रफ़ फिर कब रवाना क़ाफ़िला होगा

मदीने की त़रफ़ फिर कब रवाना क़ाफ़िला होगा
मुझे इज़्ने मदीना कब मेरे आक़ा अ़त़ा होगा

यक़ीनन रोज़े मह़शर सिर्फ़ उसी से ख़ुश ख़ुदा होगा
यहां दुन्या में जिस ने मुस्त़फ़ा को ख़ुश किया होगा

वोही सर बर सरे मह़शर बुलन्दी पाएगा जो सर
यहां दुन्या में उन के आस्ताने पर झुका होगा

कोई हफ़्ता न कोई दिन कोई घन्टा तो क्या अफ़्सोस
कोई लम्ह़ा भी इस्यां से नहीं ख़ाली गया होगा

नहीं जाती गुनाहों की शहा ! आ़दत नहीं जाती
करम मौला पसे मुर्दन न जाने मेरा क्या होगा

फ़क़त़ नेकों पे होगा गर करम ऐ सरवरे आ़लम !
कहां जाएगा वोह बन्दा जो बद होगा बुरा होगा

तेरे रह़मो करम पर आस मैं ने बांध रख्खी है
बड़ी उम्मीद है आक़ा ! करम रोजे़ जज़ा होगा

नबी के आ़शिक़ों को मौत तो अनमोल तोह़फ़ा है
कि इन को क़ब्र में दीदारे शाहे अम्बिया होगा

अंधेरी गोर है तन्हा हूं मुझ पर ख़ौफ़ त़ारी है
तुम आओगे तो आक़ा दूर अंधेरा क़ब्र का होगा

फ़िरिश्ते क़ब्र में पूछेंगे जब मुझ से सुवाल आ कर
मेरे लब पर तराना اِنْ شَآءَ اللّٰه ना'त का होगा

नबी के आ़शिक़ों की ई़द होगी ई़द मह़शर में
कोई क़दमों में होगा कोई सीने से लगा होगा

तेरे दामाने रह़मत की खुलेगी ह़श्र में वुस्अ़त
वोह आ आ कर छुपेगा जो गुनहगार और बुरा होगा

तसल्ली रख तसल्ली रख न घबरा ह़श्र से अ़त्त़ार
तेरा ह़ामी वहां पर आमिना का लाडला होगा

न घबरा मौत से अ़त्त़ार बरज़ख़ में तू मिल लेना
वहां ग़ौसुल वरा होंगे वहां अह़मद रज़ा होगा

क़ाफ़िला आज मदीने को रवाना होगा

(اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जुल ह़िज्जतिल ह़राम शरीफ़ 1416 सि.हि. को रवानगिये मदीनए मुनव्वरह زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا से क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّ تَعۡظِیۡمًا में येह कलाम तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल हुई)

क़ाफ़िला आज मदीने को रवाना होगा
अ़न्क़रीब अपना मदीने में ठिकाना होगा

लब पे नग़माते मुह़म्मद का तराना होगा
झूमते झूमते दीवाना रवाना होगा

किस क़दर ज़ाइरो ! वोह वक़्त सुहाना होगा
रू बरू जब दरे सुल्त़ाने ज़माना होगा

दर्दो आलाम का जब लब पे फ़साना होगा
अब्रे रह़मत के बरसने का बहाना होगा

नेकियां पल्ले मदीने के मुसाफ़िर के कहां !
आंसूओं का मेरी झोली में ख़ज़ाना होगा

इतनी बेताब न हो आने दे त़यबा की गली
रूहे मुज़्त़र तुझे कुछ वक़्त बढ़ाना होगा

गुम्बदे ख़ज़रा की जिस वक़्त मैं देखूंगा बहार
मुझ गुनहगार की बख़्शिश का बहाना होगा

जब सुवालात, नकीरैन करेंगे मुझ से
लब पे सरकार की ना'तों का तराना होगा

ह़श्र में जब हमें सरकार नज़र आएंगे
कैसा मन्ज़र वोह ह़सीन और सुहाना होगा

तुझ को गर रुत्बए आ़ली की त़लब है भाई !
ग़ौर से सुन तुझे हस्ती को मिटाना होगा

उन की दहलीज़ पे सर अपना झुका दे भाई !
देखना सब तेरे क़दमों में ज़माना होगा

भाइयो ! चाहिये गर रब्बे मुह़म्मद की रिज़ा
ख़ुद को मह़बूब की सुन्नत पे चलाना होगा

मेरी सरकार के क़दमों में ही اِنْ شَآءَاللّٰه
मेरा फ़िरदौस में अ़त्तार ठिकाना होगा

इस बरस भी न मदीने में अगर आई मौत
घर को रोते हुए अ़त्तार रवाना होगा

मुझ को आक़ा मदीने बुलाना, सब्ज़ गुम्बद का जल्वा दिखाना

मुझ को आक़ा मदीने बुलाना, सब्ज़ गुम्बद का जल्वा दिखाना
तुम निक़ाब अपने रुख़ से उठाना, अपने क़दमों से मुझ को लगाना

आना आना मेरे सरवर आना, आ कर आंखों में मेरी समाना
मुझ को उल्फ़त का साग़र पिलाना, मेरा सीना मदीना बनाना

अब घड़ी हाए ! रुख़्सत की आई, माहे र-मज़ां से होगी जुदाई
दे दो अब ग़म मदीने का दे दो मुझ को ईदी में शाहे ज़माना

वासिता लाडली फ़ातिमा का, वासिता ग़ौसो अह़मद रज़ा का
वासिता मेरे मुर्शिद ज़िया का मुझ को दीवाना अपना बनाना

गो गुनहगार भी हूं तो तेरा गर्चे बदकार भी हूं तो तेरा
मैं सियह कार भी हूं तो तेरा बहरे ख़ाके मदीना निभाना

रुख़्सत अब माहे र-मज़ान की है ईद या मुस्त़फ़ा आ गई है
ग़म मदीने का ईदी में दे दो अज़ पए ग़ौस शाहे ज़माना

अ़ज़्म दाढ़ी का जब से किया है जब से सर पर इमामा सजा है
सब क़बीला मुख़ालिफ़ हुवा है या नबी इस पे तुम रह़्म खाना

हो गया जुर्म सुन्नत पे चलना और उल्फ़त में तेरी मचलना
मीठी सुन्नत से लोगों का हटना आ गया हाए कैसा ज़माना

तू ठहर जा ज़रा रूह़े मुज़्त़र आने वाला है मीठा मदीना
जब कि आए नज़र सब्ज़ गुम्बद तन से हो जाना उस दम रवाना

जल्द दफ़्नाओ मय्यित ख़ुदारा खुल न जाए कहीं भेद सारा
मेरे चेहरे से मेरे अ़ज़ीज़ो ! तुम कफ़न को न हरगिज़ हटाना

हिज्र में जो तड़पते हैं आक़ा यादे त़यबा में रोते हैं आक़ा
देख लें वोह भी शाहे मदीना सब्ज़ गुम्बद का मन्ज़र सुहाना

दुश्मने दीं अकड़ कर खड़ा है ह़ासिदों का ह़सद बढ़ चला है
ज़ुल्म हर सम्त से हो रहा है जल्द अ़त्त़ार को तुम बचाना

अब बुला लीजिये ना मदीना, आ रहा है येह ह़ज का महीना

अब बुला लीजिये ना मदीना, आ रहा है येह ह़ज का महीना
टूट जाए न दिल का नगीना, अल मदद ताजदारे मदीना

आंसूओं की लड़ी बन रही हो, और आहों से फटता हो सीना
विर्दे लब हो, "मदीना मदीना" जब चले सूए त़यबा सफ़ीना

मुझ को आक़ा ! मदीने बुला लो ! ह़स्रतें मेरे दिल की निकालो
ग़ौसे आ'ज़म का सदक़ा निभा लो, अब तो कह दो मुझे "चल मदीना"

जब मदीने में हो अपनी आमद, जब मैं देखूं तेरा सब्ज़ गुम्बद
हिचकियां बांध कर रोऊं बेह़द, काश ! आ जाए ऐसा क़रीना

काश ! इस शान से ह़ाज़िरी हो, मुझ पे दीवानगी छा गई हो
हर रुकावट वहां हट गई हो, बस नज़र में हों शाहे मदीना

मुश्किलें, आफ़तें दूर होंगी, ज़ुल्मतें ग़म की काफ़ूर होंगी
मेरी आंखें भी पुरनूर होंगी, इक झलक ! मेरे माहे मदीना

दिल से उल्फ़त जहां की निकालो, इस तबाही से मौला बचा लो
मुझ को दीवाना अपना बना लो, मेरा सीना बना दो मदीना

मुझ पे आक़ा ! निगाहे करम हो, दूर दुन्या का रन्जो अलम हो
बस अ़ता अपना ग़म चश्मे नम हो, दीजिये मुझ को पुरसोज़ सीना

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चरचा करूं सुन्नतों का
या ख़ुदा ! दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम ! बहरे ख़ाके मदीना

आंसूओं की झड़ी लग गई है, याद आक़ा की तड़पा रही है
इस पे दीवानगी छा गई है, याद आया है इस को मदीना

बा'दे मुर्दन येह एह़सान करना, मुंह पे ख़ाके मदीना छिड़क्ना
और मेरे कफ़न पर लगाना, गर मुयस्सर हो उन का पसीना

है तमन्नाए अ़त्तार या रब ! उन के जल्वों में यूं मौत आए
झूम कर जब गिरे मेरा लाशा, थाम लें बढ़ के शाहे मदीना

नज़्दीक आ रहा है र-मज़ान का महीना

नज़्दीक आ रहा है र-मज़ान का महीना
साहि़ल से ह़ाजियों का फिर आ लगा सफ़ीना

आक़ा ! न टूट जाए येह दिल का आबगीना
बुलवाइये मदीने दिखलाइये मदीना

दिल रो रहे हैं जिन के आंसू छलक रहे हैं
उन आ़शिक़ों का सदक़ा ! बुलवाइये मदीना

हिज्रो फ़िराक़ में दिल बेताब हो रहे हैं
उ़श्शाक़ रो रहे हैं लो चल दिया सफ़ीना

बेताब हो रहा है त़यबा की ह़ाज़िरी को
आ़शिक़ तड़प रहा है और फट रहा है सीना

रौज़े को देखने को आंखें तरस रही हैं
दिखला दो सब्ज़ गुम्बद या सय्यिदे मदीना

नज़रे करम खु़दारा मेरे सियाह दिल पर
बन जाएगा येह दम भर में बे बहा नगीना

रंगीनिये जहां से दिल टूट जाए मेरा
या रब ! मुझे बना दे तू आ़शिके़ मदीना

आंसू न थम रहे हों दिल ख़ून उगल रहा हो
जिस वक़्त तेरे दर पर आऊं शहे मदीना

बस आरज़ू येही है क़दमों में जान निकले
प्यारे नबी हमारा मदफ़न बने मदीना

ऐ बे कसों के हमदम ! दुन्या के दूर हों ग़म
बस जाए दिल में का'बा सीना बने मदीना

तब्लीग़ सुन्नतों की करता रहूं हमेशा
मरना भी सुन्नतों में हो सुन्नतों में जीना

आक़ा मेरी हुज़ूरी की आरज़ू हो पूरी
हो जाए दूर दूरी ऐ वालिये मदीना

उन के दियार में तू कैसे चले फिरेगा ?
अ़त्तार तेरी जुरअत ! तू जाएगा मदीना ! !

आह ! शाहे बह़रो बर ! मैं मदीना छोड़ आया

(काश ! मेरे भी येह जज़्बात होते, येह सिर्फ़ आ़शिक़े रसूल की मदीने से जुदाई के जज़्बात की तरजुमानी है)

आह ! शाहे बह़रो बर ! मैं मदीना छोड़ आया

कोहे ग़म पड़ा सर पर, मैं मदीना छोड़ आया

आह ! मस्जिदे न-बवी, हाए गुम्बदे ख़ज़रा

आह ! रौज़ए अन्वर, मैं मदीना छोड़ आया

ग़म के छा गए बादल, दिल में मच गई हल चल

आह ! ऐ मेरे यावर ! मैं मदीना छोड़ आया

जब चला था त़यबा को, थी ख़ुशी मेरे दिल को

आह ! अब है दिल मुज़्त़र मैं मदीना छोड़ आया

दिल में बे क़रारी है और गिर्या त़ारी है

बह रही है चश्मे तर, मैं मदीना छोड़ आया

छुप गया निगाहों से, आह ! सब मदीने का
दिलकशो ह़सीं मन्ज़र, मैं मदीना छोड़ आया

क़ल्ब पारा पारा है, हिज्रे शह ने मारा है
आह ! मेरे चारागर ! मैं मदीना छोड़ आया

अब ग़मे मदीना से, चाक चाक सीना है
क्यूं कहूं न रो रो कर, मैं मदीना छोड़ आया

लुत़्फ़ जो है त़यबा में वोह कहां वत़न में है
क्या करूंगा जा कर घर, मैं मदीना छोड़ आया

लौट कर न मैं आता, काश ! जान दे देता
गिर के ख़ाके त़यबा पर, मैं मदीना छोड़ आया

आह ! दिन मदीने के, जल्द जल्द गुज़रे थे
हाए जल्द छूटा दर, मैं मदीना छोड़ आया

दिन को भी सुरूर आता, शब को भी ज़रूर आता
क्या फ़ज़ा थी कैफ़ आवर, मैं मदीना छोड़ आया

था वहां समां नूरी, रन्जो ग़म से थी दूरी
आह ! नूर के पैकर ! मैं मदीना छोड़ आया

वक़्ते हिज्र जब आया, फूट फूट कर रोया
दर्दनाक था मन्ज़र, मैं मदीना छोड़ आया

हिज्र का है सदमा और सीना व जिगर मेरे
रख के क़ल्ब पर पथ्थर, मैं मदीना छोड़ आया

हिज्र के मैं सदमों से, चूर चूर ज़ख़्मों से
चल रहा था रो रो कर, मैं मदीना छोड़ आया

जब मदीना छूटा था ग़म का कोह[1] टूटा था
जानो दिल लिये मुज़्तर, मैं मदीना छोड़ आया

सब्ज़ गुम्बदो मीनार, आह ! छुट गए सरकार
फिर बुलाइये सरवर, मैं मदीना छोड़ आया

---

1. पहाड़

था गमे मदीना में, फ़ुरक़ते मदीना में
दिल मेरा बहुत मुज़्तर, मैं मदीना छोड़ आया

मेरे ह़ामी व हमदम ! दूर हों जहां के ग़म
दे दो अपना ग़म सरवर ! मैं मदीना छोड़ आया

दिल में है परेशानी, हो करम ऐ सुल्तानी
आओ ख़्वाब में सरवर ! मैं मदीना छोड़ आया

दिल की है अ़जब ह़ालत, सदमा व ग़मे फ़ुरक़त
अल फ़िराक़ ऐ सरवर ! मैं मदीना छोड़ आया

चल दिया सफ़ीना है छुट गया मदीना है
हाए ! क्या करूं सरवर, मैं मदीना छोड़ आया

ग़म की हो गया तस्वीर, आह ! हिज्र है तक़्दीर
चुप हुवा हूं रो रो कर ! मैं मदीना छोड़ आया

दूर हो गया सरकार ! आह ! ग़मज़दा अ़त्तार
जल्द आऊं फिर दर पर, मैं मदीना छोड़ आया

जिस को चाहा मीठे मदीने का उस को मेहमान किया

जिस को चाहा मीठे मदीने का उस को मेहमान किया
जिस पर नज़्रे करम फ़रमाई उस पर येह एह्सान किया

ता़लिबे दुन्या ने तो त़लब लन्दन है किया जापान किया
दीवानों ने ह़क़ से त़लब त़यबा का रेगिस्तान किया

जिन का सितारा चमका उन को त़यबा का पैग़ाम मिला
बख़्त वरों ने दर पर आ कर बख़्शिश का सामान किया

शुक्र अदा हो क्यूंकर तेरा प्यारे नबी की उम्मत में
मुझ से निकम्मे को भी पैदा तू ने ऐ रह़मान किया

शाहे मदीना दीन की दौलत अपनी उल्फ़त भी दी और
अपनी गुलामी मुझ को अ़ता़ की तू ने बड़ा एह़सान किया

दौरे जहालत था हर सू जब कुफ़्र की ज़ुल्मत छाई थी
तुम ने हैवानों जैसे लोगों को भी इन्सान किया

हक़ की राह में पथ्थर खाए ख़ूं में नहाए ताइफ़ में
दीन का कितनी मेहनत से काम आप ने ऐ सुल्तान किया

जान के दुश्मन ख़ून के प्यासों को भी शहरे मक्का में
आम मुआफ़ी तुम ने अता की कितना बड़ा एहसान किया

रोना मुसीबत का मत रो तू प्यारे नबी के दीवाने
कर्बो बला वाले शहज़ादों पर भी तू ने ध्यान किया

प्यारे मुबल्लिग़ ! मा'मूली सी मुश्किल पर घबराता है
देख हुसैन ने दीन की ख़ातिर सारा घर कुरबान किया

वोह दुन्या की रंगीनी में खोया रहा बरबाद हुवा
जिस ने इश्के़ नबी से दिल को ख़ाली और वीरान किया

शाह को येह मे'राज की शब कितना ऊंचा ए'ज़ाज़ मिला
आप ने तो चश्माने सर से दीदारे रहमान किया

आह ! मुक़द्दर अर्सा हुवा अत्तार मदीने जा न सका
हाए ! इसे हालात ने जकड़ा यूं ख़ूने अरमान किया

सरकार फिर मदीने में अ़त्त़ार आ गया

(اَلْحَمْدُلِلّٰه 2 र-मज़ानुल मुबारक 1414 सि.हि. को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَااللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की महकी महकी फ़ज़ाओं में पहले ही दिन येह मा'रूज़ा पेश करने का शरफ़ ह़ासिल हुवा)

सरकार फिर मदीने में अ़त्त़ार आ गया
फिर आप का गदा शहे अबरार आ गया

तुम बख़्शवा दो हर ख़त़ा सदक़ा हुसैन का
उम्मीदे मग़्फ़िरत पे गुनहगार आ गया

राज़ी हमेशा के लिये हो जाइये शहा !
येह दाइमी रिज़ा का त़लब गार आ गया

होती हैं रात दिन यहां रह़मत की बारिशें
बख़्शा गया जो त़यबा में बदकार आ गया

दौलत की ताजो तख़्त की आक़ा नहीं त़लब
तुम से फ़क़त़ तुम्हारा त़लब गार आ गया

उस की बलाएं टल गईं ग़म दूर हो गए
जो कोई दर पे बे कसो नाचार आ गया

आक़ा ग़मे मदीना में बेह़ाल कीजिये
हर कोई देख कर कहे बीमार आ गया

दिल बे क़रार दो मुझे आंख अश्कबार दो
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

सोज़े जिगर अ़त़ा करो सीना फ़िगार दो
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

ऐ काश ! याद में तेरी रोना नसीब हो
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

मरज़े गुनाह से मुझे दे दीजिये शिफ़ा
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

मुझ को बक़ीए़ पाक में दो गज़ ज़मीन दो
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

है ज़ाइरे मदीना शफ़ाअ़त का मुस्तह़िक़
येह भीक लेने दर पे मैं सरकार आ गया

आ़सी पे कीजिये करम ऐ शाफ़ेए़ उमम
अ़त्त़ार मग़्फ़िरत का त़लब गार आ गया

क्यूं बारहवीं पे है सभी को प्यार आ गया

क्यूं बारहवीं पे है सभी को प्यार आ गया
आया इसी दिन अह़मदे मुख़्तार आ गया

घर आमिना के सय्यिदे अबरार आ गया
खुशियां मनाओ ग़मज़दो ग़म ख़्वार आ गया

जिस वक़्त कोई मरह़ला दुश्वार आ गया
उस वक़्त काम सय्यिदे अबरार आ गया

बरसीं घटाएं रह़मतों की झूम झूम कर
रह़मत सरापा जब मेरा सरदार आ गया

अ़र्सा जुदाई को हुवा अब तो बुलाइये
फिर काश ! रो रो कर कहूं सरकार आ गया

आऊंगा जब मदीने तो रो कर कहूंगा मैं
भागा हुवा येह तेरा गुनहगार आ गया

बारे गुनाह सर पे है आंखों में अश्क हैं
बख़्शिश की आस ले के गुनहगार आ गया

मुझ को शिफ़ा दो या नबी मरज़े गुनाह से
दर पर तुम्हारे इस्यां का बीमार आ गया

बीमार अपने इश्क़ का मुझ को बनाइये
येह अ़र्ज़ ले के दर पे मैं सरकार आ गया

कासा लिये उम्मीद का सुल्ताने दो जहां दर पर तुम्हारा ताृलिबे दीदार आ गया

ख़ाली न लौटा कोई भी दरबार से कभी सुल्ताृन आया या कोई नादार आ गया

सरकार ! मुझ को शरबते दीदार हो अ़ता अब दम लबों पे या शहे अबरार आ गया

ग़ौसो रज़ा का वासिता हम को बुलाइये आ कर ख़ुशी से सब कहें दरबार आ गया

जूते उतार लो चलो बा होश बा अदब देखो मदीने का ह़सीं गुलज़ार आ गया

अब सर झुकाए ज़ाइरो ! पढ़ते हुए दुरूद आगे बढ़ो लो देख लो दरबार आ गया

इश्क़े नबी में अश्क करो पेश ज़ाइरो दरबारे आ़ली मम्बए अन्वार आ गया

आगे बढ़ो ऐ आ़सियो क़दमों में जा पड़ो वोह बे कसों का या-वरो ग़म ख़्वार आ गया

अब मुस्कुराते आइये सूए गुनाहगार आक़ा अंधेरी क़ब्र में अ़त्तार आ गया

अ़त्तार को जो देखा उठा ह़श्र में येह शोर
देखो गुलामे सय्यिदे अबरार आ गया

बिल-यक़ीं उस को तो जीने का क़रीना आ गया

बिल-यक़ीं उस को तो जीने का क़रीना आ गया
जिस के लब पे हर घड़ी ज़िक्रे मदीना आ गया

साहि़ले जद्दा पे लो अपना सफ़ीना आ गया
झूम जाओ आ़शिक़ो ! मीठा मदीना आ गया

ख़ूब मचलो झूम लो और ख़ाक उठा कर चूम लो
लो वोह मक्का आ गया देखो मदीना आ गया

ग़म ग़लत़ हो जाएंगे बस मुस्कुरा के देख लो !
ग़म का मारा दर पे या शाहे मदीना आ गया

पाउं में जूता अरे ! मह़बूब का कूचा है येह
होश कर तू होश कर ग़ाफ़िल ! मदीना आ गया

हिज्र के मारों के दिल में हूक सी उठने लगी
क़ाफ़िले त़यबा चले ह़ज का महीना आ गया

मुझ को रोता छोड़ कर सब क़ाफ़िले वाले चले
लौट कर मैं ग़मज़दा, शाहे मदीना आ गया

मौज हर बिफरी हुई है अब ख़ुदारा आइये !
गर्दिशे तूफ़ान में अपना सफ़ीना आ गया

किस क़दर है बा मुक़द्दर वोह मुसल्मां भाइयो !
ख़्वाब में जिस को नज़र शाहे मदीना आ गया

इक तबस्सुम रेज़ होंटों की झलक दिखलाइये
जां बलब[1] के अब तो माथे पर पसीना आ गया

टल गया मुझ से अ़ज़ाब और क़ब्र रोशन हो गई
क़ब्र में मेरी शहन्शाहे मदीना आ गया

शाफ़ेए़ मह़शर ! मेरी इमदाद को अब आइये !
ह़श्र में बारे गुनह ले कर कमीना आ गया

क्यूं न रश्क उस पर करें फिर येह जहां के ताजदार
हाथ जिस के इश्क़े अह़मद का ख़ज़ीना[2] आ गया

अ़र्ज़ रो रो कर करूंगा जब मदीने जाऊंगा
या नबी दर पर गुनहगारो कमीना आ गया

आप के लुत़्फ़ो करम से कह उठे अ़त्तार काश !
दिल मदीना हो गया दिल में मदीना आ गया

1 : मरने के क़रीब 2 : ख़ज़ाना

फिर मदीने की फ़ज़ाएं पा गया

(الحمدللہ عزوجل मदीनए मुनव्वरह की रंगीन फ़ज़ाओं में 28 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1416 सि.हि. को येह कलाम क़लम बन्द करने की सआदत नसीब हुई)

फिर मदीने की फ़ज़ाएं पा गया　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

अपने सर पर लाद कर बारे गुनाह　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

आह ! पल्ले नेकियां कुछ भी नहीं　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

इस के नामे की सियाही दूर हो　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

नेकियों से दो बदल इस के गुनाह　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

दीजिये इस को शफ़ाअ़त की सनद　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

अज़ पए ग़ौसो रज़ा हो मग़्फ़िरत　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

सदक़ा शहज़ादों का हो चश्मे करम　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

ले कर उम्मीदे करम जाने करम　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

वासित़ा ज़हरा का दो ख़ुल्दे बरीं　　या रसूलल्लाह मुजरिम आ गया

उस को भी तुम तो लगाते हो गले　　जिस को हर दरवाज़े से टाला गया

ऐ मेरे सरवर अ़ता हो चश्मे तर　　भीक लेने दर पे मंगता आ गया

क़ल्बे मुज़्तर का सुवाली हूं शहा ! भीक लेने दर पे मंगता आ गया

दीजिये सोज़े जिगर सुल्ताने दीं ! भीक लेने दर पे मंगता आ गया

मेरा सीना ही मदीना दो बना भीक लेने दर पे मंगता आ गया

या नबी क़ुफ़्ले मदीना दीजिये भीक लेने दर पे मंगता आ गया

सय्यिदी ! अख़्लाक़ अच्छे कीजिये भीक लेने दर पे मंगता आ गया

ले के कश्कोल आप के दरबार में भीक लेने दर पे मंगता आ गया

दूर हो जाए गुनाहों का मरज़ भीक लेने दर पे मंगता आ गया

दो बना मुझ को पसन्दीदा गुलाम भीक लेने दर पे मंगता आ गया

दौलते इख़्लास हो आक़ा अ़ता भीक लेने दर पे मंगता आ गया

आप की नज़रे करम जूं ही पड़ी अब्रे रह़मत मेरे सर पर छा गया

अल मदद ऐ आमिना के लाडले हाए ! मुझ पर नफ़्स ग़ालिब आ गया

बद्रे कामिल देख कर तल्वा तेरा फ़क़ हुवा फीका पड़ा शरमा गया

अल्लाह अल्लाह ! आप का हुस्नो जमाल दोस्त क्या दुश्मन के दिल को भा गया

दुश्मने महबूब बू जहले लईं बद्र में रुस्वा हुवा मारा गया

गुलशने आ़लम की क्या देखूं बहार मेरे दिल को दश्ते त़यबा भा गया

नाखुने पा की ज़ियाएं मरह़बा ! येह हिलाले ईद भी शरमा गया

सब्ज़ गुम्बद की बहारें देख लो ! आंख खोलो देखो रौज़ा आ गया

ले के पलटा उन से मुंह मांगी मुराद जो कोई दरबार में मंगता गया

क़ाफ़िला सूए मदीना जब चला लब पे ना'तों का तराना आ गया

चांद दो टुकड़े हुवा सदक़े गया जब इशारा मुस्त़फ़ा का पा गया

पा के मरज़ी सरवरे कौनैन की डूबा सूरज फिर पलट कर आ गया

मरह़बा सल्ले अ़ला का शोर उठा ह़श्र में जब उन का दीवाना गया

नाज़ उठाए थे जहां में जिस के वोह ह़श्र में नाज़ों का पाला आ गया

ह़श्र में उन के गदा को देख कर ख़ुद जहन्नम को पसीना आ गया

आंख ठन्डी हो तेरे दीदार से त़ालिबे दीदार दर पर आ गया

शोर उठा मह़शर में येह चारों त़रफ़
आ गया अ़त्त़ार उन का आ गया

मुझे मदीने की दो इजाज़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

मुझे मदीने की दो इजाज़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
पिलाओ बुलवा के जामे उल्फ़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
अगर नहीं मेरी ऐसी क़िस्मत, सदा हुज़ूरी की पाऊं लज़्ज़त
रुलाए मुझ को तुम्हारी फ़ुरक़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
अ़त़ा हो मुझ को ग़मे मदीना, तपां जिगर चाक चाक सीना
बढ़े मह़ब्बत की ख़ूब शिद्दत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
लगाओ सीने में आग ऐसी, क़रार पाए न दिल कभी भी
रुलाए दिन रात तेरी उल्फ़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
मैं नाम पर तेरे वारी जाऊं, मैं इश्क़ में तेरे सर कटाऊं
दो ऐसा जज़्बा दो ऐसी हिम्मत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
हुसैन इब्ने अ़ली का सदक़ा, हमारे ग़ौसे जली का सदक़ा
अ़त़ा मदीने में हो शहादत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
हर इक नबी हर वली का सदक़ा, तुझे तेरी हर गली का सदक़ा
दे त़यबा में मरने की सआ़दत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत
इमाम अह़मद रज़ा का सदक़ा, हमारे मुर्शिद ज़िया का सदक़ा

बक़ीए ग़रक़द करो इनायत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

वसीला खु-लफ़ाए राशिदीं का, तमाम अस्ह़ाबो ताबिईं का

जवार जन्नत में हो इनायत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

मुझे तुम ऐसी दो हिम्मत आक़ा, दूं सब को नेकी की दा'वत आक़ा

बना दो मुझ को भी नेक ख़स्लत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

क़लील रोज़ी पे दो क़नाअ़त, फ़ुज़ूल गोई से दे दो नफ़रत

दुरूद पढ़ता रहूं ब कसरत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

गुनह के दलदल से अब निकालो, मुझे संभालो मुझे बचा लो

कहीं न हो जाऊं शाह ! ग़ारत, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

बना दो सब्रो रिज़ा का पैकर, बनूं ख़ुश अख़्लाक़ ऐसा सरवर

रहे सदा नर्म ही त़बीअ़त, नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

न हो अ़त़ा इस को मालो दौलत,
न दीजे अ़त्त़ार को हुकूमत
येह तेरा त़ालिब है जाने रह़मत,
नबिय्ये रह़मत शफ़ीए उम्मत

पहुंचूं मदीने काश ! मैं इस बेख़ुदी के साथ

पहुंचूं मदीने काश ! मैं इस बेखुदी के साथ
रोता फिरूं गली गली दीवानगी के साथ

आते हैं मुझ को याद वोह लम्हाते खुश गवार
गुज़रे थे त़यबा में जो कभी मुर्शिदी के साथ

जूं ही निगाह गुम्बदे ख़ज़रा को चूम ले
कुरबान मेरी जान हो खुद रफ़्तगी[1] के साथ

मुझ को बक़ीए़ पाक में दो गज़ ज़मीं मिले
या रब ! दुआ़ है तुझ से मेरी आ़जिज़ी के साथ

अल्लाह ! मेरा ह़श्र हो बू बक्र और उ़मर
उ़स्मां ग़नी व ह़ज़रते मौला अ़ली के साथ

पलटेगा पाक हो के दरे मुस्त़फ़ा से वोह
पहुंचेगा जो गुनाहों की आलू-दगी के साथ

1 : बे खुदी, मदहोशी

हर इक गुनहगार पुकारेगा ह़श्र में
आक़ा को अश्कबार बड़ी बे बसी के साथ

महशर में मुझ को जूं ही नज़र आएंगे हुज़ूर
क़दमों में लोट जाऊंगा वारफ़्तगी[1] के साथ

या रब ! तेरे करम से जगह खुल्द[2] में मिले
मुझ को रसूले पाक की हम सा-यगी के साथ

वोह यारे ग़ार भी हैं तो यारे मज़ार भी
बू बक्र आज भी तो हैं हर दम नबी के साथ

रोटी भी जव की और बिछोना चटाई का
करते गुज़र बसर वोह बड़ी सादगी के साथ

फ़ैज़ाने ग़ौसे पाक बिला रैब[3] सब के सब
अ़त्तारियों के साथ है हर क़ादिरी के साथ

ऐसा करम हो नेकियों में दिल लगा करे
पढ़ता हूं गर नमाज़ भी तो बे दिली के साथ

1 : दीवानगी 2 : जन्नत 3 : बेशक

ऐ ज़ुल जलाल तुझ से मेरे दो सुवाल हैं
त़यबा में मौत, ज़िन्दगी गुज़रे ख़ुशी के साथ
इक बार मुस्कुरा के मुझे देख लीजिये
दम तोड़ दूंगा क़दमों में वारफ़्तगी के साथ
मायूस क्यूं हो आ़सियो ! तुम ह़ौसला रखो
रब की अ़त़ा से उन का करम है सभी के साथ
ख़ुत़्बा, अज़ां, नमाज़, इ़बादत कोई सी हो
ज़िक्रे नबी ज़रूर है हर बन्दगी के साथ
तुम म-दनी क़ाफ़िलों में ऐ इस्लामी भाइयो !
करते रहो हमेशा सफ़र ख़ुशदिली के साथ
अपनाए जो सदा के लिये सुन्नते नबी
मेरी दुआ़ है ख़ुल्द में जाए नबी के साथ
इस्लामी भाई, "दा'वते इस्लामी" का सदा
तुम म-दनी काम करते रहो तन्दही के साथ
सरकार ह़ाज़िरी हो मदीने की बार बार
अ़त्त़ार की है अ़र्ज़ बड़ी आ़जिज़ी के साथ

मरह़बा सद मरह़बा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

(16 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1426 सि.हि.)

मरह़बा सद मरह़बा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद
आमदे नूरे ख़ुदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

या ह़बीबे किब्रिया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद
ताजदारे अम्बिया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

ऐ मेरे मुश्किल कुशा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद
जानो दिल तुम पर फ़िदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

सरवरे अर्ज़ो समा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद
ऐ शहे हर दो सरा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

शम्स में तेरी ज़िया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद
मह में तेरा चांदना सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

क्यूं येह घर घर रोशनी है आज किस का जश्न है ?
आमिना के लाल का सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आज क्यूं चारों त़रफ़ येह मरह़बा की धूम है ?
क्यूं है हर सू गुलगुला सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद ?

बात येह है आज दुन्या में हुए हैं जल्वा गर
मीठे मीठे मुस्त़फ़ा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

मरह़बा जश्ने विलादत मरह़बा सद मरह़बा
नूरे ऐ़ने आमिना सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

जश्ने मीलादुन्नबी की धूम है चारों त़रफ़
हर कोई है कह रहा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

रह़्मतुल्लिल आ़-लमीं की हो गई जल्वा गरी
बाबे रह़मत वा हुवा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

चश्मे मा रोशन दिले मा शाद ऐ जाने चमन
मरह़बा या मुस्त़फ़ा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

छट गए ज़ुल्मत के बादल दूर अंधेरा हो गया
नूर वाला आ गया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

ख़ानए का'बा में जो बुत थे सब औंधे गिर पड़े
दबदबा आमद का था सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

अम्बिया व मुर-सलीं सब की इमामत का तेरे
सर पे है सेहरा सजा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आमिना के घर में जब आमद मुह़म्मद की हुई
चार सू येह शोर उठा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

ख़ूब सदक़ा बट रहा है आमिना के घर पे आज
आए शाहे अस्ख़िया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

हम ग़रीबों के तो बस वारे ही न्यारे हो गए
दर तुम्हारा मिल गया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

भर दो सीने में सुरूर और आंख कर दो नूर नूर
दिल मेरा दो जगमगा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

क़ब्र में जल्वा नबी का देख कर अ़त्तार काश !
बोल उठे बे साख़्ता सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आ गए हैं मुस्तफ़ा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

(16 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1426 सि.हि.)

आ गए हैं मुस्तफ़ा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद हो गए जल्वा नुमा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

सय्यिदो सरदारे मा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद राज़दारे किब्रिया सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

मालिको मुख़्तारे मा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद नाइबे रब्बुल उ़ला सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आमिना के दिलरुबा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद ऐ हमारे रहनुमा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

मुस्कुराती फूल बरसाती और इठलाती हुई गुनगुनाती है सबा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

बुलबुलें हैं नग़्मा ख़्वां और पढ़ रही हैं कुमरियां ना'ते पाके मुस्तफ़ा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

सब्ज़ परचम चार सू लहरा रहे हैं जश्न है आमदे मह़बूब का सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

ग़मज़दो ग़म खाओ मत ऐ बे कसो घबराओ मत आ गए मुश्किल कुशा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

झूम जाओ बे कसो इमदाद करने आ गए ख़ल्क़ के ह़ाजत रवा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

बे नवाओ आओ तुम, आओ गदाओ आओ तुम सदक़ा ले लो नूर का सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आमिना के घर पे चलते हैं सब आओ मिल के साथ और लगाते हैं सदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

बे कसों के दाद-रस ऐ ख़ल्क़ के फ़रियाद-रस दूर कर रन्जो बला सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

चश्मे रह़मत कीजिये अपनी मह़ब्बत दीजिये दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

अपना ग़म दे दीजिये और चश्मे नम दे दीजिये दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

दर्दे इ़स्यां की दवा दो तुम शिफ़ा दो तुम शिफ़ा दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वों से येह दिल आबाद हो दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

आप के क़दमों में आक़ा ख़ातिमा बिलख़ैर हो दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

अब बक़ीए पाक में दो[2] गज़ ज़मीं दे दीजिये दर पे ह़ाज़िर है गदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

झूम कर हां झूम कर अ़त्तार लब को चूम कर

मस्त हो कर दो सदा सल्ले अ़ला ख़ुश आ-मदीद

या नबी मुझ को मदीने में बुलाना बार बार

या नबी मुझ को मदीने में बुलाना बार बार
बार बार आऊं बने आख़िर मदीने में मज़ार

हैं हवाएं महकी महकी तो फ़ज़ाएं ख़ुश गवार
ज़र्रा ज़र्रा है मदीने का यक़ीनन नूरबार[1]

काश जब आऊं मदीने ख़ूब त़ारी हो जुनूं[2]
हो गिरीबां चाक सीना चाक दामन तार तार

माल की कसरत का तख़्तो ताज का त़ालिब नहीं
हो अ़त़ा ख़स्ता जिगर और आंख दे दो अश्कबार

वासित़ा सिब्त़ैन का मेरा गुनाहों का मरज़
दूर कर दीजे ख़ुदारा ऐ त़बीबे ज़ी वक़ार

फ़िक्रे नज़्ए़ रूहो क़ब्रो ह़श्र से बच जाता गर
काश होता आप की गलियों का मैं गर्दो ग़ुबार

1 : नूर बरसाने वाले   2 : दीवानगी

आह छाया है गुनाहों का अंधेरा चार सू
हो निगाहे नूर मुझ पर या शहे आ़लम मदार

काश यावह गोई बद अख़्लाक़ी और बे जा हंसी
की मेरी सब आ़दतें छूटें मेरे परवर दगार

मिस्ले बिस्मिल[1] मैं तड़पता ही रहूं सरकार काश !
आप के ग़म में रहूं आक़ा हमेशा दिल फ़िगार

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

हो मदीना ही मदीना हर घड़ी विर्दे ज़बां
बस मदीना ही की हो तक्रार लब पर बार बार

गुम्बदे ख़ज़रा की ठन्डी ठन्डी छाउं में मेरा
ख़ातिमा बिलख़ैर हो ऐ काश ! मेरे किर्दिगार

ऐ मेरे आक़ा अ़ज़ीज़ों ने जिसे ठुकरा दिया
उस को क़दमों से लगा लो ग़मज़दों के ग़म गुसार

अ़र्सए मह़शर में आक़ा लाज रखना आप ही
दामने अ़त्तार है सरकार बेह़द दाग़दार

1 : ज़ख़्मी, बे क़रार

ग़म के मारों पर करम ऐ दो जहां के ताजदार

ग़म के मारों पर करम ऐ दो[2] जहां के ताजदार
अपने ग़म में अपनी उल्फ़त में रुलाओ ज़ार ज़ार

सदक़े जाऊं मुझ से आ़सी पर शहे कौनो मकां
बे अ़दद तेरी अ़त़ाएं रह़मतें हैं बे शुमार

जो तड़पते हैं मदीने की ज़ियारत के लिये
उन को भी आक़ा दिखा दो तुम मदीने की बहार

हो मेरा सीना मदीना ताजदारे अम्बिया
दिल में बस जाए तेरा जल्वा शहे आ़ली वक़ार

अज़ पए ग़ौसो रज़ा मस्कन मदीना दो बना
काश हो मदफ़न मदीना अज़ तुफ़ैले चार यार

घूमते रहते हो तुम आक़ा की गलियों में सदा
तुम पे हो जाऊं तसद्दुक़ ऐ सगाने कूए यार

बुलबुलो तुम को मुबारक फूल, पर मेरी नज़र
में मदीने की ह़सीं वोह झाड़ियां हैं ख़ारदार

आज के इस सुन्नतों के इज्तिमाए़ पाक में
जो भी आया बख़्श दे उस को मेरे परवर दगार[1]

कुछ तो कर एह़सास भाई छोड़ ना फ़रमानियां
ग़म में आक़ा अपनी उम्मत के हैं होते बे क़रार

मेरे ग़ैरत मन्द भाई मत मुंडा दाढ़ी को तू
याद रख येह दुश्मनाने मुस्त़फ़ा का है शिआ़र[2]

छोड़ अंग्रेज़ी त़रीक़े और फ़ेशन छोड़ दे
भाई कर ले सुन्नतों से ख़ूब रिश्ता उस्तुवार[3]

दे शरफ़ अ़त्त़ार को हर साल ह़ज का या ख़ुदा
हर बरस इस को दिखा मीठे मदीने का दियार[4]

مدینہ

1 : येह कलाम "दा'वते इस्लामी" के 1411 सि.हि. के सालाना इज्तिमाअ़ (मुन्अ़क़िदा बाबुल मदीना कराची) के मौक़अ़ पर पेश किया गया था लिहाज़ा शु-रकाए इज्तिमाअ़ के लिये भी दुआइया शे'र शामिल किया गया है। सगे मदीना । عُفِیَ عَنْہُ

2 : त़रीक़ा 3 : मज़बूत़ 4 : शह्र, अ़लाक़ा

रू सियाहों पर करम ऐ दो[2] जहां के ताजदार !

रू सियाहों पर करम ऐ दो[2] जहां के ताजदार !
अपने ग़म में अपनी उल्फ़त में रुलाओ ज़ार ज़ार

हुस्ने गुलशन में सरासर है फ़रेब ऐ दोस्तो !
देखना है हुस्न तो देखो अ़रब के रेगज़ार

राह भूला आह मन्ज़िल से भटक कर रह गया
साथ ले लो ऐ अ़रब के मेहरबां नाक़ा सुवार[1]

हम ग़रीबों को मदीने में बुला लो या नबी !
वासिता अह़मद रज़ा का दो[2] जहां के ताजदार

गर मुक़द्दर में मेरे दूरी लिखी है या नबी !
काश ! फ़ुरक़त में तेरी रोता रहूं मैं ज़ार ज़ार

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश[2] में
वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

مدینه
1 : ऊंटनी सुवार 2 : दाढ़ी

काश ! ख़िदमत सुन्नतों की मैं सदा करता रहूं
अहले सुन्नत का सदा[1] बन के रहूं ख़िदमत गुज़ार

हैं अ़ली मुश्किल कुशा साया कुनां सर पर मेरे
لَا فَتٰـی اِلَّا عَلِی لَا سَیْفَ اِلَّا ذُوالْفِقَار[2]

या शहीदे करबला ! हो दूर हर रन्जो बला
अब मदद को आओ दश्ते करबला के शह सुवार

अल मदद या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीरे बे कसां
फंस गई है नाउ तूफ़ां में लगा दें आप पार

या मुईनद्दीन ! आओ अब मदद के वासिते़
हो करम बदह़ाल पर ऐ चिश्तियों के ताजदार

या इमाम अह़मद रज़ा ! सदक़ा ज़ियाउद्दीन का
हो करम की इक नज़र ऐ सुन्नियों के ताजदार

मुस्त़फ़ा वाली तेरे अ़त्त़ार डर किस बात का
कारगर होगा न तुझ पर दुश्मनों का कोई वार

1 : हमेशा 2 : ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم जैसा कोई बहादुर नहीं और ज़ुल फ़िक़ार जैसी कोई तलवार नहीं ।

फिर मदीने की गलियों में ऐ किर्दिगार

फिर मदीने की गलियों में ऐ किर्दिगार काश पहुंचूं मैं रोता हुवा ज़ार ज़ार

काश आ कर मदीने में परवाना-वार सब्ज़ गुम्बद पे हो जाऊं आक़ा निसार

मालो दौलत के अम्बार[1] बेशक न दो बस मुक़द्दर में लिख दो मदीने के ख़ार

साक़िया जाम ऐसा पिला दो मुझे बा'दे मुर्दन[2] भी उतरे न जिस का ख़ुमार

चूमता रहता ना'लैन, सरकार के काश होता मैं त़यबा का गर्दो गुबार

आ गया ह़ज का मौसिम क़रीब आ गया मुझ पे भी हो करम मेरे परवर दगार

सिन्ध के बाग़ आंखों में जचते नहीं अब दिखा दो अ़रब के ह़सीं रेगज़ार

हम सभी उन के दरबारे दुरबार[3] में जाएंगे اِنْ شَآءَ الله ज़रूर एक बार

अज़ तुफ़ैले बिलालो उवैसो रज़ा दो दिले बे क़रार आंख दो अश्कबार

मुझ को आलामे दुन्या से आज़ाद कर मैं तेरे ग़म में रोऊं शहा ज़ार ज़ार

---

1 : ढेर 2 : मौत 3 : मोती बरसाने वाला

आप का नाम सुनते ही सरकार काश दिल मचलने लगे जान हो बे क़रार

मेरा सीना मदीना बना दीजिये क़ल्ब की हो मदीना मदीना पुकार

गिर पड़ो उन के क़दमों में रोते हुए आ़सियों पर भी उन को तो आता है प्यार

अब तो आ जाइये मुझ को छुड़वाइये हर त़रफ़ से गुनाहों का हूं मैं शिकार

मेरे आक़ा ! सिरहाने चले आइये जां बलब[1] कब तलक अब करे इन्तिज़ार

मेरी आमद हो त़यबा में ऐ काश यूं चाक सीना हो दामन भी हो तार तार

भाइयो, बहनो अपनाओ तुम सुन्नतें ख़ुश हो रब तुम से राज़ी शहे नामदार

मौत बदकार को आए त़यबा में, फिर हो बक़ीए़ मुबारक में इस का मज़ार

या ख़ुदा बे सबब बख़्श अ़त्त़ार को
इस को जन्नत में दे दे नबी का जवार[2]

مدینہ

1 : जो मरने के क़रीब हो 2 : पड़ोस

हो गया ह़ाजियों का शुरूअ़ अब शुमार

हो गया ह़ाजियों का शुरूअ़ अब शुमार इज़्न मुझ को भी दे दो शहे ज़ी वक़ार
तेरी नज़्रे करम का हूं उम्मीद वार गो मेरे जुर्म सरकार हैं बे शुमार
फिर मदीने की जानिब चले क़ाफ़िले हो गए आ़शिक़ाने नबी बे क़रार
अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म निगाहे करम फिर दिखा दो मदीने के लैलो नहार
मेरे मीठे मदीने की क्या बात है है फ़ज़ा महकी महकी हवा ख़ुश गवार
जिस क़दर भी हैं इस्लामी भाई बहिन सब को बुलवाओ मह़बूबे परवर दगार
अ़र्श पर फ़र्श पर ख़ुल्द पर ख़ल्क़ पर इज़्ने रब से है नाफ़िज़ तेरा इक़्तिदार
कीजिये दूर दुन्या के रन्जो अलम आप पर मेरे ह़ालात हैं आशकार
मेरे नज़्दीक आए न पतझड़ कभी ताजदारे मदीना दो ऐसी बहार
फंस गई नाउ इस्यां के तूफ़ान में अब लगा दो मेरे नाख़ुदा जल्द पार
मेरे दामाने तर की शफ़ीउ़ल वरा लाज रखना ख़ुदारा बरोज़े शुमार
सुन्नतों का मैं चरचा करूं रात दिन हो अ़ता ऐसा जज़्बा पए चार यार
ऐ मदीने के ज़ाइर दरे पाक पर अ़र्ज़ करना मेरा भी सलाम अश्कबार

पीरो मुर्शिद के सदक़े हो ऐसी अ़ता
आए अ़त्तार दरबार में बार बार

ह़सरत भरे दिलों से हम आए हैं लौट कर

ह़सरत भरे दिलों से हम आए हैं लौट कर
है चाक चाक हिज्र में येह सीना व जिगर
अच्छा लगेगा अब हमें कैसे वत़न में घर
अफ़्सोस छोड़ आए मुह़म्मद का पाक दर

हम को तो इस लिये है मदीना अ़ज़ीज़ तर
इस में जनाबे रह़मते आ़लम हैं जल्वा गर
ऐसा सुकून जा के मैं ढूंडूंगा अब किधर !
जैसा सुकून था मुझे रौज़े को देख कर

वोह सब्ज़ गुम्बद और वोह मीनार छुट गए
सरकार का मदीना हम आए हैं छोड़ कर
मीठा मदीना हाए ! निगाहों से छुप गया
ऐ आंख ! ख़ून रो ले तू रोना है जिस क़दर

दिल ख़ून उगल रहा था मेरा हिज्रे शाह में
जब चल पड़ा था शहरे मदीना को छोड़ कर

अश्कों की लग गई थी झड़ी मेरी आंख से
छूटा था जब मदीना मैं रोया था फूट कर
कूचे में शाहे कौनो मकां के सुकून था
आता था लुत्फ़ गुम्बदे ख़ज़रा को देख कर
बेहतर है मौत फ़ुरक़ते त़यबा से बिल-यक़ीं
मर जाता काश ! आक़ा मदीने की ख़ाक पर
रोता रहूं, तड़पता रहूं चैन ही न आए
ग़म अपना ऐसा दो मुझे ऐ शाहे बह़रो बर
सोज़ो गुदाज़ इस की फ़ज़ाओं में चार सू
पुरकैफ़ो पुर सुकून है सरकार का नगर
मुझ को बक़ीए़ पाक में दो[2] गज़ ज़मीन दो
ह़-सनैन के तुफ़ैल, मदीने के ताजवर
दुन्या के रन्ज मैट के ग़म अपना दे इसे
बदकार पर हो ऐसी मेरे मुस्त़फ़ा नज़र
अ़त्त़ार कर रहा है येह रो रो के इल्तिजा
फिर से बुलाइयेगा मदीने में जल्द तर

लिख रहा हूं ना'ते सरवर सब्ज़ गुम्बद देख कर

लिख रहा हूं ना'ते सरवर सब्ज़ गुम्बद देख कर
कैफ़ त़ारी है क़लम पर सब्ज़ गुम्बद देख कर

है मुक़द्दर या-वरी पर सब्ज़ गुम्बद देख कर
फिर न क्यूं झूमे सनागर सब्ज़ गुम्बद देख कर

मस्जिदे न-बवी पे पहुंचे मरह़बा सल्ले अ़ला
हो गया जारी ज़बां पर सब्ज़ गुम्बद देख कर

जूं ही मैं पहुंचा मदीने की गली में बे क़रार
आंख मेरी हो गई तर सब्ज़ गुम्बद देख कर

रूह़ को तस्कीन जाने मुज़्त़रिब को चैन है
दिल को भी राह़त मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

उन के मंगते, उन के साइल दो जहां की ने'मतें
मांगते हैं हाथ उठा कर सब्ज़ गुम्बद देख कर

आप से बस आप ही को मांगता है या नबी !
आप का अदना गदागर सब्ज़ गुम्बद देख कर

लन्दनो पेरिस का आ़शिक़ भी यक़ीनन मरह़बा !
बोल उठेगा रूह़ परवर सब्ज़ गुम्बद देख कर

धूप रोज़ाना मदीना झूम कर है चूमती
और लिपट जाती है आ कर सब्ज़ गुम्बद देख कर

चूम लेता है मदीना रोज़ आ कर आफ़्ताब
फिर लिपट जाता है आ कर सब्ज़ गुम्बद देख कर

टूट जाए दम मदीने में मेरा या रब ! बक़ीअ़
काश हो जाए मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

जब जुदाई की घड़ी आती है तो कोहे अलम
टूट पड़ता है दिलों पर सब्ज़ गुम्बद देख कर

आप की गलियों के कुत्ते मुझ से तो अच्छे रहे

है सुकूं उन को मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

वक़्ते रुख़्सत ख़ून उगलते थे मेरे क़ल्बो जिगर

आंख रो पड़ती थी अक्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

मेरे मुर्शिद ने गुज़ारे हैं मदीने में बरस

उन की रह़मत से सतत्तर सब्ज़ गुम्बद देख कर

या रसूलल्लाह ! मुर्शिद पर करम हों बे शुमार

सोए हैं क़दमों में आ कर सब्ज़ गुम्बद देख कर

आह ! ऐ अ़त्त़ार इतना भी न तुझ से हो सका !

जान कर देता निछावर सब्ज़ गुम्बद देख कर

नाबीना को चालीस क़दम चलाने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **जो किसी नाबीना को चालीस[40] क़दम हाथ पकड़ कर चलाएगा उस के चेहरे को जहन्नम की आग नहीं छूएगी।**

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر ج ٤٨ ص٣)

सोया हुवा नसीब जगा दीजिये हुज़ूर

सोया हुवा नसीब जगा दीजिये हुज़ूर
मीठा मदीना मुझ को दिखा दीजिये हुज़ूर

अब "चल मदीना" का मुझे मुज़्दा सुनाइये
रोते हुए को अब तो हंसा दीजिये हुज़ूर

फिर सब्ज़ गुम्बद और वोह मीनार की बहार
ग़ौसो रज़ा का सदक़ा दिखा दीजिये हुज़ूर

मिस्कीन हूं, ग़रीब हूं पल्ले नहीं है कुछ
ख़र्चा सफ़र का दीजिये ना ! दीजिये हुज़ूर

अ़-रफ़ात और मुज़्दलिफ़ा और मिना चलूं
ह़ज कर लूं ह़क़ से इज़्न दिला दीजिये हुज़ूर

ख़ु-लफ़ाए राशिदीन के सदक़े में या नबी
ख़्वाबों में अपना जल्वा दिखा दीजिये हुज़ूर

साइल ग़मे मदीना का हूं शाहे बह़रो बर
मुझ को ग़मे मदीना शहा दीजिये हुज़ूर

अह़मद रज़ा का वासित़ा उल्फ़त का साक़िया
मुझ को छलक्ता जाम पिला दीजिये हुज़ूर

हर वक़्त सोज़े इश्क़ में तड़पा करूं शहा
आग ऐसी मेरे दिल में लगा दीजिये हुज़ूर

ज़हरा के लाडलों का वसीला मैं लाया हूं
पज़्मुर्दा दिल को मेरे खिला दीजिये हुज़ूर

सदक़ा शहीदे करबला का शाहे अम्बिया
दीवानए मदीना बना दीजिये हुज़ूर

या मुस्त़फ़ा मैं उल्फ़ते दुन्या में फंस गया
इस क़ैद से ख़ुदारा छुड़ा दीजिये हुज़ूर

पुरख़ार वादियों में भटक के मैं रह गया
भूले हुए को राह दिखा दीजिये हुज़ूर

तौबा निबाह मैं नहीं पाता हूं या नबी !
अब इस्तिक़ामत आप शहा दीजिये हुज़ूर

डर लग रहा है आह ! जहन्नम की आग से
बख़्शिश का मुझ को मुज़्दा सुना दीजिये हुज़ूर

"कुफ़्ले मदीना" दीजिये मुर्शिद का वासित़ा
ख़ामोश रहना मुझ को सिखा दीजिये हुज़ूर

अ़त्त़ारे बद ख़िसाल का इस्यां शिआ़र का
दिल मुर्दा हो चुका है जिला दीजिये हुज़ूर

मुअ़ज़्ज़ज़ कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ ! तेरे नज़्दीक कौन सा बन्दा ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? फ़रमाया : वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे।

(شعب الایمان ج۶ ص۳۱۹ حدیث ۸۳۲۷)

या रसूलल्लाह ! तेरे चाहने वालों की ख़ैर

या रसूलल्लाह तेरे चाहने वालों की ख़ैर
सब ग़ुलामों का भला हो सब करें त़यबा की सैर

काश कि हिज्रे मदीना मुझ को रख्खे बे क़रार
चैन ही आए न मुझ को यादे त़यबा के बिग़ैर

या नबी अब तो मदीने में मुझे बुलवाइये
हो मुयस्सर बा अदब फिर आप की गलियों की सैर

काश ! त़यबा में शहादत का अ़त़ा हो जाए जाम
जल्वए मह़बूब में अन्जाम मेरा हो बख़ैर

फ़ालतू बातों की आ़दत दूर हो जाए हुज़ूर !
हो ज़बां पर मेरी अक्सर आप ही का ज़िक्रे ख़ैर

आ़इद आक़ा फ़र्दे इस्यां हो गई कर दे करम
कौन है जो बख़्शवाएगा मुझे तेरे बिग़ैर

तेज़ है तलवार की भी धार से येह पुल सिरात़
तुम संभाला दो कहीं जाए फिसल मेरा न पैर

उम्मते मह़बूब का या रब बना दे ख़ैर ख़्वाह
नफ़्स की ख़ात़िर किसी से दिल में मेरे हो न बैर

जाम ऐसा अपनी उल्फ़त का पिला दे साक़िया
ना'त सुन कर ह़ालते अ़त्त़ार हो रो रो के ग़ैर

ज़ुल्मते दुन्या मुझे तन्हा समझ कर यूं न घेर

ज़ुल्मते दुन्या मुझे तन्हा समझ कर यूं न घेर
माहे तयबा की तजल्ली में नहीं कुछ लगती देर[1]

या नबी तेरी दुहाई आफ़तों में घिर गया
रुख़ बदल दे मुश्किलों का और बलाएं मुझ से फेर

गुम्बदे ख़ज़रा को देखे एक अर्सा हो गया
कब खुलेगी मेरी क़िस्मत अब लगेगी कितनी देर !

नफ़्सो शैतां पर मुझे ग़-लबा अता कर या ख़ुदा
उस अली का वासिता देता हूं जो है तेरा शेर

आह ! मीज़ां पर खड़ा हूं शाफ़ेए महशर करम !
नेकियां पल्ले नहीं हैं बस गुनाहों का है ढेर

नारे दोज़ख़ में न ले जाए कहीं माले हराम
कर लो तौबा छोड़ दो ऐ भाइयो ! सब हेर फेर

सब को मरना ही पड़ेगा याद रख्खो भाइयो !
देर में जाएगा कोई, कोई चल देगा सवेर

या ख़ुदा आलम में ऊंचा परचमे इस्लाम हो
दुश्मनाने दीं मुसल्मानों से हों मग़्लूबो ज़ेर

इश्क़े अहमद ही से अत्तार आदमी है आदमी
वरना येह मिट्टी का पुतला है फ़क़त मिट्टी का ढेर[2]

1, 2 : दोनों अश्आर "मुफ़त्तिश" ने मौज़ूं किये हैं।

मरह़बा आज चलेंगे शहे अबरार के पास

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ 1422 सि.हि. ता 1423 सि.हि. के सफ़रे मदीना में ह़-रमैने त़य्यिबैन में येह कलाम क़लम बन्द किया)

मरह़बा आज चलेंगे शहे अबरार के पास — اِنْ شَآءَ اللّٰہ पहुंच जाएंगे सरकार के पास

पेश करने के लिये कुछ नहीं बदकार के पास — ढेरों इस्यां हैं गुनहगारों के सरदार के पास

मिल चुका इज़्न, मुबारक हो मदीने का सफ़र — क़ाफ़िले वालो चलो चलते हैं सरकार के पास

ख़ूब रो रो के वहां ग़म का फ़साना कहना — ग़मज़दो आओ चलो अह़मदे मुख़्तार के पास

मैं गुनहगार गुनाहों के सिवा क्या लाता — नेकियां होती हैं सरकार निकोकार के पास

सर भी ख़म आंख भी नम, शर्म से पानी पानी — क्या करे नज़्र नहीं कुछ भी गुनहगार के पास

आंख जब गुम्बदे ख़ज़रा का नज़ारा कर ले — दम निकल जाए मेरा आप की दीवार के पास

अ़र्सए ह़श्र में जब रोता बिलक्ता देखा — रह़्म खाते हुए दौड़ आए वोह बदकार के पास

मुजरिमो ! इतना भी घबराओ न मह़शर में तुम — मिल के चलते हैं सभी अपने मददगार के पास

दोनों[2] आ़लम की भलाई का सुवाली बन कर — इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

शाहे वाला येह मदीने का बने दीवाना — इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

अपना ग़म चश्मे नम और रिक़्क़ते क़ल्बी दीजे इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

उल्फ़ते नाब[1] मिले और दिले बेताब मिले इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

हुस्ने अख़्लाक़ मिले भीक में इख़्लास मिले इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

अज़ पए ग़ौसो रज़ा "कुफ़्ले मदीना[2]" मिल जाए इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

इस्तिक़ामत इसे ईमां पे अ़ता कर दीजे इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

है मदीने में शहादत का येह मंगता मौला इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

क़ब्रो महशर में अमां का है त़लब गार हुज़ूर इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

नारे दोज़ख़ से रिहाई का मिले परवाना इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

इस को जन्नत में जवार[3] अपना अ़त़ा हो दाता इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

आप से आप ही का है येह सुवाली आक़ा इक भिकारी है खड़ा आप के दरबार के पास

क़ब्र में यूं ही नकीरो ! नहीं आया उन की
है गुलामी की सनद देख लो अ़त्तार के पास

---

1 : उल्फ़ते नाब या'नी ऐसी महब्बत जिस में मिलावट न हो। 2 : येह दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह है। इस शे'र में "कुफ़्ले मदीना" से मुराद ख़ामोशी की सआ़दत है। 3 : पड़ोस

ह़स्रता वा ह़स्रता शाहे मदीना अल वदाअ़

ह़स्रता वा ह़स्रता शाहे मदीना अल वदाअ़
फट रहा है आप के ग़म में येह सीना अल वदाअ़

ख़ूब आता था सुरूर आक़ा मदीने में मुझे
छूटता है हाए अब मीठा मदीना अल वदाअ़

तेरी गलियों से बिछड़ कर भी है कोई ज़िन्दगी
दूर रह कर हाए मरना हाए जीना अल वदाअ़

आंख रोती है तड़पता है दिले ग़मगीन अब
लुट रहा है हाए कुरबत का ख़ज़ीना अल वदाअ़

दिल मेरा ग़मनाक फ़ुरक़त से कलेजा चाक चाक
फट रहा है तेरे ग़म में हाए ! सीना अल वदाअ़

मैं शिकस्ता दिल लिये बोझल क़दम रखता हुवा
चल पड़ा हूं या शहन्शाहे मदीना अल वदाअ़

ख़ून रोता है दिले मग़मूम हिज्रे शाह में
चाक है मेरा कलेजा चाक सीना अल वदाअ़

क़ाफ़िला चलने को है सब रो रहे हैं ज़ार ज़ार
टूटता है हाए ! दिल का आब-गीना अल वदाअ़

जाने कब फिर आएगा मीठा मदीना देखने
कब सफ़र पाएगा बदकारो कमीना अल वदाअ़

नाम सुनते ही मदीने का मैं आक़ा रो पडूं
काश ! आ जाए मुझे ऐसा क़रीना अल वदाअ़

आप की यादों के सदक़े वोह मिले सन्जीदगी
मैं न फिर बे जा हंसूं शाहे मदीना अल वदाअ़

माल का त़ालिब नहीं दे दो फ़क़त़ सोज़े बिलाल
हो अ़त़ा अपने गदा को येह ख़ज़ीना अल वदाअ़

अपनी उल्फ़त की शराब ऐसी पिला आए न होश
मुझ को हरगिज़ ऐ शहन्शाहे मदीना अल वदाअ़

काश ! मैं जाऊं जिधर देखूं मदीने की बहार
हो अ़ता आक़ा मुझे वोह चश्मे बीना अल वदाअ़

गो बुरा हूं, बे अ़मल हूं पर नहीं हूं बे अदब
आप का हूं, आप का, गो हूं कमीना, अल वदाअ़

अल फ़िराक़ आह अल फ़िराक़ ऐ प्यारे आक़ा अल फ़िराक़
फिर बुला लो जल्द आक़ाए मदीना अल वदाअ़

या रसूलल्लाह ! अब ले लो सलामे आख़िरी
चलने वाला है कराची को सफ़ीना अल वदाअ़

आह ! अब अ़त्तार जाता है मदीने से वत़न
हाए मजबूरी ! सुकूने क़ल्ब छीना अल वदाअ़

फिर अ़त़ा कर दीजिये ह़ज की सआ़दत या रसूल

फिर अ़त़ा कर दीजिये ह़ज की सआ़दत या रसूल
हो मदीने की इजाज़त भी इ़नायत या रसूल

ह़ज का मौसिम आ गया हुज्जाज ने बांधी कमर
मेरे ह़ज की भी कोई हो जाए सूरत या रसूल

चल पड़े हैं क़ाफ़िलों पर क़ाफ़िले सूए हिजाज़
मैं रहा जाता हूं हाए ! जाने रह़मत या रसूल

या रसूलल्लाह ! सदक़ा फ़ात़िमा के लाल का
दीजिये मुझ को मदीने की इजाज़त या रसूल

सब्ज़ गुम्बद की फ़ज़ाओं में बुला लो अब मुझे
अज़ पए शाहे इमामे अहले सुन्नत या रसूल

गर मेरी तक़्दीर में दूरी लिखी है या नबी
हर घड़ी मुझ को रुलाए तेरी फ़ुरक़त या रसूल

सदक़ा सिद्दीक़ो उ़मर उ़स्मानो ह़ैदर का हुज़ूर
ग़म मदीने का मुझे कर दो इ़नायत या रसूल

दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर के दीजिये
अपनी उल्फ़त अपनी चाहत दर्दो रिक़्क़त या रसूल

ताजे सुल्त़ानी है मेरी ठोकरों पर या नबी
तेरा ना'ले पाक मेरा ताजे इ़ज़्ज़त या रसूल

टूट जाए दम मदीने में शहा ! अ़त्त़ार का
और बक़ीए़ पाक में बन जाए तुरबत या रसूल

हो बयां किस से तुम्हारी शानो अ़-ज़मत या रसूल

हो बयां किस से तुम्हारी शानो अ़-ज़मत या रसूल
जब तुम्हारी खु़द खु़दा करता है मिद्ह़त या रसूल

जब भी आता है तेरा यौमे विलादत या रसूल
ख़ूब होती है मुयस्सर दिल को राह़त या रसूल

अ़र्श पर भी सल्त़नत है फ़र्श पर भी सल्त़नत
दोनों[2] आ़लम पर तुम्हारी है हुकूमत या रसूल

दौलते दुन्या के पीछे मारा मारा क्यूं फिरूं !
आप ही हैं मेरी दौलत और सरवत या रसूल

जो तड़पते हैं मदीने के लिये आक़ा उन्हें
काश ! हो जाए मदीने की ज़ियारत या रसूल

लम्ह़ा लम्ह़ा बढ़ रही हैं हाए ! ना फ़रमानियां
और गुनाहों की नहीं जाती है आ़दत या रसूल

काश ! हंसने बे बजाए मुझ को रोना हो नसीब
आंख से बहते रहें अश्के मह़ब्बत या रसूल

नेकियों में या रसूलल्लाह दिल लग जाए काश !
और गुनाहों से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूल

या नबी ! बेकार बातों की हो आ़दत मुझ से दूर
बस दुरूदे पाक की हो ख़ूब कसरत या रसूल

आमिना के लाल ! मुझ को दीजिये सोज़े बिलाल
माले दुन्या से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूल

रह़मते आ़लम सिरहाने मुस्कुराते आइये
जां बलब हूं आ गया अब वक़्ते रिह़लत या रसूल

आप के क़दमों में गिर जाऊंगा फ़र्ते शौक़ से
क़ब्र में होगी मुझे जिस दम ज़ियारत या रसूल

नारे दोज़ख़ में गिरा ही चाहता था मैं निसार
अपनी रह़मत से अ़त़ा फ़रमाई जन्नत या रसूल

या शहे अबरार ! दे दो ख़ुल्द में अपना जवार[1]
अज़ पए ग़ौसुल वरा हो चश्मे रह़मत या रसूल

नेकियां बिल्कुल नहीं हैं नामए आ'माल में
कीजिये अ़त्त़ार की आ कर शफ़ाअ़त या रसूल

1 : पड़ोस

फिर से बुलाओ जल्द मदीने में या रसूल

फिर से बुलाओ जल्द मदीने में या रसूल
कर दो करम हुज़ूर ! पए फ़ाति़मा बतूल

दुन्या परस्त ज़र पे मरे गुल पे अ़न्दलीब
अपना तो इन्तिख़ाब मदीने का है बबूल

बीमारे हिज्र का अभी हो जाएगा इलाज
जाओ उठा के लाओ मदीने की थोड़ी धूल

दुन्या की लज़्ज़तों से मेरी जान छूट जाए
मुझ को बना दे या ख़ुदा तू आ़शिक़े रसूल

मेरी ज़बान तर रहे ज़िक्रो दुरूद से
बे जा हंसूं कभी न करूं गुफ़्त-गू फ़ुज़ूल

मेरी पसन्द ख़ारे मदीना है बुलबुलो
ले कर मैं क्या करूंगा तुम्हारे यहां के फूल

खु़श बख़्त बे शुमार मदीने में दफ़्न हैं
हो जाए उन में काश ! मेरा भी कभी शुमूल

परचार सुन्नतों का जो करता है रात दिन
हर दम हो उस पे रह़मतों का या खु़दा नुज़ूल

देता हूं तुझ को वासित़ा या रब हु़ज़ूर का
हर हर ख़त़ा तू बख़्श दे कर हर मुआ़फ़ भूल

ग़ौसो रज़ा का वासित़ा या शाफ़ेए़ उमम
रखना न मुझ को ह़श्र में रन्जीदा व मलूल

गर लम्ह़ा भर भी ह़ाज़िरी त़यबा की हो नसीब
ह़ासिल येही है ज़ीस्त का मेह़नत हुई वुसूल

सरकार ! चार यार के सदक़े में हो करम
अ़त्त़ार को सदा के लिये कर लो तुम क़बूल

आप आक़ाओं के आक़ा आप हैं शाहे अनाम

(ह़-रमैने त़य्यिबैन زَادَھُمَااللّٰہُ شَرَفاًوَّتَعۡظِیۡمًا की ह़ाज़िरी 1415 सि.हि. में येह कलाम तह़रीर करने की सआ़दत नसीब हुई)

आप आक़ाओं के आक़ा आप हैं शाहे अनाम
या रसूलल्लाह मैं हूं आप का अदना गुलाम

बात की हिम्मत नहीं पड़ती अदब का है मक़ाम
दिल इजाज़त ही नहीं देता करूं कैसे कलाम

सोज़े सरकार ऐ ख़ुदाए पाक तू कर दे अ़त़ा
इश्क़े सरवर में तड़पता ही रहूं मौला मुदाम

या इलाही ! मुझ को दीवाना मदीने का बना
काश ! हो ज़िक्रे मदीना मेरे लब पर सुब्ह़ो शाम

तल्ख़ियों में ख़ुश रहूं और लज़्ज़तों से बे नियाज़
काश ! क़ाबू में रहे येह मेरा नफ़्से बद लगाम

जो तड़पते हैं मदीने की जुदाई में शहा !
उन ग़रीबों का भी कर दो या नबी कुछ इन्तिज़ाम

अब तो दे दो तुम मदीने में शहादत का शरफ़
या नबी ! कर दो येह पूरी आरज़ूए ना तमाम

हश्र की गर्मी बला की प्यास से हूं नीम जां
साक़िया ! लिल्लाह कौसर का छलक्ता एक जाम

या इलाही ! फ़ालतू बातों की आ़दत दूर हो
काश ! लब पर कोई भी जारी न हो बे जा कलाम

हर घड़ी शर्मो ह़या से बस रहे नीची नज़र
पैकरे शर्मो ह़या बन कर रहूं आक़ा मुदाम

ऐ ख़ुदाए मुस्त़फ़ा अ़त्त़ार को वोह आंख दे
हो ग़मे मह़बूब में आंसू बहाना जिस का काम

सर हो चौखट पे ख़म, ताजदारे ह़रम

सर हो चौखट पे ख़म, ताजदारे ह़रम येह निकल जाए दम, ताजदारे ह़रम

येह रहा मेरा सर, सीना क़ल्बो जिगर रख दो आक़ा क़दम, ताजदारे ह़रम

ह़ाज़िरी का सबब, हो ऐ माहे अ़रब ! आएं त़यबा में हम, ताजदारे ह़रम

हर बरस ह़ज करूं, गिर्दे का'बा फिरूं या शहे मोह़तरम, ताजदारे ह़रम

दे दो ख़स्ता जिगर, कर दो शोरीदा[1] सर अपना जाने करम, ताजदारे ह़रम

जो के बहती रहे, दर्द कहती रहे दे दो वोह चश्मे नम, ताजदारे ह़रम

आइये ख़्वाब में, क़ल्बे बेताब में सरवरे मोह़तरम, ताजदारे ह़रम

कर के अत़वार ठीक, इस्तिक़ामत की भीक दे दो शाहे ह़रम, ताजदारे ह़रम

सब ख़त़ाएं मुआफ़, और नामा[2] हो साफ़ पाऊं बाग़े इरम, ताजदारे ह़रम

مدینہ

1 : दीवाना 2 : नामए आ'माल

पढ़ ले तह़रीर जो, उस की इस्लाह़ हो / दे दो ऐसा क़लम, ताजदारे ह़रम

आमिना के पिसर, ख़ैर से हों बसर / ज़ीस्त के पेचो ख़म, ताजदारे ह़रम

मेरे माहे मुबीं जो हैं अन्दौह गीं / उन के हों दूर ग़म, ताजदारे ह़रम

ह़ासिदों के ह़सद, की नहीं कोई ह़द / अब तो कर दो करम, ताजदारे ह़रम

या नबी ता ब-के[1], हाए कुफ़्फ़ार के / हम सहेंगे सितम, ताजदारे ह़रम

अज़ तुफ़ैले रज़ा, ख़त्म हों सरवरा / दुश्मनों के सितम, ताजदारे ह़रम

ऐ मेरे ताजवर, दूर हों सारे शर / हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

हूं बड़ा रू सियाह, है गुनह पर गुनाह / हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

खोलो रह़मत के पट, जाए ज़ुल्मत पलट / हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

तेरे अ़त्तार का, है येह अरमां शहा
निकले त़यबा में दम, ताजदारे ह़रम

1 : कब तक

हम पे नज़रे करम, ताजदारे ह़रम

हम पे नज़रे करम, ताजदारे ह़रम | नेक बन जाएं हम, ताजदारे ह़रम
दर्दे इस्यां मिटे, आ़दते बद छुटे | शाहे अ़-रबो अ़जम, ताजदारे ह़रम
नफ़्सो शैत़ान का, आह ! ग़-लबा हुवा | या नबी हो करम, ताजदारे ह़रम
यक्सां हों मद्ह़ो ज़म, मुझ को, कर दो करम | कुछ ख़ुशी हो न ग़म, ताजदारे ह़रम
बद कलामी न हो, यावह गोई न हो | बोलूं मैं कम से कम, ताजदारे ह़रम
रख्खूं नीची नज़र मैं, इधर या उधर | कुछ न देखूं करम, ताजदारे ह़रम
अश्कबारी करूं, आहो ज़ारी करूं | हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम
इ़श्क़े ख़ल्लाक़[1] दो, हुस्ने अख़्लाक़ दो | हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम
ख़ूब मुख़्लिस बनूं, मैं रिया से बचूं | हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम
आफ़तें जाएं टल, मुश्किलें भी हों ह़ल | कर दो ऐसा करम, ताजदारे ह़रम
हों दुरूदो सलाम आक़ा लब पर मुदाम[2] | हर घड़ी दम बदम, ताजदारे ह़रम

مدینہ

1 : बहुत पैदा करने वाला 2 : हमेशा

बद ख़साइल[1] टलें, सीधे रस्ते चलें कर दो आक़ा करम, ताजदारे ह़रम

हो गया गर अ़ज़ाब, ऐ रिसालत मआब सह सकेंगे न हम, ताजदारे ह़रम

खुल्द की दो सनद, अज़ तुफ़ैले समद या शफ़ीए़ उमम, ताजदारे ह़रम

रोज़े मह़शर शहा ! मुझ गुनहगार का आप रखना भरम, ताजदारे ह़रम

ज़ाहिरो बात़िन एक, आक़ा हो कर दो नेक या शफ़ीए़ उमम, ताजदारे ह़रम

अपना दीवाना कर, मस्तो मस्ताना कर शहर यारे इरम, ताजदारे ह़रम

अब मदीने बुला, सब्ज़ गुम्बद दिखा चूमूं ख़ाके ह़रम, ताजदारे ह़रम

सब्रो हिम्मत मिले, यूं शहादत मिले मेरा सर हो क़लम[2], ताजदारे ह़रम

काश आए वोह पल, रोते रोते निकल जाए क़दमों में दम, ताजदारे ह़रम

काश ! होता शहा, जिस्म अ़त्तार का

ख़ाके त़यबा में ज़म[3], ताजदारे ह़रम

1 : बुरी आ़दतें 2 : कटना 3 : मिलाना, एक चीज़ को दूसरी चीज़ में शामिल कर देना।

हो अ़ता अपना ग़म, ताजदारे ह़रम

हो अ़ता अपना ग़म, ताजदारे ह़रम दीजिये आंख नम, ताजदारे ह़रम

कीजिये शादकाम[1], अपना कह के गुलाम झूम जाएंगे हम, ताजदारे ह़रम

माल भी आल भी, बाल भी खाल भी सदक़े जानो दिलम, ताजदारे ह़रम

तेरा खाते हैं हम, तेरा पीते हैं हम तेरे रब की क़सम, ताजदारे ह़रम

ऐसा कर दो सबब, बस उतर जाए अब दिल में ख़ारे ह़रम, ताजदारे ह़रम

येह चमक येह दमक, येह महक येह लहक है बहारे क़दम, ताजदारे ह़रम

जो भी मांगा मिला, मरह़बा मरह़बा शाने जूदो करम, ताजदारे ह़रम

घर सजाते रहें, और मनाते रहें ईदे मीलाद हम, ताजदारे ह़रम

ईदे मीलाद में, गाड़ेंगे याद में सब्ज़ प्यारा अ़लम[2], ताजदारे ह़रम

مدینہ

1 : खुशह़ाल 2 : परचम

गुनगुनाते रहें गीत गाते रहें उ़म्र भर तेरे हम, ताजदारे ह़रम

तेरे दीवाने सब, आएं सूए अ़रब देखें सारे ह़रम, ताजदारे ह़रम

सीना जलता रहे, दिल मचलता रहे हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

या रसूले ख़ुदा, सरवरे अम्बिया हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

ग़म की काली घटा, को शहा दो हटा हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

महरो माहे मुबीं, है येह अ़र्ज़े ह़ज़ीं[1] हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

या नबी अल मदद, ऐ रसूल अल मदद हो करम हो करम, ताजदारे ह़रम

जल्वए यार हो, क़ब्रे अ़त्त़ार हो
काश हो येह करम, ताजदारे ह़रम

मर्द के लिये सब से बड़ा वज़ीफ़ा : तक्बीरे ऊला के साथ पांच वक़्त मस्जिद की पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ना।

1 : ग़मगीन

मैं सरापा हूं ग़म, ताजदारे ह़रम

मैं सरापा हूं ग़म, ताजदारे ह़रम
कीजे रह़मो करम, ताजदारे ह़रम

उजड़ा उजड़ा समां, छा गई है ख़ज़ां
बरसे अब्रे करम, ताजदारे ह़रम

ऐ शहे बह़रो बर, आह ! कमज़ोर पर
टूटा कोहे अलम, ताजदारे ह़रम

सदक़ा ह़-सनैन का, मुझ से बेचैन का
दूर हो रन्जो ग़म, ताजदारे ह़रम

बिगड़ी क़िस्मत संवर, जाएगी हो नज़र
सूए लौह़ो क़लम, ताजदारे ह़रम

अब बुला लो वहीं, दूर रह कर कहीं
टूट जाए न दम, ताजदारे ह़रम

शाहे जिन्नो बशर, ख़ैर से मेरे घर
तेरे आएं क़दम, ताजदारे ह़रम

दूर हों आफ़तें, दीजिये राह़तें
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

अज़ पए चार यार, अब तो बेड़ा हो पार
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

ऐ मेरे चारागर[1], अपने बीमार पर
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

दो निक़ाब अब उलट, आएं जल्वे सिमट
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

मुझ को दे दो बक़ीअ़, अब तो दे दो बक़ीअ़
हो निगाहे करम, ताजदारे ह़रम

आप ह़ाज़िर भी हैं, आप नाज़िर भी हैं
हां ख़ुदा की क़सम, ताजदारे ह़रम

सरवरे दो[2] जहां, आप हैं ग़ैब दां
किब्रिया की क़सम, ताजदारे ह़रम

अपने अ़त्तार को, मालो दौलत न दो
दे दो बस अपना ग़म, ताजदारे ह़रम

1 : त़बीब

या शहन्शाहे उमम चश्मे करम

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ येह कलाम 1414 सि.हि. की ह़ाज़िरी के दौरान 29 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम को मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठ कर तह़रीर किया)

या शहन्शाहे उमम ! चश्मे करम
कीजिये आक़ा ! करम चश्मे करम

आ गया अब तो मदीना हो अ़ता
क़ल्बे मुज़्त़र आंख नम चश्मे करम

ठोकरें दर दर की खाएं कब तलक
या रसूलल्लाह ! हम चश्मे करम

चांद से चेहरे को चमकाते हुए
ख़्वाब में कर दो करम चश्मे करम

फ़ालतू बातों की आ़दत दूर हो
या नबिय्ये मोह़तरम ! चश्मे करम

नफ़्स का ज़ुन्नार तोड़ो जिस त़रह़
तोड़े का'बे के सनम चश्मे करम

करबला वालों का सदक़ा या नबी !
दूर हों रन्जो अलम चश्मे करम

विर्दे लब हर दम दुरूदे पाक हो
या शहे अ़-रबो अ़जम ! चश्मे करम

वासित़ा आक़ा ! ज़ियाउद्दीन का
अपना ग़म दो अपना ग़म चश्मे करम

या नबी ! ज़िक्रे मदीना ही रहे लब पे मेरे दम बदम चश्मे करम

मेरा सीना हो मदीना या नबी ! काश ! हो ऐसा करम चश्मे करम

गुम्बदे ख़ज़्रा के जल्वे आंख में जाएं बस शाहे ह़रम चश्मे करम

या नबी ! "नेकी की दा'वत" की तड़प हो किसी सूरत न कम चश्मे करम

सारे दीवानों को त़यबा लो बुला ! या रसूले मोह़तरम ! चश्मे करम

मौत आए काश ! त़यबा में मुझे अज़् पए ख़ाके ह़रम चश्मे करम

दो बक़ीअ़ आक़ा बक़ीअ़ अब तो बक़ीअ़ हो करम आक़ा ! करम चश्मे करम

अब सिरहाने आइये या मुस्त़फ़ा ! टूटने वाला है दम चश्मे करम

ह़श्र है नामा गुनाहों से है पुर तुम ही अब रख लो भरम चश्मे करम

लिख सके अ़त्तार ना'तें आप की

दीजिये ! ऐसा क़लम चश्मे करम

गो ज़लीलो ख़्वार हूं कर दो करम

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ येह कलाम 1414 सि.हि. की ह़ाज़िरी में 29 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठ कर क़लम बन्द किया)

गो ज़लीलो ख़्वार हूं कर दो करम
पर सगे दरबार हूं कर दो करम

या रसूलल्लाह ! रह़मत की नज़र
ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

रह़मतों की भीक लेने के लिये
ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

दर्दे इस्यां की दवा के वासिते
ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

अपना ग़म दो चश्मे नम दो दर्दे दिल
ह़ाज़िरे दरबार हूं कर दो करम

आह ! पल्ले कुछ नहीं ह़ुस्ने अ़मल !
मुफ़्लिसो नादार हूं कर दो करम

जज़्बए ह़ुस्ने अ़मल है और न इ़ल्म
नाक़िसो बेकार हूं कर दो करम

आ़सियों में कोई हम-पल्ला न हो !
हाए वोह बदकार हूं कर दो करम

है तरक़्क़ी पर गुनाहों का मरज़
आह ! वोह बीमार हूं कर दो करम

तुम गुनहगारों के हो आक़ा शफ़ीअ़
मैं भी तो ह़क़दार हूं कर दो करम

दौलते अख़्लाक़ से मह़रूम हूं
हाए ! बद गुफ़्तार हूं कर दो करम

आंख दे कर मुद्दआ़ पूरा करो
त़ालिबे दीदार हूं कर दो करम

दोस्त, दुश्मन हो गए या मुस्त़फ़ा
बे कसो नाचार हूं कर दो करम

कर के तौबा फिर गुनह करता है जो
मैं वोही अ़त़्त़ार हूं कर दो करम

आप की निस्बत ऐ नानाए हुसैन

आप की निस्बत ऐ नानाए हुसैन है बड़ी दौलत ऐ नानाए हुसैन
दूर कर फुरक़त ऐ नानाए हुसैन अपनी दे कुरबत ऐ नानाए हुसैन
मर के भी निकले न मेरे क़ल्ब से आप की उल्फ़त ऐ नानाए हुसैन
घर छुटे या सर कटे पर गुम न हो दीन की दौलत ऐ नानाए हुसैन
हूं गुनाहों का मरीज़े दाइमी दूर हो शामत ऐ नानाए हुसैन
वासिता ग़ौसो रज़ा का दूर हो हर बुरी ख़स्लत ऐ नानाए हुसैन
ग़म तुम्हारा चैन लेने ही न दे दे दो येह राहत ऐ नानाए हुसैन
अब मदीने में बुला कर दूर कर येह ग़मे फुरक़त ऐ नानाए हुसैन
सब्ज़ गुम्बद की बहारें देख लूं आए वोह साअ़त ऐ नानाए हुसैन
मौत सर पर आ गई कर दो अ़ता दीद का शरबत ऐ नानाए हुसैन
अपने जल्वों से अ़ता फ़रमाइये नज़्अ़ में राहत ऐ नानाए हुसैन
दो बक़ीए़ पाक में दो गज़ ज़मीं तुम पए तुरबत ऐ नानाए हुसैन
अज़ तुफ़ैले ग़ौसे आ'ज़म दूर हो क़ब्र की वह्शत ऐ नानाए हुसैन
नारे दोज़ख़ से बचा कर या नबी ! दीजिये जन्नत ऐ नानाए हुसैन
ह़ज़रते शब्बीरो शब्बर के तुफ़ैल टाल दो आफ़त ऐ नानाए हुसैन
आल से अस्ह़ाब से क़ाइम रहे ता अबद निस्बत ऐ नानाए हुसैन

पीरो मुर्शिद पर मेरे मां बाप पर हो सदा रह़मत ऐ नानाए हुसैन
हर त़रफ़ "नेकी की दा'वत" आ़म हो नेक हो उम्मत ऐ नानाए हुसैन
सुन्नतों की हर त़रफ़ आए बहार नेक हो उम्मत ऐ नानाए हुसैन
ख़ूब म-दनी क़ाफ़िलों की धूम हो नेक हो उम्मत ऐ नानाए हुसैन
"म-दनी इन्आ़मात" की हो रेलपेल नेक हो उम्मत ऐ नानाए हुसैन
नेकियों में दिल लगे हर दम, बना आ़मिले सुन्नत ऐ नानाए हुसैन
मैं गुनाहों से सदा बचता रहूं कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
झूट से बुग़्ज़ो ह़सद से हम बचें कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
बद गुमानी, बद निगाही से बचें कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
दीजिये क़ुफ़्ले मदीना दीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
दौलते इख़्लास हम को दीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
कीजिये ह़ज का शरफ़ मुझ को अ़त़ा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
फिर त़वाफ़े ख़ानए का'बा करूं कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
मैं मदीने का मुसाफ़िर अब बनूं कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
"चल मदीना" की बिशारत दीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
अपना ग़म और चश्मे नम दे दीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन
इश्क़ में आहें भरूं, रोता रहूं कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

“یارسولَ اللّٰهِ اُنظُر حالَنا” कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

“یاحبیبَ اللّٰهِ اِسمَع قالَنا” कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

“اِنَّنِی فِی بَحرِ ھَمٍّ مُّغرَقٌ” कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

“خُذ یَدِی سَهِّل لَّنا اَشکالَنا” कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

इस्तिक़ामत दीजिये इस्लाम पर कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

दिल से दुन्या की हवस सब दूर हो कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

नज़्अ़, क़ब्रो ह़श्र, मीज़ां हर जगह कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

ऐ़ब खुल जाएं न मह़शर में कहीं कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

अज़ तुफ़ैले चार यारे बा सफ़ा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

सदक़ा शहज़ादों का आक़ा कीजिये कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

सब सह़ाबा का वसीला सय्यिदा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

ग़ौसो ख़्वाजा और रज़ा का वासित़ा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

मुर्शिदी क़ुत़्बे मदीना के तुफ़ैल कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

“दा’वते इस्लामी” वालों पर सदा कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

हर वली का वासित़ा अ़त़्त़ार पर
कीजिये रह़मत ऐ नानाए हुसैन

या ख़ुदा ह़ज पे बुला आ के मैं का'बा देखूं

या ख़ुदा ! ह़ज पे बुला आ के मैं का'बा देखूं
काश ! इक बार मैं फिर मीठा मदीना देखूं

फिर मुयस्सर हो मुझे काश ! वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात
जल्वा मैं मुज़्दलिफ़ा और मिना का देखूं

झूम कर ख़ूब करूं ख़ानए का'बा का त़वाफ़
फिर मदीने को चलूं गुम्बदे ख़ज़रा देखूं

सब्ज़ गुम्बद का ह़सीं जल्वा दिखा दे या रब !
मस्जिदे न-बवी का पुरनूर मनारा देखूं

रौज़ए पाक के साए में बुला कर आक़ा
आंख दे दीजिये मैं आप का जल्वा देखूं

चूम लूं काश ! निगाहों से सुनह्री जाली
अश्कबार आंख से मिम्बर का भी जल्वा देखूं

काश ! वोह आंख अ़त़ा हो मैं मदीने आ कर
जिस त़रफ़ जाऊं उधर नूर बरसता देखूं

जामे इ़श्क़ ऐसा पिला दीजिये जाने आ़लम
हर घड़ी आहें भरूं ख़ुद को तड़पता देखूं

चश्मे तर सोज़े जिगर दीजिये क़ल्बे मुज़्त़र
इ़श्क़ में रोता रहूं जब भी मैं रौज़ा देखूं

सोज़िशे इ़श्क़ में जलता ही रहूं मैं हर दम
आंख से ग़म में तेरे ख़ून बरसता देखूं

उस पे रश्क आता है और प्यार बहुत आता है
इ़श्क़ में तेरे जिसे रोता बिलक्ता देखूं

काश ! मैं रोने लगूं क़ल्ब भी हो मेरा उदास
जब मदीने की त़रफ़ क़ाफ़िला जाता देखूं

ज़ाइरो ! कहना येह रो रो के शहा ! इक मिस्कीन
कह रहा था येह तड़प कर : "मैं मदीना देखूं"

तू जो चाहे तो मेरी आंख से पर्दे उठें
मैं वत़न से भी मदीने का नज़ारा देखूं

वोह खिलाते हैं पिलाते हैं निभाते भी हैं
क्यूं कहीं जाऊं किसी और त़रफ़ क्या देखूं

अपनी रह़मत से मुझे कर दो अ़त़ा ऐसी बहार
मुंह कभी भी न ख़ज़ां का मेरे आक़ा देखूं

तेरे एह़सान करोड़ों हैं हो येह भी एह़सां
या ख़ुदा नज़्अ़ में जल्वा मैं नबी का देखूं

बाग़े जन्नत में जवार[1] अपना अ़त़ा फ़रमा दो
ख़ुल्द में हर घड़ी जल्वा मैं तुम्हारा देखूं

दौड़ कर क़दमों में अ़त़्त़ार गिरूं मैं उस दम
ह़श्र में जिस घड़ी सरकार को आता देखूं

مدینہ

1 : पड़ोस

त़यबा के मुसाफ़िर मुझे तू भूल न जाना ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

(28 और 29 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1431 सि.हि. को येह कलाम मौज़ूं किया गया)

त़यबा के मुसाफ़िर मुझे तू भूल न जाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं
रो रो के नबी को मेरी रूदाद[1] सुनाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

हो मुझ पे करम सदके़ में सुल्त़ाने दना के
दिखला दे मनाज़िर मुझे अ़-रफ़ातो मिना के
कहता था फिर अल्लाह मुझे ह़ज पे बुलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

बेचारा मदीने से बहुत दूर पड़ा है
बदकार सही पर तेरा दीवाना बड़ा है
कहता था मुझे ह़ाज़िरी का इज़्न दिलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

---

1 : कैफ़िय्यत

कहना बड़ा अ़र्सा हुवा त़यबा नहीं पहुंचा
बरसों से नहीं देख सका गुम्बदे ख़ज़रा
मिस्कीन को अब क़दमों में सरकार बुलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

ऐ राहे मदीना के मुसाफ़िर तू ठहर कर
मजबूर की बिपता ज़रा सुन कान को धर कर
कर ह़क़ से दुआ़ रन्जो अलम इस के मिटाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

तू रब का है मेहमां रहे जानां का है आ़ज़िम[1]
मैं सख़्त गुनहगारो ख़त़ाकार हूं मुजरिम
अल्लाह से कर अ़र्ज़ इसे दोज़ख़ से बचाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

अल्लाह के घर का जूं ही देखे तू दवारा[2]
जिस वक़्त कि का'बे का करे पहला नज़ारा
गर होश हों क़ाइम तेरे मुझ को न भुलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

1 : मुसाफ़िर 2 : दरवाज़ा

रो रो के तू करना मेरे ह़क़ में येह दुआ़एं
बोले न फ़ुज़ूल और रखे नीची निगाहें
कर अ़र्ज़ ख़ुदा से तू इसे नेक बनाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

बहकाता है शैत़ान तो है नफ़्स सताता
तौबा भी बहुत करता है पर बच नहीं पाता
कर ह़क़ से दुआ़ इस को गुनाहों से बचाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

सक्रात के सदमे मेरे बस में नहीं सहना
कहता था : तू सरकार से रो रो के येह कहना
जल्वा भी दिखाना मुझे कलिमा भी पढ़ाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

कहता था बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ बड़ा है
देखा है इसे बारहा येह रो भी पड़ा है
या रब इसे ईमान पे दुन्या से उठाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

नादिम है मज़ीद इस को तू शरमिन्दा न करना
बे पूछे ही दे बख़्श क़ियामत में न धरना[1]
कर अ़र्ज़ ख़ुदा से इसे जन्नत में बसाना
ऐ आ़जि़मे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

जब तक हो मदीने में मुयस्सर तुझे रहना
रो रो के सलाम उन से मेरा रोज़ तू कहना
ख़ैरात शफ़ाअ़त की तबर्रुक में ले आना
ऐ आ़जि़मे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

इख़्लास की अल्लाह इसे कर दे अ़त़ा भीक
और ग़ुस्से की आ़दत टले अख़्लाक़ भी हों ठीक
ह़-सनैन के सदक़े इसे हंसमुख तू बनाना
ऐ आ़जि़मे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

1 : गरिफ़्तार करना

छाई है मेरे रुख़ पे गुनाहों की सियाही
मक़्सूम[1] न हो जाए कहीं भाई तबाही
कर अ़र्ज़, इन्हें आता है तक़्दीर बनाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

कहना कि नदामत इसे इस्यां पे बड़ी है
दहलीज़[2] पे मौत आ के शहा इस के खड़ी है
तुम नज़्अ़ में दीदार का जाम इस को पिलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

कहता था कराची में नहीं मुझ को है मरना
रो रो के गुज़ारिश तू येह सरकार से करना
सुल्त़ाने मदीना इसे क़दमों में सुलाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

मदीना

1 : हिस्सा, नसीब, मुक़द्दर। 2 : दरवाज़ा

तू दा'वते इस्लामी के ह़क़ में येह दुआ़ दे
इस्लाम का डंका येह ज़माने में बजा दे
फ़रमाएं करम इस पे शहन्शाहे ज़माना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

जब गुम्बदे ख़ज़रा को नज़र झूम के चूमे
आ जाए तुझे वज्द तू बे साख़्ता झूमे
कहना : कहें[1], अ़त्त़ार हमारा है दिवाना
ऐ आ़ज़िमे त़यबा ! मैं त़लब गारे दुआ़ हूं

चुग़ली की ता'रीफ़

किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना **चुग़ली** है।

(عمدۃ القاری ج۲ ص۵۹٤ تحت الحدیث ۲۱٦)

1. यहां मुराद है, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमा दीजिये ।"

है येह फ़ज़्ले ख़ुदा, मैं मदीने में हूं

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदीनए मुनव्वरह (मुहर्रमुल ह़राम 1422 सि.हि.) की ह़ाज़िरी के पुरकैफ़ लम्ह़ात में येह कलाम क़लम बन्द किया)

है येह फ़ज़्ले ख़ुदा, मैं मदीने में हूं   है उसी की अ़ता मैं मदीने में हूं

या रसूले ख़ुदा मैं मदीने में हूं   तुम ने बुलवा लिया मैं मदीने में हूं

गो गुनहगार हूं, मैं बद अत़्वार हूं   पर करम है तेरा मैं मदीने में हूं

सर पे इ़स्यां का बार, आह ! है नामदार   पर करम है तेरा मैं मदीने में हूं

जुर्म की ह़द नहीं, शाहे दुन्या व दीं   पर करम है तेरा मैं मदीने में हूं

कोई ख़ूबी नहीं, पास नेकी नहीं   पर करम है तेरा मैं मदीने में हूं

सख़्त बदकार हूं, मा'सियत कार हूं   पर करम है तेरा मैं मदीने में हूं

मेरा क़ल्बे सियह, दीजिये जगमगा   अब तो नूरे ख़ुदा मैं मदीने में हूं

ज़ंग काफ़ूर हो, क़ल्ब पुरनूर हो   कर दो चश्मे अ़ता मैं मदीने में हूं

है येह रह़मत तेरी, और इनायत तेरी   साथ है क़ाफ़िला मैं मदीने में हूं

जानते हो मैं क्यूं, आया त़यबा में हूं   हैं यहां मुस्त़फ़ा मैं मदीने में हूं

मुर्शिदी ने कहा, तू नहीं जा रहा बल्कि है आ रहा मैं मदीने में हूं[1]
अपने मेहमान को ग़म मदीने का दो सरवरे अम्बिया मैं मदीने में हूं
आंख रोया करे, क़ल्ब तड़पा करे कर दो ऐसी अ़ता मैं मदीने में हूं
शाहे ख़ैरुल अनाम अपनी उल्फ़त का जाम इक छलकता पिला मैं मदीने में हूं
दे दो सीना फ़िगार आंख भी अश्कबार दिल तड़पता हुवा मैं मदीने में हूं
आमिना के पिसर मुझ को ख़स्ता जिगर अब तो कर दो अ़ता मैं मदीने में हूं
ऐसी मस्ती मिले होश जाता रहे ऐसा मुझ को गुमा मैं मदीने में हूं
बे क़रारी मिले आहो ज़ारी मिले हो करम मुस्तफ़ा मैं मदीने में हूं
अपना दीवाना कर मुझ को मस्ताना कर मस्तो बेख़ुद बना मैं मदीने में हूं
झूमता झूमता ख़ाक को चूमता मैं फिरूं जा बजा मैं मदीने में हूं

1 : इस शे'र का पस मन्ज़र येह है कि जब पहली बार (1400 हि. ब मुताबिक़ 1980 ई.) ह़ाज़िरिये मदीनए मुनव्वरह के बा'द वत़न वापसी का वक़्त आया, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अल वदाई ह़ाज़िरी दे कर सय्यिदी मुर्शिदी क़ुत़्बे मदीना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और रो रो कर अ़र्ज़ की, कि मैं वत़न जा रहा हूं तो मुर्शिद की ज़बान से निकला "तुम जा नहीं आ रहे हो" उस वक़्त तो येह इर्शाद मेरी मोटी अ़क़्ल में न आया मगर बा'द में समझ में आ गया क्यूं कि फ़ैज़े मुर्शिद से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बे शुमार बार सफ़रे मदीना दरपेश आया कि मुर्शिदी ने जो फ़रमाया था कि "तुम जा नहीं आ रहे हो।"

काश ! रोता फिरूं इक तमाशा बनूं बेख़ुदी हो अ़ता मैं मदीने में हूं
अपने ग़म में शहा मुझ को ऐसा गुमा हो न अपना पता मैं मदीने में हूं
अपना कह दीजिये मुझ को दे दीजिये मुज़्दए जां फ़िज़ा मैं मदीने में हूं
अब शफ़ाअ़त की मुझ को सनद हो अ़ता या शफ़ीअ़ल वरा मैं मदीने में हूं
धूप ठन्डी यहां छाउं महकी यहां है मुअ़त्तर फ़ज़ा मैं मदीने में हूं
शब मुनव्वर यहां दिन मुअ़म्बर यहां ठन्डी ठन्डी हवा मैं मदीने में हूं
है समां नूर नूर आ रहा है सुरूर है मुनव्वर फ़ज़ा मैं मदीने में हूं
मुझ पे एह़सान हो पूरा अरमान हो आप की दीद का मैं मदीने में हूं
ख़ूब हैरान हूं और परेशान हूं दूर कर दो बला मैं मदीने में हूं
जल्वए यार का उन के दीदार का मौला शरबत पिला मैं मदीने में हूं
जाम पी लूं शहादत का शाहे अनाम हो करम हो अ़ता मैं मदीने में हूं
झूमते हैं शजर[1] वज्द में हैं ह़जर[2] हर सू है कैफ़ सा मैं मदीने में हूं
गुम्बदे सब्ज़ पर हर मनारे पे है नूर छाया हुवा मैं मदीने में हूं

1 : दरख़्त 2 : पथ्थर

दश्तो कोहसार पर किश्तो[1] गुलज़ार पर हर सू छाई ज़िया मैं मदीने में हूं

चूमूं अश्जार[2] को फूल को ख़ार[3] को ऐसा बेखुद बना मैं मदीने में हूं

कोई चारा[4] न कर मरने दे चारागर[5] लूं मज़ा मौत का मैं मदीने में हूं

चूमूं हरियालियां चूम लूं डालियां बोसा लूं ख़ार का मैं मदीने में हूं

मेरी ईद आज है मेरी मे'राज है मैं यहां आ गया मैं मदीने में हूं

उन के दरबारो दर और दीवार पर नूर है छा रहा मैं मदीने में हूं

है करम ही करम हां ख़ुदा की क़सम खा के हूं कह रहा मैं मदीने में हूं

ख़ूब उमंड आई है हर त़रफ़ छाई है रह़मतों की घटा मैं मदीने में हूं

आंख में है सजी तन पे भी है लगी मेरे ख़ाके शिफ़ा मैं मदीने में हूं

मुझ को तक्दीर पर इस की तन्वीर[6] पर रश्क है आ रहा मैं मदीने में हूं

दो बक़ीए़ मुबारक में दो[2] गज़ ज़मीं तुम से है इल्तिजा मैं मदीने में हूं

मौत क़दमों में दो अपने अ़त्त़ार को
हो करम सरवरा मैं मदीने में हूं

---

1 : खेती, बोया हुवा खेत 2 : शजर की जम्अ़ 3 : कांटा 4 : इलाज
5 : डॉक्टर, त़बीब 6 : रोशनी, नूरानिय्यत, चमक

न दौलत न माल और ख़ज़ीने की बातें

न दौलत न माल और ख़ज़ीने की बातें सुनाओ हमें बस मदीने की बातें

मदीने की बातें सुनाओ कि हैं येह मरीज़े महब्बत के जीने की बातें

मुक़द्दस हैं दीगर महीने भी लेकिन निराली हैं ह़ज के महीने की बातें

सुनाओ न पेरिस के क़िस्से, सुनाओ मदीने के प्यारे सफ़ीने की बातें

न कर मुश्को अ़म्बर की बातें, बयां कर नबी के मुअ़त्तर पसीने की बातें

मेरी यावह गोई की आ़दत निकालो करूं मैं हमेशा क़रीने की बातें

फ़ुज़ूल और बेकार बातों के बदले करूं काश ! हर दम मदीने की बातें

गो गर्मी में मश्रूब ठन्डा है मरग़ूब करो जाम आक़ा से पीने की बातें

शहा ! मेरा सीना मदीना बना दो ख़यालों में हों बस मदीने की बातें

बने काश ! अ़त्तार ऐसा मुबल्लिग़

मुअस्सिर हों आक़ा कमीने की बातें

दिल को सुकूं चमन में न है लालाज़ार में

दिल को सुकूं चमन में न है लालाज़ार[1] में
सोज़ो गुदाज़ है फ़क़त़ उन के दियार[2] में

या मुस्त़फ़ा बुलाइये अपने दियार में
सरकार ! आऊं त़यबा के फिर लालाज़ार में

हर साल या इलाही मुझे ह़ज नसीब हो
जब तक जियूं मैं आ़लमे ना पाएदार में

हर साल ह़ाज़िरी हो मदीने की ख़ैर से
हर साल काश ! आऊं मैं तेरे दियार में

सोजे़ बिलाल दो मुझे सोजे़ बिलाल दो
दे सकते हो तुम्हारे तो है इख़्तियार में

या रब ! ग़मे ह़बीब में रोना नसीब हो
आंसू न राएगां हों ग़मे रोज़गार में

अफ़्सोस घटती जा रही है रोज़ ज़िन्दगी
पर मैं दबा ही जाता हूं इस्यां के बार में

तुझ को ह़सन ह़ुसैन का देता हूं वासित़ा
अल्लाह मौत दे मुझे उन के दियार में

1 : बाग़, गुलज़ार 2 : शह्‌र

कुछ रोज़ पहले तो मैं, मदीने में था अब आह !
आ कर वत़न में फंस गया फिर कारोबार में

हिज्रे मदीना में जो तड़पते हैं या नबी
उन को बुलाइये शहा ! अपने दियार में

कर मग़्फ़िरत मेरी तेरी रह़मत के सामने
मेरे गुनाह या ख़ुदा हैं किस शुमार में

फ़ज़्ले ख़ुदा से मालिके कौनो मकां हैं आप
दोनों जहान आप के हैं इख़्तियार में

फ़ेशन को छोड़ो भाइयो ! अपनाओ सुन्नतें
कब तक जियोगे आ़लमे ना पाएदार में

वोह दीने ह़क़ के वासित़े त़ाइफ़ में ज़ख़्म खाएं
अफ़्सोस हम फंसे रहें बस कारोबार में

बदकारो ना बकार का ईमान या नबी
मह़फ़ूज़ रखना आप के है इख़्तियार में

करते रहो येह ह़क़ से दुआ़ मेरे भाइयो !
अ़त़्ार को दे मौत नबी के दियार में

सारा अंधेरा दूर समां होगा नूर नूर
अ़त़्ार जब वोह आएंगे तेरे मज़ार में

पाऊं वोह आंख तुझ से ऐ परवर दगार मैं

पाऊं वोह आंख तुझ से ऐ परवर दगार मैं
रोता रहूं ग़मे नबी में ज़ार ज़ार मैं

दिन रात हिज्रे शाह में आहें भरा करूं
रोया करूं फ़िराक़ में ज़ारो क़ितार मैं

कहना न ह़ज मुबारक ऐ अहले वत़न मुझे
हाए फ़िराक़े त़यबा से हूं दिल फ़िगार मैं

दाग़े मुफ़ा-रक़त[1] तो मिला काश ! अब ऐसा हो
रोया करूं फ़िराक़[2] में ज़ारो क़ितार मैं

सीना तपां अ़ता हो मिले क़ल्बे मुज़्त़रिब
ग़म में तुम्हारे काश ! रहूं बे क़रार मैं

दश्ते ह़रम पे वारी मैं, कुमरी[3] चमन पे तू
तू फूल ले ले त़यबा का लेता हूं ख़ार मैं

वोह दिन अब आए ख़ैर से या रब्बे मुस्त़फ़ा
सूए मदीना चल पड़ूं फिर अश्कबार मैं

जूं ही मुझे ह़बीब का जल्वा नसीब हो
ऐ काश ! जान उस घड़ी कर दूं निसार मैं

ज़ोह्दो वरअ़ में या नबी तुम बे मिसाल हो
बेह़द गुनाहगार मैं इस्यां शिआ़र मैं

गुम हो के इश्क़े मुस्त़फ़ा में ऐ ख़ुदाए पाक
करता रहूं बयान सदा अश्कबार मैं

तब्लीग़े दीन के लिये दर दर फिरूं ऐ काश !
त़ालिब हूं ऐसे वल्वले का किर्दिगार मैं

अ़त्त़ार नेकियां न थीं ज़ादे सफ़र में कुछ
ले कर गया था दर पे बस अश्कों का हार मैं

---

1 : जुदाई 2 : जुदाई 3 : फ़ाख़्ता की क़िस्म का एक तौक़दार परिन्दा

ऐ काश कि आ जाए अ़त्ता़र मदीने में

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ 25 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1414 सि.हि. को येह मा'रूज़ा पेश किया गया)

ऐ काश कि आ जाए अ़त्ता़र मदीने में
बुलवा लो ख़ुदारा ! अब सरकार मदीने में

कब तक मैं फिरूं दर दर मरने भी दो अब सरवर !
दहलीज़ पे सर रख कर सरकार मदीने में

रौज़े के क़रीब आ कर गिर जाऊं मैं ग़श खा कर
हो जाए तुम्हारा फिर दीदार मदीने में

रोती हुई आंखों से बेताब निगाहों से
हो गुम्बदे ख़ज़्रा का दीदार मदीने में

दुन्या के ग़मों की तुम लिल्लाह दवा दे दो
बुलवा के ग़म अपना दो सरकार मदीने में

मिल जाए शिफ़ा उस को दरबारे मुह़म्मद से
आ जाए जो कोई भी बीमार मदीने में

हो "दा'वते इस्लामी" की धूम मची हर सू
तरकीब हो मर्कज़ की सरकार मदीने में

ठहरोगे शफ़ाअ़त के ह़क़दार यक़ीनन तुम
आ जाओ गुनहगारो ! इक बार मदीने में

इख़्लास अ़त़ा कर दो और ख़ुल्क़ भला कर दो !
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

बे जा न हंसी आए सन्जीदा बना दीजे
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

अल्लाह की उल्फ़त दो और अपनी मह़ब्बत दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

बेताब जिगर दे दो और आंख भी तर दे दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

इस्यां की दवा दे दो सरकार शिफ़ा दे दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

इस नफ़्से सितम गर को क़ाबू में मेरे कर दो !
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

दुन्या की मह़ब्बत से दिल पाक मेरा कर दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

रोना भी सिखा दो और सिखला दो तड़पना भी
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

आंखों में समा जाओ सीने में उतर आओ
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

जल्वों से दिले वीरां आबाद करो जानां
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

सग अपना मुझे कह दो क़दमों में मुझे रख लो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

क़दमों से लगा लो तुम दीवाना बना लो तुम
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

क़िस्मत मेरी चमका दो तुरबत मेरी बनवा दो
बुलवा के शहन्शाहे अबरार मदीने में

र-मज़ां की बहारें हों त़यबा की फ़ज़ाएं हो
और झूमता फिरता हो अ़त्तार मदीने में

बुला लो फिर मुझे ऐ शाहे बह़रो बर मदीने में

बुला लो फिर मुझे ऐ शाहे बह़रो बर मदीने में
मैं फिर रोता हुवा आऊं तेरे दर पर मदीने में

मैं पहुंचूं कूए जानां में गिरीबां चाक सीना चाक
गिरा दे काश मुझ को शौक़ तड़पा कर मदीने में

मदीने जाने वालो जाओ जाओ फ़ी अमानिल्लाह
कभी तो अपना भी लग जाएगा बिस्तर मदीने में

सलामे शौक़ कहना ह़ाजियो ! मेरा भी रो रो कर
तुम्हें आए नज़र जब रौज़ए अन्वर मदीने में

पयामे शौक़ लेते जाओ मेरा क़ाफ़िले वालो
सुनाना दास्ताने ग़म मेरी रो कर मदीने में

मेरा ग़म भी तो देखो मैं पड़ा हूं दूर त़यबा से
सुकूं पाएगा बस मेरा दिले मुज़्त़र मदीने में

न हो मायूस दीवानो पुकारे जाओ तुम उन को
बुलाएंगे तुम्हें भी एक दिन सरवर मदीने में

बुला लो हम ग़रीबों को बुला लो या रसूलल्लाह
पए शब्बीरो शब्बर फ़ातिमा हैदर मदीने में

ख़ुदाया वासित़ा देता हूं मेरे ग़ौसे आ'ज़म का
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद का ह़सीं मन्ज़र मदीने में

वसीला तुझ को बू बक्रो उ़मर, उ़स्मानो ह़ैदर का
इलाही तू अ़त़ा कर दे हमें भी घर मदीने में

मदीने जब मैं पहुंचूं काश ऐसा कैफ़ त़ारी हो
कि रोते रोते गिर जाऊं मैं ग़श खा कर मदीने में

निक़ाबे रुख़ उलट जाए तेरा जल्वा नज़र आए
जब आए काश ! तेरा साइले बे पर मदीने में

जो तेरी दीद हो जाए तो मेरी ईद हो जाए
ग़म अपना दे मुझे ईदी में बुलवा कर मदीने में

मदीने जूं ही पहुंचा अश्क जारी हो गए मेरे
दमे रुख़्सत भी रोया हिचकियां भर कर मदीने में

मदीने की जुदाई आ़शिक़ों पर शाक़ होती है
वोह रोते हैं तड़प कर हिचकियां भर कर मदीने में

कहीं भी सोज़ है दुन्या के गुलज़ारों में बाग़ों में ?
फ़ज़ा पुरकैफ़ है लो देख लो आ कर मदीने में

वहां इक सांस मिल जाए येही है ज़ीस्त का ह़ासिल
वोह क़िस्मत का धनी है जो गया दम भर मदीने में

मदीना जन्नतुल फ़िरदौस से भी औला व आ'ला
रसूले पाक का है रौज़ए अन्वर मदीने में

चलो चौखट पे उन की रख के सर क़ुरबान हो जाएं
ह़याते जाविदानी पाएंगे मर कर मदीने में

मदीना मेरा सीना हो मेरा सीना मदीना हो
मदीना दिल के अन्दर हो दिले मुज़्त़र मदीने में

मुझे नेकी की दा'वत के लिये रख्खो जहां भी काश !
मैं ख़्वाबों में पहुंचता ही रहूं अक्सर मदीने में

न दौलत दे न सरवत दे मुझे बस येह सआ़दत दे
तेरे क़दमों में मर जाऊं मैं रो रो कर मदीने में

अ़ता कर दो अ़ता कर दो बक़ीए़ पाक में मदफ़न
मेरी बन जाए तुरबत या शहे कौसर मदीने में

मदीना इस लिये अ़त्तार जानो दिल से है प्यारा
कि रहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

दय्यूस की ता'रीफ़

जो शख़्स अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए (वोह "दय्यूस" है) (درمختار ج ۶ ص ۱۱۳) बा वुजूदे कुदरत अपनी ज़ौजा, मां, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों बाज़ारों, शोपिंग सेन्टरों और **मख़्लूत़** तफ़्रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना मह़रम रिश्तेदारों, ग़ैर मह़रम मुलाज़िमों, चोकीदारों और ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले **दय्यूस**, जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं।

मिटते हैं जहां भर के आलाम मदीने में

मिटते हैं जहां भर के आलाम मदीने में
बिगड़े हुए बनते हैं सब काम मदीने में

आक़ा की इनायत है हर गाम[1] मदीने में
होता नहीं कोई भी नाकाम मदीने में

ऐ ह़ाजियो ! रो रो कर कह देना सलाम उन से
ले जाओ ग़रीबों का पैग़ाम मदीने में

आ जाओ गुनहगारो बे ख़ौफ़ चले आओ
सरकार की रह़मत तो है आ़म मदीने में

वोह शाफ़ेए़ मह़शर तो बुलवा के गुलामों को
देते हैं शफ़ाअ़त का इन्आ़म मदीने में

छेड़ो न त़बीबो तुम बीमारे मदीना को
इस को तो मिलेगा बस आराम मदीने में

जितने भी मुबल्लिग़ हैं हो ख़ास करम उन पर
सब आएं शहन्शाहे इस्लाम मदीने में

दरबार में जब पहुंचूं ऐ काश ! शहा उस दम
दीदार का हो जाए इन्आ़म मदीने में

ऐ काश ! कि रो रो कर दम तोड़ दूं क़दमों में
हो जाए मेरा बिलख़ैर अन्जाम मदीने में

अल्लाह क़ियामत तक जिस का न ख़ुमार[2] उतरे
उल्फ़त का पियूं ऐसा इक जाम मदीने में

ऐ काश ! तड़प कर मैं सरकार लगूं गिरने
और आप मुझे बढ़ कर लें थाम मदीने में

बुलवा के बक़ीअ़ आक़ा ह़-सनैन के सदक़े में
ईदी में अ़त़ा कर दो इन्आ़म मदीने में

वोह अपने गुलामों को शफ़्क़त से पिलाते हैं
भर भर के मए उल्फ़त के जाम मदीने में

مـــــــــدینہ

1 : हर क़दम 2 : नशा

इन्सां के बजाए मैं ऐ काश ! मुक़द्दर से | होता कोई अदना सग[1] गुमनाम मदीने में
जब शाहे मदीना ने पर्दा किया दुन्या से | वल्लाह गया था मच कोहराम मदीने में

अ़त्तार पे अब ऐसा ऐ काश ! करम हो जाए
मक्के में सह़र गुज़रे तो शाम मदीने में

मदینہ

1 : अपने आप को **सगे मदीना** कहना कहलवाना आ़शिक़ाने रसूल का तुर्रए इम्तियाज़ है चुनान्चे आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिदी इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

سگت را کاش جامی نام بودے | کہ آید بر زبانت گاہے گاہے

(या'नी काश आप के कुत्ते का नाम जामी होता ताकि कभी कभी आप की ज़बाने पाक पर आ जाता) बत़ौरे आ़जिज़ी ख़ुद को ग़ैरे इन्सान कहने में अ़-ज़्-मते इन्सानी की कोई तौहीन नहीं, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : काश ! मैं किसी रास्ते के कनारे पर कोई दरख़्त होता, वहां से किसी ऊंट का गुज़र होता, वोह मुझे मुंह में डालता चबाता फिर निगल जाता। ऐ काश ! मैं इन्सान न होता। (مُصنّف ابن ابی شیبۃ ج۸ ص ۱٤٤) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : काश ! मैं इन्सान न होता। (حلیۃ الاولیاء ج ۱ ص ۸۸ رقم ۱۳٦) ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स बजाए इन्सान के कभी दरख़्त, कभी दरख़्त के एक पत्ते तो कभी घास तो कभी ख़ाक की सूरत में पैदा होने की आरज़ू फ़रमाई।" (الطبقات الکبری ج ۸ ص ٦۰۰۵۹ ملخصاً) तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला "सगे मदीना कहना कैसा" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

हैं सफ़ आरा सब हूरो मलक और गि़ल्मां ख़ुल्द सजाते हैं[1]

हैं सफ़ आरा सब हूरो मलक और गि़ल्मां ख़ुल्द सजाते हैं
इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर मेहमान ख़ुदा के आते हैं

है आज फ़लक रोशन रोशन, हैं तारे भी जगमग जगमग
मह़बूब ख़ुदा के आते हैं मह़बूब ख़ुदा के आते हैं

क़ुरबान मैं शानो अ़-ज़मत पर सोए हैं चैन से बिस्तर पर
जिब्रीले अमीं ह़ाज़िर हो कर मे'राज का मुज़्दा सुनाते हैं

---

1 : दा'वते इस्लामी के क़ियाम से कई बरस क़ब्ल एक मुशाइरे में हि़स्सा लेने के लिये इस मिस्रए़ त़रह़ : "इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर मेहमान ख़ुदा के आते हैं" पर गिरह लगा कर चन्द अश्आ़र मौज़ूं किये थे। दा'वते इस्लामी के मा'रिज़े वुजूद में आने के बा'द किसी मौक़अ़ पर एक शाइ़र से इस्लाह़ करवाई थी, इस्लाह़ के साथ साथ उन की त़रफ़ से बा'ज़ मिस्रए़ भी "चुस्त" करवाए गए थे। अपनी याद दाश्त के मुत़ाबिक़ उन के अ़त़ा कर्दा मिस्रए़ "जली" कर दिये हैं। सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ

जिब्रीले अमीन बुराक़ लिये जन्नत से ज़मीं पर आ पहुंचे
बारात फ़िरिश्तों की आई मे'राज को दूल्हा जाते हैं

है ख़ुल्द का जोड़ा ज़ैबे बदन रहमत का सजा सेहरा सर पर
क्या ख़ूब सुहाना है मन्ज़र मे'राज को दूल्हा जाते हैं

है ख़ूब फ़ज़ा महकी महकी चलती है हवा ठन्डी ठन्डी
हर सम्त समां है नूरानी मे'राज को दूल्हा जाते हैं

येह इज़्ज़ो जलाल अल्लाह ! अल्लाह ! येह औजो कमाल अल्लाह ! अल्लाह !
येह हुस्नो जमाल अल्लाह ! अल्लाह ! मे'राज को दूल्हा जाते हैं

दीवानो ! तसव्वुर में देखो ! अस्रा के दूल्हा का जल्वा
झुरमट में मलाइक ले कर उन्हें मे'राज का दूल्हा बनाते हैं

अक़्सा में सुवारी जब पहुंची जिब्रील ने बढ़ के कही तक्बीर
नबियों की इमामत अब बढ़ कर सुल्ताने जहां फ़रमाते हैं

वोह कैसा ह़सीं मन्ज़र होगा जब दूल्हा बना सरवर होगा
उ़श्शाक़ तसव्वुर कर कर के बस रोते ही रह जाते हैं

येह शाह ने पाई सआ़दत है ख़ालिक़ ने अ़ता की ज़ियारत है
जब एक तजल्ली पड़ती है मूसा तो ग़श खा जाते हैं

जिब्रील ठहर कर सिदरा पर बोले जो बढ़े हम एक क़दम
जल जाएंगे सारे बालो पर अब हम तो यहीं रह जाते हैं

अल्लाह की रह़मत से सरवर जा पहुंचे दना की मन्ज़िल पर
अल्लाह का जल्वा भी देखा दीदार की लज़्ज़त पाते हैं

मे'राज की शब तो याद रखा फिर ह़श्र में कैसे भूलेंगे
अ़त्तार इसी उम्मीद पे हम दिन अपने गुज़ारे जाते हैं

जो सीने को मदीना उन की यादों से बनाते हैं

जो सीने को मदीना उन की यादों से बनाते हैं
वोही तो ज़िन्दगानी का ह़क़ीक़ी लुत्फ़ उठाते हैं

जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं
उन्हें प्यारा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अपना बनाते हैं

ग़मे सरवर में रोने का क़रीना या इलाही दे
मुझे अफ़्सोस बे जा ग़म ज़माने के रुलाते हैं

जो दीदारे मुह़म्मद की तड़प रखते हैं सीने में
नबिय्ये पाक उन को ख़्वाब में जल्वा दिखाते हैं

ज़माना जिस को ठुकरा दे, हर इक धुत्कार दे ऐसे
निकम्मे से निकम्मे को भी सीने से लगाते हैं

न क्यूं क़ुरबान हो जाऊं मैं उन की शाने रह़मत पर
वोह बढ़ कर थाम लेते हैं क़दम जब लड़खड़ाते हैं

जब उन के सामने लाल आमिना का मुस्कुराता है
ग़मो आलाम के मारे हुए ग़म भूल जाते हैं

बि इज़्निल्लाह सारी ने'मतों के हैं वोही क़ासिम
हमें आक़ा खिलाते हैं हमें आक़ा पिलाते हैं[1]

مـــدينه

1 : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّ اللّٰهُ يُعْطِى या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ता करता है और मैं तक़्सीम करता हूं (صَحِيح بُخارى ج ١ ص٤٣ حديث٧١) इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि दीन व दुन्या की सारी ने'मतें इ़ल्म, ईमान, माल, औलाद वग़ैरा देता अल्लाह है बांटते हुज़ूर हैं जिसे जो मिला हुज़ूर के हाथों मिला क्यूं कि यहां न अल्लाह की दैन में कोई क़ैद है न हुज़ूर की तक़्सीम में। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 187)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

रब है मुअ़्ती येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

मदीने की तमन्ना में जिये जाते हैं दीवाने
कि जाने कब हमें आक़ा मदीने में बुलाते हैं

हसद की आग में जल भुन के शैतां ख़ाक उड़ाता है
तेरा जश्ने विलादत धूम से जब हम मनाते हैं

ख़ुदा व मुस्तफ़ा नाराज़ होते हैं सुनो उन से
जो दाढ़ी को मुंडाते हैं या मुठ्ठी से घटाते हैं

गुलामो, मत डरो महशर की गर्मी से चले आओ
वोह कौसर के पियाले भर के प्यासों को पिलाते हैं

नज़ारे उन के आगे हेच होते हैं गुलिस्तां के
जो सहराए मदीना के मनाज़िर देख आते हैं

नहीं हैं नेकियां पल्ले मगर घबरा न ऐ अत्तार
ख़ताकारों को भी वोह अपने सीने से लगाते हैं

यादे शहे बत़्हा में जो अश्क बहाते हैं

यादे शहे बत़्हा में जो अश्क बहाते हैं घर बैठ के त़यबा का वोह लुत़्फ़ उठाते हैं
जो यादे मदीना को सीनों में बसाते हैं जीने का मज़ा ऐसे उ़श्शाक़ ही पाते हैं
किस प्यार से उम्मत के वोह नाज़ उठाते हैं इस्यां को गुलामों के, अश्कों से मिटाते हैं
वोह अपने गुलामों को दोज़ख़ से बचाते हैं अल्लाह की रह़मत से जन्नत में बसाते हैं
सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं सुल्त़ानो गदा सब को सरकार निभाते हैं
रोते हैं तड़पते हैं येह आप के दीवाने सरकार मदीने को फिर क़ाफ़िले जाते हैं
बिफरी हुई मौजों में जब उन को पुकारा है तूफ़ान से किश्ती को वोह पार लगाते हैं
जितने भी हैं दीवाने उन सब को बुला लीजे अरमान ग़रीबों को त़यबा के रुलाते हैं
येह आप की मरज़ी है जिन पर भी करम कर दें जन्नत की सनद देने रौज़े पे बुलाते हैं
वोह ह़श्र के मैदां में दामन में छुपाएंगे हम सब के यहां पर भी जो ऐ़ब छुपाते हैं
ग़म मुझ को मदीने का सरकार अ़त़ा कर दो ! आज़ार ज़माने के बेकार रुलाते हैं
कुरबान ! सरे मह़शर हम प्यास के मारों को भर भर के वोह कौसर के क्या जाम पिलाते हैं !

अ़र्सा हुवा ऐ आक़ा ! त़यबा से जुदाई को
अ़त़्त़ार को कब जानां ! फिर दर पे बुलाते हैं

जो मदीने के तसव्वुर में जिया करते हैं

जो मदीने के तसव्वुर में जिया करते हैं
हर जगह लुत्फ़ मदीने का लिया करते हैं

इश्क़े सरवर में जो हस्ती को फ़ना करते हैं
भेद उल्फ़त के फ़क़त उन पे खुला करते हैं

मालो दौलत की दुआ़ हम न ख़ुदा करते हैं
हम तो मरने की मदीने में दुआ़ करते हैं

आग दोज़ख़ की जला ही नहीं सकती उन को
इश्क़ की आग में दिल जिन के जला करते हैं

दुर्रे नायाब बिलाशक हैं वोह हीरे अनमोल
अश्क आक़ा की जो यादों में बहा करते हैं

दर्दो आलाम में तस्कीन उन्हें मिलती है
नाम उन का जो मुसीबत में लिया करते हैं

तू सलाम उन से दरे पाक पे जा कर कहना
इल्तिजा तुझ से हम ऐ बादे सबा करते हैं

क्यूं फिरें शौक़ में हम माल के मारे मारे
हम तो सरकार के टुकड़ों पे पला करते हैं

सुन्नतों की वोह बने रहते हैं हर दम तस्वीर
जाम जो उन की मह़ब्बत का पिया करते हैं

सुन्नतों के ऐ मुबल्लिग़ ! हो मुबारक तुझ को
तुझ से सरकार बड़ा प्यार किया करते हैं

आप की गलियों के कुत्तों पे तसद्दुक़ जाऊं
कि मदीने के वोह कूचों में फिरा करते हैं

सुन लो ! नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़्स के वासित़े गुस्सा जो किया करते हैं

बिल यक़ीं ऐसे मुसल्मान हैं बेह़द नादान
जो कि रंगीनिये दुन्या पे मरा करते हैं

चांद सूरज का मुक़द्दर भी तो देखो अक्सर
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारे किया करते हैं

झिलमिलाते हुए तारों की भी क़िस्मत है ख़ूब
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारे किया करते हैं

मस्जिदे न-बवी के पुरनूर मनारे हर दम
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारे किया करते हैं

झूम कर आते हैं बारिश लिये बादल जब भी
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारे किया करते हैं

बा मुक़द्दर हैं मदीने के कबूतर बेशक
गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारे किया करते हैं

रश्क अ़त्तार को उन ज़र्रों पर आता है जो
उन की ना'लैन के तल्वों से लगा करते हैं

क़ाबिले रश्क हैं अ़त्तार वोह क़िस्मत वाले
दफ़्न जो मीठे मदीने में हुवा करते हैं

इक बार फिर मदीने अत़्त़ार जा रहे हैं

इक बार फिर मदीने अत़्त़ार जा रहे हैं
आक़ा मदीने वाले दर पर बुला रहे हैं

क़िस्मत को इस तसव्वुर से वज्द आ रहे हैं
रह़मत की भीक देने आक़ा बुला रहे हैं

वोह फ़ैज़ का ख़ज़ाना हर दम लुटा रहे हैं
अन्वार हर त़रफ़ ही त़यबा में छा रहे हैं

जो कोई उन के ग़म में आंसू बहा रहे हैं
जीने का लुत़्फ़ ऐसे उ़श्शाक़ पा रहे हैं

जिस दम मदीने आएं रोएं पछाड़ें खाएं
हम मांग तुम से आक़ा ऐसी अदा रहे हैं

हुस्ने अ़मल हमारे पल्ले में कुछ नहीं है
आहों की आंसूओं की सौग़ात ला रहे हैं

मन्ज़र है रूह़ परवर रौज़े की जालियों पर
उ़श्शाक़ आंसूओं के मोती लुटा रहे हैं

आक़ा ! बहें येह आंखें बस आप ही के ग़म में
हाए हमें ज़माने के ग़म रुला रहे हैं

इज़्ने ख़ुदा से हो तुम मुख़्तारे हर दो आ़लम
दोनों[2] जहां तुम्हारी ख़ैरात खा रहे हैं

दस्तूर है कि जिस का खाना उसी का गाना
हम जिस का खा रहे हैं गीत उस के गा रहे हैं

मस्कन बने मदीना मदफ़न बने मदीना
अह़मद रज़ा का तुम को दे वासित़ा रहे हैं

आक़ा ! बुलाओ उन को बेचैन मुज़्त़रिब जो
दिल को जला रहे हैं आंसू बहा रहे हैं

जिन का न भाव कोई दुन्या में पूछता हो
सीने से उन को आक़ा अपने लगा रहे हैं

उम्मत के ह़ाल से हैं आगाह हर घड़ी आप
ख़्वाबों में आ रहे हैं बिगड़ी बना रहे हैं

दुन्या के ग़म ने मारा लिल्लाह दो सहारा
सरकार ठोकरें हम दर दर की खा रहे हैं

अब घिर चुकी है आक़ा तूफ़ां में अपनी नय्या
ऐ नाख़ुदा सहारा मांग आप का रहे हैं

आक़ा हुज़ूरे अन्वर ! नज़्रे करम हो हम पर
अब्रे सियाह दिल पर इस्यां के छा रहे हैं

चश्मे करम हो जानां सूए गुनाहगारां
सरकार ! नफ़्सो शैत़ां हर दम दबा रहे हैं

उन सब मुबल्लिग़ों के ख़्वाबों में अब करम हो
आक़ा जो सुन्नतों की ख़िदमत बजा रहे हैं

परवर्द गारे आ़ली दे जज़्बए ग़ज़ाली
कर हम को खुश ख़िसाली[1] कर येह दुआ़ रहे हैं

बीमारिये गुनह से हम को शिफ़ा दे या रब
बन जाएं नेक हम सब कर इल्तिजा रहे हैं

दौलत की ह़िर्स दिल से अल्लाह दूर कर दे
इश्क़े रसूल दे दे, कर येह दुआ़ रहे हैं

तक्सीरे[2] मालो ज़र की हरगिज़ नहीं तमन्ना
हम मांग आप से बस ग़म आप का रहे हैं

रुख़्सत की अब घड़ी है सर पर अजल खड़ी है
आ जाओ अब खुदारा हम जां से जा रहे हैं

1 : या'नी अच्छी आ़दतों वाला 2 : ज़ियादती, कसरत

अब लहद में अ़ज़ीज़ो ! जल्दी उतार भी दो
आहा ! वोह मुस्कुराते तशरीफ़ ला रहे हैं

फ़रियाद जाने आ़लम ! कोई नहीं है हमदम
सूए सक़र[1] फ़िरिश्ते अब ले के जा रहे हैं

कुरबान रोज़े मह़शर दामन का पर्दा ढक कर
ऐ़बों को मेरे सरवर ख़ुद ही छुपा रहे हैं

मह़शर में बन्दा परवर लुत़्फ़ो करम के पैकर
भर भर के जामे कौसर हम को पिला रहे हैं

सदक़े में मुर्तज़ा के सोज़े बिलाल दे दो
येह अ़र्ज़ ले कर आक़ा अ़त्त़ार आ रहे हैं

उन के करम के सदक़े फ़ज़्लो ! करम पे कुरबां
अ़त्त़ार को वोह ले कर जन्नत में जा रहे हैं

1 : जहन्नम के एक त़ब्क़े का नाम

मह़बूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं

मह़बूबे रब्बे अक्बर तशरीफ़ ला रहे हैं
आज अम्बिया के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

क्यूं है फ़ज़ा मुअ़त्तर ! क्यूं रोशनी है घर घर
अच्छा ! ह़बीबे दावर तशरीफ़ ला रहे हैं

ईदों की ईद आई रह़मत ख़ुदा की लाई
जूदो सख़ा के पैकर तशरीफ़ ला रहे हैं

हूरें लगीं तराने ना'तों के गुनगुनाने
हूरो मलक के अफ़्सर तशरीफ़ ला रहे हैं

आ़लम में हैं जो यक्ता, बे मिस्ल हैं जो आक़ा[1]
वोह आमिना तेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं

ऐ फ़र्शियो मुबारक ऐ अ़र्शियो मुबारक
दोनों[2] जहां के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

---

1 : येह मिस्रअ़ "मुफ़त्तिश" ने मौज़ूं किया।

ऐ बे कसो मुबारक ऐ बे बसो मुबारक
अब ग़मज़दों के यावर तशरीफ़ ला रहे हैं

झूमो ऐ बद नसीबो ! हो जाओ ख़ुश ग़रीबो !
देखो ग़रीब परवर तशरीफ़ ला रहे हैं

कैसा है प्यारा मन्ज़र रंगीनो रूह़ परवर
हर एक से ह़सीं तर तशरीफ़ ला रहे हैं

रह़मत बरस रही है हर सम्त रोशनी है
देखो महे मुनव्वर तशरीफ़ ला रहे हैं

ऐ बे नवाओ आओ, आओ गदाओ आओ
वोह आमिना के घर पर तशरीफ़ ला रहे हैं

तेरी ह़लीमा दाई तक़्दीर मुस्कुराई
मह़बूबे ह़क़ तेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं

उम्मत के नाज़ उठाने उम्मत को बख़्शवाने
अल्लाह के पयम्बर तशरीफ़ ला रहे हैं

आज अज़ पए विलादत जी हां मिलेगी जन्नत
मुख़्तारे खुल्दो कौसर तशरीफ़ ला रहे हैं

खुद चल के मन्ज़िल आए आ कर गले लगाए
भटके हुओं के रहबर तशरीफ़ ला रहे हैं

वक़्ते विलादत आया है शोर मरहबा का
दोनों जहां के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

शैत़ां की आई शामत क्यूं दूर हो न ज़ुल्मत
हां हां अ़रब के ख़ावर तशरीफ़ ला रहे हैं

किस्रा का क़स्र शक़ है शैत़ां का रंग फ़क़ है
देखो ! रसूले अन्वर तशरीफ़ ला रहे हैं

ता'ज़ीम के लिये अब ऐ मोमिनो उठो सब
आरामे जाने मुज़्तर तशरीफ़ ला रहे हैं

अपना गुलाम कहने, इस उजड़े दिल में रहने
कब ऐ ग़रीब परवर तशरीफ़ ला रहे हैं

उफ़ ! हाए घुप अंधेरा चमकाने गोरे तीरा
कब ऐ महे मुनव्वर तशरीफ़ ला रहे हैं

ऐ तिश्नगाने महशर देखो करम के पैकर
कौसर का ले के साग़र तशरीफ़ ला रहे हैं

बदकारो ! रख्खो हिम्मत फ़रमाएंगे शफ़ाअ़त
देखो शफ़ीए़ महशर तशरीफ़ ला रहे हैं

अ़त्तार अब ख़ुशी से फूला नहीं समाता
दुन्या में इस के सरवर तशरीफ़ ला रहे हैं

जाहो जलाल दो न ही मालो मनाल दो

जाहो जलाल दो न ही मालो मनाल दो
सोज़े बिलाल बस मेरी झोली में डाल दो

दुन्या के सारे ग़म मेरे दिल से निकाल दो
ग़म अपना या ह़बीब ! बराए बिलाल दो

हिज्रो फ़िराक़ तो मिला दो इज़्तिराब भी
बेताब क़ल्ब अज़ पए सोज़े बिलाल दो

बहती रहे जो हर घड़ी बस याद में शहा !
वोह चश्मे अश्कबार पए ज़ुल जलाल दो

सीना मदीना हो मेरा दिल भी मदीना हो
फ़िक्रे मदीना दो मुझे म-दनी ख़याल दो

हर आन बस तसव्वुरे त़यबा में गुम रहूं
ऐसा बुलन्द शाहे मदीना ! ख़याल दो

दो दर्द सुन्नतों का पए शाहे करबला
उम्मत के दिल से लज़्ज़ते इस्यां निकाल दो

खुल्क़े अज़ीम से मुझे ह़िस्सा अ़ता करो !
बे जा हंसी की ख़स्लते बद को निकाल दो

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

दोनों जहां की आफ़तें मौला मुसीबतें
सदक़े में मेरे ग़ौस के सरकार ! टाल दो

अ़त्तार को बुला के मदीने में दो बक़ीअ़
"दो फूलों[1]" के तुफ़ैल हों पूरे सुवाल दो

مدینہ

1 : "दो फूलों" से यहां ह़-सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मुराद हैं ।

इज़्ने तयबा मुझे सरकारे मदीना दे दो

इज़्ने तयबा मुझे सरकारे मदीना दे दो	ले चले मुझ को जो तयबा वोह सफ़ीना दे दो

यादे तयबा में तड़पने का क़रीना दे दो	चश्मे तर, सोज़े जिगर शाहे मदीना दे दो

फूंक दे जो मेरी खुशियों[1] का नशेमन आक़ा	चाक दिल, चाक जिगर सोज़िशे सीना दे दो

चार यारों का तुम्हें वासिता देता हूं शहा !	अपना ग़म मुझ को शहन्शाहे मदीना दे दो

वक़्ते आख़िर है चली जान रसूले अकरम	इक झलक ऐ मेरे सुल्ताने मदीना दे दो

सदक़ा शहज़ादिये कौनैन का क़दमों में मौत	मुझ को दे दो मेरे सुल्ताने मदीना दे दो

कस्रते माल की आफ़त से बचा कर आक़ा
अपने अ़त्तार को उल्फ़त का ख़ज़ीना दे दो

ग़ीबत से महफ़ूज़ रहने का नुस्ख़ा

हज़रते अ़ल्लामा मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से **मन्क़ूल** है : जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो और कहो : بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को **ग़ीबत** से बाज़ रखेगा। और जब मजलिस से उठो तो कहो : بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَصَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد तो फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी **ग़ीबत** करने से बाज़ रखेगा।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع ص۲۷۸)

1. यहां यादे ख़ुदा व मुस्तफ़ा से दूर करने वाली ग़फ़्लत भरी खुशियां मुराद हैं। ۱۲مِنْہُ غُفِیَ عَنْہُ

फिर गुम्बदे ख़ज़रा की फ़ज़ाओं में बुला लो

फिर गुम्बदे ख़ज़रा की फ़ज़ाओं में बुला लो
सरकार बुला कर मुझे क़दमों से लगा लो
क़दमों से लगा कर मुझे दीवाना बना लो
दुन्या की महब्बत को मेरे दिल से निकालो

गो ख़्वारो गुनहगार हूं जैसा हूं तुम्हारा
सरकार ! निभा लो मुझे सरकार निभा लो
सदक़ा मुझे सरकार नवासों का अ़ता हो
अग़्यार के टुकड़ों से शहन्शाह बचा लो

या शाहे मदीना मेरी इमदाद को आओ
आफ़ातो बलिय्यात के पन्जों से निकालो
तूफ़ान की मौजों में जहाज़ अपना घिरा है
सरकार ! बचा लो इसे सरकार ! बचा लो

सरकार ! मेरे ख़ून का प्यासा हुवा दुश्मन
शहज़ादों का सदक़ा मुझे दुश्मन से बचा लो

ऊजड़ हुई जाती है मेरी ज़ीस्त की बस्ती
हो जाएगी आबाद नज़र लुत्फ़ की डालो
वीरान हुवा जाता है खुशियों का गुलिस्तां
इस उजड़े चमन पर भी निगह लुत्फ़ की डालो
दम तोड़ने वाला है गुनाहों का मरीज़ अब
ऐ जाने मसीहा ! इसे तुम आ के बचा लो
मरने का शरफ़ अब तो मदीने में अ़ता हो
दर दर की मुझे ठोकरों से शाह बचा लो
मदफ़न हो अ़ता मीठे मदीने की गली में
लिल्लाह पड़ोसी मुझे जन्नत में बना लो
खींचे लिये जाते हैं जहन्नम को मलाइक
ऐ शाफ़ेए महशर पए शैख़ैन बचा लो
फुरक़त में तड़पते हैं जो मिस्कीन बिचारे
अस्बाब अ़ता कर के उन्हें दर पे बुला लो
महबूबे खुदा ! सर पे अजल आ के खड़ी है
शैतान से अ़त्तार का ईमान बचा लो

सआ़दत अब मदीने की अ़त़ा हो

सआ़दत अब मदीने की अ़त़ा हो करम चश्मे करम या मुस्त़फ़ा हो
मदीने की बहारें देखने की इजाज़त मर्ह़मत अब तो शहा हो
वोह लम्ह़ाते मसर्रत आएं फिर से मेरे पेशे नज़र गुम्बद हरा हो
सदा दिल इ़श्क़ में तड़पा करे और येह तार अश्कों का आंखों से बंधा हो
सुनह्‌री जालियों के रू बरू काश ! मेरा जल्वों में उन के ख़ातिमा हो
मेरे आक़ा ! बराए पीरो मुर्शिद बक़ीए़ पाक में मदफ़न अ़त़ा हो
जब आक़ा क़ब्र में जल्वा नुमा हों तो लब पर "मरह़बा या मुस्त़फ़ा" हो
मह़ब्बत माल की छुटती नहीं है करम ! दुन्या से मेरा दिल बुरा हो
मैं ऐसा आ़शिक़े सादिक़ बनूं काश ! हंसी लब पर रहे दिल रो रहा हो
गुनाहों के सभी अमराज़ हों दूर अ़त़ा मेरे त़बीब ऐसी दवा हो
कलेजे से लगाते हैं उसे भी जिसे हर एक ने ठुकरा दिया हो
पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बना लो करम आक़ा पए अह़मद रज़ा हो
जगह जन्नत में क़दमों में वोह देना जहां पर मुर्शिदी अह़मद रज़ा हो
मेरी क़िस्मत की जितनी गुथ्थियां हैं सुलझ सकती हैं आक़ा तुम जो चाहो
अ़दू उस का बिगाड़ेगा भला क्या ! मुह़म्मद मुस्त़फ़ा का जो गदा हो
इनायत दीन पर हो इस्तिक़ामत मेरी मक़्बूल या रब येह दुआ़ हो

खु़दाया वासित़ा मीठे नबी का
शरफ़ अ़त्त़ार को ह़ज का अ़त़ा हो

इक बार फिर करम शहे ख़ैरुल अनाम हो

इक बार फिर करम शहे ख़ैरुल अनाम हो
फिर जानिबे मदीना रवाना गुलाम हो

फिर झूमता हुवा मैं चलूं जानिबे हिजाज़
मक्के में सुब्ह हो तो मदीने में शाम हो

पेशे नज़र हो गुम्बदे ख़ज़रा की फिर बहार
ऐ काश ! फिर मदीने में मेरा क़ियाम हो

हो आना जाना मेरा मदीने में उम्र भर
आख़िर में ज़िन्दगी का वहीं इख़्तिताम हो

यूं मुझ को मौत आए तुम्हारे दियार में
चौखट पे सर हो लब पे दुरूदो सलाम हो

या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से
औलाद पर भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

दीवाने रो रहे हैं मदीने के वासिते
इन की भी ह़ाज़िरी का कोई इन्तिज़ाम हो

दिल की मुराद पा गया जो दर पे आ गया
कोई सबब नहीं कि न मंगते का काम हो

दुश्मन का ज़ोर बढ़ चला है या अ़ली मदद !
अब ज़ुल फ़िक़ारे ह़ैदरी फिर बे नियाम हो

बेकार गुफ़्त-गू से मेरी जान छूट जाए
हर वक़्त काश ! लब पे दुरूदो सलाम हो

हो जाएं ख़त्म काश ! गुनाहों की आ़दतें
ऐसा करम ऐ सय्यिदे ख़ैरुल अनाम हो

अह़मद रज़ा का सदक़ा मुसल्मान नेक हों
नेकी की दा'वत आक़ा जहां भर में आ़म हो

आक़ा ! ग़मे मदीना में रोना नसीब हो
ज़िक्रे मदीना लब पे मेरे सुब्हो शाम हो

हो रूह़ तेरे क़दमों पे अ़त्तार की निसार
जिस वक़्त इस की उम्र का लबरेज़ जाम हो

जिधर देखूं मदीने का ह़रम हो

जिधर देखूं मदीने का ह़रम हो
करम ऐसा शहन्शाहे उमम हो
कहां सरकार दौलत मांगता हूं
मदीने का अ़त़ा मुझ को तो ग़म हो

जब आक़ा आख़िरी वक़्त आए मेरा
मेरा सर हो तेरा बाबे करम हो
करे परवाज़ रूह़े मुज़्त़रिब यूं
तेरे दरबार में सर मेरा ख़म हो

बक़ीए़ पाक की लिल्लाह अब तो
इजाज़त मर्ह़मत शाहे ह़रम हो
जो मीठे मुस्त़फ़ा के ग़म में रोए
न क्यूं मेरी नज़र में मोह़तरम हो

हमारे ह़ाले दिल से तुम तो वाक़िफ़
ख़ुदा वन्दे दो[2] आ़लम की क़सम हो

अंधेरा लह़्द[1] में है आह ! छाया
मेरे नूरे ख़ुदा चश्मे करम हो

उसे क्या ख़ौफ़े मह़शर हो कि जिस का
तेरे दस्ते शफ़ाअ़त में भरम हो

मिटा सकता नहीं कोई भी उस को
कि ह़ामी जिस का ख़ुद शाहे उमम हो

ग़मे मह़बूब में रोती रहे जो
मुझे या रब अ़त़ा वोह चश्मे नम हो

आज "क्या क्या" किया ?

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना अपना एह़्तिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता, आज तू ने "**क्या क्या**" किया है ?

(إحياءُ العُلوم ج٥ ص١٤١)

1 : क़ब्र

शहा जितने भी दीवाने हैं तेरे
किसी का जज़्बए उल्फ़त न कम हो

जो तुम चाहो यक़ीनन दूर मुझ से
शहा उ़क़्बा का हर रन्जो अलम[1] हो

करे आंखों से सैले अश्क जारी
अ़ता़ हिज्रे मदीना का वोह ग़म हो

सदा करता रहूं सुन्नत की ख़िदमत
मेरा जज़्बा किसी सूरत न कम हो

करें इस्लामी बहनें शर-ई पर्दा
अ़ता़ इन को ह़या शाहे उमम हो

दिखा दो सब्ज़ गुम्बद की बहारें
शहा अ़त्ता़र पर अब तो करम हो

مدینہ

1 : ग़म

ऐ काश ! तसव्वुर में मदीने की गली हो

ऐ काश ! तसव्वुर में मदीने की गली हो
और यादे मुह़म्मद भी मेरे दिल में बसी हो

दो सोजे़ बिलाल आक़ा मिले दर्द रज़ा सा
सरकार अ़ता इश्क़े उवैसे क़-रनी हो

ऐ काश ! मैं बन जाऊं मदीने का मुसाफ़िर
फिर रोती हुई त़यबा को बारात चली हो

फिर रह़मते बारी से चलूं सूए मदीना
ऐ काश ! मुक़द्दर से मुयस्सर वोह घड़ी हो

जब आऊं मदीने में तो हो चाक गिरीबां
आंखों से बरसती हुई अश्कों की झड़ी हो

ऐ काश ! मदीने में मुझे मौत यूं आए
चौखट पे तेरी सर हो मेरी रूह़ चली हो

जब ले के चलो गोरे ग़रीबां को जनाज़ा
कुछ ख़ाक मदीने की मेरे मुंह पे सजी हो

जिस वक़्त नकीरैन मेरी क़ब्र में आएं
उस वक़्त मेरे लब पे सजी ना'ते नबी हो

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

सदक़ा मेरे मुर्शिद का करो दूर बलाएं
हो बेहतरी उस में जो भी अरमाने दिली हो

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! मह़ल्ले में जगह उन के मिली हो

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अ-दबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अ-दबी हो

अ़त्तार हमारा है सरे ह़श्र इसे काश !
दस्ते शहे बत़्ह़ा से येही चिठ्ठी मिली हो

बयां क्यूंकर सनाए मुस्त़फ़ा हो

बयां क्यूंकर सनाए मुस्त़फ़ा हो
ख़ुदा जब उन का ख़ुद मिद्ह़त सरा हो

मदीने की महब्बत में जो रोए
अ़त़ा वोह आंख मीठे मुस्त़फ़ा हो

सलामे शौक़ कह देना अदब से
गुज़र सूए मदीना जब सबा हो

तड़प कर या रसूलल्लाह पुकारो
नहीं मुम्किन न आक़ा ने सुना हो

अ़त़ा कर दो मुझे वोह भीक दाता
मेरे सारे क़बीले का भला हो

करूं बे लौस ख़िदमत सुन्नतों की
शहा गर लुत़्फ़ मुझ पर आप का हो

दे जज़्बा "म-दनी इन्आ़मात" का तू
करम या सय्यिदे हर दो सरा हो

मैं म-दनी क़ाफ़िलों ही का मुसाफ़िर
रहूं अक्सर करम ऐसा शहा हो

करम हो दा'वते इस्लामी पर येह
शरीक इस में हर इक छोटा बड़ा हो

मैं सब दौलत रहे ह़क़ में लुटा दूं
शहा ऐसा मुझे जज़्बा अ़त़ा हो

गुनाहों ने कहीं का भी न छोड़ा
करम मुझ पर ह़बीबे किब्रिया हो

गुनाहों की छुटे हर एक आ़दत
सुधर जाऊं करम या मुस्त़फ़ा हो

कटी है ग़फ़्लतों में जिन्दगानी
न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो

करम हो वासित़ा कुल औलिया का
मेरा ईमां पे मौला ख़ातिमा हो

मेरे आ'माल तोले जा रहे हैं
शफ़ाअ़त शाफ़ेए रोज़े जज़ा हो

इलाही हूं बहुत कमज़ोर बन्दा
न दुन्या में न उ़क़्बा में सज़ा हो

बरोज़े ह़श्र आक़ा काश ! कह दें
तुम ऐ अ़त्त़ार दोज़ख़ से रिहा हो

क्या सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद का ख़ूब है नज़ारा

क्या सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद का ख़ूब है नज़ारा
है किस क़दर सुहाना कैसा है प्यारा प्यारा

अन्वार यां छमाछम बरसाए अब्र पैहम
पुरनूर सब्ज़ गुम्बद पुरनूर हर मनारा

पेशे नज़र हो हर दम बस सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद
दिल में बसा रहे बस जल्वा सदा तुम्हारा

साए में सब्ज़ गुम्बद के तोड़ने भी दो दम
चारा गरो ! ख़ुदारा कोई करो न चारा

ग़ौसुल वरा का सदक़ा ऐसा दे अपना ग़म बस
रोते हुए ही गुज़रे सरकार ! वक़्त सारा

सीना बने मदीना दिल में बसे मदीना
यादों में अपनी रखिये गुम या नबी ! ख़ुदारा

मत छोड़िये मुझे अब दुन्या की ठोकरों पर
बस आप ही के टुकड़ों पर हो मेरा गुज़ारा

सरकार ! हुब्बे दुन्या दिल से मेरे निकालो
दीवाना अब बना लो ! अपना मुझे खुदारा

तड़पा करूं सदा मैं ऐ काश ! तेरे ग़म में
हाए ! मुझे ज़माने के रन्जो ग़म ने मारा

गिर्या कुनां हैं या रब ! शौक़े मदीना में जो
त़यबा का काश ! वोह भी कर लें कभी नज़ारा

रन्जो अलम के बादल सारे ही छट गए हैं
जब भी तड़प के हम ने सरकार को पुकारा

ठुकरा दे जिस को दुन्या उस को गले लगाना
येह काम है तुम्हारा या मुस्त़फ़ा ! तुम्हारा

तयबा में अब तो मुझ को दो[2] गज़ ज़मीन दे दो
कब तक फिरूं मैं दर दर सरकार मारा मारा

दे दो बक़ीअ़ दे दो, मुझ को बक़ीअ़ दे दो
कर दो सुवाल पूरा प्यारे नबी खुदारा

हैं मुस्त़फ़ा मददगार ऐ दुश्मनो ख़बरदार !
येह मत समझना ह़ामी कोई नहीं हमारा

है दुश्मनों ने घेरा लिल्लाह कोई फेरा
या मुस्त़फ़ा खुदारा अब आ के दो सहारा

कर दे अ़दू को ग़ारत, ह़ासिद को दे हिदायत
पूरी हो क़ल्बे मुज़्त़र की अ़र्ज़ किर्दिगारा

ज़ालिम डरा रहे हैं, आंखें दिखा रहे हैं
आक़ा ! दो जल्द आ कर अ़त्तार को सहारा

अ़र्शे उ़ला से आ'ला मीठे नबी का रौज़ा

अ़र्शे उ़ला से आ'ला मीठे नबी का रौज़ा[1]
है हर मकां से बाला मीठे नबी का रौज़ा

कैसा है प्यारा प्यारा येह सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद
कितना है मीठा मीठा मीठे नबी का रौज़ा

फ़िरदौस की बुलन्दी भी छू सके न इस को
ख़ुल्दे बरीं से ऊंचा मीठे नबी का रौज़ा

मक्के से इस लिये भी अफ़्ज़ल हुवा मदीना
ह़िस्से में इस के आया मीठे नबी का रौज़ा

का'बे की अ़-ज़-मतों का मुन्किर नहीं हूं लेकिन
का'बे का भी है का'बा मीठे नबी का रौज़ा

---

1 : रौज़ा के लफ़्ज़ी मा'ना हैं बाग़ ۞ इस शे'र में रौज़ा से मुराद वोह ह़िस्सए ज़मीन है जिस पर रह़मते आ़लम صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم का जिस्मे मुअ़ज़्ज़म तशरीफ़ फ़रमा है । इस की फ़ज़ीलत बयान करते हुए फ़ु-क़हाए किराम رحمہم اللہ السّلام फ़रमाते हैं : मह़बूबे दावर صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم के जिस्मे अन्वर से ज़मीन का जो ह़िस्सा लगा हुवा है, वोह का'बा शरीफ़ से बल्कि अ़र्श व कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है । (دُرِّمختار معہ رَدُّالمحتار ج۴ ص ۶۲)

आंसू छलक पड़े और बेताब हो गया दिल
जिस वक़्त मैं ने देखा मीठे नबी का रौज़ा

होगी शफ़ाअ़त उस की जिस ने मदीने आ कर
ख़्वाह इक नज़र भी देखा मीठे नबी का रौज़ा

बादल घिरे हुए हैं बारिश बरस रही है[1]
लगता है क्या सुहाना मीठे नबी का रौज़ा[2]

हिज्रो फ़िराक़ में जो या रब ! तड़प रहे हैं
उन को दिखा दे मौला मीठे नबी का रौज़ा

हज़्दा हज़ार आ़लम का हुस्न इस पे कुरबां
दोनों जहां का दूल्हा मीठे नबी का रौज़ा

उस आंख पर न क्यूंकर कुरबान मेरी जां हो
जिस आंख ने है देखा मीठे नबी का रौज़ा

जिस वक़्त रूह़ तन से अ़त्तार की जुदा हो
हो सामने खुदाया मीठे नबी का रौज़ा

---

1 : मदीनए मुनव्वरह की गली में बरसती बरसात में गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वों में एक त़रफ़ खड़े हो कर येह शे'र क़लम बन्द किया था।

2 : आ़म बोलचाल में सब्ज़ गुम्बद को भी रौज़ा कहते हैं और यहां येही मुराद है।

शदाइद नज़्अ़ के कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

शदाइद नज़्अ़ के कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह
अंधेरी क़ब्र में कैसे रहूंगा या रसूलल्लाह

मुझे मरना है आक़ा गुम्बदे ख़ज़रा के साए में
वत़न में मर गया तो क्या करूंगा या रसूलल्लाह

न छोड़े जुर्म छुटते हैं न मारे नफ़्स मरता है
न जाने नेक आख़िर कब बनूंगा या रसूलल्लाह

सदा मीठी नज़र रखना अगर तुम हो गए नाराज़
न हरगिज़ मैं कहीं का भी रहूंगा या रसूलल्लाह

अंधेरा काट खाता है अकेले ख़ौफ़ आता है
तो तन्हा क़ब्र में क्यूंकर रहूंगा या रसूलल्लाह

नकीरैन इम्तिहा़ं लेने को जब आएंगे तुरबत[1] में
जवाबात उन को आक़ा कैसे दूंगा या रसूलल्लाह

बराए नाम दर्दे सर सहा जाता नहीं मुझ से
अ़ज़ाबे क़ब्र कैसे सह सकूंगा या रसूलल्लाह

---

1 : क़ब्र

यहां च्यूंटी भी तड़पा दे मुझे तो क़ब्र के अन्दर
मैं क्यूंकर डंक बिच्छू के सहूंगा या रसूलल्लाह
यहां मा'मूली गरमी भी सही जाती नहीं मुझ से
तो गरमी ह़श्र की कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह
ज़मीं तपती हुई ख़ुरशीद भी शो'ला फ़िशां होगा
बरह्ना पा खड़ा कैसे रहूंगा या रसूलल्लाह
सरे मह़शर बला की धूप है आक़ा करम कर दो
मैं क्या मह़रूम कौसर से रहूंगा या रसूलल्लाह
गुनाहों के खुले दफ़्तर खड़ा हूं आह ! मीज़ां पर
नहीं हैं नेकियां अब क्या करूंगा या रसूलल्लाह
है सर पर बारे इ़स्यां पुल सिरात़ अब पार हो कैसे !
संभालो वरना दोज़ख़ में गिरूंगा या रसूलल्लाह
बरोज़े ह़श्र गर चश्मे करम मुझ पर न की तुम ने
मैं जा कर किस के दामन में छुपूंगा या रसूलल्लाह

मैं मुजरिम हूं जहन्नम में अगर फेंका गया मुझ को
हलाकत होगी हाए ! क्या करूंगा या रसूलल्लाह

लपक कर आग के शो'ले लिपटते होंगे बरबादी
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

अंधेरी आग होगी रोशनी बिल्कुल नहीं होगी
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

वहां कानों में, आंखों में, दहन में, पेट में भी आग !
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

जिबाले नार होंगे वादियां भी नार की होंगी
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

फ़िरिश्ते डांटते होंगे हथोड़े मारते होंगे
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

वहां सांप और बिच्छू भी मुसल्सल डस रहे होंगे
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

ग़िज़ा दोज़ख़ की थूहर और ऊपर खौलता पानी
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

न मांगे मौत आएगी न बेहोशी ही छाएगी
करम कर दो येह सब कैसे सहूंगा या रसूलल्लाह

जो तुम चाहोगे तो होंगी मेरी सब मुश्किलें आसां
वगर्ना नार में, मैं जा पड़ूंगा या रसूलल्लाह

तुम्हारा हूं गुलाम और है गुलामी पर मुझे तो नाज़
करम से साथ जन्नत में चलूंगा या रसूलल्लाह

ज़बां पर होगा उस दम या रसूलल्लाह ना'रा
बरोज़े ह़श्र जिस दम मैं उठूंगा या रसूलल्लाह

ग़मे उम्मत में रोता देख कर तुम को सरे मह़शर
शहा ! क़ाबू में कैसे दिल रखूंगा या रसूलल्लाह

सुनो या मत सुनो मैं तो पुकारे जाऊंगा तुम को
जहां में जब तलक आक़ा जियूंगा या रसूलल्लाह

करम फ़रमा कि हो अ़त्तार भी इस क़ौल का मिस्दाक़
"तेरी ख़ातिर जियूंगा और मरूंगा" या रसूलल्लाह

मुझे हर साल तुम ह़ज पर बुलाना या रसूलल्लाह

मुझे हर साल तुम ह़ज पर बुलाना या रसूलल्लाह
बुलाना और मदीना भी दिखाना या रसूलल्लाह

रहे हर साल मेरा आना जाना या रसूलल्लाह
बक़ीए़ पाक हो आख़िर ठिकाना या रसूलल्लाह

मेरी आंखों में तुम हर दम समाना या रसूलल्लाह
दिले वीरां को जल्वों से बसाना या रसूलल्लाह

न दौलत दो न दो कोई ख़ज़ाना या रसूलल्लाह
सिखा दो इश्क़ में रोना रुलाना या रसूलल्लाह

नज़र भर कर शहा ! मैं देख लूं फिर गुम्बदे ख़ज़रा
खुदारा फिर सबब कोई बनाना या रसूलल्लाह

दवा के वासिते़ बीमारे इस्यां दर पे ह़ाज़िर है
न तुम मायूस इसे दर से फिराना या रसूलल्लाह

नुक़ूशे उल्फ़ते दुन्या मेरे दिल से मिटा देना
मुझे अपना ही दीवाना बनाना या रसूलल्लाह

सलीक़ा आप की यादों में रोने का तड़पने का
पए ग़ौसो रज़ा मुझ को सिखाना या रसूलल्लाह

पए ग़ौसुल वरा, अह़मद रज़ा, मुर्शिद ज़ियाउद्दीन
अ़ता हो इश्क़ो मस्ती का ख़ज़ाना या रसूलल्लाह

फ़िरिश्ता मौत का अब आ चुका है रूह़ लेने को
सरे बालीं ज़रा जल्दी से आना या रसूलल्लाह

खुले हैं दफ़्तरे आ'माल ! हाए ! मेरा क्या होगा !
बचाना शाफ़ेए़ मह़शर बचाना या रसूलल्लाह

येह गन्दा है निकम्मा है येह जैसा है तुम्हारा है
तुम्हीं अ़त्तारे आ़सी को निभाना या रसूलल्लाह

गुनाहों की नहीं जाती है आ़दत या रसूलल्लाह

गुनाहों की नहीं जाती है आ़दत या रसूलल्लाह
तुम्हीं अब कुछ करो माहे रिसालत या रसूलल्लाह

गुनाहों से मुझे हो जाए नफ़रत या रसूलल्लाह
निकल जाए बुरी हर एक ख़स्लत या रसूलल्लाह

गुनह लम्हा ब लम्हा हाए ! अब बढ़ते ही जाते हैं
नहीं पर इस पे हाए कुछ नदामत या रसूलल्लाह

गुनह कर कर के हाए ! हो गया दिल सख़्त पथ्थर से
करूं किस से कहां जा कर शिकायत या रसूलल्लाह

मैं बचना चाहता हूं हाए ! फिर भी बच नहीं पाता
गुनाहों की पड़ी है ऐसी आ़दत या रसूलल्लाह

कमर आ'माले बद ने हाए ! मेरी तोड़ कर रख दी
तबाही से बचा लो जाने रह़मत या रसूलल्लाह

मेरे मुंह की सियाही से अंधेरी रात शरमाए
मेरा चेहरा हो ताबां नूरे इ़ज़्ज़त या रसूलल्लाह

ब वक़्ते नज़्अ़ आक़ा हो न जाऊं मैं कहीं बरबाद
मेरा ईमान रख लेना सलामत या रसूलल्लाह

तेरे रब की क़सम मैं लाइक़े नारे जहन्नम हूं
बचा सकती है बस तेरी शफ़ाअ़त या रसूलल्लाह

यहां जैसे हमारी ऐ़ब पोशी आप करते हैं
वहां भी आप रख लीजेगा इ़ज़्ज़त या रसूलल्लाह

फ़सादे नफ़्से ज़ालिम से बचा लो अज़ पए शैख़ैन
करो शैत़ान से मेरी ह़िफ़ाज़त या रसूलल्लाह

सही जाती नहीं हैं सख़्तियां सक्रात की सरकार !
सरे बालीं अब आओ जाने रह़मत या रसूलल्लाह

मेरा येह ख़्वाब हो जाए शहा शरमिन्दए ता'बीर
मदीने में पियूं जामे शहादत या रसूलल्लाह

मेरे दिल से हवस दुन्या की दौलत की निकल जाए
अ़त़ा कर दो मुझे बस अपनी उल्फ़त या रसूलल्लाह

मेरे आंसू न हों बरबाद दुन्या की मह़ब्बत में
रुलाए बस मुझे तेरी मह़ब्बत या रसूलल्लाह

फंसा जाता है दुन्या की मह़ब्बत में दिले अ़त्त़ार
करो अ़त्त़ार से येह दूर आफ़त या रसूलल्लाह

अ़ता कर दो मदीने की इजाज़त या रसूलल्लाह

(म-दनी मुन्नों और त़-लबा के लिये कलाम)

अ़ता कर दो मदीने की इजाज़त या रसूलल्लाह
करूं मैं सब्ज़ गुम्बद की ज़ियारत या रसूलल्लाह

कुछ ऐसा हो करम माहे रिसालत या रसूलल्लाह
करूं अल्लाह की दिल से इ़बादत या रसूलल्लाह

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इ़नायत या रसूलल्लाह

तुम्हारा फ़ज़्ल है जो मैं गुलामे ग़ौसो ख़्वाजा हूं
न हो कम औलिया की दिल से उल्फ़त या रसूलल्लाह

उसी अह़मद रज़ा का वासित़ा जो मेरे मुर्शिद हैं
अ़ता कर दो मुझे अपनी मह़ब्बत या रसूलल्लाह

मदीना मीठा मीठा है मदीना प्यारा प्यारा है
मदीने से मुझे बेह़द है उल्फ़त या रसूलल्लाह

मैं हूं सुन्नी रहूं सुन्नी मरूं सुन्नी मदीने में
बक़ीए पाक में बन जाए तुरबत या रसूलल्लाह

नमाज़ों में मुझे हरगिज़ न हो सुस्ती कभी आक़ा
पढ़ूं पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त या रसूलल्लाह

बड़े भाई बहिन का मैं कहा माना करूं हर दम
करूं मां बाप की दिन रात ख़िदमत या रसूलल्लाह

बड़े जितने भी हैं घर में अदब करता रहूं सब का
करूं छोटे बहिन भाई पे शफ़्क़त या रसूलल्लाह

मैं सब से "आप" कह कर प्यार से बातें करूं आक़ा
झिड़कने की हो मेरी दूर आ़दत या रसूलल्लाह

अदब उस्तादे दीनी का मुझे आक़ा अ़ता कर दो
दिलो जां से करूं उन की इत़ाअ़त या रसूलल्लाह

करम कर दो कि मेरा ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए
न हो उस्ताद को मुझ से शिकायत या रसूलल्लाह

मैं गाने बाजों और फ़िल्मों डिरामों के गुनह छोड़ूं
पढ़ूं ना'तें करूं अक्सर तिलावत या रसूलल्लाह

हसद, वा'दा ख़िलाफ़ी, झूट, चुग़ली, ग़ीबतो तोहमत
मुझे इन सब गुनाहों से हो नफ़रत या रसूलल्लाह

मेरे अख़्लाक़ अच्छे हों मेरे सब काम अच्छे हों
बना दो मुझ को तुम पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह

ज़रूरत से ज़ियादा मालो दौलत का नहीं ता़लिब
रहे बस आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह

रहें सब शाद घर वाले शहा थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़ता़ हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह

सब अहले ह़श्र मह़शर में उन्हीं को ढूंडते होंगे
पुकारेंगे सभी रोज़े क़ियामत या रसूलल्लाह

बहुत कमज़ोर हूं क़ाबिल नहीं हरगिज़ अ़ज़ाबों के
ख़ुदारा साथ लेते जाना जन्नत या रसूलल्लाह

मुझे तुम या रसूलल्लाह दे दो जज़्बए तब्लीग़
शहा ! देता फिरूं नेकी की दा'वत या रसूलल्लाह

शहा ! अ़त्तार पर हर आन रह़मत की नज़र रखना
करे दिन रात येह सुन्नत की ख़िदमत या रसूलल्लाह

करूं हर आन मैं तेरी इत़ाअ़त या रसूलल्लाह

करूं हर आन मैं तेरी इत़ाअ़त या रसूलल्लाह
पए मुर्शिद बना दे नेक सीरत या रसूलल्लाह

अंधेरी क़ब्र है और हाए ! मैं बिल्कुल अकेला हूं
अब आ भी जाओ ऐ मेह्रे रिसालत ! या रसूलल्लाह

बक़ीए़ पाक में सो जाऊं मैं आराम से ऐ काश !
मुयस्सर आएगी यूं तेरी क़ुरबत या रसूलल्लाह

अ़ज़ाबे क़ब्रो मह़शर से बचा लो नारे दोज़ख़ से
ख़ुदारा साथ ले के जाओ जन्नत या रसूलल्लाह

जो गुस्सा नफ़्स की ख़ात़िर मुझे आक़ा कभी आए
मिले सब्रो शिकेबाई की दौलत या रसूलल्लाह

मुझे रन्जो अलम ने हर त़रफ़ से घेर रख्खा है
दुखी दिल को करम से दे दो राह़त या रसूलल्लाह

अ़त़ा कर दो मुझे इस्लाम की तब्लीग़ का जज़्बा
मैं बस देता फिरूं नेकी की दा'वत या रसूलल्लाह

यक़ीनन आप का इन्आ़म है येह मिल गए मुझ को
शहन्शाहे बरेली आ'ला ह़ज़रत या रसूलल्लाह

मुझे तुम मस्लके अह़मद रज़ा पर इस्तिक़ामत दो
बनूं ख़िदमत गुज़ारे अहले सुन्नत या रसूलल्लाह
तुम्हारा ही तो येह लुत़्फ़ो करम है रह़मते आ़लम !
ज़ियाउद्दीन म-दनी से है निस्बत या रसूलल्लाह
मदीने की जुदाई में जो बेचारे तड़पते हैं
उन्हें दे दो मदीने की इजाज़त या रसूलल्लाह
मुसल्मां बाज़ आ जाएं शहा ! फ़ेशन परस्ती से
करम कर दो बनें पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह
मेरे वाबस्तगां की और मेरे सारे क़बीले की
तुम्हीं ! इब्लीस से करना ह़िफ़ाज़त या रसूलल्लाह
ऊ़मर का वासित़ा आ'दाए दीं बरबाद हो जाएं
मिले हर एक ह़ासिद को हिदायत या रसूलल्लाह
शहा ! इस इज्तिमाए़ पाक में जितने मुसल्मां हैं
हो सब की मग़्फ़िरत हो सब पे रह़मत या रसूलल्लाह
तेरा अ़त्त़ार आना चाहता है तेरे रौज़े पर
अ़त़ा हो ह़ाज़िरी की फिर सआ़दत या रसूलल्लाह

बहुत रन्जीदा व ग़मगीन है दिल या रसूलल्लाह

बहुत रन्जीदा व ग़मगीन है दिल या रसूलल्लाह
करम कर दो कली दिल की उठे खिल या रसूलल्लाह

बलाओं ने मुझे हर सम्त से कुछ ऐसा घेरा है
मेरे बढ़ते ही जाते हैं मसाइल या रसूलल्लाह

पए इमदाद अपने शेर ह़म्ज़ा को शहा भेजो
मेरे पीछे पड़ा है हाए ! क़ातिल या रसूलल्लाह

दिले मग़मूम का सब ह़ाल आक़ा तुम पे ज़ाहिर है
शहा ! हूं मर्ह़मे तस्कीं का साइल या रसूलल्लाह

ग़मो आलाम का मारा हूं आक़ा बे सहारा हूं
मेरी आसान हो हर एक मुश्किल या रसूलल्लाह

तुम्हें देता हूं मौला वासित़ा मैं चार यारों का
मेरे हो जाएं त़ै मुश्किल मराह़िल या रसूलल्लाह

जो तू चाहे तो मेरे ग़म की बेड़ी गिर पड़े कट कर
नहीं तेरे लिये येह कोई मुश्किल या रसूलल्लाह

मुसल्मां आह ! ग़ाफ़िल हो गए नेकी की दा'वत से
बढ़ा जाता है हाए ! ज़ोरे बातिल या रसूलल्लाह

शहा मंडला रही है मौत सर पर फिर भी मेरा नफ़्स
गुनाहों की त़रफ़ हर दम है माइल या रसूलल्लाह

बढ़ा जाता है हर दम आह ! ग़-लबा नफ़्सो शैत़ां का
येह हर नेकी में हो जाते हैं ह़ाइल या रसूलल्लाह

गुनाहों के सभी अमराज़ आक़ा दूर फ़रमा दो
संवर जाएं मेरे सब बद ख़साइल या रसूलल्लाह

न लन्दन की न पेरिस की न अमरीका की है ख़्वाहिश
मदीना ही हमारी तो है मन्ज़िल या रसूलल्लाह

शफ़ाअ़त ह़श्र में फ़रमाओगे जब ख़ुश नसीबों की
मुझे कर लेना आक़ा उन में शामिल या रसूलल्लाह

करम कर दो बजुज़ इस्यां नहीं है कुछ भी नामे में
इबादत है न पल्ले हैं नवाफ़िल या रसूलल्लाह

हमारे ज़ख़्म-हाए ग़म रसूले पाक भर जाएं
जिगर हो तेरे ग़म में काश ! घाइल या रसूलल्लाह

कुछ ऐसी आग उल्फ़त की लगा दो मेरे सीने में
मैं तड़पूं ख़ूब तड़पूं मिस्ले बिस्मिल या रसूलल्लाह

तेरे अख़्लाक़ पर क़ुरबां तेरे औसाफ़ पर वारी
मुसल्मां क्या अ़दू भी तेरा क़ाइल या रसूलल्लाह

शहा ! जब ख़ुल्द में आप आगे आगे जाएं उस दम काश
मैं भी हो जाऊं पीछे पीछे दाख़िल या रसूलल्लाह

अभी बन जाए बिगड़ी तेरे इक अदना इशारे से
तेरे अ़त्तार के ह़ल हों मसाइल या रसूलल्लाह

ग़मे फ़ुरक़त रुलाए काश हर दम या रसूलल्लाह

ग़मे फ़ुरक़त रुलाए काश हर दम या रसूलल्लाह
रहूं हर वक़्त मैं बा दीदए नम या रसूलल्लाह

जिगर भी सोख़्ता जां सोख़्ता, दिल चाक सीना चाक
मिले ग़म और ग़म बस आप का ग़म या रसूलल्लाह

नहीं ताजे शही की आरज़ू बस एक अरमां है
निकल जाए तुम्हारे रू बरू दम या रसूलल्लाह

मेरे आक़ा बहाए अश्क जो हिज्रे मदीना में
अ़ता कर दो मुझे वोह चश्मे पुरनम या रसूलल्लाह

हमारे दिल की हर धड़कन से त़यबा की सदा निकले
रहे ज़िक्रे मदीना लब पे हर दम या रसूलल्लाह

शहा ! चश्मे करम हो तिश्नगाने दीद[1] पर अब तो
तुम्हारी दीद का शरबत पियें हम या रसूलल्लाह

---

1 : दीदार के प्यासे

गुनाहों का अंधेरा छा गया है हम कमीनों पर
ख़ुदारा हो करम नूरे मुजस्सम या रसूलल्लाह

जहां जाऊं जिधर जाऊं मदीने की फ़ज़ा पाऊं
मिले लुत्फ़े हुज़ूरी जाने आ़लम या रसूलल्लाह

त़वाफ़े ख़ानए का'बा का तुम मुझ को शरफ़ दे दो
पियूं मक्के में आ कर आबे ज़मज़म या रसूलल्लाह

मदीने जब मैं पहुंचूं तो कलेजा मेरा फट जाए
वहां रो रो के अपना तोड़ दूं दम या रसूलल्लाह

बक़ीए़ पाक में मुझ को जगह सरकार मिल जाए
तुफ़ैले पीरो मुर्शिद ग़ौसे आ'ज़म या रसूलल्लाह

हुसैन इब्ने अ़ली के वासित़े कर दो करम जिन का
कि है यौमे शहादत दस[10] मुह़र्रम या रसूलल्लाह

वोही उम्मत ख़त़ाओं में पड़ी है, रात में जिन के
लिये रोया किये मानिन्दे शबनम या रसूलल्लाह

शहा ! अ़त़्त़ार का दिल टूट जाए ! काश दुन्या से
रहे गुम आप की उल्फ़त में हर दम या रसूलल्लाह

घटाएं ग़म की छाई दिल परेशां या रसूलल्लाह

घटाएं ग़म की छाई दिल परेशां या रसूलल्लाह
तुम्हीं हो मुझ दुखी के दुख का दरमां या रसूलल्लाह

निगाहे लुत्फ़ो रह़मत के हैं ख़्वाहां या रसूलल्लाह
हमारी मुश्किलें हो जाएं आसां या रसूलल्लाह

बजुज़ तू नेस्त मूनिस नेस्त हमदम रह़मते आ़लम
नज़र कुन जानिबे मा बद नसीबां या रसूलल्लाह

सफ़ीने के परख़्चे उड़ चुके हैं ज़ोरे तूफ़ां से
संभालो ! मैं भी डूबा ऐ मेरी जां या रसूलल्लाह

नसीमे त़यबा से कह दो दिले मुज़्त़र को झोंका दे
ग़मों की शाम हो सुब्ह़े बहारां या रसूलल्लाह

मनाज़िर बे वफ़ा दुन्या के हों सब दूर नज़रों से
तसव्वुर में रहें त़यबा की गलियां या रसूलल्लाह

न मुझ को आज़मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

तेरे दीदार का त़ालिब लगाए आस बैठा हूं
ख़ुदारा अब दिखा दे रूए ताबां या रसूलल्लाह

मेरा सीना मदीना हो मदीना मेरा सीना हो
रहे सीने में तेरा दर्द पिन्हां[1] या रसूलल्लाह

सुनह्‌री जालियां हों आप हों और मुझ सा आ़सी हो
वहीं येह जां जुदा हो जाने जानां या रसूलल्लाह

मुझे हरियाले गुम्बद के तले क़दमों में मौत आए
सलामत ले के जाऊं दीनो ईमां या रसूलल्लाह

नहीं हुस्ने अ़मल कोई मेरे आ'माल नामे में
तेरी रह़मत मेरी बख़्शिश का सामां या रसूलल्लाह

पड़ोसी ख़ुल्द में बदकार को अपना बना लीजे
जहां हैं इतने एह़सां और एह़सां या रसूलल्लाह

मदीने में शहा अ़त़्त़ार को दो गज़ ज़मीं दे दे
वहीं हो दफ़्न येह तेरा सना ख़्वां या रसूलल्लाह

---

1 : छुपा हुवा

मेरे मुश्ताक़ को कोई दवा दो या रसूलल्लाह

(दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْبَارِی की सख़्त अ़लालत के अय्याम में बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में येह इस्तिग़ासा पेश किया गया)

मेरे मुश्ताक़ को कोई दवा दो या रसूलल्लाह
दवा दे कर शिफ़ाए कामिला दो या रसूलल्लाह

तृबीबों ने मरीज़े ला दवा कह कह के टाला है
बना, नाकाम इन का इन्दिया[1] दो या रसूलल्लाह

मेरा मुश्ताक़ मौला कब तलक तड़पेगा बेचारा
दुआ़ भी दो दवा भी दो शिफ़ा दो या रसूलल्लाह

मेरे मुश्ताक़ के उजड़े चमन में फिर बहार आए
कली पज़्मुर्दा दिल की तुम खिला दो या रसूलल्लाह

मेरे मुश्ताक़े रन्जीदा पे हो चश्मे करम आक़ा
बिचारे ग़म के मारे को हंसा दो या रसूलल्लाह

1 : राय

करम से अब सरे बालीं शहा तशरीफ़ ले आओ
इसे दीदार का शरबत पिला दो या रसूलल्लाह

शिफ़ा पा कर येह ना'तें पढ़ के फिर तड़पाने लग जाए
लुआ़ब अपना इसे आ कर चटा दो या रसूलल्लाह

शहा मुश्ताक़ कब तक दर बदर की ठोकरें खाए
कहां जाए बिचारा तुम बता दो या रसूलल्लाह

करम कर दो तरस खाओ दुखी दिल की सदा सुन लो
बला मुश्ताक़ से हर इक हटा दो या रसूलल्लाह

सुनो या मत सुनो येह रट लगाए जाएंगे हम तो
शिफ़ा दो या रसूलल्लाह शिफ़ा दो या रसूलल्लाह

फ़क़त् अमराज़े जिस्मानी की ही करता नहीं फ़रियाद
गुनाहों के मरज़ से भी शिफ़ा दो या रसूलल्लाह

येह फिर नेकी की दा'वत के लिये दौड़े जहां भर में
मेरे मुश्ताक़ को ऐसा बना दो या रसूलल्लाह

शहा मुश्ताक़ को ह़ज की सआ़दत फिर अ़त़ा कर दो
बुला कर सब्ज़ गुम्बद भी दिखा दो या रसूलल्लाह

रिज़ा पर रब की राज़ी हैं तुम्हारे हम भिकारी हैं
हमारी आख़िरत बेहतर बना दो या रसूलल्लाह

गुनाहों से मैं तौबा कर रहा हूं रहना तुम शाहिद
मुझे अपने खुदा से बख़्शवा दो या रसूलल्लाह

मुझे सकरात में कल्मा पढ़ा कर मीठी मीठी नींद
करम से अपने क़दमों में सुला दो या रसूलल्लाह

तुम्हारी याद में हर दम तड़पता ही रहूं आक़ा !
मेरे सीने में इश्क़ ऐसा रचा दो या रसूलल्लाह

मुझे इज़्ने मदीना दो तुम्हें सदक़ा नवासों का
दिखा दो गुम्बदे ख़ज़रा दिखा दो या रसूलल्लाह

मेरी तारीक रातें जगमगा दो अज़ पए शैख़ैन
मुझे तुम जल्वए ज़ैबा दिखा दो या रसूलल्लाह

शहा अ़त्तार का प्यारा है येह मुश्ताक़ अ़त्तारी
येही मुज़्दा इसे तुम भी सुना दो या रसूलल्लाह

अंधेरी क़ब्र में अ़त्तार पर अब ख़ौफ़ त़ारी है
पए कुत़्बे मदीना जगमगा दो या रसूलल्लाह

करम हो जान को है सख़्त ख़त़रा या रसूलल्लाह

करम हो जान को है सख़्त ख़त़रा या रसूलल्लाह
न पिस जाए कहीं नाचीज़ ज़र्रा या रसूलल्लाह

बुलाऊं किस त़रह़ मैं अपनी कुटिया में तुम्हें सरवर
कि इस क़ाबिल नहीं है मेरा हुजरा या रसूलल्लाह

अगर चश्मे करम हो तो तलातुम खे़ज़ मौजों से
अभी हो पार मेरा डूबा बजरा या रसूलल्लाह

मैं इस दुन्याए फ़ानी में भी क़ब्रो ह़श्रो जन्नत में
हर इक जा पर लगाऊंगा येह ना'रा या रसूलल्लाह

यक़ीनन जिस के आगे चौदहवीं का चांद शरमाए
तुम्हारा है वोह चेहरा निखरा निखरा या रसूलल्लाह

करम से तुम बुलाते हो करम ही से तुम आते हो
तुम्हारे ही करम से बख़्त संवरा या रसूलल्लाह

मैं बन जाऊंगा दीवाना मैं हो जाऊंगा मस्ताना
अ़ता हो इश्क़ का गर एक ज़र्रा या रसूलल्लाह

तुम्हारी याद में रोया करूं तड़पा करूं कर दो
इ़नायत अपने ग़म का ज़ख़्म गहरा या रसूलल्लाह

रुलाए तेरा ग़म, दुन्या के ग़म में मेरे आंसू का
न हो बरबाद आक़ा कोई क़त्‌रा या रसूलल्लाह

बुला लो गुम्बदे ख़ज़्‌रा की ठन्डी ठन्डी छाउं में
मदीने का दिखा दो मुझ को सह्‌रा या रसूलल्लाह

सआ़दत करबला की ह़ाज़िरी की भी इ़नायत हो
दिखा दीजे मुझे बग़्‌दादो बसरा या रसूलल्लाह

निकलने वाली है अब रूहे़ मुज़्त़र जिस्म से जानां
करम ! ईमां को है शैत़ां से ख़त़्‌रा या रसूलल्लाह

हुई जाती है हाए उ़म्र ज़ाएअ़ जानता हूं मैं
नहीं आएगा हरगिज़ वक़्त गुज़रा या रसूलल्लाह

करम ! अ़त्त़ारे बद अत़्‌वार के गुलज़ार पर आक़ा
लगाया है ख़िज़ां ने सख़्त पहरा या रसूलल्लाह

हुवा जाता है दुश्मन सब ज़माना या रसूलल्लाह

हुवा जाता है दुश्मन सब ज़माना या रसूलल्लाह
सुनाऊं अब किसे ग़म का फ़साना या रसूलल्लाह

मुझे चारों त़रफ़ से दुश्मनों ने घेर रख्खा है
बचाना या रसूलल्लाह बचाना या रसूलल्लाह

जो अपने थे वोही बेगाने हो कर अब सताते हैं
करम लिल्लाह ! या शाहे ज़माना ! या रसूलल्लाह

भंवर में फंस चुकी है नाउ आक़ा हाए क्या होगा !
शहा ! जल्दी से पार आ कर लगाना या रसूलल्लाह

ग़मो आलाम ने हर सम्त से आक़ा जकड़ डाला
पए ग़ौसो रज़ा आ कर छुड़ाना या रसूलल्लाह

शहा ! गुलज़ारे सुन्नत पर ख़ज़ां ने कर दिया ह़म्ला
बहारें सुन्नतों की फिर दिखाना या रसूलल्लाह
ग़मे दुन्या में क्यूं रोएं हमें कर दो नसीब आक़ा
तुम्हारे ग़म में ही आंसू बहाना या रसूलल्लाह
डराया बल्कि मारा भी मुझे या मुस्त़फ़ा जिस ने
उसे भी अपने सीने से लगाना या रसूलल्लाह
नहीं अ़त्तार क़ाबिल इम्तिह़ां के सरवरे आ़लम
बहर सूरत तुम्हीं इस को निभाना या रसूलल्लाह

ह़सद की ता'रीफ़

किसी की ने'मत छिन जाने की आरज़ू करना । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 428) म-सलन किसी शख़्स की शोहरत या इ़ज़्ज़त है अब येह आरज़ू करना कि उस की इ़ज़्ज़त या शोहरत ख़त्म हो जाए । अलबत्ता दूसरे की ने'मत का ज़वाल (या'नी ज़ाएअ़ हो जाना) न चाहना बल्कि वैसी ही ने'मत की अपने लिये तमन्ना करना येह **ग़िब्त़ा** (या'नी रश्क) कहलाता है और येह शरअ़न जाइज़ है ।

(طریقۂ محمدیہ ج۱ص۶۱۰)

अचानक दुश्मनों ने की चढ़ाई या रसूलल्लाह

(तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" की बढ़ती हुई शानो शौकत से बोखला कर बा'ज़ दुश्मनों ने 25 र-जबुल मुरज्जब 1416 सि.हि. शबे दो शम्बा तक़रीबन 12 बजे मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में फ़क़ीरे अहले सुन्नत की जान लेने की नाकाम कोशिश की जिस के नतीजे में दो[2] जवां साल मुबल्लिग़ीन अलहाज उहुद रज़ा अ़त्तारी क़ादिरी र-ज़वी और मुहम्मद सज्जाद अ़त्तारी क़ादिरी र-ज़वी शहीद हो गए, इस पर सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में इस्तिग़ासा पेश किया)

अचानक दुश्मनों ने की चढ़ाई या रसूलल्लाह
हुए दो[2] जां बहक़ इस्लामी भाई या रसूलल्लाह

मेरा दुश्मन तो मुझ को ख़त्म करने आ ही पहुंचा था
मैं क़ुरबां तुम ने मेरी जां बचाई या रसूलल्लाह

शहीदे दा'वते इस्लामी सज्जादो उहुद आक़ा
रहें जन्नत में यक्जा दोनों भाई या रसूलल्लाह

अ़दू झक मारता है ख़ाक उड़ाता है तेरे क़ुरबां
मुझे अब तक न कोई आंच आई या रसूलल्लाह

नहीं सरकार ! ज़ाती दुश्मनी मेरी किसी से भी
मेरी है नफ़्सो शैतां से लड़ाई या रसूलल्लाह

शहा ! दुश्मन हुवा हाए ! हमारे ख़ून का प्यासा
दुहाई या रसूलल्लाह ! दुहाई या रसूलल्लाह

हि़फ़ाज़त दुश्मनों से आप ही फ़रमाइये आक़ा
कि मुझ कमज़ोर पर की है चढ़ाई या रसूलल्लाह

मुक़ाबिल दुश्मने इस्लाम के ऐसा बना गोया
कोई दीवार हो सीसा पिलाई या रसूलल्लाह

येही है जुर्म मेरा सुन्नतों का अदना ख़ादिम हूं
है मैं ने सुन्नतों से लौ लगाई या रसूलल्लाह

अगर्चे लाख दुश्मन धम्कियां दे जान लेने की
किसी से क्यूं डरे तेरा फ़िदाई या रसूलल्लाह

अगर्चे जान जाए ख़िदमते सुन्नत न छोड़ूंगा
शहा ! करते रहें मुश्किल कुशाई या रसूलल्लाह

किसी सूरत भटक सकता नहीं मैं राहे सुन्नत से
मुझे ह़ासिल है तेरी रहनुमाई या रसूलल्लाह

हिदायत दुश्मनों को या नबी ! ऐसी अ़त़ा कर दो
येह बन जाएं मेरे इस्लामी भाई या रसूलल्लाह

तमन्ना है मेरे दुश्मन करें तौबा अ़त़ा कर दो
उन्हें दोनों[2] जहां की तुम भलाई या रसूलल्लाह

बचा लो ! नारे दोज़ख़ से बिचारे ह़ासिदों को भी
मैं क्यूं चाहूं किसी की भी बुराई या रसूलल्लाह

हुक़ूक़ अपने किये हैं दर गुज़र[1] दुश्मन को भी सारे
अगर्चे मुझ पे हो गोली चलाई या रसूलल्लाह

बहर सूरत मुझे मरना पड़ेगा पर सआ़दत है
शहादत राहे सुन्नत में जो पाई या रसूलल्लाह

अंधेरी क़ब्र से शाहे मदीना ख़ौफ़ आता है
नज़र मैं ने है रह़मत पर जमाई या रसूलल्लाह

तमन्ना है तेरे अ़त्त़ार की यूं धूम मच जाए
मदीने में शहादत इस ने पाई या रसूलल्लाह

مدینہ

1 : बन्दे का अपने हुक़ूक़ पेशगी मुआ़फ़ कर देना कारे सवाब है। ताहम ह़क़ त-लफ़ी करने वाला गुनहगार है।

येह अ़र्ज़ गुनहगार की है शाहे ज़माना

(29 मुह़र्रमुल ह़राम 1433 हि. ब मुत़ाबिक़ 25-12-2011)

येह अ़र्ज़ गुनहगार की है शाहे ज़माना
जब आख़िरी वक़्त आए मुझे भूल न जाना

सक्रात की जब सख़्तियां सरकार हों त़ारी
लिल्लाह ! मुझे अपने नज़ारों में गुमाना

डर लगता है ईमां कहीं हो जाए न बरबाद
सरकार बुरे ख़ातिमे से मुझ को बचाना

जब रूह़ मेरे तन से निकलने की घड़ी हो
शैत़ाने लई़ से मेरा ईमान बचाना

जब दम हो लबों पर ऐ शहन्शाहे मदीना
तुम जल्वा दिखाना मुझे कल्मा भी पढ़ाना

आक़ा मेरा जिस वक़्त कि दम टूट रहा हो
उस वक़्त मुझे चेहरए पुरनूर दिखाना

सरकार ! मुझे नज़्अ़ में मत छोड़ना तन्हा
तुम आ के मुझे सूरए यासीन सुनाना

जब गोरे ग़रीबां को चले मेरा जनाज़ा
रह़मत की रिदा उस पे ख़ुदारा तुम उढ़ाना

जब क़ब्र में अह़बाब चलें मुझ को लिटा कर
ऐ प्यारे नबी गोर की वह्शत से बचाना

तै ख़ैर से तदफ़ीन के हों सारे मराह़िल
हो क़ब्र का भी लुत़्फ़ से आसान दबाना

जिस वक़्त नकीरैन करें आ के सुवालात
आक़ा मुझे तुम आ के जवाबात सिखाना

सुन रख्खा है होता है बड़ा सख़्त अंधेरा
तुरबत में मेरी नूर का फ़ानूस जलाना

जब क़ब्र की तन्हाई में घबराए मेरा दिल
देने को दिलासा शहे अबरार तू आना

जब रोजे़ कि़यामत रहे इक मील पे सूरज
कौसर का छलक्ता मुझे इक जाम पिलाना

हो अ़र्सए मह़शर में मेरा चाक न पर्दा
लिल्लाह मुझे दामने रह़मत में छुपाना

मह़शर में ह़िसाब आह ! मैं दे ही न सकूंगा
रह़मत न हुई होगा जहन्नम में ठिकाना

फ़रमाएंगे जिस वक़्त गुलामों की शफ़ाअ़त
मैं भी हूं गुलाम आप का मुझ को न भुलाना

फ़रमा के शफ़ाअ़त मेरी ऐ शाफ़ेए़ मह़शर !
दोज़ख़ से बचा कर मुझे जन्नत में बसाना

या शाहे मदीना ! महे र-मज़ान का सदक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

अल्लाह की रह़मत से येह मायूस नहीं है
हो जाएगा अ़त्ता़र की बख़्शिश का बहाना

मदीना मदीना हमारा मदीना

मदीना मदीना हमारा मदीना — हमें जानो दिल से है प्यारा मदीना[1]
सुहाना सुहाना दिलआरा मदीना — दिवानों की आंखों का तारा मदीना
येह हर आशिक़े मुस्तफ़ा कह रहा है — हमें तो है जन्नत से प्यारा मदीना
येह रंगीं फ़ज़ाएं येह महकी हवाएं — मुअत्तर मुअम्बर है सारा मदीना
मदीने के जल्वों के क़ुरबान जाऊं — ख़ुदा ने है कैसा संवारा मदीना
पहाड़ों में भी हुस्न कांटे भी दिलकश — बहारों ने कैसा निखारा मदीना
वहां प्यारा का'बा यहां सब्ज़ गुम्बद — वोह मक्का भी मीठा तो प्यारा मदीना
बुला लीजिये अपने क़दमों में आक़ा — दिखा दीजिये अब तो प्यारा मदीना
फिरूं गिर्दे का'बा पियूं आबे ज़मज़म — मैं फिर आ के देखूं तुम्हारा मदीना
टली मुश्किलें हो गई आफ़तें दूर — गया जब कोई ग़म का मारा मदीना
है शाहो गदा मुफ़्लिसो अग़्निया का — बिला रैब[2] सब का गुज़ारा मदीना
येह दीवाने आक़ा ! मदीने को आएं — बुला लो इन्हें अब ख़ुदारा मदीना
ख़ुदा गर क़ियामत में फ़रमाए मांगो — पुकारेंगे दीवाने प्यारा मदीना
मदीने में आक़ा हमें मौत आए — बने काश ! मदफ़न हमारा मदीना
उसे सैरे गुलशन से क्या हो सरोकार — किया जिस ने तेरा नज़ारा मदीना
ज़िया पीरो मुर्शिद के सदक़े में आक़ा — येह अत्तार आए दोबारा मदीना

---

1 : मत्लए अव्वल (पहला शे'र) किसी ना मा'लूम शाइर का है इसी बहर (वज़्न) पर अश्आर मौज़ूं किये हैं। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

2 : बेशक

है शह्द से भी मीठा सरकार का मदीना

है शह्द से भी मीठा सरकार का मदीना
क्या ख़ूब महका महका सरकार का मदीना

हम को पसन्द आया सरकार का मदीना
क्यूं हो न अपना ना'रा "सरकार का मदीना"

हर शह्र से है अच्छा सरकार का मदीना
जन्नत से भी सुहाना सरकार का मदीना

बेकस का है सहारा सरकार का मदीना
बे घर का है ठिकाना सरकार का मदीना

कोहसार दिलकुशा हैं सह्‌रा भी दिलरुबा हैं
हुस्नो जमाल वाला सरकार का मदीना

दोनों[2] जहां से प्यारा, कौनो मकां से प्यारा
हर आंख का है तारा सरकार का मदीना

जन्नत का हुस्न सारा इस में सिमट कर आया
है हुस्न ही सरापा सरकार का मदीना

हर सम्त रह़मतों की बरसात हो रही है
है रह़मतों का दरिया सरकार का मदीना

फ़ुरक़त की आग में जो दिल को जला रहे हैं
उन को दिखा ख़ुदाया सरकार का मदीना

ऐ ज़ाइरे मदीना ! दिल को संभाल लेना !
देख आ गया मदीना सरकार का मदीना

“पेरिस” पे मरने वाले ! “पेरिस” को भूल जाता
तू भी जो देख लेता सरकार का मदीना

है लाख लाख मौला हर आन शुक्र तेरा
इक बार फिर दिखाया सरकार का मदीना

फूलों को चूमता हूं, कांटों को चूमता हूं
लगता है मुझ को प्यारा सरकार का मदीना

जी चाहता है मेरा हर शै यहां की चूमूं
कैसा है मीठा मीठा सरकार का मदीना

मेरी नज़र को भाए दुन्या का हुस्न कैसे ?
आंखों में है समाया सरकार का मदीना

अल्लाह ! मुस्त़फ़ा के क़दमों में मौत दे दे
मदफ़न बने हमारा सरकार का मदीना

अ़त्तार की दुआ़ है तक़्दीर में ख़ुदाया
लिख दे फ़क़त़ मदीना सरकार का मदीना

तेरा शुक्रिया ताजदारे मदीना

(येह कलाम 15 **र-मज़ानुल मुबारक** 1415 सि.हि. को **मदीनतुल मुनव्वरह** में तहरीर करने की सआदत हासिल हुई)

तेरा शुक्रिया ताजदारे मदीना मुझे फिर दिखाया दियारे मदीना

हसीं पत्ता पत्ता हसीं डाली डाली हसीं सब का सब लालाज़ारे मदीना

खुदा ! दिल से दुन्या की उल्फ़त मिटा दे तू दे उल्फ़ते ताजदारे मदीना

भुला दे चमन के नज़ारों को बेशक है ऐसा हसीं रेगज़ारे मदीना

मैं रिज़वाने जन्नत को तोहफ़े में दूंगा अता कीजिये चन्द ख़ारे मदीना

मदीने में घर सब के ग़म ख़्वार का है जभी तो सभी हैं निसारे मदीना

तुझे वासिता या खुदा मुस्तफ़ा का बना दे मुझे दिल फ़िगारे मदीना

अगर हो यक़ीं ज़ख़्म भर जाएंगे सब लगा लो ज़रा सा गुबारे मदीना

तड़पते हैं जो हिज्रो फ़ुरक़त में आक़ा दिखा दो उन्हें भी बहारे मदीना

इधर से उधर क्यूं भटकता फिरूं मैं मुक़द्दर से हूं रेज़ा ख़्वारे मदीना

मदीने में मरने का मुझ को शरफ़ दो करम या नबी ताजदारे मदीना

दो अत्तार को अश्कबार आंख आक़ा
पए ग़ौस या शहरयारे मदीना

अल्लाह अ़त़ा हो मुझे दीदारे मदीना

(12 शव्वालुल मुकर्रम 1431 सि.हि. को येह कलाम क़लम बन्द किया गया)

अल्लाह अ़त़ा हो मुझे दीदारे मदीना
हो जाऊं मैं फिर ह़ाज़िरे दरबारे मदीना

आंखें मेरी मह़रूम हैं मुद्दत से इलाही
अ़र्सा हुवा देखा नहीं गुलज़ारे मदीना

फिर देख लूं सह़राए मदीना की बहारें
फिर पेशे नज़र काश ! हों कोहसारे मदीना

फिर गुम्बदे ख़ज़रा के नज़ारे हों मुयस्सर
अल्लाह दिखा दे मुझे अन्वारे मदीना

ख़ाक आंखों में मह़बूब के कूचे की सजा[1] कर
देने को सलामी चलूं दरबारे मदीना

---

1 : الحمدُلِلّٰہ। बारहा आंखों में ख़ाके मदीना लगा कर सलाम के लिये ह़ाज़िर होने की सआ़दत पाई है, इस के लिये सुरमे की सलाई अक्सर जेब में रहती थी येह सआ़दत फिर पाने की आरज़ू है।

क्या कैफ़ो सुरूर आता था अफ़्सोस वोह मेरे
थे ख़्वाब वोह गोया सभी अस्फ़ारे मदीना[1]

ता'ज़ीम को उठ जाते सभी क़ाफ़िले वाले
जूं ही नज़र आते उन्हें आसारे[2] मदीना

पढ़ पढ़ के सुनाया है इन्हें कल्मए तृय्यिब[3]
ईमां पे हैं शाहिद मेरे अश्जारे मदीना

शादाबिये जन्नत का मैं मुन्किर नहीं लेकिन
है हुस्न में बे मिस्ल चमन ज़ारे मदीना

مـــــــــدینہ

1 : मु-तअ़द्दद बार पै दर पै सफ़रे मदीना नसीब हुवा मगर ता दमे तह़रीर 8 साल से मह़रूमी है। इस शे'र में उसी की त़रफ़ इशारा है। 2 : मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا जाते हुए जब दूर से मदीनए पाक के आसार नज़र आते तो बस के अन्दर खड़े हो जाते और रो रो कर दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करते, उस पुरसोज़ मन्ज़र का शे'र में इशारा किया गया है। 3 : اَلْحَمْدُلِلّٰہ बारहा मदीनए मुनव्वरह के दरख़्तों को कलिमा शरीफ़ सुना कर अपने ईमान पर गवाह करने का शरफ़ हासिल किया है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

अफ़्सोस ! मेरे नफ़्स को फूलों की त़लब है
आ दिल में समा जा मेरे ऐ ख़ारे मदीना

कसरत से दुरूद उन पे पढ़ो रब ने जो चाहा
सीने में उतर आएंगे अन्वारे मदीना

सरकार बुलाते हैं मदीने में करम से
उस को कि जो हो दिल से त़लब गारे मदीना

रिह़लत की घड़ी है मेरे अल्लाह दिखा दे
सिर्फ़ एक झलक जल्वए सरकारे मदीना

अल्लाह मुझे बख़्श, न हो ह़श्र में पुरसिश
कर लुत़्फ़ो करम अज़् पए सरकारे मदीना

या रब दिले अ़त़्त़ार पे छाई है उदासी
कर शाद दिखा कर इसे गुलज़ारे मदीना

इलाही दिखा दे जमाले मदीना

इलाही दिखा दे जमाले मदीना करम से हो पूरा सुवाले मदीना

अ़ता कीजिये ह़ाज़िरी की सआ़दत इनायत हो मुझ को विसाले मदीना

दिखा दे मुझे सब्ज़ गुम्बद के जल्वे दिखा मुझ को दश्तो जिबाले[1] मदीना

पहुंच कर मदीने में हो जाए मौला मेरी जां फ़िदाए जमाले मदीना

मुझे "चल मदीना" का मुज़्दा सुना दो करम या शहे ख़ुश ख़िसाले मदीना

हों प्यारे नबी ! ख़त्म लम्ह़ाते फ़ुरक़त मुयस्सर हो मुझ को विसाले मदीना

ग़मे इश्क़े सरवर ख़ुदाया अ़ता कर मुझे अज़ तुफ़ैले बिलाले मदीना

ख़ुदाए मुह़म्मद हमारे दिलों से न निकले कभी भी ख़याले मदीना

सदा रह़मतों की बरसती झड़ी है मदीने में येह है कमाले मदीना

मुअ़त्तर मुअ़त्तर है सब से मुनव्वर नहीं दो जहां में मिसाले मदीना

सभी पा रहे हैं इसी दर से मैं भी हूं उम्मीद वारे नवाले[2] मदीना

क़दम चूम कर सर पे रख लेना अ़त्तार
नज़र आए गर नौ निहाले[3] मदीना

مدینہ

1 : जिबाल जबल की जम्अ़ है, जबल या'नी पहाड़। 2 : एह़सान, बख़्शिश। 3 : बहुत छोटा बच्चा

मुद्दत से मेरे दिल में है अरमाने मदीना

मुद्दत से मेरे दिल में है अरमाने मदीना
रौज़े पे बुला लीजिये सुल्ताने मदीना

ऐ काश ! पहुंच के दरे जानाने मदीना
हो जाऊं मैं सो100 जान से कुरबाने मदीना

आते हैं मुक़द्दर के सिकन्दर तेरे दर पर
बे इज़्न हो कैसे कोई मेहमाने मदीना

आग ऐसी लगा दीजिये क़ल्ब और जिगर में
रोता रहूं तड़पा करूं ऐ जाने मदीना

गुलज़ार यहां के इसे अच्छे नहीं लगते
आंखों में समाए हैं बयाबाने[1] मदीना

अब सिन्ध के जंगल में मेरा जी नहीं लगता
बस मुझ को बुला लीजे गुलिस्ताने मदीना

दुन्या के नज़ारे हमें इक आंख न भाएं
नज़रों में बसें काश ! बयाबाने मदीना

लन्दन कोई जापान चला माल कमाने
दीवाना चला सूए बयाबाने मदीना

दुन्या का कोई शह्र हो किस त़रह़ मुमासिल[2] ?
जब ख़ुल्दे बरीं भी नहीं हम-शाने मदीना

कर दीजिये दीदार से आंखें मेरी ठन्डी
ऐ जाने जहां सय्यिदो सुल्ताने मदीना

ऐ काश ! मुबल्लिग़ मैं बनूं दीने मुबीं का
सरकार ! करम अज़ पए ह़स्साने मदीना

क़दमों में बुला लीजिये बदकार को आक़ा
और इस को बना लीजिये मेहमाने मदीना

अ़त्तार को दौलत न हुकूमत की त़लब है
दे दीजे बक़ीअ़ इस को तो सुल्ताने मदीना

1 : जंगल 2 : मिस्ल

आह अब वक़्ते रुख़्सत है आया
अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

(मदीनए तृय्यिबा की पहली बार हाज़िरी की सआ़दते उ़ज़्मा 1400 सि.हि. में ह़ासिल हुई येह अल वदाई कलाम रुख़्सत के वक़्त सुनहरी जालियों के सामने ऐन मुवा-जहा शरीफ़ के क़रीब पेश किया गया।)

आह अब वक़्ते रुख़्सत है आया अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
सदमए हिज्र कैसे सहूंगा अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
बे क़रारी बढ़ी जा रही है हिज्र की अब घड़ी आ रही है
दिल हुवा जाता है पारा पारा अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
किस त़रह़ शौक़ से मैं चला था दिल का गुन्चा खु़शी से खिला था
आह ! अब छूटता है मदीना अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
कूए जानां की रंगीं फ़ज़ाओ ! ऐ मुअ़त्त़र मुअ़म्बर हवाओ !
लो सलाम आख़िरी अब हमारा अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
काश ! क़िस्मत मेरा साथ देती मौत भी या-वरी मेरी करती
जान क़दमों पे कुरबान करता अल वदाअ़ आह शाहे मदीना
सोज़े उल्फ़त से जलता रहूं मैं इश्क़ में तेरे घुलता रहूं मैं

चाहे दीवाना समझे ज़माना　　अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

मैं जहां भी रहूं मेरे आक़ा　　हो नज़र में मदीने का जल्वा

इल्तिजा मेरी मक़्बूल फ़रमा　　अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं　　नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं

बस येही है मेरा कुल असासा　　अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

आंख से अब हुवा ख़ून जारी[1]　　रूह़ पर भी हुवा रन्ज त़ारी

जल्द अ़त्त़ार को फिर बुलाना

अल वदाअ़ आह शाहे मदीना

शमातत की ता'रीफ़

दूसरों की तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर खुशी का इज़्हार करने को **शमातत** कहते हैं। (حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ ج۱ص۶۳۱)

1 : "ख़ून के आंसू रोना" मुहा़-वरा है इस के मा'ना हैं "ग़म से रोना।"

हर दम हो मेरा विर्द मदीना ही मदीना

हर दम हो मेरा विर्द मदीना ही मदीना
बन जाए मेरा दिल तेरी उल्फ़त का ख़ज़ीना

वोह लम्हा वोह दिन और वोह आ जाए महीना
फिर काश ! तड़पता हुवा पहुंचू मैं मदीना

तयबा में बुला कर मुझे सुल्ताने मदीना
दीदार की ख़ातिर हो अ़ता आंख भी बीना

सीना हो मदीना तो मदीना बने सीना
और याद तेरी दिल में रहे शाहे मदीना

आ जाए मुझे काश ! शहन्शाहे मदीना
रोने का तड़पने का फड़क्ने का क़रीना

इस्यां के तलातुम[1] में फंसा मेरा सफ़ीना
डूबा मैं संभालो ! मुझे सरकारे मदीना

ऐ नूरे ख़ुदा नूर भरी दिल पे नज़र हो
हो नूर से पुरनूर येह बे नूर नगीना[2]

सरकार ! तमन्ना है यूंही उ़म्र बसर हो
मरना तेरी उल्फ़त में तेरी याद में जीना

ग़मगीन तेरे ग़म में रहूं काश ! हमेशा
रोती रहें आंखें तो सुलगता रहे सीना

साक़ी ! मुझे जाम ऐसा महब्बत का पिला दो
उतरे न नशा इस का कभी शाहे मदीना

तुम ख़ाके मदीना मेरे लाशे पे छिड़क्ना
फिर मलना कफ़न पर जो मिले उन का पसीना

अ़त्तार तलब गार है बस नज़रे करम का
लिल्लाह करम, जाने करम, बहरे मदीना

---

1 : मौजों के थपेड़े 2 : नगीना या'नी क़ीमती पथ्थर यहां इस का मुरादी मा'ना "दिल" है। इन मा'नों पर "बे नूर नगीना" या'नी तारीक दिल।

करूं दम बदम मैं सनाए मदीना

(اَلحمدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह कलाम 7 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** 1416 सि.हि. को **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعۡظِیۡمًا में तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल हुई)

करूं दम बदम मैं सनाए मदीना
लगाता रहे दिल सदाए मदीना

ख़ुदा की क़सम ! प्यारी प्यारी है जन्नत
मगर आ़शिक़ों को रुलाए मदीना

जहां के नज़ारे हों आंखों से ओझल
नज़र में मेरी बस समाए मदीना

खिला दे कली मेरे मुरझाए दिल की
ख़ुदारा तू आ कर हवाए मदीना

जिसे चाहिये दोनों[2] आ़लम की दौलत
वोह कश्कोल ले कर के आए मदीना

इ़नायत से अल्लाह की रह़मतों का
शबो रोज़ दरिया बहाए मदीना

पए पीरो मुर्शिद तू फ़रमा दे रोशन
मेरा क़ल्बे तीरह ज़ियाए मदीना

शफ़ाअ़त की ख़ैरात का जो है त़ालिब
बराए ज़ियारत वोह आए मदीना

न दे या इलाही ! मुझे तख़्ते शाही
बना दे मुझे बस गदाए मदीना

शबो रोज़ जल्वे हैं माहे अ़रब के
न क्यूं रात दिन जगमगाए मदीना

तुझे वासित़ा ग़ौसो अह़मद रज़ा का
अ़त़ा कर इलाही क़ज़ाए मदीना

बक़ीए़ मुबारक में मदफ़न अ़त़ा हो
करम कर ख़ुदाया बराए मदीना

मेरी ख़ाक जिस दम उड़े या इलाही — इसे काश ! उड़ाए हवाए मदीना

पड़ोसी बना मुझ को जन्नत में उन का — ख़ुदाए मुह़म्मद बराए मदीना

लगा फ़ज्र में भाई घर घर पे जा कर — ज़रा दिल लगा कर "सदाए मदीना"[1]

जो दे रोज़ दो "दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत" — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

सफ़र जो करे क़ाफ़िलों में मुसल्सल — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

जो पाबन्द है इज्तिमाआ़त का भी — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

ज़बां पर जो "क़ुफ़्ले मदीना" लगाए — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

जो आंखों पे क़ुफ़्ले मदीना लगाए — मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

जो दीवाने फ़ुरक़त में रोते हैं आक़ा — दिखा दो उन्हें अब फ़ज़ाए मदीना

दे सोज़े जिगर चश्मे तर क़ल्बे मुज़्तर — मुझे या इलाही बराए मदीना

येह अ़त्तार मक्के से ज़िन्दा सलामत
तड़पता हुवा काश आए मदीना

---

1 : फ़ज्र की नमाज़ के लिये जगाना दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में "सदाए मदीना" लगाना कहलाता है।

ख़ुशा झूमता जा रहा है सफ़ीना

ख़ुशा झूमता जा रहा है सफ़ीना पहुंच जाएंगे إِنْ شَاءَ اللّٰه मदीना

अब आया कि अब आया जद्दा का साहिल अब आएगा मक्का चलेंगे मदीना

मैं मक्के में जा कर करूंगा त़वाफ़ और नसीब आबे ज़मज़म मुझे होगा पीना

ख़ुदाया मदीना नज़र आए जूं ही तड़प कर गिरूं दे दे ऐसा क़रीना

न क्यूं मेरी क़िस्मत पे रश्क आए मुझ को कहां वोह मदीना कहां मैं कमीना

रहे विर्दे लब काश ! हर दम इलाही मदीना, मदीना, मदीना, मदीना

नज़र नूर की नूरे रब्बुल उ़ला हो मेरे दिल का चमका दो मैला नगीना

करम कीजे आक़ा दबाएं न मुझ को कभी नफ़्सो शैतां ऐ शाहे मदीना

बचा लीजिये मुझ को फ़ेशन से आक़ा अ़ता कीजिये सुन्नतों का ख़ज़ीना

पिला दो मुझे साक़िया ! जाम ऐसा रहूं मस्तो बेख़ुद मैं शाहे मदीना

तेरे इश्क़ में काश ! रोता रहूं मैं रहे तेरी उल्फ़त से मा'मूर सीना

तू लिख दे इलाही ! मुक़द्दर में मेरे मदीने में मरना मदीने में जीना

येह तस्लीम, उ़म्दा है खुशबूए जन्नत मुझे काश मिल जाए उन का पसीना

मरीज़े महब्बत का दम है लबों पर सिरहाने अब आ जाओ शाहे मदीना

बक़ीए़ मुबारक में दो[2] गज़ ज़मीं दो खुदारा करम ताजदारे मदीना

नहीं रोते उ़श्शाक़ दुन्या की ख़ातिर रुलाती है उन को तो यादे मदीना

निगाहों में हर दम मदीना बसा हो मुझे काश मिल जाए वोह चश्मे बीना

तड़पते हैं रोते हैं दीवाने तेरे जहां में जब आता है ह़ज का महीना

तरसते हैं जो दीदे त़यबा की ख़ातिर दिखा दीजिये ना उन्हें भी मदीना

पिला दो हमें जामे दीदार साक़ी ! करम तिश्ना-कामों पे शाहे मदीना

बि इज़्ने इलाही तेरी सब खुदाई है मैख़ाना तेरा तेरा जामो मीना

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ ! हमारी दुआ है किये जाओ त़ै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

तड़प उठ्ठे आक़ा के दीवाने अ़त्त़ार
मदीने की जानिब चला जब सफ़ीना

फिर मुझे आक़ा मदीने में बुलाया शुक्रिया

फिर मुझे आक़ा मदीने में बुलाया शुक्रिया शुक्रिया फिर गुम्बदे ख़ज़रा दिखाया शुक्रिया

जिस जगह आठों पहर अन्वार की हैं बारिशें ऐसी नूरानी फ़ज़ाओं में बुलाया शुक्रिया

रौज़ए अन्वर के ज़ाइर के शहा तुम हो शफ़ीअ़ मेरी बख़्शिश का बहाना यूं बनाया शुक्रिया

फिर तवाफ़े ख़ानए का'बा का बख़्शा है शरफ़ ख़ूब आक़ा आबे ज़मज़म भी पिलाया शुक्रिया

मुझ से आ़सी को शरफ़ ह़ज का अ़ता फ़रमा दिया किस ज़बां से हो अदा तेरा ख़ुदाया शुक्रिया

या इलाही ! अपने प्यारे की विलादत गाह का मीठे मक्के में मुझे जल्वा दिखाया शुक्रिया

भीक लेने के लिये या रब ह़बीबे पाक का आस्ताना हम ग़रीबों को दिखाया शुक्रिया

फिर मदीने की ह़सीनो ख़ूब सूरत वादियों का ह़सीनो दिलकुशा मन्ज़र दिखाया शुक्रिया

मस्जिदे न-बवी के मेह़राब और मिम्बर का शहा ! दिल नवाज़ो दिलकुशा जल्वा दिखाया शुक्रिया

मुंह लगाता था कहां दुन्या में कोई भी मुझे ऐसे नाकारा निकम्मे को निभाया शुक्रिया

आह ! तुम रोया किये उम्मत के ग़म में या नबी हौसला हम आ़सियों का यूं बढ़ाया शुक्रिया

ख़ुद रहे भूके शिकम पर अपने पथ्थर बांधे और प्यार से तुम ने हमें खाना खिलाया शुक्रिया

मुझ ज़लीलो ख़्वार दुन्यादार की औक़ात क्या ! मैं निसार आक़ा मुझे फिर भी निभाया शुक्रिया

या रसूलल्लाह ! लोगों ने मुझे ठुकरा दिया था मगर तूने मुझे अपना बनाया शुक्रिया

इस क़दर लुत्फ़ो इनायत अपने ना फ़रमान पर अपने ग़म में अपनी उल्फ़त में रुलाया शुक्रिया

सुन्नतों को आ़म करने का मुझे जज़्बा दिया
अहले सुन्नत का मुझे ख़ादिम बनाया शुक्रिया

शुक्रिया क्यूंकर शहा तेरे करम का हो अदा
मुझ से आ़सी को गुलाम अपना बनाया शुक्रिया

मेरी इ़ज़्ज़त अहले सुन्नत के दिलों में डाल दी
और आ'दा पर मेरा सिक्का बिठाया शुक्रिया

दिल से जिस ने भी अग़िस्नी या रसूलल्लाह ! कहा
आफ़तों से आप ने उस को बचाया शुक्रिया

ख़ातिमा बिलख़ैर हो मेरा मदीने में अगर
बाल बाल उठे पुकार अपना, खुदाया शुक्रिया

दफ़्न कर के जब मेरे अह़बाब आक़ा चल दिये
लह़द को जल्वों से आ कर जगमगाया शुक्रिया

प्यास अभी बढ़ने भी पाई थी न मेरी ह़श्र में
जामे कौसर जल्द रह़मत से पिलाया शुक्रिया

ऐब मह़शर में खुला ही चाहते थे मैं निसार
ढक के पर्दा अपने दामन का छुपाया शुक्रिया

सूए दोज़ख़ जब मलाइक मुझ को ले कर चल दिये
मैं तेरे सदक़े मुझे आ कर छुड़ाया शुक्रिया

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
है पड़ोसी खुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

गर्चे शैत़ां हर घड़ी ईमान की है घात में
तुम ने थामा, जब कभी मैं डगमगाया शुक्रिया

दौलते ईमां अ़त़ा की अपने दामन में लिया
कुफ़्र से हम बे नवाओं को बचाया शुक्रिया

दे दिया अ़त्तार को मुर्शिद ज़ियाउद्दीन सा
और सगे ग़ौसो रज़ा इस को बनाया शुक्रिया

अल्लाह अल्लाह तेरा दरबार रसूले अ़-रबी

अल्लाह अल्लाह तेरा दरबार रसूले अ़-रबी तेरा दरबार करम बार रसूले अ़-रबी
बे कसों के हो मददगार रसूले अ़-रबी ग़मज़दों के भी हो ग़म ख़्वार रसूले अ़-रबी
कुल खुदाई[1] के हो मुख़्तार रसूले अ़-रबी तुम रसूलों के भी सरदार रसूले अ़-रबी
इक नज़र या शहे अबरार रसूले अ़-रबी बस तेरा ही रहूं बीमार रसूले अ़-रबी
फिर दिखा दो मुझे इक बार रसूले अ़-रबी तुम मदीने का वोह गुलज़ार रसूले अ़-रबी
सामने हों तेरे मीनार रसूले अ़-रबी गुम्बदे सब्ज़ के अन्वार रसूले अ़-रबी
तेरा सह़रा, तेरा कोहसार रसूले अ़-रबी और हो येह तेरा बदकार रसूले अ़-रबी
तेरी दीवार को चूमूं तेरा दरवाज़ा भी धूल भी फूल भी और ख़ार रसूले अ़-रबी
जूं ही रोता हुवा आऊं मैं तेरे रौज़े पर काश ! उसी आन हो दीदार रसूले अ़-रबी
कोई ख़ाली नहीं लौटा कभी दर से आक़ा है सख़ी आप का दरबार रसूले अ़-रबी
कोई दौलत, कोई सरवत[2], कोई शोहरत चाहे मैं फ़क़त तेरा त़लब गार रसूले अ़-रबी
आ-तशे इ़श्क़ भड़क्ती ही रहे सीने में बस तड़पता रहूं सरकार ! रसूले अ़-रबी
आप के हिज्र[3] का ग़म काश रुलाए मुझ को ख़ून रोता रहूं सरकार ! रसूले अ़-रबी
हो "मदीना ही मदीना" मेरे लब पर ऐ काश हर घड़ी हो येही तक्रार रसूले अ़-रबी
मुझ को दीवाना बना लो शहे वाला अपना मेरे सरवर मेरे सरदार रसूले अ़-रबी

मदीना
1 : दुन्या, जहान 2 : मालदारी 3 : जुदाई

तेरे दरबारे गुहर बार के सब साइल हैं
अग़्निया[1] हों कि हों नादार रसूले अ़-रबी

तेरे दीवाने तड़पते हैं मदीने के लिये
वोह भी देखें तेरा दरबार रसूले अ़-रबी

दूर सुन्नत से मुसल्मान हुए जाते हैं
आह ! फ़ेशन की है यलग़ार[2] रसूले अ़-रबी

सुन्नतों का हो अ़ता दर्द मुसल्मानों को
दूर फ़ेशन की हो भरमार रसूले अ़-रबी

मेरा सीना तेरी सुन्नत का मदीना बन जाए
सुन्नतों का करूं परचार रसूले अ़-रबी

जामे दीदार पिला दो मेरे आक़ा ! अब तो
आंख है कब से त़लब गार रसूले अ़-रबी

मुश्किलें मेरी हों आसान बराए मुर्शिद
मेरे ह़ामी, मेरे ग़म ख़्वार रसूले अ़-रबी

वासित़ा ग़ौसो रज़ा का सरे बालीं[3] आ जा
जां बलब[4] है तेरा बीमार रसूले अ़-रबी

मुस्कुराते हुए उ़श्शाक़ चले दुन्या से
क़ब्र में होगा जो दीदार रसूले अ़-रबी

हुब्बे दुन्या में गरिफ़्तार है नफ़्से ज़ालिम
अल मदद या शहे अबरार ! रसूले अ़-रबी

दिल पे शैत़ान ने आक़ा है जमाया क़ब्ज़ा
हूं गुनाहों में गरिफ़्तार रसूले अ़-रबी

आह ! बढ़ता ही चला जाता है मरज़े इ़स्यां
दो शिफ़ा सय्यिदे अबरार रसूले अ़-रबी

मैं गुनहगार, सियह कारो ख़त़ाकार सही
पर हूं किस का ? तेरा सरकार रसूले अ़-रबी

मेरी हर ख़स्लते बद दूर हो जाने आ़लम !
नेक बन जाऊं मैं सरकार, रसूले अ़-रबी

गर्मिये ह़श्र से बेताब हूं शाहे कौसर
हो नज़र सूए गुनहगार रसूले अ़-रबी

अब तो सरकार ! हो अ़त्त़ार पे नज़रे रह़मत
कह दो अपना सगे दरबार रसूले अ़-रबी

---

1 : ग़नी की जम्अ़, ग़नी या'नी मालदार 2 : ह़म्ला
3 : सिरहाने 4 : मरने के क़रीब

ह़ाजियों के बन रहे हैं क़ाफ़िले फिर या नबी

हा़जियों के बन रहे हैं क़ाफ़िले फिर या नबी
फिर नज़र में फिर गए ह़ज के मनाज़िर या नबी !

कर रहे हैं जाने वाले ह़ज की अब तय्यारियां
रह न जाऊं मैं कहीं कर दो करम फिर या नबी !

आह ! पल्ले ज़र नहीं रख़्ते सफ़र सरवर नहीं
तुम बुला लो तुम बुलाने पर हो क़ादिर या नबी !

किस क़दर था ख़ुश मुझे जब पेश आया था सफ़र
मुझ को अब की बार भी बुलवाइये फिर या नबी !

दिल मेरा ग़मगीन है और जान भी है मुज़्त़रिब
मुर्शिदी का वासित़ा बुलवाइये फिर या नबी !

ग़म के बादल छा रहे हैं आह ! मेरे क़ल्ब पर
हा़ज़िरी की दो इजाज़त मुझ को तुम फिर या नबी !

गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे देखने कब आऊंगा
कब तक अब तड़पाओगे तुम मुझ को आख़िर या नबी !

आप ही अस्बाब आक़ा फिर मुहय्या कीजिये
फिर दिखा दीजे मदीने के मनाज़िर या नबी !

किस त़रह़ तस्कीन दूंगा मैं दिले ग़मगीन को
रह गया गर ह़ाज़िरी से मैं जो क़ासिर या नबी !

मुझ पे क्या गुज़रेगी आक़ा ! इस बरस गर रह गया
मेरा ह़ाले दिल तो है सब तुम पे ज़ाहिर या नबी !

आह ! त़यबा से अगर मैं दूर रह कर मर गया
रूह़ भी रन्जूर होगी किस क़दर फिर या नबी !

मिस्ले साबिक़ इस बरस भी कीजिये नज़रे करम
मैं गुज़श्ता साल आया था बिल आख़िर या नबी !

जो मदीने के लिये रहते हैं आक़ा बे क़रार
वोह भी हो जाएं तेरे रौज़े पे ह़ाज़िर या नबी !

चाक सीना चाक दिल सोज़े जिगर और चश्मे तर
दीजिये मुझ को तुफ़ैले ग़ौसे क़ादिर या नबी !

बिल यक़ीं कुरआन अ-ज़मत पर तुम्हारी है गवाह
शाहिदो क़ासिम हो तुम त़य्यिब हो त़ाहिर या नबी !

तुम को इ़ल्मे ग़ैब मौला ने अ़ता फ़रमा दिया
कर दिया हर जा पे ह़ाज़िर और नाज़िर या नबी !

इस्तिक़ामत दीन पर मुझ को अ़ता फ़रमाइये
या रसूलल्लाह बराए आले यासिर[1] या नबी !

आप सब नबियों में अफ़्ज़ल और मैं बदकार आह !
आ़सियों में हूं यगाना और नादिर या नबी !

आ़सी व बदकार के अपने ख़ुदाए पाक से
बख़्शवा दो सब सग़ाइर और कबाइर या नबी !

बाल भी बीका न मेरा तो कोई कर पाएगा
क्यूं कि मेरे तुम हो ह़ामी और नासिर या नबी !

तिश्नगाने दीद को हो दीद का शरबत अ़ता
अज़ तुफ़ैले ग़ौसे आ'ज़म अ़ब्दे क़ादिर या नबी !

आह ! मेरा क्या बनेगा गर न ह़ज पर जा सका
हो करम अ़त़्त़ार पर हो जाए हाज़िर या नबी !

---

1 : आले यासिर عَلَيهِمُ الرِّضْوَان पर ख़ूब ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े गए थे फिर भी येह दीन पर साबित क़दम रहे थे। काश ! इन के तुफ़ैल हमें भी इस्तिक़ामत फ़िद्दीन नसीब हो जाए।

हो मुबारक अहले ईमां ईदे मीलादुन्नबी

हो मुबारक अहले ईमां ईदे मीलादुन्नबी
हो गई क़िस्मत दरख़्शां ईदे मीलादुन्नबी

ख़ूब ख़ुश हैं हूरो गिल्मां ईदे मीलादुन्नबी
हर मलक मसरूरो शादां ईदे मीलादुन्नबी

चार सू हैं क्या छमाछम रह़मतों की बारिशें
झूमते हैं अब्रे बारां ईदे मीलादुन्नबी

नूर की फूहार बरसी चार सू है रोशनी
हो गया घर घर चरागा़ं ईदे मीलादुन्नबी

चार जानिब धूम है सरकार के मीलाद की
झूमता है हर मुसल्मां ईदे मीलादुन्नबी

अ़र्श पर चारों त़रफ़ सल्ले अ़ला की धूम है
आ गए हैं नूरे यज़्दां ईदे मीलादुन्नबी

गुन्चे चटके, फूल महके हर त़रफ़ आई बहार
हो गई सुब्हे़ बहारां ईदे मीलादुन्नबी

जानते हो क्यूं है रोशन आस्मां पर कह्कशां
है किया ह़क़ ने चराग़ां ईदे मीलादुन्नबी

हम न क्यूं रोशन करें घर घर दिये मीलाद के
खु़द करे जब ह़क़ चराग़ां ईदे मीलादुन्नबी

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिल-यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

ईदे मीलादुन्नबी पर जो भी करता है खु़शी
उस पे गु़र्राता है शैत़ां ईदे मीलादुन्नबी

आमिना के घर मुह़म्मद की विलादत हो गई
ख़ूब झूमो अहले ईमां ईदे मीलादुन्नबी

आओ दीवानो ! चलो सब आमिना के घर चलें
नूर से भर लाएं दामां ईदे मीलादुन्नबी

ख़ूब झूमो ऐ गुनहगारो ! तुम्हारी ईद है
हो गया बख़्शिश का सामां ईदे मीलादुन्नबी

ग़म के मारो ! बे सहारो ! बस तुम्हारी ईद है
हो गया राहत का सामां ईदे मीलादुन्नबी

बे क़रारो ! दिल फ़िगारो ! बस तुम्हारी ईद है
क्यूं हो हैरानो परेशां ईदे मीलादुन्नबी

ग़म नसीबो ! अब ग़मों का दूर अंधेरा हो गया
तुम मनाओ खूब खुशियां ईदे मीलादुन्नबी

खिल उठे मुरझाए दिल और जान में जान आ गई
आ गए हैं जाने जानां ईदे मीलादुन्नबी

बे कसों के दिन फिरे और ग़म के मारे हंस पड़े
हो गया खुशियों का सामां ईदे मीलादुन्नबी

اِنْ شَآءَ اللّٰه आज "ईदी" में मिलेगी मग़्फ़िरत
है जभी शैतां परेशां ईदे मीलादुन्नबी

या नबी ! अपनी विलादत की खुशी में अपना ग़म
दीजिये तयबा के सुल्तां ईदे मीलादुन्नबी

ईदे मीलादुन्नबी का वासिता अत्तार को
बख़्श दे ऐ रब्बे रहमां ईदे मीलादुन्नबी

दिल से मेरे दुन्या की महब्बत नहीं जाती

दिल से मेरे दुन्या की महब्बत नहीं जाती
सरकार ! गुनाहों की भी आदत नहीं जाती

दिन रात मुसल्सल है गुनाहों का तसल्सुल
कुछ तुम ही करो ना येह नुहूसत नहीं जाती

खाने की ज़ियादत है तो सोने की भी कसरत
और ख़न्दए बे जा[1] की भी ख़स्लत नहीं जाती

गो पेशे नज़र क़ब्र का पुरहौल गढ़ा है
अफ़्सोस ! मगर फिर भी येह ग़फ़्लत नहीं जाती

ऐ रहमते कौनैन ! कमीने पे करम हो
हाए ! नहीं जाती बुरी ख़स्लत नहीं जाती

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे ग़म में
सरकार ! मगर दिल की क़सावत[2] नहीं जाती

---

1 : फ़ुज़ूल हंसी 2 : सख़्ती

क्या हो गया सरकार ! ख़यालों को हमारे
अग़यार के फ़ेशन की नुहूसत नहीं जाती
गो लाख बुरा ही सही मायूस नहीं हूं
सद शुक्र कि उम्मीदे शफ़ाअ़त नहीं जाती

आ़दत मुझे मा'लूम है आक़ा की किसी का
दिल तोड़ के जाती नहीं रह़मत नहीं जाती
"अपनों" को तो सरकार ! तबाही से बचा लो
बेचारों के सीनों से अ़दावत नहीं जाती

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर
दुन्या से चले जाएं हुकूमत नहीं जाती
कुछ ऐसी कशिश तुझ में है ऐ शहरे मदीना !
गो ह़ाज़िरी सो[100] बार हो ह़सरत नहीं जाती

नैरंगिये[1] दुन्या के तमाशों की ख़बर है
अ़त्तार तो क्यूं दिल से येह उल्फ़त नहीं जाती

---

1 : फ़रेब, धोका, जादूगरी

मैं जो यूं मदीने जाता तो कुछ और बात होती

मैं जो यूं मदीने जाता तो कुछ और बात होती
कभी लौट कर न आता तो कुछ और बात होती

मैं मदीने तो गया था येह बड़ा शरफ़ था लेकिन
वहीं दम जो टूट जाता तो कुछ और बात होती

ग़मे रोज़गार में तो मेरे अश्क बह रहे हैं
तेरा ग़म अगर रुलाता तो कुछ और बात होती

न फ़ुज़ूल काश ! हंसता तेरी याद में तड़पता
मुझे चैन ही न आता तो कुछ और बात होती

येही आह ! फ़िक्रे दुन्या मेरा दिल जला रही है
ग़मे हिज्र गर सताता तो कुछ और बात होती

यहां क़ब्र में करम से तेरी दीद मुझ को होगी
जो बक़ीए पाक पाता तो कुछ और बात होती

ब ज़बाने ज़ाइरीं तो मैं सलाम भेजता हूं
कभी खुद सलाम लाता तो कुछ और बात होती
अरे ज़ाइरे मदीना ! तू खुशी से हंस रहा है
दिले ग़मज़दा जो लाता तो कुछ और बात होती
मेरी आंख जब भी खुलती तेरी रह़मतों से आक़ा
तुझे सामने ही पाता तो कुछ और बात होती
तू मदीना छोड़ आया तुझे क्या हुवा था अ़त्तार
वहीं घर अगर बसाता तो कुछ और बात होती

बोह्तान की ता'रीफ़

किसी शख़्स की मौजू-दगी या ग़ैर मौजू-दगी में उस पर झूट बांधना बोह्तान कहलाता है। (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة ج۲ ص۲۰۰) इस को आसान लफ़्ज़ों में यूं समझिये कि **बुराई** न होने के बा वुजूद अगर पीठ पीछे या रू बरू वोह बुराई उस की त़रफ़ मन्सूब कर दी तो येह **बोह्तान** हुवा म-सलन पीछे या मुंह के सामने **रियाकार** कह दिया और वोह रियाकार न हो या अगर हो भी तो आप के पास कोई सुबूत न हो क्यूं कि **रियाकारी** का तअ़ल्लुक़ बात़िनी अमराज़ से है लिहाज़ा इस त़रह़ किसी को रियाकार कहना **बोह्तान** हुवा।

ठन्डी ठन्डी हवा मदीने की

ठन्डी ठन्डी हवा मदीने की महकी महकी फ़ज़ा मदीने की
आरज़ू है ख़ुदा मदीने की मुझ को गलियां दिखा मदीने की
दिन है कैसा मुनव्वरो रोशन रात रौनक़ फ़िज़ा मदीने की
छाउं तो हर जगह की ठन्डी पर धूप भी वाह वा मदीने की
कैफ़ आवर है मौसिमे सरमा गर्मियां मरहबा मदीने की
फूल तो फूल ख़ार भी दिलकश पत्तियां दिलकुशा मदीने की
है चमन तो हसीन कांटों की झाड़ियां ख़ुशनुमा मदीने की
है पहाड़ों पे नूर की चादर वादियां मरहबा मदीने की
सब्ज़ गुम्बद का हुस्न क्या कहना जालियां दिलकुशा मदीने की
कैफ़ो मस्ती भरा समां है वां कैफ़ आवर फ़ज़ा मदीने की
हर घड़ी रहमतें बरसती हैं है मुबारक हवा मदीने की
ज़र्रा ज़र्रा वहां का नूरानी है मुनव्वर फ़ज़ा मदीने की
ज़ुल्मते शब डराएगी क्यूंकर ! हर तरफ़ है ज़िया मदीने की
ग़मज़दो आंख खोल के देखो छा गई है घटा मदीने की
क्यूं हो मायूस ऐ मरीज़ो ! तुम ले लो ख़ाके शिफ़ा मदीने की
झोलियां भर के तू भी लाएगा राह ले ऐ गदा मदीने की
मेरे मुरझाए दिल को झोंका दे आ के बादे सबा मदीने की

क़ाफ़िले हाजियों के हैं तय्यार दे दो रुख़्सत शहा ! मदीने की
है तमन्ना बक़ीए ग़रक़द की भाइयो ! दो दुआ मदीने की
सल्तनत की तलब नहीं आक़ा हो गदाई अता मदीने की
काश ! हर आन याद तड़पाए ! हर न-फ़स[1] हो सदा मदीने की
रात दिन येह तुम्हारे दीवाने मांगते हैं दुआ मदीने की
हिज्र में रो रहे हैं दीवाने याद आई शहा ! मदीने की
अपने जूते उतार लेना तुम जब गली देखना मदीने की
चूम के फूल, धूल को भी तुम झूम के चूमना मदीने की
ख़ाके दर का लगा के सुरमा तुम राहतें लूटना मदीने की
एक मुद्दत हुई जुदाई को हो इजाज़त अता मदीने की
ख़ूब झूमेंगे लौट जाएंगे देखते ही फ़ज़ा मदीने की
मुझ को क़दमों में मौत दे कर फिर दे दो थोड़ी सी जा मदीने की
हाए अफ़्सोस ! मैं बना इन्सां क्यूं न मिट्टी बना मदीने की

जा के अत्तार फिर मदीने में
रहमतें लूटना मदीने की

1 : सांस

शाह तुम ने मदीना अपनाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

शाह तुम ने मदीना अपनाया, वाह ! क्या बात है मदीने की
अपना रौज़ा इसी में बनवाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

मुजरिमों को भी त़यबा बुलवाया, वाह ! क्या बात है मदीने की
रास्ता मग़्फ़िरत का दिखलाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

हर त़रफ़ रह़मतों का है साया, वाह ! क्या बात है मदीने की
ख़ूब रुत्बा अ़ज़ीम है पाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

कोई दीवाना जब मदीने में, आया दिल उस का झूमा सीने में
लब पे बे साख़्ता है येह आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

अल्लाह अल्लाह गुम्बदे ख़ज़्रा, और मेह़राबो मिम्बरे आक़ा
हुस्न में चांद उन से शरमाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

ख़ूब दुन्या के हैं ह़सीं बाग़ात, और फूलों के हुस्न की क्या बात
दिल को पर दश्ते त़यबा ही भाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

बाग़े तृयबा का हुस्न क्या कहना, जामए नूर जैसे हो पहना
हुस्न सारा यहीं सिमट आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

ख़ूब सूरत वहां के सब कोहसार, और हैं धूल के ह़सीं अम्बार
वादियों पर भी नूर का साया, वाह ! क्या बात है मदीने की

हुस्ने पेरिस पे मरने वाले क्या ! दश्ते तृयबा का हुस्न भी देखा ?
बोल उठेगा मदीने गर आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

जिस ने हुस्ने अ़क़ीदत अपनाई, उस ने अमराज़ से शिफ़ा पाई
जा के जो ख़ाके तृयबा मल आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

जो मुसीबत का आ गया मारा, दूर ग़म उस का हो गया सारा
खिल उठा जो कि दिल था मुरझाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

जो सुवाली मदीने आया है, झोलियां भर के अपनी लाया है
कोई ख़ाली न लौट कर आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

मेरे आक़ा मदीने जब आए, बच्चियों ने तराने थे गाए
चार सू ख़ूब कैफ़ था छाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

क़ल्बे आ़शिक़ ने कैफ़ पाया है, रूह़ को भी सुरूर आया है
लब पे नामे मदीना जब आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

शौक़े त़यबा में दिल सुलगता है, हम को अच्छा मदीना लगता है
यादे त़यबा हमारा सरमाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

ज़ाइरे रौज़ा को शफ़ाअ़त की, या नबी आप ने बिशारत दी
बा मुक़द्दर है दर पे जो आया, वाह ! क्या बात है मदीने की

कब तलक दर बदर फिरे आक़ा ! अपने कूचे में मौत दे आक़ा !
येह गदा दर पे अ़र्ज़ है लाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

ख़ुद को जो इ़श्क़ में रुलाता है, ला जरम[1] वोह सुकून पाता है
उस के अश्क आख़िरत का सरमाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

हर त़रफ़ भीनी भीनी है ख़ुश्बू, सोज़ ही सोज़ हर जगह हर सू
फ़र्श ता अ़र्श नूर है छाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

बस मदीना मदीना विर्दे लब, काश ! अक्सर रहे मेरे या रब
दिल को नामे मदीना है भाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

अपने अ़त्तार को शहे आ़लम, दे दो अपनी महब्बत अपना ग़म
कोई दुन्या का दो न सरमाया, वाह ! क्या बात है मदीने की

---

1 : बेशक

मेरे तुम ख़्वाब में आओ मेरे घर रोशनी होगी

मेरे तुम ख़्वाब में आओ, मेरे घर रोशनी होगी
मेरी क़िस्मत जगा जाओ, इनायत येह बड़ी होगी

मदीने मुझ को आना है, ग़मे फ़ुरक़त मिटाना है
कब आक़ाए मदीना दर, पे मेरी ह़ाज़िरी होगी

शहन्शाहे मदीना दो, तड़पने का क़रीना दो
वोह आंख आक़ा इनायत हो, कि जो अश्कों भरी होगी

बना लो अपना दीवाना, बना लो अपना मस्ताना
ख़ज़ाने में तुम्हारे क्या, कमी प्यारे नबी होगी

ग़मे दूरी रुलाता है, मदीना याद आता है
तसल्ली रख ऐ दीवाने, तेरी भी ह़ाज़िरी होगी

मुझे गर दीद हो जाए, तो मेरी ईद हो जाए
तेरा दीदार जब होगा, मुझे ह़ासिल ख़ुशी होगी

ख़ज़ां का सख़्त पहरा है, ग़मों का घुप अंधेरा है
ज़रा सा मुस्कुरा दोगे, तो दिल में रोशनी होगी

इलाही गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत दे
मेरी लाश उन के क़दमों में न जाने कब पड़ी होगी

हमें भी इज़्न मिल जाए शहा क़दमों में आने का
न जाने कब मदीने में हमारी ह़ाज़िरी होगी

मदीना मेरा हो मस्कन बक़ीए़ पाक हो मदफ़न
मेरी उम्मीद की खेती न जाने कब हरी होगी

तड़प कर ग़म के मारो तुम पुकारो या रसूलल्लाह
तुम्हारी हर मुसीबत देखना दम में टली होगी

अगर वोह चांद से चेहरे को चमकाते हुए आए
ग़मों की शाम भी सुब्हे बहारां बन गई होगी

फ़िरिश्ते आ चुके सर पर बचा लो शाफ़ेए़ मह़शर
छुपा दामन में लो सरवर सज़ा वरना कड़ी होगी

गुनाहों पर नदामत है और उम्मीदे शफ़ाअ़त है
करम होगा रिहाई नारे दोज़ख़ से जभी होगी

सरे मह़शर वोह जिस दम जल्वए ज़ैबा दिखाएंगे
फ़ज़ा सल्ले अ़ला या मुस्त़फ़ा से गूंजती होगी

वोह जामे कौसर अपने हाथ से भर कर पिलाएंगे
करम से दूर महशर में, हमारी तिश्नगी होगी

मैं बन जाऊं सरापा "म-दनी इन्आ़मात" की तस्वीर
बनूंगा नेक या अल्लाह अगर रहमत तेरी होगी

रहूं हर दम मुसाफ़िर काश "म-दनी क़ाफ़िलों" का मैं
करम हो जाए मौला ! गर, इनायत येह बड़ी होगी

ज़बां का, आंख का और पेट का कुफ़्ले मदीना तुम
लगा लो वरना महशर, में पशेमानी बड़ी होगी

मुझे जल्वा दिखा देना मुझे कल्मा पढ़ा देना
अजल जिस वक़्त सर पर या नबी ! मेरे खड़ी होगी

अंधेरा घुप अंधेरा है, शहा वहशत का डेरा है
करम से क़ब्र में तुम आओगे तो रोशनी होगी

मेरे मरक़द में जब अ़त्तार वोह तशरीफ़ लाएंगे
लबों पर ना'ते शाहे अम्बिया उस दम सजी होगी

है कभी दुरूदो सलाम तो, कभी ना'त लब पे सजी रही

है कभी दुरूदो सलाम तो, कभी ना'त लब पे सजी रही
ग़मे हिज्र में कभी रो पड़ा, कभी ह़ाज़िरी की ख़ुशी रही

तेरी आंख में जो नमी रही, कली तेरे दिल की खिली रही
कभी दिल में हूक उठी रही, तो निगाह तेरी झुकी रही

मुझे कर दे दीदए तर[1] अ़ता, ग़मे इश्क़ सोज़े जिगर अ़ता
हो बक़ीए़ पाक में जा अ़ता, येही आरज़ूए दिली रही

न कसीर माल की आरज़ू, न ही इक़्तिदार की जुस्त-जू
मैं तो साइले ग़मे इश्क़ हूं, मेरे आगे हेच शही रही

जिसे मिल गया ग़मे मुस्त़फ़ा, उसे ज़िन्दगी का मज़ा मिला
कभी सैले अश्क रवां हुवा, कभी "आह" दिल में दबी रही

येह है ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी, न नमाज़ है न ही बन्दगी
येही हुब्बे जाह की गन्दगी, तेरी क्यूं नज़र में बसी रही

1 : रोने वाली आंख

जो नबी की याद में खो गया, वोह ख़ुदाए पाक का हो गया
दो[2] जहान उस के संवर गए, उसे आख़िरत में ख़ुशी रही

मुझे या नबी ! तेरी दीद हो, तेरी दीद हो मेरी ईद हो
तुझे जिस ने देखा हज़ार बार ! उसे फिर भी तिश्ना लबी[1] रही

न पसन्द आएं चमन उसे, न ही खेत भाए हरे भरे
जो निगाह में है बसी रही, तो मदीने ही की गली रही

मुझे अब मदीने में लो बुला, इसी साल ह़ज भी करूं शहा
हो करम पए शहे करबला येही इल्तिजा म-दनी रही

मेरी जां हो जिस्म से जब जुदा, हो नज़र में जल्वए मुस्त़फ़ा
हो मदीने में मेरा ख़ातिमा, येह दुआ ख़ुदाए ग़नी रही

म-दनी ! गुनाह की आ़दतें, नहीं जातीं, आप ही कुछ करें
मैं ने कोशिशें कीं बहुत मगर, मेरी ह़ालत आह ! बुरी रही

मुझे शौक़े दीं शबो रोज़ दे, येही वल्वला येही सोज़ दे
तेरी सुन्नतें करूं आ़म मैं, कि इसी में तेरी ख़ुशी रही

तू सगे मदीना को या ख़ुदा, ग़मे रोज़गार से ले बचा
दे ग़मे मदीना पए रज़ा येही बस दुआ़ए दिली रही

1 : प्यास

मिल गई कैसी सआ़दत मिल गई

मिल गई कैसी सआ़दत मिल गई
मुझ को अब ह़ज की इजाज़त मिल गई

फिर मदीने का सफ़र दरपेश है
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

मेरे म-दनी पीरो मुर्शिद के तुफ़ैल
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

क्यूं न झूमूं क्यूं न लोटूं मुझ को तो
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

मैं ख़ुशी से मर न जाऊं अब कहीं
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

दे दे या रब ! मुझ को तौफ़ीक़े अदब
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

रोने वाली आंख दे दे या ख़ुदा !
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

या इलाही क़ल्बे मुज़्तर हो अ़ता
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

अब तो दे दे या ख़ुदा ज़ौक़े जुनूं
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

या ख़ुदा दे दे तड़पने की अदा
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

आ–तशे शौक़ और कर दे तेज़ तर
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

हो अ़ता सोज़े बिलाल ऐ ज़ुल जलाल
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

उन के जल्वे देख ले वोह आंख दे
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

या इलाही ! तू अ़त़ा कर दे बक़ीअ़
फिर मदीने की इजाज़त मिल गई

मिल गया जिस को बक़ीए़ पाक उसे
कु़र्बते माहे रिसालत मिल गई

झूमो झूमो ख़ूब झूमो ज़ाइरो !
क्या मिला दर उन का जन्नत मिल गई

क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत जिस ने की
उस को आक़ा की शफ़ाअ़त मिल गई

अ़र्श पर तो गुम्बदे ख़ज़रा कहां !
फ़र्श तुझ को येह सआ़दत मिल गई

रो रहे हैं आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा
वाह वा क्या ख़ूब क़िस्मत मिल गई

ग़म मदीने का जिसे भी मिल गया
दो जहां की उस को ने'मत मिल गई

ताजे शाही उस के आगे हेच है
मुस्त़फ़ा की जिस को उल्फ़त मिल गई

हम को फ़ैज़ाने मदीना मिल गया
कैसी आ'ला हम को ने'मत मिल गई

मैं मदीने में मरूं इस ह़ाल में
सब कहें इस को शहादत मिल गई

"अल मदीना चल मदीना" झूम कर
जब पुकारा दिल को राह़त मिल गई

जब तड़प कर या रसूलल्लाह कहा
फ़ौरन आक़ा की ह़िमायत मिल गई

अम्बिया सारे खड़ें हैं सफ़ ब सफ़
मेरे आक़ा को इमामत मिल गई

ख़ाके त़यबा से किया जिस ने इलाज
हर मरज़ से उस को राह़त मिल गई

मेरी क़िस्मत की येही मे'राज है
उन के कफ़्शे पा से निस्बत मिल गई

दोनों[2] आ़लम में हुवा वोह सुर्ख़-रू
जिस को उन की चश्मे रह़मत मिल गई

मैं इमाम अह़मद रज़ा का हूं गु़लाम
कितनी आ'ला मुझ को निस्बत मिल गई

राहे सुन्नत में हुवा जो भी ज़लील
उस को उन के दर से इ़ज़्ज़त मिल गई

थे गुनह ह़द से सिवा अ़त्तार के
उन के सदके़ फिर भी जन्नत मिल गई

क्यूं न रश्क आए हमें अ़त्तार पर
इस को त़यबा की इजाज़त मिल गई

मेरा दिल पाक हो सरकार दुन्या की महब्बत से

मेरा दिल पाक हो सरकार ! दुन्या की महब्बत से
मुझे हो जाए नफ़रत काश ! आक़ा मालो दौलत से

मदीने से अगर्चे दूर हूं तेरी मशिय्यत[1] से
तड़पने की सआदत दे इलाही हिज्रो फ़ुरक़त से

न लन्दन की न अमरीका न पेरिस की सियाहत[2] से
सुकूने क़ल्ब मिलता है मदीने की ज़ियारत से

ख़ुदा हाफ़िज़ मदीने के मुसाफ़िर जा ख़ुदा हाफ़िज़
चलेंगे सूए तयबा हम भी इक दिन उन की रहमत से

ख़ुदा की तुझ पे लाखों रहमतें हों ज़ाइरे तयबा !
सलामे शौक़ कह देना मेरा माहे रिसालत से

मुहम्मद मुस्तफ़ा उस को भी सीने से लगाते हैं
जिसे सब लोग ठुकराते हैं नफ़रत से हक़ारत से

---

1 : मरज़ी 2 : सेरो, सफ़र

तुम्हारा ना'ले अक़्दस ही हमारा ताजे इज़्ज़त है
हमारा वासित़ा क्या ताजे शाही से हुकूमत से

जिगर प्यासा ज़बां सूखी ख़ज़ां छाई बहार आए
दिले पज़मुर्दा[1] खिल उठ्ठे तेरे जल्वों की नुज़्हत[2] से

गुनाहों की मैं चादर तान कर दिन रात सोता हूं
जगा दो या रसूलल्लाह ! मुझे अब ख़्वाबे ग़फ़्लत से

गुनाहों से मेरा सारा वुजूद अफ़्सोस ! है लिथड़ा
मुझे अब पाक कर दीजे गुनाहों की नुहूसत से

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

करम ऐ शाफ़ेए़ मह़शर खुले आ'माल के दफ़्तर
गो बदकारो कमीना हूं मगर हूं तेरी उम्मत से

---

1 : मुरझाया हुवा 2 : तरो ताज़गी, पाकीज़गी

न नामे में इ़बादत है न पल्ले कुछ रियाज़त है
इलाही ! मग़्फ़िरत फ़रमा हमारी अपनी रह़मत से

इलाही ! वासित़ा देता हूं मैं मीठे मदीने का
बचा दुन्या की आफ़त से बचा उ़क़्बा की आफ़त से

मुसल्मां ई़दे मीलादुन्नबी पर शाद होता है
फ़क़त़ इब्लीस का चेला चिड़े जश्ने विलादत से

बटेगी रह़मतों की जिस घड़ी ख़ैरात मह़शर में
शहा ! मह़रूम मत करना मुझे अपनी शफ़ाअ़त से

तुम्हें मा'लूम क्या भाई ! ख़ुदा का कौन है मक़्बूल
किसी मोमिन को मत देखो कभी भी तुम ह़क़ारत से

उजाला ही उजाला होगा उस की क़ब्र के अन्दर
हो जिस का दिल मुनव्वर उल्फ़ते महरे रिसालत से

करम से ख़ुल्द में अ़त्त़ार जिस दम जा रहा होगा
शयात़ीं देखते होंगे सभी मुड़ मुड़ के ह़सरत से

अफ़्सोस ! बहुत दूर हूं गुलज़ारे नबी से

अफ़्सोस ! बहुत दूर हूं गुलज़ारे नबी से
काश आए बुलावा मुझे दरबारे नबी से

उल्फ़त है मुझे गेसूए ख़मदारे नबी से
अब्रू व पलक आंख से रुख़्सारे नबी से

पैराहनो[1] चादर से अ़सा से है महब्बत
ना'लैने शरीफ़ैन से दस्तारे[2] नबी से

बूसैरी ! मुबारक हो तुम्हें बुर्दे यमानी
सौग़ात मिली ख़ूब है दरबारे नबी से

बीमार ! न मायूस हो तू हुस्ने यक़ीं रख
दम जा के करा ले किसी बीमारे नबी से

तू ख़्वाब में ह़-सनैन के सदक़े में ख़ुदाया
फ़रमा दे मुशर्रफ़ मुझे दीदारे नबी से

मदीना

1 : लिबास 2 : इमामा

अल्लाह को माने जो मुह़म्मद को न माने
ला रैब[1] वोह नारी हुवा इन्कारे नबी से

वोह नारे जहन्नम का है ह़क़दार यक़ीनन
है जिस को अ़दावत किसी भी यारे नबी से

ऐ ज़ाइरे त़यबा ! येह दुआ़ कर मेरे ह़क़ में
मुझ को भी बुलावा मिले दरबारे नबी से

दुन्या के नज़ारों से भला क्या हो सरोकार
उ़श्शाक़ को बस इ़श्क़ है गुलज़ारे नबी से

दीवानों के आंसू नहीं थमते दमे रुख़्सत
जब सूए वत़न जाते हैं दरबारे नबी से

जल्वों से ख़ुदाया मेरा सीना हो मदीना
आंखें भी हों ठन्डी मेरी दीदारे नबी से

مدینہ

1 : बेशक

सुन्नत है सफ़र दीन की तब्लीग़ की ख़ातिर
मिलता है हमें दर्स येह अस्फ़ारे[1] नबी से

मस्ताना मदीने में ख़ुदा ऐसा बना दे
टकरा के मैं दम तोड़ दूं दीवारे नबी से

सदक़े में मेरे ग़ौस के हो दूर अंधेरा
तुरबत हो मुनव्वर मेरी अन्वारे नबी से

जब क़ब्र में आएंगे तो क़दमों में गिरूंगा
ख़ूब आंखें मलूंगा मैं तो पैज़ारे[2] नबी से

अ़त्तार है ईमां की हि़फ़ाज़त का सुवाली
ख़ाली नहीं जाएगा येह दरबारे नबी से

म-दनी फूल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِہٖ وَیَدِہٖ۔ या'नी मुसलमान वोह है कि उस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें। (بُخاری ج۱ص۱۵حدیث۱۰)

1 : सफ़र की जम्अ़ 2 : जूती मुबारक

आज है जश्ने विलादत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आज है जश्ने विलादत मरह़बा या मुस्त़फ़ा
आज आए जाने रह़मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

मरह़बा महरे रिसालत मरह़बा या मुस्त़फ़ा
मरह़बा माहे नुबुव्वत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आमदे शाहे मदीना मरह़बा सद मरह़बा
मरह़बा ऐ जाने रह़मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

मरह़बा आक़ा की आमद मरह़बा नूरे ख़ुदा
हो गई काफ़ूर ज़ुल्मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आज दुन्या में विलादत मुस्त़फ़ा की हो गई
ख़ूब चमकी अपनी क़िस्मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

का'बा सज्दे को झुका बुत सारे औंधे गिर पड़े
आ गई शैत़ां की शामत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आ गए सरकार हर सू बारिशे अन्वार है
झूमते हैं अब्रे रह़मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

चार सू हैं रह़मतों की क्या छमाछम बारिशें !
आए लम्ह़ाते मसर्रत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

मरह़बा की धूम डालो सब पुकारो मरह़बा
झूम कर अहले मह़ब्बत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आज घर घर रोशनी है सब्ज़ परचम हैं बुलन्द
झूमते हैं अहले सुन्नत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
शादमां है ख़ुद मसर्रत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

जश्ने मीलादुन्नबी की धूम है चारों त़रफ़
मस्त हैं अहले मह़ब्बत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

ख़ूब गाती थीं तराने दफ़ बजा कर बच्चियां
हर त़रफ़ कहती थी ख़ल्क़त मरह़बा या मुस्त़फ़ा

आ गई उठ्ठो सुवारी आमिना के लाल की
उन से मांगो उन की उल्फ़त मरह़बा या मुस्त़फ़ा

ले के कश्कोल ऐ फ़क़ीरो आमिना के घर चलो
मांग लो जो चाहो ने'मत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

या नबी ! अपनी विलादत की ख़ुशी में दीजिये
ख़ुल्द में अपनी रफ़ाक़त मरह़बा या मुस्त़फ़ा

वासित़ा तुम को विलादत का मदीने में जगह
मुझ को दे दो बहरे तुरबत मरह़बा या मुस्त़फ़ा

दे दो तुम अ़त्त़ार को ईदी में चश्मे अश्कबार
अपना ग़म दो अपनी उल्फ़त मरह़बा या मुस्त़फ़ा

झूम कर सारे पुकारो मरहबा या मुस्तफ़ा

झूम कर सारे पुकारो मरहबा या मुस्तफ़ा — चूम कर लब कह दो यारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह कर ऐ इस्यां शिआरो मरहबा या मुस्तफ़ा — बिगड़ी क़िस्मत को संवारो मरहबा या मुस्तफ़ा

मुफ़्लिसो, गुरबत के मारो मरहबा या मुस्तफ़ा — तुम भी कह दो मालदारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह के दामन को पसारो मरहबा या मुस्तफ़ा — बादशाहो, नामदारो मरहबा या मुस्तफ़ा

सब पुकारो बे क़रारो मरहबा या मुस्तफ़ा — तुम भी कह दो पर्दादारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह दो रन्जो ग़म के मारो मरहबा या मुस्तफ़ा — आओ हिम्मत अब न हारो मरहबा या मुस्तफ़ा

सब पुकारो दिल फ़िगारो मरहबा या मुस्तफ़ा — ऐ यतीमो ! बे सहारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह दो ऐ सज्दा गुज़ारो मरहबा या मुस्तफ़ा — तुम भी कह दो रोज़ादारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह दो ऐ फ़ुरक़त के मारो मरहबा या मुस्तफ़ा — सब पुकारो राज़दारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह दो का'बे के मनारो मरहबा या मुस्तफ़ा — सब्ज़ गुम्बद के नज़ारो मरहबा या मुस्तफ़ा

तुम भी कह दो ख़ारज़ारो मरहबा या मुस्तफ़ा — बाग़े आ़लम की बहारो मरहबा या मुस्तफ़ा

सब पुकारो आबशारो मरहबा या मुस्तफ़ा — वादियो और कोहसारो मरहबा या मुस्तफ़ा

तुम भी कह दो मर्ग़-ज़ारो मरहबा या मुस्तफ़ा — बाग़ के रंगीं नज़ारो मरहबा या मुस्तफ़ा

कह दो तुम भी चांद तारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा पन्छियों की उड़ती डारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

बोल उठो ऐ शीर ख़्वारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा माहपारो गुल इज़ारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

क्यूं नहीं कहते हो प्यारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा कह भी दो ना अब दुलारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

चलते चलते ही पुकारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा ऐ पियादो और सुवारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

सब पुकारो चौबदारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा ऐ जहां के ताजदारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

तुम भी कह दो रेगज़ारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा महके फूलो और ख़ारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

कह दो दरिया के कनारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा बह़्र की ऐ तेज़ धारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

तुम भी कह दो शाख़सारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा ऐ पहाड़ों की क़ितारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

धूम है अ़त्तार हर सू शाह के मीलाद की
झूम कर तुम भी पुकारो मरह़बा या मुस्त़फ़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है।

(ابو یَعلٰی ج۵ص٤٥٨ حدیث٦٣٨٣)

ऐ काश ! फिर मदीने में अ़त्तार जा सके

ऐ काश ! फिर मदीने में अ़त्तार जा सके रो रो के ह़ाल शाह को अपना सुना सके

पिछले बरस तो ह़ाज़िरे दर हो गया था आह ! इस साल काश ह़ज का शरफ़ फिर से पा सके

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! कोई ऐसा सबब बना साए में मौत गुम्बदे ख़ज़्रा के आ सके

त़यबा बुला, या वोह दिले ग़मगीन दे मुझे दिल से न तेरा ग़म कोई मेरे मिटा सके

या रब पए रज़ा मुझे वोह आंख दे कि जो इश्क़े रसूले पाक में आंसू बहा सके

वोह आग मेरे सीने में आक़ा लगाइये पथ्थर से सख़्त क़ल्ब को भी जो जला सके

सरकार चार यार का देता हूं वासित़ा ऐसी बहार दो न ख़ज़ां पास आ सके

दुश्मन अगर्चे घात में है कोई ग़म नहीं उन की मदद रहे तो बिगाड़ अपना क्या सके

चश्मे करम हो ऐसी कि मिट जाए हर ख़त़ा कोई गुनाह मुझ से न शैत़ां करा सके

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! आ़शिक़ के लब पे शिक्वा कभी भी न आ सके

जिस वक़्त सुन्नतों का मैं करने लगूं बयां ऐसा असर हो पैदा जो दिल को हिला सके

मेरी ज़बान में वोह असर दे ख़ुदाए पाक जो मुस्त़फ़ा के इश्क़ में सब को रुला सके

अ़त्तार तेरे ह़ामी व नासिर हैं मुस्त़फ़ा
किस की मजाल है कि जो तुझ को दबा सके

जल्द हम आ़जि़मे गुलज़ारे मदीना होंगे

जल्द हम आ़जि़मे गुलज़ारे मदीना होंगे हाज़िरे दरगहे सरदारे मदीना होंगे
अब तो नूरानी चमन ज़ारे मदीना होंगे सामने अब मेरे कोहसारे मदीना होंगे
सब्ज़ गुम्बद की वहां ख़ूब बहारें होंगी रू बरू फिर मेरे अश्जारे मदीना होंगे
वज्द आ जाएगा कि़स्मत को भी उस दम वल्लाह सामने जब मेरे सरकारे मदीना होंगे
उन की रह़मत से जो मिल जाए बक़ीए ग़रक़द बिल यक़ीं क़ब्र में अन्वारे मदीना होंगे
क़ाफ़िले की यूं मदीने से जुदाई होगी मुज़्त़रो ग़मज़दा ज़्व्वारे मदीना होंगे
नज़्अ़ में क़ब्र में मह़शर में वोह पाएं आराम दारे फ़ानी में जो बीमारे मदीना होंगे
ह़श्र से क्यूं हो परेशान गुनहगारो तुम अपने ह़ामी वहां सरकारे मदीना होंगे
उन को ह़ासिल मेरे आक़ा की शफ़ाअ़त होगी जो कोई ह़ाजि़रे दरबारे मदीना होंगे
मेरी सरकार का आएगा बुलावा उन को जो कोई दिल से त़लब गारे मदीना होंगे
नज़्अ़ में आ़शिक़ों की ईद ही हो जाएगी उन के सिरहाने तो सरकारे मदीना होंगे

ह़श्र में जाएंगे अ़त्तार यूं اِنْ شَاءَاللّٰه
अपनी दाढ़ी में सजे ख़ारे मदीना होंगे

मनाना जश्ने मीलादुन्नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे

मनाना जश्ने मीलादुन्नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे
जुलूसे पाक में जाना कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे
खुदा के दोस्तों से दोस्ती हरगिज़ न छोड़ेंगे
नबी के दुश्मनों की दुश्मनी हरगिज़ न छोड़ेंगे

खुदाए पाक की रस्सी कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे
नहीं छोड़ेंगे दामाने नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे
लगाते जाएंगे हम या रसूलल्लाह के ना'रे
मचाना मरहबा की धूम भी हरगिज़ न छोड़ेंगे

जो चाहो मांग लो दरवाज़ए रहमत खुला है आज
तुम्हें खाली विलादत की घड़ी हरगिज़ न छोड़ेंगे
मनाएंगे खुशी हम हश्र तक जश्ने विलादत की
सजावट और करना रोशनी हरगिज़ न छोड़ेंगे

अगर्चे जान भी इस राह में कुरबान हो जाए
मगर ना'ते नबी पढ़ना कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

नबी के नाम पर सो जान से कुरबान हो जाएं
गुलामाने नबी ज़िक्रे नबी हरगिज़ न छोड़ेंगे

जो कोई जिस का खाता है उसी के गीत गाता है
नबी के गीत गाना हम कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

अगर्चे रास्ते में लाख रोड़े कोई अटकाए
रहे उल्फ़त पे चलना हम कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

कमाने मालो ज़र दर दर फिरे अपनी बला हम तो
न छोड़ेंगे मदीने की गली हरगिज़ न छोड़ेंगे

ऐ मेरे भाइयो ! है तुम से म-दनी इल्तिजा मेरी
पुकारो हम रज़ा की पैरवी हरगिज़ न छोड़ेंगे

सहाबा और वलियों की महब्बत दिल में डाली है
लिहाज़ा दा'वते इस्लामी भी हरगिज़ न छोड़ेंगे

हमारा अहद है कि दा'वते इस्लामी को हरगिज़
कभी भी हम न छोड़ेंगे कभी हरगिज़ न छोड़ेंगे

तसल्ली रख न हो मायूस क़ब्रो हश्र में अत्तार
तुझे तन्हा रसूले हाशिमी हरगिज़ न छोड़ेंगे

जब तलक येह चांद तारे झिलमिलाते जाएंगे

जब तलक येह चांद तारे झिलमिलाते जाएंगे
तब तलक जश्ने विलादत हम मनाते जाएंगे
उन के आ़शिक़ नूर की शम्एं जलाते जाएंगे
जब कि ह़ासिद दिल जलाते सट-पटाते जाएंगे

ना'ते मह़बूबे ख़ुदा सुनते सुनाते जाएंगे
या रसूलल्लाह का ना'रा लगाते जाएंगे
ह़श्र तक जश्ने विलादत हम मनाते जाएंगे
मरह़बा की धूम यारो ! हम मचाते जाएंगे

चार जानिब हम दिये घी[1] के जलाते जाएंगे
घर तो घर सारे मह़ल्ले को सजाते जाएंगे

1 : "घी के दिये जलाना" मुहा़-वरा है इस के मा'ना हैं : "बहुत ज़ियादा ख़ुशी मनाना।" (हो सके तो ना'त ख़्वां साहिबान वज़ाहत फ़रमा दिया करें)

हम महे मीलाद में लहराएंगे झन्डे हरे
सारी गलियां रोशनी से जगमगाते जाएंगे

ईदे मीलादुन्नबी की शब चराग़ां कर के हम
क़ब्र नूरे मुस्त़फ़ा से जगमगाते जाएंगे

हम जुलूसे जश्ने मीलादुन्नबी में झूम कर
रास्ते भर ना'त बस सुनते सुनाते जाएंगे

लाख शैत़ां हम को रोके फ़ज़्ले रब से ता अबद
जश्न, आक़ा की विलादत का मनाते जाएंगे

झूम कर सारे कहो, आक़ा की आमद मरह़बा
ह़श्र में भी हम येही ना'रा लगाते जाएंगे

या रसूलल्लाह का ना'रा लगाओ ज़ोर से
उन के दुश्मन मुंह फुलाते बुड़बुड़ाते जाएंगे

तुम करो जश्ने विलादत की ख़ुशी में रोशनी
वोह तुम्हारी गोरे तीरह जगमगाते जाएंगे

दो[2] जहां के शाह की शाही सुवारी आ गई
रह़मतों के वोह ख़ज़ाने अब लुटाते जाएंगे

आ रहे हैं शाफ़ेए़ मह़शर उठो ऐ आ़सियो !
हम गुनहगारों को ह़क़ से बख़्शवाते जाएंगे

हो गई सुब्ह़े बहारां कैफ़ आवर है समां
ख़ुश नसीबों को वोह अब जल्वा दिखाते जाएंगे

सुब्ह़े सादिक़ हो गई सब आमिना के घर चलें
नूर की बरसात होगी हम नहाते जाएंगे

ज़िक्रे मीलादे मुबारक कैसे छोड़ें हम भला
जिन का खाते हैं उन्हीं के गीत गाते जाएंगे

मुन्अ़क़िद करते रहेंगे इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त
धूम उन की ना'त ख़्वानी की मचाते जाएंगे

कर लो निय्यत ख़ूब कोशिश कर के हम अपना अ़मल
म-दनी इन्अ़ामात पर हर दम बढ़ाते जाएंगे

कर लो निय्यत सुन्नतों की तरबिय्यत के वासित़े
क़ाफ़िलों में हम सफ़र करते कराते जाएंगे

ख़ूब बरसेंगी जनाज़े पर ख़ुदा की रह़मतें
क़ब्र तक सरकार की ना'तें सुनाते जाएंगे

ह़श्र में ज़ेरे लिवाए ह़म्द ऐ अ़त्त़ार हम
ना'ते सुल्त़ाने मदीना गुनगुनाते जाएंगे

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमेशा बा वुज़ू रहना मुस्तह़ब है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 702)

ऐसा लगता है मदीने जल्द वोह बुलवाएंगे

ऐसा लगता है मदीने जल्द वोह बुलवाएंगे
जाएंगे जा कर उन्हें ज़ख़्मे जिगर दिखलाएंगे

वोह अगर चाहेंगे तो ऐसी नज़र फ़रमाएंगे
ख़ूब रोएंगे पछाड़ों पर पछाड़ें खाएंगे

ख़ुश्क अश्के इश्क़ से आंखें हैं दिल भी सख़्त है
आप ही चाहेंगे तो आक़ा हमें तड़पाएंगे

मौत अब तो गुम्बदे ख़ज़रा के साए में मिले
कब तक आक़ा दर बदर की ठोकरें हम खाएंगे

ऐ ख़ुशा ! तक़्दीर से गर हम को मन्ज़ूरी मिली
रख के सर दहलीज़ पर सरकार की मर जाएंगे

रोते रोते गिर पड़ेंगे उन के क़दमों में वहां
रोज़े महशर शाफ़ेए महशर नज़र जब आएंगे

खुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से
या रसूलल्लाह का ना'रा लगाते जाएंगे

ह़श्र में कैसे संभालूंगा मैं अपने आप को
आ मेरे अ़त्तार ! आ वोह जब वहां फ़रमाएंगे

हाए अब की बार भी अ़त्तार जो ज़िन्दा बचे
फिर मदीने से कराची रोते रोते आएंगे

तवक्कुल की ता'रीफ़

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **तवक्कुल तर्के अस्बाब का नाम नहीं बल्कि ए'तिमाद अ़लल अस्बाब का तर्क है ।** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 379) या'नी अस्बाब को छोड़ देना तवक्कुल नहीं है तवक्कुल तो येह है कि सिर्फ़ अस्बाब पर भरोसा न करे ।

शुक्रिया आप का सुल्ता़न मदीने वाले

शुक्रिया आप का सुल्ता़न मदीने वाले
मुझ सा आ़सी भी है मेहमान मदीने वाले

मुझ कमीने को मदीने में बुलाया तुम ने
है येह एह़सान पे एह़सान मदीने वाले

ज़ाइरे क़ब्रे मुनव्वर की शफ़ाअ़त होगी
है येही आप का फ़रमान मदीने वाले

मैं भी तो ज़ाइरे रौज़ा हूं रसूले अ़-रबी !
मुझ को मत भूलना सुल्ता़न मदीने वाले

दौलते इ़श्क़ से आक़ा मेरी झोली भर दो
बस येही हो मेरा सामान मदीने वाले

आप के इ़श्क़ में ऐ काश कि रोते रोते
येह निकल जाए मेरी जान मदीने वाले

तेरे दर पर तो अ़दू को भी अमां मिलती है
मैं तेरी शान के कुरबान मदीने वाले

अपने क़दमों से ख़ुदारा न जुदा कीजेगा
हो गुनहगार पे एह़सान मदीने वाले

आप भूके रहें और पेट पे पथ्थर बांधें
ने'मतों के दें हमें ख़्वान मदीने वाले

ह़श्र में तुम मेरे ऐ़बों को छुपाए रखना
हूं गुनाहों पे पशेमान मदीने वाले

मैं मदीने की गली का कोई कुत्ता होता
काश ! होता न मैं इन्सान मदीने वाले

मुझ को दीवाना मदीने का बना लो आक़ा
बस येही है मेरा अरमान मदीने वाले

इक झलक चेहरए अन्वर की दिखा दो अब तो
वक़्ते रुख़्सत है चली जान मदीने वाले

इस गुनहगार को दामन में छुपा लो आक़ा !
येह बिचारा है परेशान मदीने वाले

काश ! अ़त़्त़ार हो आज़ाद ग़मे दुन्या से
बस तुम्हारा ही रहे ध्यान मदीने वाले

मुझे दर पे फिर बुलाना म-दनी मदीने वाले

मुझे दर पे फिर बुलाना म-दनी मदीने वाले
मए इश्क़ भी पिलाना म-दनी मदीने वाले

मेरी आंख में समाना म-दनी मदीने वाले
बने दिल तेरा ठिकाना म-दनी मदीने वाले

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना म-दनी मदीने वाले

मुझे ग़म सता रहे हैं मेरी जान खा रहे हैं
तुम्हीं ह़ौसला बढ़ाना म-दनी मदीने वाले

मेरे सब अ़ज़ीज़ छूटें मेरे दोस्त भी गो रूठें
शहा तुम न रूठ जाना म-दनी मदीने वाले

मैं अगर्चे हूं कमीना तेरा हूं शहे मदीना
मुझे क़दमों से लगाना म-दनी मदीने वाले

तेरे दर से शाह बेहतर तेरे आस्तां से बढ़ कर
है भला कोई ठिकाना म-दनी मदीने वाले

तेरा तुझ से हूं सुवाली शहा फैरना न ख़ाली
मुझे अपना तू बनाना म-दनी मदीने वाले

येह मरीज़ मर रहा है तेरे हाथ में शिफ़ा है
ऐ त़बीब ! जल्द आना म-दनी मदीने वाले

तू ही अम्बिया का सरवर तू ही दो[2] जहां का यावर
तू ही रहबरे ज़माना म-दनी मदीने वाले

तू है बे कसों का यावर ऐ मेरे ग़रीब परवर
है सख़ी तेरा घराना म-दनी मदीने वाले

तू ख़ुदा के बा'द बेहतर है सभी से मेरे सरवर
तेरा हाशिमी घराना म-दनी मदीने वाले

तेरी फ़र्श पर हुकूमत तेरी अ़र्श पर हुकूमत
तू शहन्शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले

तेरा ख़ुल्क़ सब से बाला तेरा हुस्न सब से आ'ला
फ़िदा तुझ पे सब ज़माना म-दनी मदीने वाले

कहूं किस से आह ! जा कर सुने कौन मेरे सरवर
मेरे दर्द का फ़साना म-दनी मदीने वाले

ब अ़ताए रब्बे ह़ाकिम तू है रिज़्क़ का भी क़ासिम
है तेरा सब आबो दाना म-दनी मदीने वाले

मैं ग़रीब बे सहारा कहां और है गुज़ारा
मुझे आप ही निभाना म-दनी मदीने वाले

येह करम बड़ा करम है तेरे हाथ में भरम है
सरे ह़श्र बख़्शवाना म-दनी मदीने वाले

कभी जव की मोटी रोटी तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना म-दनी मदीने वाले

है चटाई का बिछोना कभी ख़ाक ही पे सोना
कभी हाथ का सिरहाना म-दनी मदीने वाले

तेरी सादगी पे लाखों तेरी आ़जिज़ी पे लाखों
हों सलामे आ़जिज़ाना म-दनी मदीने वाले

मेरे शाह ! वक़्ते रुख़्सत मुझे मीठा मीठा शरबत
तेरी दीद का पिलाना म-दनी मदीने वाले

मिले नज़्अ़ में भी राह़त रहूं क़ब्र में सलामत
तू अ़ज़ाब से बचाना म-दनी मदीने वाले

घुप अंधेरी क़ब्र में जब मुझे छोड़ कर चलें सब
मेरी क़ब्र जगमगाना म-दनी मदीने वाले

पसे मर्ग सब्ज़ गुम्बद की हुज़ूर ठन्डी ठन्डी
मुझे छाउं में सुलाना म-दनी मदीने वाले

ऐ शफ़ीए रोज़े महशर ! है गुनह का बोझ सर पर
मैं फंसा मुझे बचाना म-दनी मदीने वाले

मेरे वालिदैन महशर में गो भूल जाएं सरवर
मुझे तुम न भूल जाना म-दनी मदीने वाले

शहा ! तिश्नगी बड़ी है यहां धूप भी कड़ी है
शहे हौज़े कौसर आना म-दनी मदीने वाले

मुझे आफ़तों ने घेरा, है मुसीबतों का डेरा
या नबी मदद को आना म-दनी मदीने वाले

तेरे दर की हाज़िरी को जो तड़प रहे हैं उन को
शहा ! जल्द तू बुलाना म-दनी मदीने वाले

कोई इस त़रफ़ भी फेरा हो ग़मों का दूर अंधेरा
ऐ सरापा नूर ! आना म-दनी मदीने वाले

कोई पाए बख़्त-वर गर है शरफ़ शही से बढ़ कर
तेरे ना'ले पाक उठाना म-दनी मदीने वाले

मेरा सीना हो मदीना मेरे दिल का आबगीना
भी मदीना ही बनाना म-दनी मदीने वाले

ऐ ह़बीबे रब्बे बारी है गुनह का बोझ भारी
तुम्हीं ह़श्र में छुड़ाना म-दनी मदीने वाले

मेरी आ़दतें हों बेहतर बनूं सुन्नतों का पैकर
मुझे मुत्तक़ी बनाना म-दनी मदीने वाले

शहा ! ऐसा जज़्बा पाऊं कि मैं ख़ूब सीख जाऊं
तेरी सुन्नतें सिखाना म-दनी मदीने वाले

तेरे नाम पर हो कुरबां मेरी जान, जाने जानां
हो नसीब सर कटाना म-दनी मदीने वाले

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तू गले लगाना म-दनी मदीने वाले

हैं मुबल्लिग़ आक़ा जितने करो दूर उन से फ़ितने
बुरी मौत से बचाना म-दनी मदीने वाले

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना म-दनी मदीने वाले

मेरे जिस क़दर हैं अह्‌बाब इन्हें कर दें शाह बेताब
मिले इश्क़ का ख़ज़ाना म-दनी मदीने वाले

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इश्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना म-दनी मदीने वाले

मिले सुन्नतों का जज़्बा मेरे भाई छोड़ें मौला
सभी दाढ़ियां मुंडाना म-दनी मदीने वाले

मेरी काश सारी बहनें रहें म-दनी बुरक़ओं में
हो करम शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले

दो जहान के ख़ज़ाने दिये हाथ में ख़ुदा ने
तेरा काम है लुटाना म-दनी मदीने वाले

तेरा ग़म ही चाहे अ़त्तार इसी में रहे गिरिफ़्तार
ग़मे माल से बचाना म-दनी मदीने वाले

तराने मुस्तफ़ा के झूम कर पढ़ता हुवा निकले

तराने मुस्तफ़ा के झूम कर पढ़ता हुवा निकले
यूं हज को "चल मदीना" का वतन से क़ाफ़िला निकले

नज़र जब सब्ज़ गुम्बद पर पड़े ग़श खा के गिर जाऊं
तेरे क़दमों में जाने मुज़्तरिब या मुस्तफ़ा निकले

अगर मीज़ां पे पेशी हो गई तो हाए ! बरबादी !
गुनाहों के सिवा क्या मेरे नामे में भला निकले

करम से उस घड़ी सरकार ! पर्दा आप रख लेना
सरे महशर मेरे ऐबों का जिस दम तज़्किरा निकले

नज़र आएं जूं ही सरकार महशर में मेरे लब से
येह ना'रा या रसूलल्लाह का बे साख़्ता निकले

अगर्चे दौलते दुन्या मेरी सब छीन ली जाए
मेरे दिल से न हरगिज़ या नबी तेरी विला[1] निकले

مدینہ

1 : महब्बत

पड़ोसी ख़ुल्द में या रब बना दे अपने प्यारे का
येही है आरज़ू मेरी येही दिल से दुआ़ निकले

तुझे हरगिज़ गवारा हो नहीं सकता कि मह़शर में
जहन्नम की त़रफ़ रोता हुवा तेरा गदा निकले

रसूले पाक से मेरा सलामे शौक़ कह देना
क़रीबे गुम्बदे ख़ज़रा तू जब बादे सबा निकले

तलातुम ख़ैज़ मौजें हैं थपेड़ों पर थपेड़े हैं
मेरी नय्या भंवर से अब सलामत नाख़ुदा निकले

इलाही मौत आए गुम्बदे ख़ज़रा के साए में
मदीने में जनाज़ा धूम से अ़त्त़ार का निकले

मुआ़फ़ करो मुआ़फ़ी पाओ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रह़्म किया करो तुम पर रह़्म किया जाएगा और मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

(مُسندِ اِمام احمد ج۲ ص۶۸۲ حدیث۷۰۶۲)

सिल्सिला आह ! गुनाहों का बढ़ा जाता है

सिल्सिला आह ! गुनाहों का बढ़ा जाता है
नित नया जुर्म हर इक आन हुवा जाता है

क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्ती में बढ़ा जाता है
ख़ौल पर ख़ौल सियाही का चढ़ा जाता है

नफ़्सो शैतान की हर आन इताअ़त पर दिल
आह ! माइल मेरे अल्लाह हुवा जाता है

लाऊं वोह अश्क कहां से जो सियाही धोएं
गन्दगी में मेरा दिल ह़द से बढ़ा जाता है

आ़रिज़ी आफ़ते दुन्या से तो डरता है दिल
हाए बे ख़ौफ़ अ़ज़ाबों से हुवा जाता है

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर
येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है

अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं
भाई क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

अस्ल आफ़त तो है नाराज़िये रब्बे अक्बर
इस को क्यूं भूल के बरबाद हुवा जाता है

अल मदद या शहे अबरार मदीने वाले
क़ल्ब से ख़ौफ़े ख़ुदा दूर हुवा जाता है

आह ! दौलत की ह़िफ़ाज़त में तो सब हैं कोशां
ह़िफ़्ज़े ईमां का तसव्वुर ही मिटा जाता है

याद रख्खो ! वोही बे अ़क़्ल है अह़मक़ है जो
कस्रते माल की चाहत में मरा जाता है

अपनी उल्फ़त का मुझे जाम पिला दो साक़ी
क़ल्ब दुन्या की महब्बत में फंसा जाता है

इम्तिहां के कहां क़ाबिल हूं मैं प्यारे अल्लाह
बे सबब बख़्श दे मौला तेरा क्या जाता है

आह ! जाती नहीं है आ़दते यावह गोई वक़्ते अनमोल यूं बरबाद हुवा जाता है

आह ! आंसू ग़मे दुन्या में बहे जाते हैं दिल भी दुन्या के ग़मों ही में जला जाता है

अपना ग़म ऐसा अ़ता कर कि कलेजा फट जाए देख के सब कहें दीवाना चला जाता है

वल्वला सुन्नते महबूब का दे दे मालिक आह ! फ़ेशन पे मुसल्मान मरा जाता है

तेरे दीवाने मदीने के लिये हैं बेताब जाने कब इज़्न, मदीने का दिया जाता है

आख़िरी वक़्त है आ जा मेरे म-दनी आ जा आह ! मुजरिम तेरा दुन्या से शहा जाता है

जल्वए पाक दिखा जा मेरे म-दनी आ जा आह ! मुजरिम तेरा दुन्या से शहा जाता है

मुझ को अब कल्मा पढ़ा जा मेरे म-दनी आ जा आह ! मुजरिम तेरा दुन्या से शहा जाता है

मुझ को क़दमों से लगा जा मेरे म-दनी आ जा आह ! मुजरिम तेरा दुन्या से शहा जाता है

मेरे इ़स्यां को मिटा जा मेरे म-दनी आ जा आह ! मुजरिम तेरा दुन्या से शहा जाता है

मेरे आक़ा सरे महशर मेरा पर्दा रखना राज़ ऐबों का मेरे फ़ाश हुवा जाता है

आओ अब बहरे शफ़ाअ़त मेरे शाफ़ेअ़ आओ आह ! बदकार अ़ज़ाबों में घिरा जाता है

मुस्कुरा कर मेरी सरकार मुझे कह दो ना आ तुझे दामने रह़मत में लिया जाता है

काश ! अ़त्तार से फ़रमाएं क़ियामत में हुज़ूर

ले मुबारक कि तुझे बख़्श दिया जाता है

अ़ज़ीज़ों की त़रफ़ से जब मेरा दिल टूट जाता है

(इस कलाम में मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों के जज़्बात व एह़सासात की अ़क्कासी की गई है)

अ़ज़ीज़ों की त़रफ़ से जब मेरा दिल टूट जाता है
तेरा लुत़्फ़ो करम बढ़ कर मेरी ढारस बंधाता है

कलेजा मुंह को आता है, मेरा दिल थरथराता है
करम ! या रब ! अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

मुसल्सल मौत नज़्दीक आ रही है, हाए ! बरबादी
करम ! मौला ! गुनाहों का मरज़ बढ़ता ही जाता है

इलाही ! वासित़ा प्यारे का, मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा
अ़ज़ाबे नार से मुझ को ख़ुदाया ख़ौफ़ आता है

तेरी सुन्नत पे चलता हूं, तो त़ा'ने लोग देते हैं
शहन्शाहे मदीना ! नफ़्स भी बेह़द सताता है

मुबारक बाद देते हो मुझे, तुम भाइयो ह़ज की
मदीना छोड़ने का ग़म मुझे तो खाए जाता है

मसाइब में कभी ह़र्फ़े शिकायत लब पे मत लाना
वोह कर के मुब्तला बन्दों को अपने आज़माता[1] है

नई उम्मीद मिलती है, दिले मायूस को फिर से
मुझे शाहे मदीना ! जब मदीना याद आता है

मुझे लगता है वोह मीठा, मुझे लगता है वोह प्यारा
इमामा सर पे, ज़ुल्फ़ें और दाढ़ी जो सजाता है

ख़ुदा ठन्डी करेगा उस की आंखें ह़श्र में अ़त्तार
यहां जो सोज़े उल्फ़त में जिगर अपना जलाता है

---

1 : अल्लाह इर्शाद फ़रमाता है : وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ (پ۲، البقرہ:۱۵۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से।

ग़मे फ़ुरक़त दिले उ़श्शाक़ को बेह़द रुलाता है

ग़मे फ़ुरक़त दिले उ़श्शाक़ को बेह़द रुलाता है
तड़प उठते हैं जब उन को मदीना याद आता है

मुझे उस के मुक़द्दर पर बड़ा ही रश्क आता है
मदीने की त़रफ़ कोई मुसाफ़िर जब भी जाता है

मुझे उस वक़्त दीवाने पे बेह़द प्यार आता है
ग़मे हिज्रे मदीना में वोह जब आंसू बहाता है

येह बीमारे मदीना है त़बीबो ! तुम न समझोगे
तड़पता है इसे जिस दम मदीना याद आता है

दिखा दो सब्ज़ गुम्बद की बहारें या रसूलल्लाह
न जाने कब मदीने का बुलावा मुझ को आता है

मदद सरकार फ़रमाते हैं दीवाना अगर कोई
तड़प कर या रसूलल्लाह का ना'रा लगाता है

अ़ता कर दो अ़ता कर दो बक़ीए़ पाक में मदफ़न
मुझे गोरे ग़रीबाने वत़न से ख़ौफ़ आता है

नहीं है चांद सूरज की मदीने को कोई ह़ाजत
वहां दिन रात उन का सब्ज़ गुम्बद जगमगाता है

हुकूमत की त़लब दिल में, न ख़्वाहिश ताजे शाही की
नज़र में आ़शिक़ों के बस मदीना ही समाता है

सख़ावत भी तेरे घर की इनायत भी तेरे घर की
तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

इबादत हो तो ऐसी हो, तिलावत हो तो ऐसी हो
सरे शब्बीर तो नेज़े पे भी कु़रआं सुनाता है

बरसती है ख़ुदा की उस पे रह़मत झूम कर अ़त्त़ार
ग़मे मह़बूब में जो कोई दो आंसू बहाता है

मुस्त़फ़ा का करम हो गया है दिल ख़ुशी से मेरा झूमता है

मुस्त़फ़ा का करम हो गया है, दिल ख़ुशी से मेरा झूमता है
इज़्न फिर ह़ाज़िरी का मिला है, क़ाफ़िला सूए त़यबा चला है

कूच का वक़्त अब आ चुका है, क़ाफ़िला फिर मदीने चला है
मुंह दिखाऊंगा किस त़रह़ उन को, पास हुस्ने अ़मल मेरे क्या है !

मैं मदीने के क़ाबिल नहीं हूं, बस नबी ने करम कर दिया है
बोझ इस्यां का सर पर धरा है, बस गुनाहों का ही सिल्सिला है

लूटने को बहारे मदीना, चूमने को गुबारे मदीना
इज़्न से ताजदारे मदीना, तेरे तेरा गदा चल पड़ा है

मुल्तजी तुझ से है इक कमीना, मांगता है येह क़ुफ़्ले मदीना
दे के दे दो इसे इस्तिक़ामत, पस्त हिम्मत येह कम ह़ौसला है

सूए त़यबा सफ़र करने वालो, लब पे क़ुफ़्ले मदीना लगा लो
आंख शर्मो ह़या से झुका लो, बस इसी में तुम्हारा भला है

ह़ाज़िरी को मिले चन्द लम्ह़े बज गए कूच के आह ! डंके
है अ़जब वस्लो फ़ुरक़त का संगम, हिज्र के ग़म में दिल रो रहा है

सय्यिदी मुस्तफ़ा जाने रहमत ! कीजिये मुझ पे चश्मे इनायत
दूर हो जाए दिल की क़सावत[1] तुझ को सिद्दीक़ का वासिता है

या नबी ! मुजरिम आए हुए हैं, बारे इस्यां उठाए हुए हैं
आस तुझ पर लगाए हुए हैं, तेरी रहमत ही का आसरा है

मैं ने जब भी इबादत का सोचा, नफ़्स ने फ़ौरन उस दम दबोचा
नेकियों का नहीं सिल्सिला कुछ, बस गुनाहों में ही दिल फंसा है

है हवस माल की, क़ल्ब भटका, हर न-फ़स[2] ही है बस हुब्बे दुन्या
अपनी उल्फ़त का साग़र पिला दो, या हबीबे ख़ुदा इल्तिजा है

हुब्बे दुन्याए मुर्दार दिल में, कर चुकी घर है सरकार दिल में
तुम जो आ जाओ दिलदार दिल में, बस टली दिल से फिर येह बला है

या नबी ! आप के आशिक़ों को, आप की दीद के तालिबों को
अपना जल्वा दिखा दीजिये ना, इन बिचारों को अरमां बड़ा है

उम्र अत्तार बावन बरस की, है हवस तुझ को दुन्या की फिर भी
अब तू जी जी के कितना जियेगा, वक़्ते रिहलत क़रीब आ चुका है

क़ाफ़िला "चल मदीना" का आक़ा, चल पड़ा जानिबे तयबा मौला
तेरे उश्शाक़ के पीछे पीछे, तेरा अत्तार भी आ रहा है

---

1 : सख़्ती 2 : सांस

जो नबी का ग़ुलाम होता है

(29 रबीउ़ल आख़िर 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ 4-4-2011)

जो नबी का ग़ुलाम होता है क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो कि ख़ौफ़े ख़ुदा से रोता हो क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो ग़मे मुस्त़फ़ा में रोता हो क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो बुरे ख़ातिमे से डरता हो क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो दे नेकी की दा'वत ऐ भाई क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो भी अपनाए "म-दनी इन्आ़मात" क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो भी है "क़ाफ़िलों"[1] का शैदाई क़ाबिले एह़तिराम होता है
जो भी रहता है "म-दनी हुल्ये" में क़ाबिले एह़तिराम होता है
सुन्नतें उन की जो भी अपनाए ह़श्र में शादकाम होता है
दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत ऐ भाई घर में देने से काम होता है
भीड़ में जैसे ह़-जरे अस्वद का दूर से इस्तिलाम होता है
यूं ही उ़श्शाक़ का वत़न रह कर "दूर से भी सलाम होता है"
हाए दूरी को हो गया अ़र्सा कब येह ह़ाज़िर ग़ुलाम होता है

---

1 : या'नी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले।

कब मदीने में ह़ाज़िरी होगी जाने कब मेरा काम होता है
या नबी येह गुलाम कब ह़ाज़िर बहरे अ़र्ज़े सलाम होता है
जो मदीने के ग़म में रोए वोह ह़श्र में शादकाम होता है
जो दुरूदो सलाम पढ़ते हैं उन पे रब का सलाम होता है
क्या दबे दुश्मनों से वोह, ह़ामी जिस का ख़ैरुल अनाम होता है
आज़्माइश है उस की दुन्या में जो यहां नेकनाम होता है
जो हो अल्लाह का वली उस का फ़ैज़ दुन्या में आ़म होता है
जी लगाने की जा नहीं दुन्या किस को ह़ासिल दवाम होता है
दारे फ़ानी में ख़ुश रहे कैसे ! जिस का मुर्दों में नाम होता है
मौत ईमां पे आती है जिस पर फ़ज़्ले रब्बुल अनाम होता है
क़ब्र रोशन उसी की हो जिस पर फ़ज़्ले रब्बुल अनाम होता है
बे सबब बख़्शिश उस की हो जिस पर फ़ज़्ले रब्बुल अनाम होता है
बख़्त वर है मदीने में जिस की उ़म्र का इख़्तिताम होता है
जिस से वोह ख़ुश हों ह़श्र में ह़ासिल उस को कौसर का जाम होता है

देखो अ़त्तार कब मेरा त़यबा
जाने वालों में नाम होता है

तुम्हारा करम या ह़बीबे ख़ुदा है

(मक्कए मुकर्रमा से 4 मुह़र्रमुल ह़राम 1422 सि.हि. को मदीनए मुनव्वरह की ह़ाज़िरी के लिये बस में सुवार होने के बा'द الحمدُلِلّٰه राहे मदीना में येह अश्आ़र तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल हुई)

तुम्हारा करम या ह़बीबे ख़ुदा है मदीने की जानिब चला क़ाफ़िला है

मैं राहे मदीना के कुरबान जाऊं कि इस में सुरूर और मज़ा ही मज़ा है

मदीने में "कुफ़्ले मदीना" लगाऊं करम आप कीजे इरादा मेरा है

इ़बादत से ख़ाली है आ'माल नामा सिवा आंसूओं के मेरे पास क्या है

न क्यूं तुम पे इतराए मुजरिम तुम्हारा यहां तो अ़दू भी अमां पा रहा है

नहीं जानता येह मदीने के आदाब येह तेरा है तेरा भला या बुरा है

मुझे दीजिये अश्कबार आंख आक़ा येह दिल सख़्त, पथ्थर से भी हो गया है

पिला दे छलक्ता हुवा जामे उल्फ़त नज़र तेरी जानिब लगी साक़िया है

मदद के लिये नाखुदा आइये अब सफ़ीना हमारा भंवर में फंसा है

शहा क़ाफ़िले के सभी ज़ाइरों ने मेरे साथ अ़हदे वफ़ा कर लिया है[1]

तुम्हीं लाज अ़हदे वफ़ा की रखोगे कि इब्लीसे मरदूद पीछे लगा है

शफ़ाअ़त की ख़ैरात लेने को अ़त्तार
लिये क़ाफ़िला अ़न्क़रीब आ रहा है

---

1 : "चल मदीना" के क़ाफ़िले के बा'ज़ इस्लामी भाइयों की ख़्वाहिश पर सब ने राहे मदीना में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہ के हाथ पर बैअ़त कर के ता दमे ज़ीस्त **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी **मजलिसे शूरा** के साथ वफ़ादारी का अ़ह्द किया।

क़ल्ब में इश्क़े आल रख्खा है

क़ल्ब में इश्क़े आल रख्खा है
ख़ूब इस को संभाल रख्खा है

ऐसा जूदो नवाल[1] रख्खा है
सब गुलामों को पाल रख्खा है

शुक्र तेरा कि उन की उम्मत में
मुझ को ऐ ज़ुल जलाल रख्खा है

जम्अ़ कर के कभी न सरवर ने
कोई मालो मनाल रख्खा है

हुब्बे दुन्या ने या रसूलल्लाह
मुझ को मुश्किल में डाल रख्खा है

जो भी देखे बने वोह दीवाना
उन में ऐसा जमाल रख्खा है

जल्द लीजे ख़बर गुनाहों के
दर्द ने कर निढाल रख्खा है

ऐसा दो इश्क़ सब कहें इस के
दिल में सोज़े बिलाल रख्खा है

नारे दोज़ख़ जलाएगी क्यूंकर
दिल में इश्क़ उन का डाल रख्खा है

हूं गुनहगार पर गुलामों में
तुम ने अब भी बहा़ल रख्खा है

मैं निसार आप ने सदा मेरा
हर क़दम पर ख़याल रख्खा है

मैं जहन्नम में गिर गया होता
आप ही ने संभाल रख्खा है

مدینہ

1 : बख़्शिश, मेह्रबानी

मुस्तफ़ा ने हमारे ऐबों पर पर्दा दामन का डाल रख्खा है
शुक्रिया तुम ने आल का सदक़ा मेरी झोली में डाल रख्खा है
"चल मदीना" की भीक मिल जाए आ़शिक़ों ने सुवाल रख्खा है
दे दो ज़ादे सफ़र मदीने का साइलों ने सुवाल रख्खा है
देखो दीवानो ! सब्ज़ गुम्बद में कैसा हुस्नो जमाल रख्खा है
क्यूं जहन्नम में जाऊं सीने में इ़श्क़े अस्ह़ाबो आल रख्खा है
मैं कभी का भटक गया होता आप ही ने संभाल रख्खा है
आ़शिक़े माल इस में सोच आख़िर क्या उ़रूजो कमाल रख्खा है ?
तुझ को मिल जाएगा जो क़िस्मत में तेरी, रिज़्क़े ह़लाल रख्खा है
इस जहां के कमाल में बेशक इक न इक दिन ज़वाल[1] रख्खा है
तुझ से आक़ा तेरे सुवाली ने मग़्फ़िरत का सुवाल रख्खा है
सुन लो शैतां ने हर सू शह्वत का ख़ूब फैला के जाल रख्खा है
जन्नती है वोह जिस ने सुन्नत के ख़ुद को सांचे में ढाल रख्खा है

مدینہ

1 : तरक़्क़ी जाती रहना

जो है गुस्ताख़े मुस्त़फ़ा उस को मैं ने दिल से निकाल रख्खा है
किस क़दर बख़्त वर है वोह मोमिन जिस के पास उन का बाल रख्खा है
मुफ़्लिसी का मैं क्यूं करूं शिक्वा ने'मतों से निहाल[1] रख्खा है
माल की ह़िर्स मत करो इस में दो[2] जहां का वबाल रख्खा है

येह करम ही तो उन का है अ़त्त़ार
तुझ निकम्मे को पाल रख्खा है

वस्वसे के लफ़्ज़ी मा'ना

"वस्वसा" के लुग़वी मा'ना हैं : "धीमी आवाज़" शरीअ़त में बुरे ख़यालात और फ़ासिद फ़िक्र (या'नी बुरी सोच) को **वस्वसा** कहते हैं। (اشعہ ج۱ص۳۰۰) "तफ़्सीरे ब-ग़वी" में है : **वस्वसा** उस बात को कहते हैं जो शैत़ान इन्सान के दिल में डालता है। (تفسیر بغوی ج۴،۲ص۱۲۷،۵۱۸)

1 : मालामाल, ख़ुशह़ाल

मुबारक हो ह़बीबे रब्बे अक्बर आने वाला है

मुबारक हो ह़बीबे रब्बे अक्बर आने वाला है
मुबारक ! अम्बिया का आज अफ़्सर आने वाला है

अंधेरों में भटक्ते फिरने वालों को मुबारक हो
तुम्हें ह़क़ से मिलाने आज रहबर आने वाला है

मुबारक बद नसीबों को मुबारक हो ग़रीबों को
जहां में बे बसों का साया गुस्तर[1] आने वाला है

गुनहगारो न घबराओ सियह कारो न ग़म खाओ
सुनो मुज़्दा[2] शफ़ीए़ रोज़े मह़शर आने वाला है

लिये परचम उतर आए हैं जिब्रील आस्मां से आज
जहां में आज मौला का पयम्बर आने वाला है

करो घर घर चराग़ां सब्ज़ परचम आज लहराओ
मचाओ मरह़बा की धूम सरवर आने वाला है

1 : साया करने वाला 2 : खुश ख़बरी

अगर न आज झूमोगे तो कब झूमोगे दीवानो !
मचल जाओ तुम्हारा आज यावर आने वाला है

तरावत[1] क्यूं न हो ह़ासिल मेरे क़ल्बो जिगर को आज
जहां में बह़रे रह़मत का शनावर आने वाला है

दिले ग़मगीन को मिल जाएगा सामान राह़त का
सुरूरे दिल, क़रारे जाने मुज़्त़र आने वाला है

जो है सरदार, आ़लम के सभी सज्दा गुज़ारों का
ख़ुदा का आज वोह सच्चा सनागर आने वाला है

मुबारक ग़म के मारो ! ग़म ग़लत़ हो जाएंगे सारे
ह़बीबे ह़क़ मुदावा[2] ग़म का ले कर आने वाला है

जहां में ज़ुल्मतों का चाक होगा आज से सीना
ख़ुदा के फ़ज़्ल से माहे मुनव्वर आने वाला है

---

1 : ताज़गी, ठन्डक 2 : इलाज

بِحَمْدِ اللّٰه ईमां अब तू मेरा ले नहीं सकता
अरे चल भाग शैत़ां मेरा यावर आने वाला है

ख़बर है अब्रे रह़मत आज क्यूं दुन्या पे छाए हैं
जहां में रह़मतों का आज पैकर आने वाला है

मुबारक हो ह़लीमा सा'दिया तुझ को मुबारक हो
तेरी गोदी में कुल आ़लम का सरवर आने वाला है

उठो ता'ज़ीम की ख़ाति़र कि घर में आमिना के अब
विलादत का वोह लम्ह़ा कैफ़ आवर आने वाला है

उठाओ सब्ज़ परचम और चलो सब आमिना के घर
लुटाने रह़मतें ह़क़ का पयम्बर आने वाला है

तसल्ली तो रखो सैराब भी हो जाओगे अ़त्ता़र
छलक्ता जाम ले कर शाहे कौसर आने वाला है

हुई उम्मीदें बार आवर मदीना आने वाला है

हुई उम्मीदें बार आवर मदीना आने वाला है
झुका लो अब अदब से सर मदीना आने वाला है

पिला दे साक़िया साग़र मदीना आने वाला है
अ़ता अब कैफ़ो मस्ती कर मदीना आने वाला है

अ़ता हो मुझ को चश्मे तर मुझे दे दो दिले मुज़्त़र
ज़रा जल्दी मेरे सरवर ! मदीना आने वाला है

तड़पने का क़रीना दो मुझे दो चाक सीना दो
पए शब्बीर और शब्बर मदीना आने वाला है

मुबारक हो गुनहगारो ! ख़त़ाकारो ! सियह कारो
तुम्हें अब आ़सियो ! क्या डर मदीना आने वाला है

मदीने के मुसाफ़िर पर छमाछम रह़मतों की अब
है बारिश ख़ूब ज़ोरों पर मदीना आने वाला है

पढ़ो ऐ ज़ाइरो ! मिल कर दुरूद उन पर सलाम उन पर
लुटाओ अश्क के गौहर मदीना आने वाला है

ठहर जा रूहे मुज़्तर तू निकल जाना मदीने में
खुदारा अब न जल्दी कर मदीना आने वाला है

दुरूदे पाक के गजरे सलामो ना'त के तोह़फ़े
बढ़ो ऐ ज़ाइरो ! ले कर मदीना आने वाला है

खुशी से ज़ाइरो ! झूमो फ़ज़ाएं झूम कर चूमो
बस आया रौज़ए अन्वर मदीना आने वाला है

निकाल अब पाउं से जूता क़रीबे त़यबा तू पहुंचा
ऐ ज़ाइर ! होश अब तो कर मदीना आने वाला है

वोह बरसा नूर का झाला समां है ख़ूब उज्याला
है कैसा दिलकुशा मन्ज़र मदीना आने वाला है

मुबारक ! ग़म के मारों को मुबारक ! बे सहारों को
खुले हैं रह़मतों के दर मदीना आने वाला है

फ़ज़ाएं भी मुनव्वर हैं, हवाएं भी मुअ़त्त़र हैं
समां रंगीनो कैफ़ आवर मदीना आने वाला है

मेरी हो आरज़ू पूरी मुझे मिल जाए मन्ज़ूरी
बक़ीए़ पाक की सरवर मदीना आने वाला है

वसीला चार यारों का उहुद के जां निसारों का
दिखा दो इक झलक सरवर मदीना आने वाला है

निकालो, मुस्त़फ़ा प्यारे ! ख़याले ग़ैर अब सारे
हमारे क़ल्ब से बाहर मदीना आने वाला है

उठो ता'ज़ीम की ख़ात़िर पढ़ो तक्रीम की ख़ात़िर
सलाम ऐ ज़ाइरो ! मिल कर मदीना आने वाला है

उठो अ़त्त़ार अब उठ्ठो ! ज़रा वोह ग़ौर से देखो
है छाया नूर हर शै पर मदीना आने वाला है

मुझे उस की क़िस्मत पे रश्क आ रहा है

मुझे उस की क़िस्मत पे रश्क आ रहा है
मदीने का जिस को बुलावा मिला है

येह जो हिचकियां बांध कर रो रहा है
ग़मे हिज्र ने इस को तड़पा दिया है

तबीबो ! तुम्हारा यहां काम क्या है !
कि येह तो मरीज़े हबीबे खुदा है

तेरे आशिक़ों को क़रार आए क्यूंकर ?
मदीने से दूरी बड़ी जां गुज़ा है

बुला लो ! इसी साल आक़ा बुला लो !
शहा ! हज का मौसिम क़रीब आ रहा है

तेरे दर के होते कहां जाएं आक़ा
कि तू ही ग़रीबों का इक आसरा है

हमारी तमन्नाएं बर आएं मौला !
हमारा तो सब हाल तुम पर खुला है

सफ़ीना कभी का मेरा डूब जाता
तेरी रहमतों ने सहारा दिया है

निगाहे करम हाले ख़स्ता जिगर पर
तसल्सुल गुनह का बढ़ा जा रहा है

शिफ़ा दो गुनाहों के अमराज़ से अब
कि बीमारे इस्यां मरा जा रहा है

गमे दो[2] जहां से छुड़ा के खुदाया
गमे मुस्तफ़ा दे येही इल्तिजा है

मदीना हो सीना तो सीना मदीना
मेरी ज़िन्दगी का येही मुद्दआ है

रहे विर्दे लब बस मदीना मदीना
येही आरज़ू या रसूले खुदा है

मुबल्लिग़ बनूं काश ! मैं सुन्नतों का
सदा दीं की ख़िदमत करूं येह दुआ है

हबीबे खुदा आ के चमकाइये अब
अंधेरा मेरी क़ब्र में छा रहा है

पए पीरो मुर्शिद बक़ीए मुबारक
अ़ता हो येह टूटे दिलों की सदा है

शहा ! मुस्कुराते हुए आ भी जाओ !
कि दिल शोरे महशर से घबरा रहा है

शहा ! अपनी जन्नत में क़दमों में रखना
येही आ़जिज़ाना मेरी इल्तिजा है

न क़दमों से अ़त्तार को दूर करना
येह तेरा गदा है भला या बुरा है

तुम्हारे मुक़द्दर पे रश्क आ रहा है

(नवासियों और उन के मां बाप के अ़ज़्मे मदीना के पुरकैफ़ मौक़अ़ पर मन्ज़ूम दुआ़एं और नेकी की दा'वत)
(5 शव्वालुल मुकर्रम 1434 हि. 12.09.13)

तुम्हारे मुक़द्दर पे रश्क आ रहा है मदीने का तुम को बुलावा मिला है
ख़ुदा और नबी का करम हो गया है सफ़र सूए त़यबा मेरी आल का है
सभी बच्चियों के ब हमराह मां बाप चला ह़ज को नन्हा सा येह क़ाफ़िला है
ख़ुदाए मुह़म्मद हो ह़ामी व नासिर सफ़र ख़ैरियत से हो मेरी दुआ़ है
ज़बान और आंखों का क़ुफ़्ले मदीना लगा लो तुम्हारा इसी में भला है
तुम एह़राम में ख़ूब लब्बैक पढ़ना सवाब इस में ला-रैब ह़द से सिवा है
ह़िजाज़े मुक़द्दस की गलियों में हरगिज़ न तुम थूकना येह मेरी इल्तिजा है
अदब ख़ूब मक्के मदीने का करना येही औलिया का त़रीक़ा रहा है
जो है बा अदब वोह बड़ा बा नसीब और जो है बे अदब वोह निहायत बुरा है
नज़र प्यारे का'बे पे पहली पड़े जब तो रो रो के करना दुआ़ मश्वरा है
वहां ख़ूब रो रो के करना दुआ़एं कि दर हर घड़ी रह़मतों का खुला है

नज़र सब्ज़ गुम्बद को जिस वक़्त चूमे अदब से झुका लेना सर इल्तिजा है

दुरूदो सलाम और ना'तों की धूमें मचाना कि येह रूहो दिल की गिज़ा है

इबादत रियाज़त तिलावत से ग़फ़्लत न करना कि मौक़अ़ सुनहरी मिला है

मदीने में मक्के में इक एक कुरआं जो करता है ख़त्म उस की तो बात क्या है!

ख़रीदारियों में तुम अनमोल अवक़ात न हरगिज़ गंवाना मेरा मश्वरा है

बहुत खाने पीने से परहेज़ करना कि बिस्यार ख़ोरी में नुक़्सां बड़ा है

परेशानियों में ज़बां बन्द रखना किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

कोई झाड़ दे तब भी नरमी बरत्ना किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

गो आफ़ातो अमराज़ डेरा जमाएं किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

तवाफ़ो सई गर्चे तुम को थका दें किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

मिना और अ़रफ़ात में भीड़ होगी किये जाना सब्र अज्र इस में बड़ा है

दुआओं में अ़त्तार को याद रखना
सलाम उन से कहना येही इल्तिजा है

अफ़्सोस वक़्ते रुख़्सत नज़्दीक आ रहा है

अफ़्सोस वक़्ते रुख़्सत नज़्दीक आ रहा है
इक हूक उठ रही है दिल बैठा जा रहा है

दिल में ख़ुशी थी कैसी जब मैं चला था घर से
दिल ग़म के गहरे दरिया में डूबा जा रहा है

है फ़ुरक़ते मदीना से चाक चाक सीना
अब्रे सियाह ग़म का अब दिल पे छा रहा है

आंख अश्कबार है अब दिल बे क़रार है अब
दिल को जुदाई का ग़म अब ख़ूं रुला रहा है

क्यूं सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद पर हो गया न क़ुरबां
ऐ ज़ाइरे मदीना ! तू भूल खा रहा है

अफ़्सोस ! चन्द घड़ियां त़यबा की रह गई हैं
दिल में जुदाई का ग़म तूफ़ां मचा रहा है

कुछ भी न कर सका हूं हाए अदब यहां का
येह ग़म मेरे कलेजे को काट खा रहा है

अब रूह़ भी है मग़मूम और जान भी है ह़ैरां
बादल ग़मो अलम का हर सम्त छा रहा है

मौत आप की गली की बेहतर है ज़िन्दगी से
हाए मुक़द्दर इन का दर क्यूं छुड़ा रहा है

अफ़्सोस चल दिया है अब क़ाफ़िला हमारा
हर एक ग़म का मारा आंसू बहा रहा है

दिल ख़ून रो रहा है आंसू छलक रहे हैं
मेरी नज़र से त़यबा अब छुपता जा रहा है

आह ! अल फ़िराक़ आक़ा ! आह ! अल वदाअ़ मौला
अब छोड़ कर मदीना अ़त्तार जा रहा है

मुझे बुला लो शहे मदीना
येह हिज्र का ग़म सता रहा है

मुझे बुला लो शहे मदीना, येह हिज्र का ग़म सता रहा है
मैं दर पे आऊं येही तो अरमान दिल में तूफ़ां मचा रहा है

है सहना दुश्वार येह जुदाई, मेरी हो दर तक शहा रसाई
नहीं भरोसा है ज़िन्दगी का, येह दिल मेरा डूबा जा रहा है

नहीं तमन्नाए मालो दौलत, नहीं मुझे ख़्वाहिशे हुकूमत
मेरी नज़र में ह़सीनो दिलकश, वोह सब्ज़ गुम्बद समा रहा है

येही तो ह़सरत रही है दिल में, मुझे अजल भी वहीं पे आए
जहां पे आक़ा है प्यारा रौज़ा, येही तो अरमां सदा रहा है

है झोली ख़ाली ऐ शाहे आ़ली खड़ा है दर पर तेरा सुवाली
ग़रीब मंगता मुरादें लेने, को हाथ गन्दे बढ़ा रहा है

ऐ बे नवाओ ! गदाओ आओ !, पसारे दामन सफ़ें बनाओ
ख़ज़ाना रह़मत का बांटता वोह, ख़ुदा का मह़बूब आ रहा है

गदाए दर जां बलब है आक़ा, निक़ाब उठाओ दिखा दो जल्वा
हो तिश्नए दीद पर इनायत, जहां से प्यासा ही जा रहा है

मैं गोरे तीरह में आ पड़ा हूं, फ़िरिश्ते भी आ चुके हैं सर पर
चले गए नाज़ उठाने वाले, तेरा ही अब आसरा रहा है

है नफ़्सी नफ़्सी चहार जानिब, निसार जाऊं कहां हो मौला
छुपा लो दामन में प्यारे आक़ा, येह शोरे महशर डरा रहा है

ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार बख़्श दे अब हबीब की लाज रख ही ले अब
हमारा ग़म ख़्वार फ़िक्रे उम्मत, में देख आंसू बहा रहा है

सबा जो फैरा हो कूए जानां, तो ग़मज़दा का सलाम कहना
येह अ़र्ज़ करना ग़रीब अ़त्तार कब मदीने को आ रहा है

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

हदीसे पाक में है "जिस शख़्स ने गुस्सा ज़ब्त कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह **गुस्सा** नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।"
(الجامع الصغیر ص ٥٤١ حدیث ٨٩٩٧)

नूर वाला आया है हां नूर ले कर आया है

(येह कलामे नूर 19 रबीउ़ल अव्वल 1432 सि.हि. को मौज़ूं किया)

नूर वाला आया है हां नूर ले कर आया है[1]
सारे आ़लम में येह देखो नूर कैसा छाया है

चार जानिब रोशनी है सब समां है नूर नूर
ह़क़ ने पैदा आज अपने प्यारे को फ़रमाया है

आओ आओ नूर की ख़ैरात लेने को चलें
नूर वाला आमिना बीबी के घर में आया है

आगे पीछे दाएं बाएं नूर है चारों त़रफ़
आ गया है नूर वाला, नूर वाला आया है

हो रही हैं चार जानिब बारिशें अन्वार की
छा गई नक्हत गुलों पर हर शजर इठलाया है

---

1 : मत़्लअ़ किसी ना मा'लूम शाइर का है।

ज़र्रा ज़र्रा जग-मगाया हर त़रफ़ आया निखार
गोया सारी ही फ़ज़ा को नूर में नहलाया है

नूर वाले के रुख़े रोशन की क्या ता'रीफ़ हो
चेह्‌रए अन्वर के आगे चांद भी शरमाया है

छत पे का'बे की उतर कर हुक्मे रब्बे पाक से
ह़ज़रते जिब्रील ने झन्डा वहां लहराया है

चार सू छाई हुई थीं कुफ़्र की तारीकियां
तुम ने आ कर नूर से सन्सार को चमकाया है

जूं ही आमद माहे मीलादे मुबारक की हुई
अहले ईमां झूम उठे शैत़ां को गुस्सा आया है

जब अंधेरे घर में आए नूर से घर भर गया
गुमशुदा सूई को बीबी आ़इशा ने पाया है

ऐ ख़ुदाए दो जहां एह़सान तेरा है बड़ा

तूने पैदा उन की उम्मत में हमें फ़रमाया है

नूर वाले हम गुनहगारों के घर भी रोशनी

आ के कर दो, नूर तुम ने हर जगह फैलाया है

अपना जाना और है उन का बुलाना है दिगर

ख़ुश नसीबी उन की जिन को शाह ने बुलवाया है

मुझ को ढारस है ग़ुलामे सय्यिदे अबरार हूं

मा सिवा पल्ले में मेरे कुछ नहीं सरमाया है

नूर वाले ! अब ख़ुदारा मुस्कुराते आइये

रोशनी हो क़ब्र में हाए ! अंधेरा छाया है

सुन ले शैत़ां तू दबा सकता नहीं अ़त्त़ार को

दो जहां में इस पे मीठे मुस्त़फ़ा का साया है

मरह़बा ! मुक़द्दर फिर आज मुस्कुराया है

मरह़बा ! मुक़द्दर फिर आज मुस्कुराया है
फिर मुझे मदीने में शाह ने बुलाया है

खू़ब मस्जिदे न-बवी का ह़सीन है मन्ज़र
सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद पर कैसा नूर छाया है

मेरी गन्दी आंखों को इन नजिस निगाहों को
शुक्रिया मदीने का बाग़ फिर दिखाया है

मुझ सा पापी व बदकार और आप का दरबार !
बिल यक़ीन मुझ पर भी रह़मतों का साया है

या नबी ! शिफ़ा दे दो अज़ पए रज़ा दे दो
खू़ब ज़ोर, इस्यां के रोग[1] ने दिखाया है

जिस को सब ने ठुकराया और दिल को तड़पाया
सदक़े जाऊं उस को भी आप ने निभाया है

---

1 : बीमारी

नफ़रतों के दलदल में दुश्मनों के चुंगल में
जब कभी फंसा हूं मैं आप ने बचाया है

आ़दतें गुनाहों की हाए ! कम नहीं होतीं
आह ! नफ़्सो शैतां ने ज़ोर से दबाया है

वारी जाऊं मैं तुम पर आ भी जाओ अब सरवर !
कोई दम का हूं मेहमां दम लबों पर आया है

ह़क़ ने कर दिया मालिक तुम को सब ख़ज़ानों का
तुम ने ही खिलाया है तुम ने ही पिलाया है

क्यूं फ़िदा न हो अ़त्तार आप पर शहे अबरार
इस को अपने दामन में आप ने छुपाया है

आप के करम से येह धूम है क़ियामत में
देखो देखो अ़त्तार अब कितना ख़ुश ख़ुश आया है

ऐ ख़ाके मदीना तेरा कहना क्या है

ऐ ख़ाके मदीना ! तेरा कहना क्या है तुझे क़ुर्बे शाहे मदीना मिला है
शरफ़ मुस्त़फ़ा के क़दम चूमने का तुझे बारहा ख़ाके त़यबा मिला है
मुअत्त़र है कितनी तू ख़ाके मदीना कि ख़ुश्बूओं से ज़र्रा ज़र्रा बसा है
लगाओ तुम आंखों में ख़ाके मदीना कोई इस से बेहतर भी सुरमा भला है !
मरीज़ो ! उठा कर के ख़ाके मदीना को ले जाओ ! इस में यक़ीनन शिफ़ा[1] है
मदीने की मिट्टी ज़रा सी उठा कर पियो घोल कर हर मरज़ की दवा है
अ़क़ीदत से ख़ाके मदीना बदन पर मलो तुम हर इक दर्द की येह दवा है
तुझे वासित़ा ख़ाके त़यबा का या रब ! अ़त़ा कर ग़मे मुस्त़फ़ा इल्तिजा है
हमें मौत ख़ाके मदीना पर आए इलाही ! येह तुझ से हमारी दुआ़ है
मेरी ना'श पर आप ख़ाके मदीना छिड़कना मेरे साथियो ! इल्तिजा है
पसे मर्ग मौला तू मिट्टी हमारी मिला ख़ाके त़यबा में येह इल्तिजा है

बदन पर है अ़त्त़ार के ख़ाके त़यबा
परे हट जहन्नम तेरा काम क्या है

مـــــــــــــــــــــــــــــــــــــــدينه

1 : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ شِفَاءٌ مِّنَ الْجُذَامِ या'नी मदीनए मुनव्वरह की ख़ाके पाक जुज़ाम के लिये मूजिबे शिफ़ा है। (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٣٥٥ حديث ٥٧٥٣) हज़रते अ़ल्लामा क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعظِیْمًا की एक खुसूसिय्यत येह भी है कि इस की मुबारक ख़ाक कोढ़ और सफ़ेद दाग़ की बीमारियों बल्कि हर **बीमारी** से शिफ़ा है। (اَلْمَواھِبُ اللَّدُنِیة لِلْقَسْطَلانی ج٣ص ٤٣١)

ज़र्रे ज़र्रे पे छाया हुवा नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

ज़र्रे ज़र्रे पे छाया हुवा नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है
नूर से सब फ़ज़ा इस की मा'मूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

नूर फूलों में है नूर कलियों में है, नूर बाज़ार में नूर गलियों में है
दश्तो कोहसार पर नूर ही नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

हर त़रफ़ रह़मतों की है छाई घटा, महकी महकी है क्या ख़ूब म-दनी फ़ज़ा
ज़र्रे ज़र्रे पे क़ुरबां यहां तूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

क्या बयां दश्ते त़यबा की हों ख़ूबियां, फूल तो फूल कांटे भी दिलकश यहां
पत्ते पत्ते पे छाया हुवा नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

कैफ़ो मस्ती में डूबे हुए रात दिन, भीनी ख़ुश्बू से महके हुए रात दिन
जिस को देखो यहां आ के मसरूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

बाग़े त़यबा में रहती है हर दम बहार, आ के देखो यहां का समां ख़ुश गवार
सब फ़ज़ा इस की ख़ुश्बू से भरपूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

ग़मज़दा जो भी दरबार में आ गया, शाह की वोह निगाहे करम पा गया
सारा रन्जो अलम उस का काफ़ूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

देखो तयबा को कैसी फ़ज़ीलत मिली, क़ब्रे अन्वर इसी में बनाई गई
गुम्बदे सब्ज़ हर आंख का नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

सब्ज़ गुम्बद के जल्वों पे क़ुरबान जां, बल्कि क़ुरबान है हुस्ने कौनो मकां
हर मनारे पे छाया हुवा नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

ख़ाके तयबा में रख्खी है रब ने शिफ़ा, सारी बीमारियों की है इस में दवा
इस की ब-र-कत से हर इक मरज़ दूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

आस मुझ को तुम्हारे करम की शहा, भीक दे दो मुझे अपने ग़म की शहा !
कह दो आक़ा ! तेरी अ़र्ज़ मन्ज़ूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

फिर करम इस पे सरकार का हो गया, बख़्त बेदार अ़त्तार का हो गया
रू बरू रौज़ए पाक का नूर है, मेरे मीठे मदीने की क्या बात है

मुरतद की ता'रीफ़

जो इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो **ज़रूरिय्याते दीन** से हो। या'नी ज़बान से **कलिमए कुफ़्र** बके जिस में तावीले सहीह़ की गुन्जाइश न हो। यूहीं बा'ज़ अफ़्आ़ल (काम) भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है म-सलन बुत को सज्दा करना, मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) को **नजासत की जगह फेंक देना।** (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 9, स. 173, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना, कराची)

है आज जश्ने विलादत नबी की आमद है

(14 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1428 सि.हि. को येह कलाम क़लम बन्द किया गया)

है आज जश्ने विलादत नबी की आमद है
जलाओ शम्ए महब्बत नबी की आमद है

जहां में बजती है नौबत नबी की आमद है
सुनाओ सब को बिशारत नबी की आमद है

हुई खुदा की इनायत नबी की आमद है
सजाए ताजे शफ़ाअत नबी की आमद है

गुलों पे छा गई नुज़्हत नबी की आमद है
चमन में फैली है नक्हत नबी की आमद है

है इक अ़जीब सी फ़रहत नबी की आमद है
दिलों पे त़ारी मसर्रत नबी की आमद है

न क्यूं हो वज्द में क़िस्मत नबी की आमद है
नहीं खुशी की निहायत नबी की आमद है

इलाही ! कर लूं ज़ियारत नबी की आमद है
अ़त़ा हो चश्मे बसीरत नबी की आमद है

है खूब बारिशे रह़मत नबी की आमद है
नहा लो पाओगे ब-र-कत नबी की आमद है

हुवा है वा दरे रह़मत नबी की आमद है
खुदा से मांग लो जन्नत नबी की आमद है

बराए रुश्दो हिदायत नबी की आमद है
सुनाने नेकी की दा'वत नबी की आमद है

अ़दू पे छाई है हैबत नबी की आमद है
मिली है ख़ाक में नख़्वत नबी की आमद है

बुतों की आ गई शामत नबी की आमद है
मिटेगी कुफ़्र की ज़ुल्मत नबी की आमद है

खुशी की आ गई साअ़त नबी की आमद है
मनाओ जश्ने विलादत नबी की आमद है

सजाओ घर को चरागां करो मह़ल्ले में
मनाओ जश्ने विलादत नबी की आमद है

मचाओ धूम सभी मरह़बा के ना'रों की
मनाओ जश्ने विलादत नबी की आमद है

सजा दो कूचा व बाज़ार सब्ज़ झन्डों से
मनाओ जश्ने विलादत नबी की आमद है

पुकारो ज़ोर से दीवानो ! या रसूलल्लाह
मिलेगी क़ल्ब को राह़त नबी की आमद है

उठो अदब से सलातो सलाम पढ़ते हैं
अब आया वक़्ते विलादत नबी की आमद है

पढ़ो सलाम करो डूब कर मह़ब्बत में
दुरूदे पाक की कसरत नबी की आमद है

करम के दर हैं खुले झूम कर बरसती है
खुदाए पाक की रह़मत नबी की आमद है

करो खुदा से दुआ़एं न होगी मायूसी
खुला है बाबे इजाबत नबी की आमद है

है शाद शाद मुसल्मां मगर अ़दू नाखुश
है टूटी उस पे क़ियामत नबी की आमद है

जुलूसे जश्ने विलादत में ना'त की धूमें
मचाओ है येह सआ़दत नबी की आमद है

खुशी से आज तो लोटूंगा खूब मचलूंगा
जहां में माहे रिसालत नबी की आमद है

घर आमिना के चलो चल के अ़र्ज़ करते हैं
हमें हो भीक इनायत नबी की आमद है

ऐ ग़मज़दो ! हो मुबारक कि ग़म ग़लत होंगे
मिलेगी अब तुम्हें राहत नबी की आमद है

ख़ुशी से फूले समाते नहीं हैं उ़श्शाक़ आज
है छाई रुख़ पे बशाशत नबी की आमद है

करो गुनाहों से तौबा तो ख़ुश ख़ुदा होगा
बहाओ अश्के नदामत नबी की आमद है

इलाही ! जश्ने विलादत का वासिता हम को
अ़ज़ाब से दे बराअत नबी की आमद है

बढ़ा के कासए दिल आज मांग लो मंगतो
तुम उन से उन की महब्बत नबी की आमद है

न मांगने में कसर साइलो कोई रखना
जो चाहो मांग लो ने'मत नबी की आमद है

सभी नबी सफ़ें बांधे खड़े हैं अक़्सा में
हुई बराए इमामत नबी की आमद है

अंधेरी गोर में घबराओ मत गुनहगारो
लो कर लो तुम भी ज़ियारत नबी की आमद है

जो ख़ुश नसीब हैं वोह अपने रब की रह़मत से
पियेंगे दीद का शरबत नबी की आमद है

गुनाहगारो लिपट जाओ आज क़दमों से
करम से पाओगे जन्नत नबी की आमद है

अंधेरा घुप था चकाचौंद हो गई यकदम
बि फ़ज़्लिही मेरी तुरबत नबी की आमद है

करम की बारिशें होंगी ऐ मुजरिमो तुम पर
ज़रा भी आज डरो मत नबी की आमद है

फ़िरिश्तगाने अ़ज़ाब अब तो छोड़ दो मुझ को
हुई बराए शफ़ाअ़त नबी की आमद है

लिपट के दामने रह़मत से क़ब्र में अ़त्तार
निकालो आज तो ह़सरत नबी की आमद है

या रसूलल्लाह ! मुजरिम ह़ाज़िरे दरबार है

या रसूलल्लाह ! मुजरिम ह़ाज़िरे दरबार है
नेकियां पल्ले नहीं सर पर गुनह का बार है

नामए आ'माल में कोई नहीं हुस्ने अ़मल
पास दौलत नेकियों की कुछ नहीं नादार है

तुम शहे अबरार येह सब से बड़ा इ़स्यां शिआ़र
यूं शफ़ाअ़त का येही सब से बड़ा ह़क़दार है

कर दो मालामाल आक़ा दौलते अख़्लाक़ से
ख़ुल्क़ की दौलत से येह मह़रूमो बद गुफ़्तार है

इस की आंखें पाक कर के जल्वए ज़ैबा दिखा
एक मुद्दत से येह तेरा त़ालिबे दीदार है

गुम्बदे ख़ज़्रा पे आक़ा जां मेरी क़ुरबान हो
मेरी देरीना येही ह़सरत शहे अबरार है

मुस्कुराते आओ आक़ा आ के कल्मा भी पढ़ाओ
हो करम शाहे मदीना ! जां बलब बीमार है

आफ़तों ने घेर रख्खा है शहा हर सम्त से
मुल्तजी चश्मे करम का बे कसो नाचार है

जो तेरे दर पर झुका वोह सर बुलन्दी पा गया
जो अकड़ कर रह गया बेशक ज़लीलो ख़्वार है

दुश्मनों के ज़ुल्म ह़द से भी तजावुज़ कर गए
आप से फ़रियाद मौला ह़ैदरे कर्रार है

क़ल्बे मुज़्त़र चश्मे तर सोज़े जिगर सीना तपां
त़ालिबे आहो फ़ुग़ां जाने जहां अ़त्तार है

सब गुनहगार इक त़रफ़ अ़त्तार अकेला इक त़रफ़
मुजरिमों में मुन्तख़ब मुजरिम येही अ़त्तार है

जो भी सरकार का आ़शिक़े ज़ार है
उस की ठोकर पे दौलत का अम्बार है

जो भी सरकार का आ़शिक़े ज़ार है उस की ठोकर पे दौलत का अम्बार है
सल्त़नत से उसे क्या सरोकार है वासिते़ इक्तिदार उस के बेकार है
जो कि दीवानए शाहे अबरार है जिस का दिल उन की उल्फ़त से सरशार है
उन की सुन्नत का जो आईना दार है बस वोही तो जहां में समझ दार है
आ-तशे शौक़ में काश ! जलता रहूं और ख़याले मदीना में खोया रहूं
बस "मदीना मदीना" ही करता रहूं येह दुआ मेरी ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार है
दूर दुन्या के हो जाएं रन्जो अलम मुझ को मिल जाए मीठे मदीने का ग़म
हो करम हो करम या ख़ुदा हो करम ! वासिता़ उस का जो शाहे अबरार है
आह ! इस्यां के तूफ़ां में जाने चमन फंस गया है सफ़ीना ऐ शाहे ज़मन
बस तुम्हीं एक उम्मीद की हो किरन तुम जो चाहो तो बेड़ा मेरा पार है
रो रहा है येह जो हिचकियां बांध कर याद आया है इस को नबी का नगर
क्या करोगे त़बीबो ! इसे देख कर छोड़ दो येह मदीने का बीमार है
मीठे मीठे मदीने की महकी फ़ज़ा हर मुसल्मान को या इलाही ! दिखा
उस शहे करबला का तुझे वासिता़ जो जवानाने जन्नत का सरदार है
आह ! रन्जो अलम की नहीं कोई ह़द काम करती नहीं अब तो अ़क़्लो ख़िरद

अल मदद ऐ मेरे रहनुमा अल मदद
पाउं ज़ख़्मी हैं और राह पुरख़ार है

मुझ को सोज़े बिलाल और सोज़े रज़ा
दे दो सोज़े उवैस और सोज़े ज़िया

वासिता तुझ को आक़ा उसी ग़ौस का
औलिया का जो सुल्तानो सरदार है

भर के जाते हैं मंगते जहां झोलियां
भूल जाते हैं ग़म, ग़म के मारे जहां

जिस जगह दुश्मनों ने भी पाई अमां
मेरे मीठे नबी का वोह दरबार है

वोह ह़बीबे ख़ुदा सरवरे इन्सो जां
जिस के ज़ेरे तसर्रुफ़ हैं दोनों[2] जहां

उस पे कुरबान दिल उस पे कुरबान जां
जो ख़ुदा की ख़ुदाई का मुख़्तार है

ऐ मुक़द्दर की रूठी हवाओ सुनो !
ह़ाले दिल पर न यूं मुस्कुराओ सुनो !

आंधियो ! गर्दिशो ! तुम भी आओ सुनो !
मुस्तफ़ा मेरा ह़ामी व ग़म ख़्वार है

टूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर
ऐ मुबल्लिग़ न तू डगमगा सब्र कर

लब पे ह़र्फ़े शिकायत न ला सब्र कर
हां येही सुन्नते शाहे अबरार है

या ह़बीबे ख़ुदा मुझ पे चश्मे अ़ता
कर दो तुम अज़ पए ग़ौसो अह़मद रज़ा

ले कर उम्मीदे अ़फ़्वो करम सरवरा
दर पे ह़ाज़िर तुम्हारा गुनहगार है

ख़्वाह दौलत न दे कोई सरवत[1] न दे
चाहे इ़ज़्ज़त न दे कोई शोहरत न दे

तख़्ते शाही न दे और हुकूमत न दे
तुझ से अ़त्तार तेरा त़लब गार है

1 : तवंगरी, दौलत मन्दी

ऐ काश ! शबे तन्हाई में फ़ुरक़त का अलम तड़पाता रहे

ऐ काश ! शबे तन्हाई में, फ़ुरक़त का अलम तड़पाता रहे
लम्हा लम्हा उल्फ़त की आग को और भी तू भड़काता रहे

बेताब जिगर, क़ल्बे मुज़्तर, दे दीजिये सरवर ! चश्मे तर
हर वक़्त भरूं ठन्डी आहें, ग़म तेरा ख़ून रुलाता रहे

बेचैन रहूं बेताब रहूं, मैं हिचकियां बांध के रोता रहूं
येह ज़ौक़े जुनूं बढ़ता ही रहे, हर दम येह मुझ को रुलाता रहे

मैं इश्क़ में यूं गुम हो जाऊं, हरगिज़ न पता अपना पाऊं
जब जब मैं तड़प कर गिर जाऊं, तेरा दस्ते इनायत उठाता रहे

जब आऊं मदीने रोता हुवा, हो सामने जब रौज़ा तेरा
चेहरे से निक़ाब उठ जाए और तू जामे दीद पिलाता रहे

बेकस हूं शहा ! मैं दुखियारा, लोगों ने मुझे है धुत्कारा
तू हमदम है फिर क्या ग़म है, गो सारा जहां ठुकराता रहे

सद शुक्र खु़दाया तूने दिया, है रह़मत वाला वोह आक़ा
जो उम्मत के रन्जो ग़म में, रातों को अश्क बहाता रहे

जब गर्मिये ह़श्र हो ज़ोरों पर, उस वक़्त तमन्ना है सरवर !
हम प्यास के मारों को कौसर, के जाम पे जाम पिलाता रहे

है मेरी तमन्ना रब्बे जहां, हर खु़र्दो कलां[1] हर एक जवां
हर "दा'वते इस्लामी" वाला सुन्नत का अ़लम लहराता रहे

है तुझ से दुआ़ रब्बे अक्बर ! मक़्बूल हो "फ़ैज़ाने सुन्नत"
मस्जिद मस्जिद घर घर पढ़ कर, इस्लामी भाई सुनाता रहे

जब मेरा यावर है सरवर, फिर डर मह़शर का हो क्यूंकर !
वोह ह़श्र में रुस्वा कैसे करे जो ऐ़ब यहां पे छुपाता रहे

जब तन से जुदा हो जां मुज़्तर उस वक़्त हो जल्वा पेशे नज़र
हो क़ब्र में भी साया गुस्तर[2], तू मीठी नींद सुलाता रहे

या रब ! येह दुआ़ अ़त्तार की है जिस वक़्त तलक दुन्या में जिये
मह़बूब की सुन्नत आ़म करे, येह डंका दीं का बजाता रहे

---

1 : बच्चा और बूढ़ा 2 : साया करने वाला

मांग लो जो कुछ तुम्हें दरकार है

(येह कलाम 17,12, 1422 हि. को **मदीनतुल मुनव्वरह** में तह़रीर करने की सआदत ह़ासिल हुई)

मांग लो जो कुछ तुम्हें दरकार है मेरे आक़ा का सख़ी दरबार है
ह़ाज़िरे दरबार हूं मेरे त़बीब दर्दे इस्यां की दवा दरकार है
कस्रते ख़न्दा[1] से दिल मुर्दा हुवा तुझ से फ़रियाद ऐ शहे अबरार है
क़ह्क़हा तुम मत लगाओ भाइयो ! गर लिह़ाज़े गिर्यए सरकार है
ज़िक्रे ह़क़ में लब को बस मश्ग़ूल रख राह़ते दिल गर तुझे दरकार है
दीजिये "क़ुफ़्ले मदीना" येह ग़ुलाम आह ! बद अत़्वारो बद गुफ़्तार है
उ़म्र घटती जा रही आह ! नफ़्स ! गर्म इस्यां का मगर बाज़ार है
देस का गोरे ग़रीबां[2] आह ! आह ! मौत त़यबा की मुझे दरकार है
लाज रखना ह़श्र में बदकार की तेरा बन्दा[3] है गो बद अत़्वार है

مدینہ

1 : हंसी 2 : क़ब्रिस्तान 3 : शायद किसी को वस्वसा आए कि इस शे'र में अपने आप को "नबी का बन्दा" ज़ाहिर किया गया है, ह़ालां कि हर शख़्स सिर्फ़ अल्लाह ही का बन्दा है। इस वस्वसे का इलाज ह़ाज़िरे ख़िदमत है। चुनान्चे "फ़ीरोज़ुल्लुग़ात" में "बन्दा" के 12 मा'ना लिखे हैं जिन में ग़ुलाम, मुलाज़िम, ख़ाकसार, हुक्म मानने वाला और आदमी वग़ैरा शामिल हैं। आ़म बोलचाल में हमारे यहां लफ़्ज़ "बन्दा" आदमी के मा'ना में ब कसरत इस्ति'माल होता है जैसे कि पूछते हैं : हां भई ! आप के कितने "बन्दे" हैं ? जी जनाब ! हमारे बन्दे पूरे हो गए, इस को आने दो येह हमारा बन्दा है, दुकानदार ने अपना "बन्दा" भेज दिया था, फ़ुलां के दो बन्दे आए थे और बता रहे थे वग़ैरा वग़ैरा। जब आ़म आदमी भी एक दूसरे को "अपना बन्दा" कह सकते हैं तो अगर कोई अपने आप को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام या औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का "बन्दा" कहे तो भला इस में क्या मुज़ा-यक़ा हो सकता है ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "फ़तावा र-ज़विय्या" जिल्द 24 सफ़ह़ा 705 पर नक़्ल करते हैं : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बर सरे मिम्बर ख़ुत़्बे में फ़रमाया : मैं रसूले अकरम के साथ था, كُنْتُ عَبْدَهٗ وَخَادِمَهٗ और मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ब्द या'नी बन्दा और ख़ादिम था।

(تاریخ دمشق ج٤٤ص٢٦٤)

जां कनी का वक़्त है या मुस्तफ़ा जां बलब अब त़ालिबे दीदार है

आप के क़दमों में गिर कर मौत की आरज़ू या सय्यिदे अबरार है

मग़्फ़िरत फ़रमा तुफ़ैले मुर्शिदी येह दुआ़ तुझ से मेरे ग़फ़्फ़ार है

बुलबुलो ! तुम को मुबारक फूल हो बस गया त़यबा का दिल में ख़ार है

क्या करूं मैं देख कर रंगे चमन दश्ते त़यबा से मुझे तो प्यार है

सब्ज़ गुम्बद की ज़ियाएं मरह़बा मरह़बा पुरनूर हर मीनार है

जगमगाता है मदीना रात दिन सब्ज़ गुम्बद मम्बए़ अन्वार है

जिस की तुरबत है बक़ीए़ पाक में उस को ह़ासिल कुरबते सरकार है

मुस्त़फ़ा इस रोज़ आए इस लिये ईदे मीलादुन्नबी से प्यार है

मरह़बा ! आक़ा की आमद मरह़बा ! हम को इस ना'रे से बेह़द प्यार है

जो कोई गुस्ताख़ है सरकार का वोह हमेशा के लिये फ़िन्नार है

दुश्मनों का तंग घेरा हो गया रह़्म की दर-ख़्वास्त अब सरकार है

आह ! दुश्मन ख़ून का प्यासा हुवा या नबी ! तेरी मदद दरकार है

ह़ासिदों को दे हिदायत या ख़ुदा उस का सदक़ा जो मेरा ग़म ख़्वार है

ग़ौस के दामन में अ़त्त़ार आ गया
दो[2] जहां में इस का बेड़ा पार है

आह ! हर लम्हा गुनह की कस्रत और भरमार है

आह ! हर लम्हा गुनह की कस्रत और भरमार है
ग़-ल-बए शैतान है और नफ़्से बद अत्वार है

मुजरिमों के वासिते दोज़ख़ भी शो'लाबार है
हर गुनह क़स्दन किया है इस का भी इक़रार है

हाए ! ना फ़रमानियां बदकारियां बे बाकियां
आह ! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है

छुप के लोगों से गुनाहों का रहा है सिल्सिला
तेरे आगे या ख़ुदा हर जुर्म का इज़्हार है

ज़िन्दगी की शाम ढलती जा रही है हाए नफ़्स !
गर्म रोज़ो शब गुनाहों का ही बस बाज़ार है

या ख़ुदा ! रह़मत तेरी ह़ावी है तेरे क़ह्र पर
फ़ज़्लो रह़मत के सहारे जी रहा बदकार है

बन्दए बदकार हूं बेहद ज़लीलो ख़्वार हूं
मग़्फ़िरत फ़रमा इलाही ! तू बड़ा ग़फ़्फ़ार है
मौत के झटकों पे झटके आ रहे हैं अल मदद
सख़्त बेचैनी के आ़लम में घिरा बीमार है
अब सरे बालीं ख़ुदारा मुस्कुराते आइये
जां बलब शाहे मदीना त़ालिबे दीदार है
ग़ुस्ल देने के लिये ग़स्साल भी अब आ चुका
ग़ुस्ले मय्यित हो रहा है और कफ़न तय्यार है
या नबी ! पानी से सारा जिस्म मेरा धुल गया
नामए आ'माल को भी ग़ुस्ल अब दरकार है
लाद कर कन्धों पे अह़बाब आह ! क़ब्रिस्तां चले
वासित़े तदफ़ीन के गहरा गढ़ा तय्यार है
क़ब्र में मुझ को लिटा कर और मिट्टी डाल कर
चल दिये साथी न पास अब कोई रिश्तेदार है

ख़्वाब में भी ऐसा अन्धेरा कभी देखा न था
जैसा अन्धेरा हमारी क़ब्र में सरकार है

या रसूलल्लाह ! आ कर क़ब्र रोशन कीजिये
ज़ात बेशक आप की तो मम्बए अन्वार है

क़ब्र में शाहे मदीना आ चुके मुन्कर नकीर
हो करम ! लिल्लाह बन्दा बे कसो नाचार है

या नबी ! जन्नत की खिड़की क़ब्र में खुलवाइये
फिर तो फ़ज़्ले रब से अपनी क़ब्र भी गुलज़ार है

तूने दुन्या में भी ऐबों को छुपाया या खुदा
ह़श्र में भी लाज रख लेना कि तू सत्तार है

नेकियां पल्ले नहीं आक़ा शफ़ाअ़त कीजिये
आप की नज़रे करम होगी तो बेड़ा पार है

या नबी ! अ़त्ता़र को जन्नत में दे अपना जवार
वासिता़ सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

काश ! हो ऐसी मदीने में कभी तो ह़ाज़िरी
येह ख़बर आए वत़न में मर गया अ़त्ता़र है

मुझ को दरपेश है फिर मुबारक सफ़र
क़ाफ़िला अब मदीने का तय्यार है

मुझ को दरपेश है फिर मुबारक सफ़र क़ाफ़िला अब मदीने का तय्यार है
नेकियों का नहीं कोई तोशा फ़क़त मेरी झोली में अश्कों का इक हार है
कुछ न सज्दों की सौग़ात है और न कुछ ज़ोह्दो तक़्वा मेरे पास सरकार है
चल पड़ा हूं मदीने की जानिब मगर हाए सर पर गुनाहों का अम्बार है
जुर्मो इस्यां पे अपने लजाता हुवा और अश्के नदामत बहाता हुवा
तेरी रह़मत पे नज़रें जमाता हुवा दर पे ह़ाज़िर येह तेरा गुनहगार है
तेरा सानी कहां ! शाहे कौनो मकां मुझ सा आ़सी भी उम्मत में होगा कहां !
तेरे अ़फ़्वो करम का शहे दो[2] जहां ! क्या कोई मुझ से बढ़ कर भी ह़क़दार है ?
या नबी ! तुझ पे लाखों दुरूदो सलाम इस पे है नाज़ मुझ को हूं तेरा गुलाम
अपनी रह़मत से तू शाहे खै़रुल अनाम मुझ से आ़सी का भी नाज़ बरदार है
मुजरिमों को शहा ! बख़्शवाता है तू अपनी उम्मत की बिगड़ी बनाता है तू

ग़म के मारों को सीने लगाता है तू	ग़मज़दों बे कसों का तू ग़म ख़्वार है
सरवरे अम्बिया रह़मते दो सरा	तू ही मुश्किल कुशा तू ही ह़ाजत रवा
जब भी सर पर मेरे कोई टूटी बला	इज़्ने रब से तू मेरा मददगार है
ज़ेरे जिस्मे मुबारक कभी बोरिया[1]	हाथ तक्या है बिस्तर कभी ख़ाक का
जानो दिल सादगी पे हों उस की फ़िदा	जो कि सारे रसूलों का सरदार है
दो तड़पने का आक़ा क़रीना मुझे	दे दो ख़स्ता जिगर चाक सीना मुझे
चश्मे तर दे दो शाहे मदीना मुझे	तेरे ग़म का येह बन्दा त़लब गार है
ठोकरें दर बदर कब तक अब खाऊं मैं	फिर मदीने मुक़द्दर से जब आऊं मैं
काश ! क़दमों में सरकार मर जाऊं मैं	या नबी ! येह तमन्नाए बदकार है
सुन्नतें मुस्त़फ़ा की तू अपनाए जा	दीन को ख़ूब मेह़नत से फैलाए जा

येह वसिय्यत तू अ़त़्त़ार पहुंचाए जा

उस को जो उन के ग़म का त़लब गार है

1 : चटाई

ईदे मीलादुन्नबी है दिल बड़ा मसरूर है

ईदे मीलादुन्नबी है दिल बड़ा मसरूर है
हर त़रफ़ है शादमानी रन्जो ग़म काफ़ूर है

इस त़रफ़ जो नूर है तो उस त़रफ़ भी नूर है
ज़र्रा ज़र्रा सब जहां का नूर से मा'मूर है

हर मलक है शादमां ख़ुश आज हर इक हूर है
हां ! मगर शैत़ान मअ़ रु-फ़क़ा बड़ा रन्जूर है

आमदे सरकार से ज़ुल्मत हुई काफ़ूर है
क्या ज़मीं क्या आस्मां हर सम्त छाया नूर है

जश्ने मीलादुन्नबी है क्यूं न झूमें आज हम
मुस्कुराती हैं बहारें सब फ़ज़ा पुरनूर है

हो रही हैं चार जानिब बारिशें अन्वार की
दश्तो कोहसारो चमन हर शै पे छाया नूर है

मिल के दीवानो ! पढ़ो सारे दुरूद अब झूम कर
आज वोह आया जहां में जो सरापा नूर है

आमिना तुझ को मुबारक शाह का मीलाद हो
तेरा आंगन नूर, तेरा घर का घर सब नूर है

ग़मज़दो ! तुम को मुबारक ! ग़म ग़लत़ हो जाएंगे
आ गया वोह जिस के सदक़े हर बला काफ़ूर है

आज दीवाने मदीने के सभी हैं शादमां
मीठे आक़ा की विलादत से हर इक मसरूर है

बख़्श दे मुझ को इलाही बहरे मीलादुन्नबी
नामए आ'माल इस्यां से मेरा भरपूर है

गुम्बदे ख़ज़रा का उस को भी तो अब दीदार हो
या इलाही ! जो मदीने से अभी तक दूर है

आप की नज़रे करम से काम बनते ही गए
वरना आक़ा येह गदा तो बे कसो मजबूर है

या इलाही ! अपने प्यारे का अ़त़ा हो ग़म मुझे
ख़ुश नसीबी उस की उन के ग़म में जो रन्जूर है

शान क्या प्यारे इमामे की बयां हो या नबी
तेरे ना'ले पाक का हर ज़र्रा रश्के त़ूर है

सद करोड़ अफ़्सोस ! फ़ेशन की नुहूसत छा गई
आह ! इक ता'दाद उन की सुन्नतों से दूर है

"हूं गुलामे मुस्त़फ़ा" अपना तो दा'वा है येही
काश ! आक़ा भी येह फ़रमा दें हमें मन्ज़ूर है

वोह पिला मै अहले मह़शर देखते ही बोल उठें
आ गया अ़त़्त़ार देखो इश्क़ में मख़्मूर है

मीठा मदीना दूर है जाना ज़रूर है

मीठा मदीना दूर है जाना ज़रूर है
जाना हमें ज़रूर है जाना ज़रूर है

राहे मदीना के सभी कांटे हैं फूल से
दीवाना बा शुऊर है जाना ज़रूर है

होता है सख़्त इम्तिहां उल्फ़त की राह में
आता मगर सुरूर है जाना ज़रूर है

इश्क़े रसूल देखिये ह़बशी बिलाल का
ज़ख़्मों से चूर चूर है जाना ज़रूर है

पुरख़ार राह पाउं में छाले भी पड़ गए
इस में भी इक सुरूर है जाना ज़रूर है

हिम्मत जवाब दे गई सरकार अल मदद !
ज़ाइर थकन से चूर है जाना ज़रूर है

क्यूं थक गए पलट गए भाई ! बताइये ?
येह आप का कु़सूर है जाना ज़रूर है

जो राहे त़यबा की हैं डराती सुऊ़बतें
येह नफ़्स का फ़ुतूर है जाना ज़रूर है

उ़श्शाक़ को तो मिलती है ग़म में भी राह़त और
आता बड़ा सुरूर है जाना ज़रूर है

सरकार का मदीना यक़ीनन बिला शुबा
क़ल्बो नज़र का नूर है जाना ज़रूर है

मन्ज़र ह़सीनो दिलकुशा उन के दियार का
हां देखना ज़रूर है जाना ज़रूर है

देखूंगा जा के गुम्बदे ख़ज़रा की मैं बहार
रौज़ा वत़न से दूर है जाना ज़रूर है

मेह़राबो मिम्बर आप के डूबे हैं नूर में
जाली भी नूर नूर है जाना ज़रूर है

चादर तनी है गुम्बदे ख़ज़रा पे नूर की
मीनार नूर नूर है जाना ज़रूर है

पुरनूर हर पहाड़ तो त़यबा की ख़ाक का
हर ज़र्रा रश्के त़ूर है जाना ज़रूर है

शाहो गदा फ़क़ीरो ग़नी हर किसी का सर
ख़म आप के हुज़ूर है जाना ज़रूर है

बेहतर इसी बरस हो तो जल्दी बुलाइये
येह इल्तिजा हुज़ूर है जाना ज़रूर है

मरज़ी तुम्हारी तुम सुनो या मत सुनो मगर
अपनी तो रट हुज़ूर है जाना ज़रूर है

अ़त्तार क़ाफ़िला तो गया तुम भी उठ चलो
मन्ज़िल अगर्चे दूर है जाना ज़रूर है

सारे नबियों का सरवर मदीने में है

सारे नबियों का सरवर मदीने में है | सब रसूलों का अफ़्सर मदीने में है
लुत्फ़ जन्नत से बढ़ कर मदीने में है | मीठे मह़बूब का घर मदीने में है
क्या हवा भी मुअ़त्तर मदीने में है | सब फ़ज़ा भी मुनव्वर मदीने में है
कर के हिजरत यहां आ गए मुस्त़फ़ा | रोशनी आज घर घर मदीने में है
जानते हो मदीना है क्यूं दिल-पसन्द | दोनों[2] आ़लम का सरवर मदीने में है
सारे दीवाने बेताब हैं इस लिये | शाह की क़ब्रे अन्वर मदीने में है
नूर की देखो बरसात है चार सू | क्या समां कैफ़ आवर मदीने में है
हिज्रो फ़ुरक़त के बीमार को ले चलो | राह़ते जाने मुज़्त़र मदीने में है
दूर रह कर है वीरान सी ज़िन्दगी | मौत भी कैफ़ आवर मदीने में है
है मदीने का रुत्बा बड़ा ख़ुल्द से | क्यूं कि मह़बूबे दावर मदीने में है
मालदारो ! न इतराओ तुम माल पर | उन का मंगता तवंगर मदीने में है

अपनी मन्ज़िल को पा लोगे आ जाओ तुम भूले भटकों का रहबर मदीने में है

भूल जाओगे पेरिस की सब रौनक़ें वोह समां रूह़ परवर मदीने में है

दुश्मनो ! मत अकेला समझना मुझे मेरा ह़ामी व यावर मदीने में है

आओ इस्यां शिआ़रो नहा लो यहां रह़मतों का समुन्दर मदीने में है

ह़श्र में जामे कौसर की है गर त़लब आओ साक़िये कौसर मदीने में है

आओ आओ गुनहगारो ! आ जाओ तुम शाफ़ेए रोज़े मह़शर मदीने में है

ऐ शफ़ाअ़त के उम्मीद वारो ! चलो ! शाफ़ेए रोज़े मह़शर मदीने में है

तुम शफ़ाअ़त में शक मत करो ज़ाइरो ! शाफ़ेए रोज़े मह़शर मदीने में है

"चल मदीना" वोही हो सके जिस का दिल घर में रह कर भी अक्सर मदीने में है

"चल मदीना" का दीवानो ! मुज़्दा सुनो जल्द हर बा मुक़द्दर मदीने में है

सब्ज़ गुम्बद का अ़त्तार मन्ज़र तो देख
किस क़दर कैफ़ आवर मदीने में है

क्यूं हैं शाद दीवाने आज ग़ुस्ले का'बा है

(اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ येह अश्आ़र 30 जुल हि़ज्जतिल ह़राम 1416 सि.हि. को मस्जिदुल ह़राम में ग़ुस्ले का'बा के वक़्त लिखे गए)

क्यूं हैं शाद दीवाने ! आज ग़ुस्ले का'बा है
झूमते हैं मस्ताने आज ग़ुस्ले का'बा है

ग़ुस्ल हो रहा है पर हैं त़वाफ़ में मश्ग़ूल
गिर्दे शम्अ़ परवाने आज ग़ुस्ले का'बा है

"चल मदीना" वालों पर साक़िया करम कर दो !
दो छलक्ते पैमाने आज ग़ुस्ले का'बा है

अपने रब की उल्फ़त में पेश कीजिये मिल कर
आंसूओं के नज़राने आज ग़ुस्ले का'बा है

जाने रह़मत आ जाओ होंगे ख़ैर से आबाद
सब दिलों के वीराने आज ग़ुस्ले का'बा है

जान को मसर्रत है रूह़ को भी है फ़रह़त
इस ख़ुशी को दिल जाने आज ग़ुस्ले का'बा है

लुत़्फ़ जो मिला मुझ को क्या बताऊं मैं अ़त्तार
इस को मेरा दिल जाने आज ग़ुस्ले का'बा है

अल्लाह की रह़मत से फिर अ़ज़्मे मदीना है

अल्लाह की रह़मत से फिर अ़ज़्मे मदीना है
फिर अ़ज़्मे मदीना है तय्यार सफ़ीना है

चन्द अश्क, नदामत के है ज़ादे सफ़र मेरा
पल्ले में इबादत का कोई न ख़ज़ीना है

गो राहे मदीना पर मैं चल तो पड़ा हूं पर
अफ़्सोस सलीक़ा है कोई न क़रीना है

सदक़े में मुह़म्मद के दे बख़्श उसे या रब
मुजरिम है जो आ़सी है बदकारो कमीना है

ऐ नूरे ख़ुदा आ कर चमका दो पए मुर्शिद
सरकार मेरे दिल का बे नूर नगीना है

जिस्मानी मरीज़ों को अल्लाह शिफ़ा दे दे
अच्छा है फ़क़त़ वोह जो बीमारे मदीना है

तुम जानते हो क्या है येह दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना है फ़ैज़ाने मदीना है

सरकार की सुन्नत की तब्लीग़ किये जाओ
जाम आप के हाथों से गर ह़श्र में पीना है

हर दम मेरे होंटों पर बस ज़िक्रे मदीना हो
येह मेरी तमन्ना ऐ सुल्त़ाने मदीना है

उ़श्शाक़ तड़पते हैं यादे शहे बत़्ह़ा में
आता येह जहां में जब भी ह़ज का महीना है

मह़बूब का मस्ताना सरकार का दीवाना
दिल उस का मदीना है सीना भी मदीना है

ग़म मीठे मदीने का ऐ काश ! कि मिल जाए
अरमान येही दिल में ऐ शाहे मदीना है

तू कर दे अ़त़ा मुझ को रोती हुई आंखें और
ग़म में तेरे आक़ा जो जलता हुवा सीना है

अफ़्सोस मरज़ बढ़ता जाता है गुनाहों का
दे दीजे शिफ़ा अ़र्ज़ ऐ सरकारे मदीना है

दुन्या का गुलिस्तां क्या जन्नत की महक से भी
ख़ुश्बू में कहीं बढ़ कर आक़ा का पसीना है

रोता हुवा पहुंचा था रोता हुवा लौटा था
हैं वस्ल की दो घड़ियां फिर हिज्रे मदीना है

दौलत की फ़िरावानी है मांगना नादानी
बस अस्ल में दौलत तो उल्फ़त का ख़ज़ीना है

उ़श्शाक़ की नज़रों में वीरान गुलिस्तां हैं
दिल इन का तो शैदाए सहराए मदीना है

अ़त्त़ार को गर तू भी ठुकरा दे कहां जाए
तेरा है येह तेरा है गो लाख कमीना है

सुब्ह़ होती है शाम होती है

(इस कलाम का मत़्लअ़ (पहला शे'र) किसी ना मा'लूम शाइ़र का है इस की बह़्र पर कलाम लिखा गया है)

सुब्ह़ होती है शाम होती है उ़म्र यूंही तमाम होती है

पूरी कब आरज़ू मदीने की शाहे ख़ैरुल अनाम होती है

मुस्त़फ़ा का है जो भी दीवाना उस पे रह़मत मुदाम[1] होती है

सुन्नतों का है जो भी शैदाई उस पे दोज़ख़ ह़राम होती है

बख़्त वर ज़ाइरों की मक्के में सुब्ह़, त़यबा में शाम होती है

या ह़बीबे खु़दा करम कर दो ! दूर कब ग़म की शाम होती है

खू़ब इन्सां को करती है रुस्वा जब ज़बां बे लगाम होती है

गर तकब्बुर हो दिल में ज़र्रा भर सुन लो जन्नत ह़राम होती है

मालो दौलत के आ़शिक़ों की हर आरज़ू ना तमाम होती है

या उ़मर ! दीने ह़क़ के आ'दा पर तैग़ कब बे नियाम होती है ?

पाए रुत्बा शहीद का खु़ल्द उस के लिये दो[2] ही गाम[2] होती है

सुन लो हर एक नेक शख़्सिय्यत क़ाबिले एह़तिराम होती है

उठो अ़त़्त़ार त़यबा चलते हैं
उन की रह़मत तो आ़म होती है

1 : हमेशा 2 : क़दम

जिस त़रफ़ देखिये गुलशन में बहार आई है

जिस त़रफ़ देखिये गुलशन में बहार आई है दिल मगर दश्ते मदीना का तमन्नाई है

ख़ुशनुमा फूल गुलिस्तां में खिले हैं लेकिन मेरा दिल ख़ारे मदीना ही का शैदाई है

मुस्त़फ़ा की येह इनायत है कि मेरे दिल में गुम्बदे सब्ज़ की तस्वीर[1] उतर आई है

जब कभी जिस ने भी पाई है जहां की ने'मत आप के दस्ते करम ही से शहा पाई है

आह ! मजबूर पे नाचार पे रन्जो ग़म की चार जानिब से शहा ! काली घटा छाई है

दे दे मौला ! ग़मे सुल्त़ाने मदीना दे दे लब पे रह रह के येही एक दुआ आई है

जब तड़प कर दिले ग़मगीं ने पुकारा आक़ा ! फ़ौरन इमदाद शहा आप ने फ़रमाई है

कर दो सैराब दिले तिश्ना को अब तो साक़ी ! शरबते दीद का मुद्दत से तमन्नाई है

घुप अंधेरा था गुनाहों का मैं सदक़े जाऊं लहूद ख़ुद आ के मेरी नूर से चमकाई है

नज़्अ़ में, क़ब्र में, मीज़ाने अ़मल और पुल पर हर जगह आप की निस्बत ही तो काम आई है

सुन्नतें शाहे मदीना की तू अपनाए जा दोनों[2] आ़लम की फ़लाह़ इस में मेरे भाई है

मालो दौलत की हवस दिल से मिटा दे या रब

सोज़े सरकार का अ़त्त़ार तमन्नाई है

---

1 : यहां सब्ज़ गुम्बद शरीफ़ की सचमुच तस्वीर मुराद नहीं, रौज़ए रसूल की मह़ब्बत मुराद है।

बुलावा दोबारा फिर इक बार आए

बुलावा दोबारा फिर इक बार आए
मदीने में आक़ा ! गुनहगार आए

मेरे अश्क बहने लगें काश उस दम
नज़र जूं ही तयबा का गुलज़ार आए

दिले मुज़्तरिब[1] की बढ़े बे क़रारी
तड़प कर गिरूं जूं ही दरबार आए

नज़र में नहीं कोई जचता गुलिस्तां
पसन्द इस को सहराए सरकार आए

है अपनी जगह हुस्न फूलों का लेकिन
पसन्द इस को तयबा ही का ख़ार[2] आए

महल्लात ऊंचे नहीं चाहता मैं
मदीने का क़िस्मत में कोहसार आए

अक़ीदत से सर झुक गया उस घड़ी जब
नज़र सब्ज़ गुम्बद के अन्वार आए

तेरे सब्ज़ गुम्बद पे जाए वोह कुरबां
मदीने में जो कोई इक बार आए

तुम्हारी शफ़ाअत का हक़दार ठहरे
जो दरबार में बख़्त बेदार आए

तेरे ही करम से हमारा भरम है
गुनाहों का सर पर लिये बार[3] आए

अता हो सनद मग़्फ़िरत की अता हो
तेरे दर पे तेरे गुनहगार आए

इधर भी मसीहा निगाहे शिफ़ा हो
तेरे दर पे इस्यां के बीमार आए

गुनाहों की कसरत से घबरा गए जब
वोह महशर में सूए गुनहगार आए

हुई क़ब्र रोशन हमारी उसी दम
लिये जब वोह चेहरा चमकदार आए

مدینہ

1 : बे क़रार 2 : कांटा 3 : बोझ

पए पीरो मुर्शिद हमें अपना कह दो
येह हम आरज़ू ले के दरबार आए

शहा तुझ से तुझ ही को मांगेंगे हम तो
तेरे दर पे जिस रोज़ सरकार आए

दवा हर मरज़ की है ख़ाके मदीना
शिफ़ा पाए दर पर जो बीमार आए

सरे ह़श्र दामन में लेंगे उसे जो
नदामत से रोता गुनहगार आए

तेरे इश्क़ में ऐसा हो जाऊं बेख़ुद
कभी होश मुझ को न सरकार आए

इशारा मिले काश ! जन्नत का फ़ौरन
सरे ह़श्र जिस दम येह बदकार आए

निगाहे करम हो करम जाने आ़लम
दिले ग़मज़दा ले के ग़म ख़्वार आए

सदा सुन्नतें आ़म करता रहूं मैं
इसी ह़ाल में मौत सरकार आए

पए शाहे कर्बो बला मौत मुझ को
मदीने की गलियों में सरकार आए

सब इस्लामी बहनों को पर्दा अ़त़ा हो
न पास इन के इब्लीसे अ़य्यार आए

सब इस्लामी भाई भी फ़ेशन से भागें
शहा ! सुन्नतों पर इन्हें प्यार आए

बुला लो मदीने में शाहे मदीना
तड़पता हुवा काश ! बदकार आए

तेरे ग़म में बेह़ाल हो जाए आक़ा
पलट के जो त़यबा से अ़त्त़ार आए

न क्यूं आज झूमें कि सरकार आए

न क्यूं आज झूमें कि सरकार आए खुदा की खुदाई के मुख़्तार आए
न क्यूं बारहवीं पर हमें प्यार आए कि आए इसी रोज़ सरकार आए
वोह आए दो[2] आ़लम के मुख़्तार आए लो आज आए उम्मत के ग़म ख़्वार आए
मसर्रत से हम क्यूं न धूमें मचाएं हमारे शहन्शाहो सरदार आए
मुसल्मानो ! सुब्हे बहारां मुबारक वोह बरसाते अन्वार सरकार आए
मुबारक तुझे आमिना हो मुबारक तेरे घर शहन्शाहे अबरार आए
मुबारक ह़लीमा तुझे भी मुबारक तेरे घर में नबियों के सरदार आए
मुबारक तुम्हें ग़म के मारो मुबारक मुदावाए ग़म बन के ग़म ख़्वार आए
सुवाल अपनी उम्मत की बख़्शिश का करते वोह हम आ़सियों के त़रफ़-दार आए
यतीमों के वाली ग़रीबों के ह़ामी वोह आफ़त ज़दों के मददगार आए
मुसीबत के मारों की ढारस बंधाने शिकस्ता दिलों के ख़रीदार आए

सियाही हमारे गुनाहों की धोने बहाते हुए अश्क सरकार आए

जहां में वोह सिक्का बिठाने को दीं का मिटाने वोह बातिल के आसार आए

न क्यूं आज जश्ने विलादत मनाएं नज़र रब की रह़मत के आसार आए

अ़दद हम को बारह का क्यूं हो न प्यारा कि बारह को दुन्या में सरकार आए

घटा छा गई हर त़रफ़ रह़मतों की वोह लहराते गेसूए ख़मदार आए

चलो ऐ गदाओ ! चलो बे नवाओ लुटाते वोह ने'मत के अम्बार आए

दुरूदों के गजरे लिये अब बढ़ो तुम वोह आए रसूलों के सालार आए

"नहीं" जिन की प्यारी ज़बां पर नहीं है वोह मक्के में सख़ियों के सरदार आए

विलादत का सदक़ा जियूं मैं जहां तक न नज़दीक दुन्याए बेकार आए

विलादत का सदक़ा हमें अपना ग़म दो शहा चश्मे नम के त़लब गार आए

विलादत का सदक़ा हो अख़्लाक़ अच्छा न हम को हंसी शाह बेकार आए

विलादत का सदक़ा गुनाहों से नफ़रत हो, अच्छाइयों पर मुझे प्यार आए

विलादत का सदक़ा बक़ीए़ मुबारक की दो[2] गज़ ज़मीं के त़लब गार आए

विलादत का सदक़ा हों पाबन्दे सुन्नत हमें आ़र फ़ेशन से सरकार आए

विलादत का सदक़ा बयां में असर दो हो इस्लाह़ उस की जो बदकार आए

विलादत का सदक़ा मदीने में आक़ा मुझे मौत ऐ मेरे सरकार आए

विलादत का सदक़ा निक़ाब अब उठा दो लिये हम सब उम्मीदे दीदार आए

विलादत का सदक़ा जगह बहरे मर्कज़[1] मिले येह लिये अ़र्ज़ सरकार आए

विलादत का सदक़ा पड़ोसी बनाना शहा ख़ुल्द में जब येह बदकार आए

विलादत का सदक़ा शहा ज़िन्दगी भर
मदीने में हर साल अ़त्तार आए

---

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ विलादते पाक के सदके़ बाबुल मदीना कराची में पुरानी सब्ज़ी मन्डी के पास दा'वते इस्लामी के लिये तक़रीबन दस हज़ार गज़ जगह मिली और अब वहां आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना और जामिअ़तुल मदीना की आ़लीशान इमारत क़ाइम है।

अपना ग़म या शहे अम्बिया दीजिये
चश्मे नम या ह़बीबे ख़ुदा दीजिये

अपना ग़म या शहे अम्बिया दीजिये चश्मे नम या ह़बीबे ख़ुदा दीजिये
चाक सीना शहे दो सरा दीजिये क़ल्ब बेचैन या मुस्त़फ़ा दीजिये
मुझ को आक़ा मदीने बुला लीजिये और मेहमान अपना बना लीजिये
दर पे बुलवा के जल्वा दिखा दीजिये मेरा सीना मदीना बना दीजिये
इल्तिजा है मेरी या ह़बीबे ख़ुदा अश्कबार आंख हो जाए मुझ को अ़त़ा
अज़ त़ुफ़ैले बिलालो उवैसो रज़ा आंसूओं का ख़ज़ाना शहा दीजिये
सोज़े उल्फ़त के दिल में जलाए दिये यादे त़यबा में जो जा रहे हैं जिये
और बेताब हैं ह़ाज़िरी के लिये उन को मीठा मदीना दिखा दीजिये
मुझ को अह़बाब तन्हा चले छोड़ कर जल्द लीजे ख़बर आमिना के पिसर !
घुप अंधेरा है या शाहे जिन्नो बशर नूर से लह़द अब जगमगा दीजिये
है गुनाहों का अम्बार सुल्त़ाने दीं ! नेकियां मेरे पल्ले में कुछ भी नहीं
चाक हो जाए पर्दा न मेरा कहीं अब ख़ुदा से शहा ! बख़्शवा दीजिये
काश ! नेकी की दा'वत मैं दूं जा बजा सुन्नतें आ़म करता रहूं जा बजा
गर सितम हो उसे भी सहूं जा बजा ऐसी हिम्मत ह़बीबे ख़ुदा दीजिये
फिर अ़रब की ह़सीं वादियां देखने सब्ज़ गुम्बद की हरियालियां देखने
रौज़ए पाक की जालियां देखने इज़्न बदकार को मुस्त़फ़ा दीजिये
है तमन्नाए अ़त्त़ारे अन्दौह गीं[1] हो निगाहे करम इस पे सुल्त़ाने दीं
बस बक़ीए मुबारक में दो[2] गज़ ज़मीं अज़ त़ुफ़ैले शहे करबला दीजिये

1 : अन्दौह गीं या'नी रन्जीदा

इज़्ने तयबा अता कीजिये

इज़्ने त़यबा अत़ा कीजिये फिर करम मुस्त़फ़ा कीजिये
फिर मदीने में आ जाएं हम ऐसा एह़सां शहा कीजिये
लो मदीना क़रीब आ गया ज़ाइरो ! आंख वा कीजिये
सब्ज़ गुम्बद पर ऐ ज़ाइरो ! जान अपनी फ़िदा कीजिये
दे के ग़म अपना दुन्या के हर रन्जो ग़म की दवा कीजिये
रात दिन काश ! रोया करूं ऐसी रिक़्क़त अत़ा कीजिये
इक नज़र ही की तो बात है मस्तो बेखुद शहा कीजिये
कोई फेरा ग़रीबों के घर खै़र से सरवरा कीजिये
ज़ोरे तूफ़ान है नाखुदा पार बेड़ा मेरा कीजिये
माहे मीलाद फिर आ गया ज़िक्र, मीलाद का कीजिये
छेड़ना हो जो शैत़ान को उन का चरचा किया कीजिये
अज़ पए शाहे कर्बो बला दूर रन्जो बला कीजिये
अपने क़दमों में मदफ़न अत़ा या रसूले खुदा कीजिये
क़ब्र में घुप अंधेरा है आप आ कर अब चांदना कीजिये

प्यारे आक़ा ख़ज़ाना मुझे आंसूओं का अ़त़ा कीजिये
ह़ासिदों से ह़सद का मरज़ दूर या मुस्त़फ़ा कीजिये
सारे आ'दा का ख़ाना ख़राब या अ़ली मुर्तज़ा कीजिये
दुश्मनों से न हरगिज़ डरूं ह़ौसला वोह अ़त़ा कीजिये
मेरे सारे मुह़िब्बीन को जामे उल्फ़त अ़त़ा कीजिये
जिस क़दर मेरे अह़बाब हैं शाह ! सब का भला कीजिये
आह ! मुजरिम है मीज़ान पर पल्ला भारी मेरा कीजिये
पास ह़ुस्ने अ़मल है कहां ! लुत़्फ़ शाहे दना कीजिये
आह ! तारीकिये पुल सिरात़ ! रह़म शम्सुद्दुह़ा कीजिये
फ़र्दे जुर्म आह ! आइद हुई अब शफ़ाअ़त शहा कीजिये
ले के दोज़ख़ मलाइक चले आप आ कर रिहा कीजिये
खा न जाए कहीं मुझ को आग रह़मो लुत़्फ़ो अ़त़ा कीजिये
अब शफ़ाअ़त पए अहले बैत या शफ़ीअ़ल वरा कीजिये
चार यारों का सदक़ा शहा ख़ुल्द में जा अ़त़ा कीजिये

इज़्न, अ़त्त़ार को अब ह़ुज़ूर
ह़ाज़िरी का अ़त़ा कीजिये

मुझ पे चश्मे शिफ़ा कीजिये

मुझ पे चश्मे शिफ़ा कीजिये   दूर बारे गुनह कीजिये
आह ! इस्यां की तुग़यानियां   अब मदद नाखुदा कीजिये
हो गया क़ल्ब हाए सियाह   लुत्फ़ नूरे खुदा कीजिये
कोशिशों से भी छुटते नहीं   इन गुनाहों का क्या कीजिये
हाए ! इस्यां ने तोड़ी कमर   कुछ मेरा, मुस्तफ़ा कीजिये
माल के जाल में फंस गया   मुझ को आक़ा रिहा कीजिये
बारे इस्यां तले दब गया   आप आ कर खड़ा कीजिये
दर्दे इस्यां से मुझ को शिफ़ा   ऐ मसीहा ! अ़ता कीजिये
क़ल्ब पथ्थर से भी सख़्त है   इस को नरमी अ़ता कीजिये
चारागर[1] छोड़ कर चल दिये   चारए ला दवा कीजिये
जगमगा दीजे क़ल्बे सियाह   लुत्फ़ बदरुद्दुजा कीजिये
अब गुनाहों की आ़दत छुटे   चश्मे रहमत शहा ! कीजिये
अब करम सूए ख़स्ता जिगर   शाहे अर्ज़ो समा कीजिये
चांद चीरा था जूं, सूए दिल   इक इशारा ज़रा कीजिये

مدینه

1 : डोक्टर, तबीब

हुब्बे दुन्या की मस्ती सुवार हो गई कुछ मेरा कीजिये
चश्मे रह़मत ह़बीबे ख़ुदा सूए बे दस्तो पा कीजिये
या नबी ! आप ही कुछ इलाज नफ़्सो शैत़ान का कीजिये
राह भूला छुटा कारवां रहबरी रहनुमा कीजिये
दीन पर इस्तिक़ामत अ़त़ा अज़ तुफ़ैले रज़ा कीजिये
मिस्ले बिस्मिल तड़पता रहूं दर्द ऐसा अ़त़ा कीजिये
सुन्नतों की बहारें अ़त़ा या ह़बीबे ख़ुदा कीजिये
भाइयो ! गर सुकूं चाहिये सुन्नतों पर चला कीजिये
दीन के वासित़े दे के वक़्त आख़िरत का भला कीजिये
सुन्नतें सीखने के लिये क़ाफ़िलों में चला कीजिये
चाहते हो कि राज़ी हो रब मुस्त़फ़ा का कहा कीजिये
उन की यादों में खो जाइये मुस्त़फ़ा मुस्त़फ़ा कीजिये
मुझ को आक़ा अ़त़ा अपना इश्क़ और ख़ौफ़े ख़ुदा कीजिये
अहले ईमां को फ़ेशन से पाक कीजिये मुस्त़फ़ा कीजिये
हो ख़ज़ां दूर आए बहार दिल का गुलशन हरा कीजिये

काश ! अ़त्त़ार की मग़्फ़िरत
हो करम सरवरा कीजिये

सब्ज़ गुम्बद की ज़ियारत कीजिये

सब्ज़ गुम्बद की ज़ियारत कीजिये ज़ाइरो ! सामाने राहत कीजिये

गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे देख कर ख़ूब रोशन अपनी क़िस्मत कीजिये

आ गया मीठा मदीना आ गया झूम कर ख़ूब उन की मिद्हत कीजिये

मस्जिदे न-बवी में हर दम भाइयो ! दिल लगा कर अब इबादत कीजिये

ज़ाइरो ! रो रो कर उन के सामने पेश अपनी अपनी हाजत कीजिये

क़ल्बे मुज़्तर चश्मे तर सोज़े जिगर या नबी ! मुझ को इनायत कीजिये

अज़ पए अहमद रज़ा मुझ को अता सुन्नियत पर इस्तिक़ामत कीजिये

अज़ पए ग़ौसुल वरा या मुस्त़फ़ा मेरे ईमां की हिफ़ाज़त कीजिये

अज़ तुफ़ैले मुर्शिदी दिल से मेरे दूर दुन्या की महब्बत कीजिये

फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा मुझ से दूर नफ़्सो शैतां की शरारत कीजिये

दूर ग़म दुन्या के फ़रमा दीजिये ग़म मदीने का इनायत कीजिये

अपने अख़्लाक़े करीमा से मुझे एक ज़र्रा ही इनायत कीजिये
दर्दे इस्यां की दवा कीजे अ़ता आ़सियों पर चश्मे रह़मत कीजिये
आ़दते इस्यां नहीं जाती हुज़ूर आप ही कुछ जाने रह़मत कीजिये
मुझ को तौफ़ीक़े इ़बादत हो अ़ता मुझ को पाबन्दे शरीअ़त कीजिये
सुन्नतों की हर त़रफ़ आए बहार दूर फ़ेशन की नुहूसत कीजिये
या नबी ! मुझ को बक़ीए़ पाक में बहरे मदफ़न जा इनायत कीजिये
हूं निहायत ही ज़ईफ़ो ना तुवां मेरी दुश्मन से ह़िफ़ाज़त कीजिये
हो अ़ता सोज़े बिलाल आक़ा मुझे और अपना ग़म इनायत कीजिये
घुप अंधेरे में हूं तन्हा अल मदद क़ब्र रोशन नूरे इ़ज़्ज़त कीजिये
ऐ़ब महशर में न खुल जाएं कहीं सायए दामाने रह़मत कीजिये
गर्मिये मह़शर से जां है मुज़्त़रिब जामे कौसर अब इनायत कीजिये
मुजरिमों की सफ़ में हूं आक़ा खड़ा या नबी ! आ कर शफ़ाअ़त कीजिये

करबला वालों के सदक़े मुझ से दूर	या नबी रन्जो ! मुसीबत कीजिये
मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो !	नेकियां कीजे न ग़फ़्लत कीजिये
गर रिज़ाए मुस्तफ़ा दरकार है	सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत कीजिये
सुन्नतें अपना के ह़ासिल भाइयो !	रह़मते मौला से जन्नत कीजिये
ईदे मीलादुन्नबी पर भाइयो !	ख़ूब इज़्हारे मसर्रत कीजिये
हिज्र के मारों पे भी चश्मे करम !	इज़्न, त़यबा का इनायत कीजिये
मेरे चहरे पर कफ़न ढक दीजिये	साथियो रुस्वा मुझे मत कीजिये
अब निक़ाबे रुख़ उलट दीजे हुज़ूर	जां बलब पर चश्मे रह़मत कीजिये
ह़ाज़िरे दरबार फिर बदकार है	चश्मे रह़मत जाने रह़मत कीजिये
बढ़ते जाते हैं गुनह अ़त्तार आह !	कुछ तो इज़्हारे नदामत कीजिये

सब्ज़ गुम्बद पर फ़िदा हो जाइये

कीजिये अ़त्तार हिम्मत कीजिये

मुझ पे चश्मे करम कीजिये

मुझ पे चश्मे करम कीजिये लुत्फ़ शाहे उमम कीजिये
अज़ तुफ़ैले बिलालो रज़ा अब तो नज़्रे करम कीजिये
अज़ तुफ़ैले हुसैनो ह़सन दूर रन्जो अलम कीजिये
काश ! त़यबा की हो ह़ाज़िरी या नबी ! अब करम कीजिये
अब बक़ीए़ मुबारक अ़ता ताजदारे ह़रम कीजिये
सब्ज़ गुम्बद का चमका वोह नूर ज़ाइरो ! सर को ख़म कीजिये
ज़िक्र सरकार का भाइयो ! हर घड़ी दम बदम कीजिये
दूर कर के ज़माने के ग़म मर्ह़मत अपना ग़म कीजिये
मेरा सीना मदीना बने मुझ पे ऐसा करम कीजिये
अब ख़ुदारा शफ़ाअ़त मेरी या शफ़ीए़ उमम कीजिये
अज़ पए पीरो मुर्शिद अ़ता अपना ग़म चश्मे नम कीजिये

आह ! अ़त्तार बदकार है
लिल्लाह इस पर करम कीजिये

ख़ुशियां मनाओ भाइयो ! सरकार आ गए

ख़ुशियां मनाओ भाइयो ! सरकार आ गए
सरकार आ गए, शहे अबरार आ गए

सब झूम झूम कर कहो सरकार आ गए
दोनों[2] जहां के मालिको मुख़्तार आ गए

वोह ग़मज़दों के ह़ामी व ग़म ख़्वार आ गए
दुखियों के बे कसों के मददगार आ गए

वोह मुस्कुराते ख़ल्क़ के सरदार आ गए
चमकाते अपना चेहरा चमकदार आ गए

है आज जश्ने आमदे सरकार चार सू
दुन्या में आज नबियों के सालार आ गए

ख़ुशियों के लम्ह़े आ गए दीवाने झूम उठे
ईदों की ईद आ गई सरकार आ गए

दाई ह़लीमा मैं तेरी तक़्दीर पर निसार
गोदी में तेरी अह़मदे मुख़्तार आ गए

पढ़ते दुरूद सारे ही ता'ज़ीम को उठो
उठ कर पढ़ो सलाम कि सरकार आ गए

दीवानो ! आओ आमिना बीबी के घर चलें
सुब्ह़े बहारां हो गई सरकार आ गए

लहराओ सब्ज़ परचम ऐ इस्लामी भाइयो !
घर घर करो चराग़ां कि सरकार आ गए

होते ही पैदा, करते हैं उम्मत को याद आप
उम्मत की मग़्फ़िरत के त़लब गार आ गए

ऐ मुजरिमो ! तुम्हारे त़रफ़ दार आ गए
रख्खो गुनाहगारो न अब ख़ौफ़ ह़श्र का

आफ़त ज़दो ! तुम्हारे मददगार आ गए
ऐ ग़मज़दो ! तुम्हारी तो बस ई़द हो गई

बख़्शिश की आस ले के गुनहगार आ गए
या रब ! करम हो अज़ पए मीलादे मुस्त़फ़ा

दे दो शिफ़ा गुनाहों के बीमार आ गए
सदक़ा हुज़ूर ! आप के मीलादे पाक का

कश्कोल ले के दौड़ते नादार आ गए
सदक़ा बटेगा आमिना बीबी के घर में आज

फूले नहीं समाते हैं अ़त्त़ार आज तो
दुन्या में आज ह़ामिये अ़त्त़ार आ गए

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने मुझ पर रोज़े **जुमुआ़** दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के **दो सो** साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (كَنْزُ الْعُمّال ج١ص٢٥٦ حديث٢٢٣٨)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये
हाथ उठते ही बर आए हर मुद्दआ़ वोह दुआ़ओं में मौला असर चाहिये
आ़शिक़ाने नबी के है दिल की सदा सब्ज़ गुम्बद के साए में घर चाहिये
ज़ौक़ बढ़ता रहे अश्क बहते रहें मुज़्तरिब क़ल्ब और चश्मे तर चाहिये
रात दिन इश्क़ में तेरे तड़पा करूं या नबी ! ऐसा सोज़े जिगर चाहिये
या खु़दा जिस्म से जान जब हो जुदा जल्वए शाह पेशे नज़र चाहिये
बस मदीने में दो गज़ ज़मीं दीजिये और न कुछ ऐ शहे बह़रो बर चाहिये
हम ग़रीबों को रौज़े पे बुलवाइये राहे त़यबा का ज़ादे सफ़र चाहिये

अपने अ़त्त़ार पर हो करम बार बार
इज़्न, त़यबा का बारे दिगर चाहिये

ग़ुस्सा ईमान को ख़राब करता है

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **ग़ुस्सा** ईमान को इस त़रह़ ख़राब करता है जिस त़रह़ एलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शह्द को ख़राब कर देता है।

(شُعَبُ الإيمَان لِلبَيهَقِى ج٦،ص٣١١ حديث ٨٢٩٤)

या नबी ! बस मदीने का ग़म चाहिये

या नबी ! बस मदीने का ग़म चाहिये कुछ नहीं और रब की क़सम चाहिये[1]

मेरा सीना मदीना बना दीजिये चाक क़ल्बो जिगर चश्मे नम चाहिये

बस मदीने की यादों में खोया रहूं फ़िक्र ऐसी शहे मोह़तरम चाहिये

याद में तेरी रोता तड़पता रहूं ऐसा ग़म ताजदारे ह़रम चाहिये

ताजे शाही न दो, बादशाही न दो बस तुम्हारी निगाहे करम चाहिये

मेरे जीने का सामान है बस येही तेरा लुत़्फ़ो करम दम बदम चाहिये

---

1 : अगर ह़क़ीक़ी मा'नों में किसी को "मदीने का ग़म" या'नी **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का कामिल इश्क़ मिल गया वोह सच्चा आ़शिक़े रसूल बन गया और आ़शिक़े रसूल वोही होता है जो "आ़शिक़े इलाही" भी होता है। जब कोई "आ़शिक़े ख़ुदा व मुस्त़फ़ा" का मन्सब पा ले तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की मन्ज़िल मिल गई और जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो गया उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा और यक़ीनन वोह जन्नत में दाख़िल होगा। इसी लिये अ़र्ज़ किया है कि मुझे "मदीने का ग़म" चाहिये कि येह नसीब हो जाने की सूरत में ख़ुदा की क़सम और कोई मुत़ा-लबा ही नहीं कि ग़मे मदीना के ज़रीए सभी कुछ ह़ासिल हो जाएगा। اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

आ-तशे शौक़ आक़ा भड़क्ती रहे मुझ को ग़म या नबी तेरा ग़म चाहिये

जां बलब के सिरहाने अब आ जाइये जामे दीदार शाहे ह़रम चाहिये

तेरे क़दमों में मौत ऐ ह़बीबे ख़ुदा ! ऐ शहन्शाहे अ़-रबो अ़जम चाहिये

दे दो आक़ा बक़ीए़ मुबारक मुझे कुछ नहीं और शहे मोह़तरम चाहिये

मग़्फ़िरत की तुम्हारे करम से मुझे अब सनद या शफ़ीए़ उमम चाहिये

सारे दीवाने आक़ा मदीने चलें इज़्न त़यबा का शाहे उमम चाहिये

तेरा सरकार हूं गर्चे बदकार हूं तेरी रह़मत मुझे हर क़दम चाहिये

छोड़ें आ़दाते बद भाइयो ! मौत की याद हर आन और दम बदम चाहिये

जो भी सरकार पढ़ ले हमारा कलाम वोह तड़प उठे ऐसा क़लम चाहिये

गर वोह फ़रमाएं अ़त्त़ार मांगो भला !

मैं कहूंगा : "मदीने का ग़म चाहिये"

अब करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

अब करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
इज़्न, त़यबा का अ़त़ा फ़रमाइये

या ह़बीबे किब्रिया ह़ज का शरफ़
अब अ़त़ा इक मर्तबा फ़रमाइये

ह़ाज़िरी की अब सआ़दत पाऊं मैं
कुछ करम ऐसा शहा फ़रमाइये

ख़्वाब में आ कर के कुछ शीरीं कलाम
मीठे मीठे मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

जिन पे सदक़े जाएं सब जन्नत के फूल
उन लबों को अब तो वा फ़रमाइये

या रसूलल्लाह मेरी मग़्फ़िरत
हो ख़ुदा से येह दुआ़ फ़रमाइये

इस्तिक़ामत दीन पर हम को अ़त़ा
अज़् पए ग़ौसो रज़ा फ़रमाइये

कब तलक तड़पें असीराने क़फ़स
क़ैदे ग़म से अब रिहा फ़रमाइये

आप की उल्फ़त में हो रोना नसीब
मुझ को चश्मे नम अ़त़ा फ़रमाइये

दूर प्यारे मुस्त़फ़ा रन्जो बला
अज़् तुफ़ैले मुर्तज़ा फ़रमाइये

आप के क़दमों में हो जाऊं शहीद
कुछ सबब ऐसा शहा फ़रमाइये

मुझ को लिल्लाह इक छलक्ता साक़िया
जाम, कौसर का अ़त़ा फ़रमाइये

अपने आ़सी की शफ़ाअ़त ह़श्र में
शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा फ़रमाइये

म-दनी बुरक़अ़ पहनें सब बहनें, करम
फ़ात़िमा का वासित़ा फ़रमाइये

माहे मीलाद आ गया घर घर पर अब नस्ब परचम सब हरा फ़रमाइये
ईदे मीलादुन्नबी फिर आ गई शुक्र का सज्दा अदा फ़रमाइये
ईद आई ईद, ईदों की भी ईद उठिये सामां जश्न का फ़रमाइये
झूम कर सारे ख़ुशी से बार बार "मरह़बा या मुस्त़फ़ा" फ़रमाइये
"या रसूलल्लाह" कहिये ज़ोर से शक़ जिगर इब्लीस का फ़रमाइये
गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे हों नसीब येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
दीजिये दर्दे मदीना दीजिये येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
मेरा सीना हो मदीना या नबी येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
दीजिये सोज़े रज़ा सोज़े ज़िया येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
ने'मते अख़्लाक़ कर दीजे अ़ता येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
ग़ीबतो चुग़ली की आफ़त से बचें येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
हम रियाकारी से बचते ही रहें येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये
नफ़्सो शैत़ां की शरारत दूर हो येह करम या मुस्त़फ़ा फ़रमाइये

दम लबों पर आ गया अ़त्त़ार का
अब क़दम रन्जा शहा ! फ़रमाइये

जश्ने विलादत के ना'रे

सरकार की आमद मरह़बा रसूल की आमद मरह़बा
सरदार की आमद मरह़बा अच्छे की आमद मरह़बा
सालार की आमद मरह़बा सच्चे की आमद मरह़बा
मुख़्तार की आमद मरह़बा बशीर की आमद मरह़बा
ग़म ख़्वार की आमद मरह़बा नज़ीर की आमद मरह़बा
ताजदार की आमद मरह़बा मुनीर की आमद मरह़बा
शानदार की आमद मरह़बा बसीर की आमद मरह़बा
शह्र यार की आमद मरह़बा शहीर की आमद मरह़बा
शहे अबरार की आमद मरह़बा ख़बीर की आमद मरह़बा
मम्बए़ अन्वार की आमद मरह़बा ज़हीर की आमद मरह़बा
हु़ज़ूर की आमद मरह़बा रऊफ़ की आमद मरह़बा
पुरनूर की आमद मरह़बा रह़ीम की आमद मरह़बा
ग़यूर की आमद मरह़बा करीम की आमद मरह़बा
उस नूर की आमद मरह़बा नईम की आमद मरह़बा

मक़्बूल की आमद मरह़बा
आमिना के फूल की आमद मरह़बा
यासीन की आमद मरह़बा
त़ाहा की आमद मरह़बा
मुज़्ज़म्मिल की आमद मरह़बा
मुद्दस्सिर की आमद मरह़बा
प्यारे की आमद मरह़बा
औला की आमद मरह़बा
आ'ला की आमद मरह़बा
वाला की आमद मरह़बा
बाला की आमद मरह़बा
पेश्वा की आमद मरह़बा
रहनुमा की आमद मरह़बा
रहबर की आमद मरह़बा
अफ़्सर की आमद मरह़बा
सरवर की आमद मरह़बा

अ़लीम की आमद मरह़बा
ह़लीम की आमद मरह़बा
ह़कीम की आमद मरह़बा
अ़ज़ीम की आमद मरह़बा
आक़ा की आमद मरह़बा
दाता की आमद मरह़बा
मौला की आमद मरह़बा
जाने जानां की आमद मरह़बा
सय्याहे़ ला मकां की आमद मरह़बा
मह़बूबे रह़मां की आमद मरह़बा
सरवरे दो[2] जहां की आमद मरह़बा
शहे कौनो मकां की आमद मरह़बा
मह़बूबे रब की आमद मरह़बा
सुल्त़ाने अ़रब की आमद मरह़बा
रसूले अकरम की आमद मरह़बा
नूरे मुजस्सम की आमद मरह़बा

ताजवर की आमद मरह़बा   शाहे बनी आदम की आमद मरह़बा
पयम्बर की आमद मरह़बा   नबिय्ये मुह़्तशम की आमद मरह़बा
मुनव्वर की आमद मरह़बा   शाहे अ़-रबो अ़जम की आमद मरह़बा
मुअ़त्त़र की आमद मरह़बा   शाफ़ेए उमम की आमद मरह़बा
शाहे बह़रो बर की आमद मरह़बा   सरापा जूदो करम की आमद मरह़बा
रसूले अन्वर की आमद मरह़बा   दाफ़ेए रन्जो अलम की आमद मरह़बा
ह़बीबे दावर की आमद मरह़बा   सय्यिद की आमद मरह़बा
साक़िये कौसर की आमद मरह़बा   जय्यिद की आमद मरह़बा
मक्की की आमद मरह़बा   त़य्यिब की आमद मरह़बा
म-दनी की आमद मरह़बा   त़ाहिर की आमद मरह़बा
अ़-रबी की आमद मरह़बा   ह़ाज़िर की आमद मरह़बा
क़ु-रशी की आमद मरह़बा   नाज़िर की आमद मरह़बा
हाशिमी की आमद मरह़बा   नासिर की आमद मरह़बा
मुत्त़लिबी की आमद मरह़बा   ज़ाहिर की आमद मरह़बा
सुल्त़ान की आमद मरह़बा   बात़िन की आमद मरह़बा
ज़ीशान की आमद मरह़बा   ह़ामी की आमद मरह़बा
ग़ैब दान की आमद मरह़बा   आक़ाए अ़त्त़ार की आमद मरह़बा

"जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया" कहना कैसा ?

सुवाल : नमाज़ की तल्क़ीन से मु-तअ़ल्लिक़ एक नज़्म केसिट में सुनी जाती है, उस में बे नमाज़ी की मज़म्मत में पढ़े जाने वाले इस **शे'र** के बारे में हुक्मे शर-ई क्या है ?

जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया
उस वक़्त क्या कहोगे तुम्हें आएगी ह़या
शर्मो ह़या से उस घड़ी सर को झुकाओगे
जन्नत तो क्या मिलेगी जहन्नम में जाओगे

जवाब : "जब रोज़े ह़श्र तख़्त पे बैठेगा किब्रिया" येह अल्फ़ाज़ **कुफ़्रिय्या** हैं। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो कहे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **इन्साफ़ के लिये बैठा या खड़ा हो गया उस पर हुक्मे कुफ़्र है।** (فتاوی تاتار خانیه ج۵ص ٤٦٦) इस मिस्रअ़ को अगर यूं पढ़ लें तो शे'र दुरुस्त हो जाएगा : "तुम को बरोज़े ह़श्र जो पूछेगा किब्रिया"। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 242 मक-त-बतुल मदीना)

मनाक़िब

या अ़लिय्यल मुर्तज़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

(येह कलाम 8 रबीउ़ल आख़िर 1432 सि.हि. को मौज़ूं किया)

या अ़लिय्यल मुर्तज़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा
आप हैं शेरे ख़ुदा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

साहि़बे लुत़्फ़ो अ़त़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा
हैं शहीदे बा वफ़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

“इ़ल्म का मैं शहर हूं दरवाज़ा इस का हैं अ़ली”
है येह क़ौले मुस्त़फ़ा[1] मौला अ़ली मुश्किल कुशा

“जिस किसी का मैं हूं मौला उस के मौला हैं अ़ली”
है येह क़ौले मुस्त़फ़ा[2] मौला अ़ली मुश्किल कुशा

पैकरे ख़ौफ़े ख़ुदा ऐ आ़शिक़े ख़ैरुल वरा
तुम से राज़ी किब्रिया मौला अ़ली मुश्किल कुशा

مدینہ

1 : اَنَا مَدِینَۃُ الْعِلْمِ وَعَلِیٌّ بَابُھَا۔ या'नी मैं इ़ल्म का शहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیرج ۱۱ص ۵۵حدیث۱۱۰۶۱)

2 : مَنْ کُنْتُ مَوْلَاہُ فَعَلِیٌّ مَوْلَاہُ۔ या'नी जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं। (ترمِذی ج ۵ ص ۳۹۸ حدیث ۳۷۳۳)

बा'दे खु-लफ़ाए सलासा सब सहाबा से बड़ा
आप को रुत्बा मिला मौला अ़ली मुश्किल कुशा

क़ल्अ़ए ख़ैबर का दरवाज़ा उखाड़ा आप ने
मरहबा ! सद मरहबा ! मौला अ़ली मुश्किल कुशा

पैकरे जूदो सख़ा तू, मैं फ़क़ीरो बे नवा[1]
तू है दाता मैं गदा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

शब्बरो शब्बीर के वालिद हो तुम मां फ़ातिमा
सय्यिदो सरदारे मा[2] मौला अ़ली मुश्किल कुशा

मैं गुनाहों का मरीज़ और आप हैं मेरे त़बीब
दीजिये मुझ को शिफ़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

जान को ख़त़रा है मेरी दुश्मनों से हर घड़ी
अल मदद शेरे ख़ुदा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

1 : बे सरो सामान। 2 : हमारे सरदार

हैदरे[1] कर्रार[2] ! ले के आओ तेग़े ज़ुल फ़िक़ार

ज़ोरे दुश्मन बढ़ चला मौला अ़ली मुश्किल कुशा

मग़िफ़रत करवाइये जन्नत में ले के जाइये

वासित़ा ह़-सनैन का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर के या अ़ली !

दे दो इश्क़े मुस्त़फ़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

अज़ पए ग़ौसुल वरा हम को नजफ़[3] बुलवाइये

हो करम या मुर्तज़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

शब्बरो शब्बीर के बाबा मुझे दीदार हो

ख़्वाब में अब आप का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

अश्कबार आंखें अ़ता हों दिल की सख़्ती दूर हो

दीजिये ख़ौफ़े ख़ुदा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

---

1 : शेर 2 : बार बार ह़म्ला करने वाला, भगाने वाला। 3 : इराक़ के उस शहर का नाम जहां मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है।

एक ज़र्रा अपनी उल्फ़त का इनायत कर मुझे
अपना दीवाना बना मौला अ़ली मुश्किल कुशा

भीक लेने के लिये दरबार में मंगता तेरा
ले के कश्कोल आ गया मौला अ़ली मुश्किल कुशा

क्यूं फिरूं दर दर भला ख़ैरात लेने के लिये
मैं फ़क़त मंगता तेरा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

नफ़्से अम्मारा[1] हो मग़्लूब और सदा नाकाम हो
वार हर शैत़ान का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

बे सबब बख़्शिश हो मेरी येह दुआ़ फ़रमाइये
मुस्त़फ़ा का वासित़ा मौला अ़ली मुश्किल कुशा

कीजिये ह़क़ से दुआ़ ईमान पर हो ख़ातिमा
ख़ैर से अ़त्तार का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

---

1 : बुराई पर उभारने वाला नफ़्स।

तू ने बातिल को मिटाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

तू ने बातिल को मिटाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा
दीन का डंका बजाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

ज़ोर बातिल का ज़लालत का था जिस दम हिन्द में
तू मुजद्दिद बन के आया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

अहले सुन्नत का चमन सर सब्ज़ था शादाब था
ताज़गी तू और लाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा[1]

तू ने बातिल को मिटा कर दीन को बख़्शी जिला
सुन्नतों को फिर जिलाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

ऐ इमामे अहले सुन्नत नाइबे शाहे उमम
कीजिये हम पर भी साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

इ़ल्म का चश्मा हुवा है मोजज़न तह़रीर में
जब क़लम तू ने उठाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

ह़श्र तक जारी रहेगा फ़ैज़ मुर्शिद आप का
फ़ैज़ का दरिया बहाया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

है ब दरगाहे ख़ुदा अ़त्तारे आ़जिज़ की दुआ़
तुझ पे हो रह़मत का साया ऐ इमाम अह़मद रज़ा

1 : येह मिस्रअ़ "मुफ़त्तिश" ने मौज़ूं किया।

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(19 शव्वालुल मुकर्रम 1433 सि.हि. ब मुताबिक़ 6-09-2012)

ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का
ख़ुदा उन का मुहम्मद मुस्तफ़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

करम अल्लाह का हर दम नबी की मुझ पे रहमत है
मुझे है दो जहां में आसरा फ़ारूक़े आ'ज़म का

पसे सिद्दीक़े अक्बर मुस्तफ़ा के सब सहाबा में
है बेशक सब से ऊंचा मर्तबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

गली से उन की शैतां दुम दबा कर भाग जाता है
है ऐसा रो'ब ऐसा दब-दबा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सहाबा और अहले बैत की दिल में महब्बत है
ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

रहे तेरी अ़ता से या ख़ुदा ! तेरी इनायत से
हमारे हाथ में दामन सदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

भटक सकता नहीं हरगिज़ कभी वोह सीधे रस्ते से
करम जिस बख़्त वर पर हो गया फ़ारूक़े आ'ज़म का

صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلّم
ख़ुदा की ख़ास रह़मत से मुह़म्मद की इनायत से
जहन्नम में न जाएगा गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

सदा आंसू बहाए जो ग़मे इ़श्क़े मुह़म्मद में
दे ऐसी आंख या रब ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

मुझे ह़ज्जो ज़ियारत की सआ़दत अब इनायत हो
वसीला पेश करता हूं ख़ुदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

इलाही ! एक मुद्दत से मेरी आंखें तरसती हैं
दिखा दे सब्ज़ गुम्बद वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

शहादत ऐ ख़ुदा ! अ़त्त़ार को दे दे मदीने में
करम फ़रमा इलाही ! वासित़ा फ़ारूक़े आ'ज़म का

फिर बुला करबला या शहे करबला

फिर बुला करबला, या शहे करबला
अपना रौज़ा दिखा, या शहे करबला

तेरे दरबार को, उस के अन्वार को
आह ! कब पाऊंगा, या शहे करबला

मैं ने चूमी नहीं, करबला की ज़मीं
एक अ़र्सा हुवा, या शहे करबला

कूचए पाक को, ख़स को ख़ाशाक को
चूमूं आ कर शहा, या शहे करबला

ऐसा पाऊं जुनूं[1], धड़कनों में सुनूं
करबला करबला, या शहे करबला

अज़ पए चार यार, ऐ शहे ज़ी वक़ार
अपना शैदा बना, या शहे करबला

चश्मे नम दीजिये अपना ग़म दीजिये
अज़ तुफ़ैले रज़ा, या शहे करबला

ख़्वाब में आइये, जल्वा दिखलाइये
अज़ पए मुस्त़फ़ा, या शहे करबला

इस गुनहगार को, ख़्वारो बदकार को
जैसा भी है निभा, या शहे करबला

इब्ने शाहे अ़रब ! म-रज़े इस्यां से अब
दे दो मुझ को शिफ़ा, या शहे करबला

1 : दीवानगी

एक मज़्लूम को अपने मग़्मूम को	आफ़तों से छुड़ा, या शहे करबला
मेरे उजड़े चमन पर करम की भरन[1]	अब तो बरसा शहा, या शहे करबला
दिल को मिल जाए चैन अल मदद या हुसैन	हूं बहुत ग़मज़दा, या शहे करबला
अब हो रुख़्सत ख़ज़ां, खिल उठे गुलसितां	वोह चला दो हवा, या शहे करबला
जुल फ़िक़ारे अ़ली, जब अ़दू पे चली	क़ह्र सा छा गया, या शहे करबला
आह ! दुश्मन मेरे, ख़ूं के प्यासे हुए	ले के तलवार आ, या शहे करबला
सुन लो फ़रियाद को आओ इमदाद को	इब्ने मुश्किल कुशा, या शहे करबला
हो मुयस्सर इमाम अब शहादत का जाम	कर दो ह़क़ से दुआ, या शहे करबला

जानिबे करबला काश ! अ़त्तार का
चल पड़े क़ाफ़िला, या शहे करबला

जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे। (بُخاری، حدیث۶۰۱۸)

1 : ज़ोर शोर की बारिश जो जलथल कर दे।

बग़दाद के मुसाफ़िर मेरा सलाम कहना

(यकुम रबीउ़ल आख़िर 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 12-02-2013)

बग़दाद के मुसाफ़िर मेरा सलाम कहना
रो रो के मुर्शिदी से मेरा पयाम कहना

या पीर ग़ौसे आ'ज़म ! क़िस्मत खुलेगी किस दम ?
आएगा कब येह दर पर तेरा ग़ुलाम कहना

बग़दाद वाले मुर्शिद दर पर बुला ले मुर्शिद
देखे तेरी गली के येह सुब्ह़ो शाम कहना

अपनी रिज़ा का मुर्शिद मुज़्दा सुनाइये अब
मत फेरना इसे बे नैले मराम[1] कहना

छा जाए ऐसी मस्ती मिट जाए अपनी हस्ती
कर दो इनायत ऐसा उल्फ़त का जाम कहना

1 : ना मुराद

कहता था पीरो मुर्शिद ह़क़ से दुआ़ येह करना
दोज़ख़ ह़राम हो और जन्नत मक़ाम कहना

वा'ज़ों की तेरे मुर्शिद है धूम चार जानिब
मैं भी कभी तो सुन लूं मीठा कलाम कहना

जल्वा दिखाना मुर्शिद कल्मा पढ़ाना मुर्शिद
जिस दम हो ज़िन्दगी का लबरेज़ जाम कहना

उफ़्ताद[1] आ पड़ी है इमदाद की घड़ी है
फ़रियाद कर रहा है तेरा ग़ुलाम कहना

साइल नवाज़िशों का कहता था साज़िशों का
मुर्शिद हो दुश्मनों का क़िस्सा तमाम कहना

अ़त्तार को बुला कर मुर्शिद गले लगा कर
फिर ख़ूब मुस्कुरा कर करना कलाम कहना

مدینہ

1 : मुसीबत।

अजमेर बुलाया मुझे अजमेर बुलाया

अजमेर बुलाया मुझे अजमेर बुलाया
अजमेर बुला कर मुझे मेहमान बनाया

हो शुक्र अदा कैसे कि मुझ पापी को ख़्वाजा
अजमेर बुला कर मुझे दरबार दिखाया

सुल्ताने मदीना की महब्बत का भिकारी
बन कर मैं शहा ! आप के दरबार में आया

दुन्या की हुकूमत दो न दौलत दो न सरवत
हर चीज़ मिली जामे महब्बत जो पिलाया

क़दमों से लगा लो मुझे क़दमों से लगा लो
ख़्वाजा है ज़माने ने बड़ा मुझ को सताया

डूबा अभी डूबा मुझे लिल्लाह संभालो
सैलाब गुनाहों का बड़े ज़ोर से आया

हो चश्मे शिफ़ा अब तो शहा ! सूए मरीज़ां
इस्यां के मरज़ ने है बड़ा ज़ोर दिखाया

सरकारे मदीना का बना दीजिये आ़शिक़
येह अ़र्ज़ लिये शाह कराची से मैं आया

या ख़्वाजा करम कीजिये हों ज़ुल्मतें काफ़ूर
बातिल ने बड़े ज़ोर से सर अपना उठाया

अ़त्तार करम ही से तेरे जम के खड़ा है
दुश्मन ने गिराने को बड़ा ज़ोर लगाया

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़ता दाता पिया

हो मदीने का टिकट मुझ को अ़ता दाता पिया
आप को ख़्वाजा पिया का वासित़ा दाता पिया

मुझ को र-मज़ाने मदीना की ज़ियारत हो नसीब
ख़र्च हो राहे मदीना का अ़ता दाता पिया

दो न दो मरज़ी तुम्हारी तुम मदीने का टिकट
मैं पुकारे जाऊंगा दाता पिया दाता पिया

दौलते दुन्या का साइल बन के मैं आया नहीं
मुझ को दीवाना मदीने का बना दाता पिया

काश मैं रोया करूं इश्क़े रसूले पाक में
सोज़ दे ऐसा पए अह़मद रज़ा दाता पिया

ग़म मुझे मीठे मदीने का अ़ता कर दो शहा
मेरा सीना भी मदीना दो बना दाता पिया

मीठे मीठे मुस्त़फ़ा की बारगाहे पाक में
कीजिये मेरी सिफ़ारिश आप या दाता पिया

गो ज़लीलो ख़्वार हूं पापी हूं मैं बदकार हूं
आप का हूं आप का हूं आप का दाता पिया

आरज़ू है मौत आए गुम्बदे ख़ज़रा तले
हाथ उठा कर कीजिये ह़क़ से दुआ़ दाता पिया

मैं हूं इस्यां का मरीज़ और तुम त़बीबे आ़सियां
हो अ़त़ा मुझ को गुनाहों की दवा दाता पिया

आप की चश्मे करम हो जाए गर बदह़ाल पर
दूर हो ग़म की अभी काली घटा दाता पिया

क्या ग़रज़ दर दर फिरूं मैं भीक लेने के लिये
है सलामत आस्ताना आप का दाता पिया

झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन
हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया

मुझ को दाता ! ताजदाराने जहां से क्या ग़रज़
मैं तो हूं मंगता तेरे दरबार का दाता पिया

उजड़े घर आबाद हों और ग़म के मारे शाद हों
हो तेरे हर एक मंगते का भला दाता पिया

दुम दबा कर भाग जाए शेर भी गर देख ले
आप के दरबार का कुत्ता शहा दाता पिया

काश ! फिर लाहोर में नेकी की दा'वत आ़म हो
फ़ैज़ का दरिया बहा दो सरवरा दाता पिया

मस्जिदें आबाद हों और सुन्नतें भी आ़म हों
फ़ैज़ का दरिया बहा दो सरवरा दाता पिया

सारे मंगते अपने चेहरे पर सजाएं दाढ़ियां
फ़ैज़ का दरिया बहा दो सरवरा दाता पिया

तख़्ते शाही की नहीं है आरज़ू अ़त्तार को
इस को बस कुत्ता बना लो अपना या दाता पिया

अपने क़दमों में बुला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

(यकुम र–जबुल मुरज्जब 1434 हि. ब मुताबिक़ 11-05-2013)

अपने क़दमों में बुला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
और जल्वा भी दिखा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

हो करम बरह़ाले मा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
अज़ पए दाता पिया ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

आह ! कितनी देर से मैं दूर हूं अजमेर से
जाने मैं कब आऊंगा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

मुस्त़फ़ा की अम्बिया की हर सह़ाबी और वली
की महब्बत हो अ़त़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

या मुईनद्दीन अजमेरी ! करम की भीक दो
अज़ पए ग़ौसो रज़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

शब्बरो शब्बीर का सदक़ा बलाएं दूर हों
ऐ मेरे मुश्किल कुशा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

आफ़तों की आंधियां कर दूर दे अम्नो अमां
बहरे ख़ाके करबला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

दिल से दुन्या की महब्बत की मुसीबत दूर हो
दे दो इश्क़े मुस्तफ़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

तेरी उल्फ़त में जियूं तेरी महब्बत में मरूं
हो करम ऐसा शहा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

झोलियां भरते हो मंगतों की मुझे भी हो अ़ता
हि़स्सए जूदो सख़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

नै मैं साइल राज का नै तख़्त का नै ताज का
मैं फ़क़त़ मंगता तेरा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

येह सगे दरबार ख़्वाजा ! त़ालिबे दीदार है
चेह्‌रए अन्वर दिखा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

दुश्मनों में हूं घिरा सिद्दीक़ का सदक़ा बचा
अल मदद ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

ऊंट बैठे उठ न पाए सारबां[1] हैरान थे
येह करामत वाह वा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

आ गया सारा "अना सागर"[2] तेरी छागल[3] में ख़ूब
शान तेरी मरहबा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

अपनी मन्ज़िल से कभी भी वोह भटक सकता नहीं
जिस के तुम हो रहनुमा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

इस्तिक़ामत मज़्हबे इस्लाम पर मिल जाए काश !
हाथ उठा कर कर दुआ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

---

1 : ऊंट वाले, ऊंट चलाने और हांकने वाले।
(फ़रहंगे आसिफ़िय्या, जि. 2, स. 7)

2 : अजमेर शरीफ़ के तालाब का नाम।

3 : छोटी सी मशक। मिट्टी का वोह बरतन जिस में मुसाफ़िर पानी भर लेते हैं। (रंगीन फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 578)

ख़ातिमा बिलखै़र हो मीठे मदीने में मेरा
हाथ उठा कर कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

हज़ की मिल जाए सआ़दत सब्ज़ गुम्बद देख लूं
हाथ उठा कर कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

काश ! क़िस्मत से मदीने में शहादत पाऊं मैं
हाथ उठा कर कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

हो बक़ीए़ पाक में तदफ़ीन मेरी खै़र से
हाथ उठा कर कर दुआ़ ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

एक ज़र्रा हो अ़ता अ़त्तार के हो जाएगा
ख़्वाजा ! घर भर का भला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

शुक्रिया आप का बग़दाद बुलाया या ग़ौस

(इस मन्क़बत के अक्सर अश्आ़र बग़दादे मुअ़ल्ला में लिख कर ग़ौसे पाक के दरबार में पेश किये गए)

शुक्रिया आप का बग़दाद बुलाया या ग़ौस
मुझ गुनहगार को मेहमान बनाया या ग़ौस

मर्तबा यूं तेरा ख़ालिक़ ने बढ़ाया या ग़ौस
औलिया का तुझे सुल्त़ान बनाया या ग़ौस

यादे त़यबा से बसा दीजिये सीना मेरा
अ़र्ज़ येह शहरे "कराची" से हूं लाया या ग़ौस

मैं निकम्मा तो किसी काम के क़ाबिल ही न था
मुझ से बेकार को तुम ने ही निभाया या ग़ौस

क़ाबिले रश्क है वल्लाह वोह क़िस्मत वाला
तू ने कुत्ता जिसे अपना है बनाया या ग़ौस

क़ल्बे मुर्दा को भी ठोकर से जिला दो मुर्शिद
बिल-यक़ीं तुम ने तो मुर्दों को जिलाया या ग़ौस

आफ़्तों में हूं गिरिफ़्तार, मदद को आओ
आह ! दुन्या के ग़मों ने है सताया या ग़ौस

"ला तख़फ़[1]" ह़श्र में कहते हुए आ जाना तुम
जैसे दुन्या में येह इर्शाद सुनाया या ग़ौस

तेरे दामन से लिपट कर मैं मचल जाऊंगा
मुझ को जिस दम सरे मह़शर नज़र आया या ग़ौस

मैं जहन्नम में न अब जाऊंगा اِنْ شَاءَ اللّٰه
रहनुमा तुम को जो मैं ने है बनाया या ग़ौस

शाहे बग़दाद ! हो अ़त्तार पे नज़रे रह़मत !
ख़ाली कासा लिये है दूर से आया या ग़ौस

---

1 : "ला तख़फ़" से ग़ौसे पाक के इस इर्शाद : مُرِيۡدِیْ لَا تَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّیْ (या'नी मेरे मुरीद मत डर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा परवर दगार है) की त़रफ़ इशारा है।

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या शहे बग़दाद
येह सुन कर मैं ने भी दामन पसारा या शहे बग़दाद

मेरी क़िस्मत का चमका दो सितारा या शहे बग़दाद
दिखा दो अपना चेहरा प्यारा प्यारा या शहे बग़दाद

इजाज़त दो कि मैं बग़दाद ह़ाज़िर हो के फिर कर लूं
तुम्हारे नीले गुम्बद का नज़ारा या शहे बग़दाद

ग़मे शाहे मदीना मुझ को तुम ऐसा अ़त़ा कर दो
जिगर टुकड़े हो दिल भी पारा पारा या शहे बग़दाद

मदीने का बना दो तुम मुझे कुछ ऐसा दीवाना
फिरूं दीवानगी में मारा मारा या शहे बग़दाद

खुदा के ख़ौफ़ से रोए नबी के इश्क़ में रोए
अ़ता कर दो वोह चश्मे तर खुदारा या शहे बग़दाद

गुनाहों के मरज़ ने कर दिया है नीम जां मुझ को
तुम्हीं आ के करो अब कोई चारा या शहे बग़दाद

मुझे अच्छा बना दो मुर्शिदी बेशक यक़ीनन हैं
मेरे ह़ालात तुम पर आश्कारा या शहे बग़दाद

सुधारो मुर्शिदी लिल्लाह अपने ढीट बर्दे[1] को
न जाने तुम ने कितनों को सुधारा या शहे बग़दाद

हुई जाती है ऊजड़ अब मेरी उम्मीद की खेती
भरन बरसा दो रह़मत की खुदारा या शहे बग़दाद

करम मीरां ! मेरे उजड़े गुलिस्तां में बहार आए
ख़ज़ां का रुख़ फिरा दो अब खुदारा या शहे बग़दाद

مـــــــــــــــــدينه

1 : गुलाम

शहा ! ख़ैरात लेने को सलातीने ज़माना ने
तेरे दरबार में दामन पसारा या शहे बग़दाद

गरजते बादलों का शोर चलती आंधियों का ज़ोर
लरज़ता है कलेजा दो सहारा या शहे बग़दाद

बचा लो दुश्मनों के वार से या ग़ौसे जीलानी
बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या शहे बग़दाद

वसीला चार यारों का ख़ुदा से बख़्शवा दीजे
करम फ़रमाइये मुझ पर ख़ुदारा या शहे बग़दाद

अगर्चे लाख पापी है मगर अ़त्तार किस का है ?
तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या शहे बग़दाद

निफ़ाक़े ए 'तिक़ादी की ता'रीफ़

ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस्लाम से इन्कार करना निफ़ाक़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 182, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना (कराची))

दर पर जो तेरे आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

(येह कलाम यकुम रबीउ़ल आख़िर 1432 हि. को मौज़ूं किया)

दर पर जो तेरे आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद
मन की मुरादें पा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

लेने शिफ़ाए कामिला दरबार में ऐ कामिल
बीमारे इस्यां आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

जो कोई तीरह बख़्त[1] यहां हो गया है ह़ाज़िर
रोशन नसीबा पा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

क़दमों में तेरे दुन्या के झन्झट से बस निकल कर
जो आ गया सो पा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

जब भी तड़प के कह दिया "या ग़ौस अल मदद" तब
इमदाद को तू आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

مدینہ

1 : बद नसीब

जिस ने लगाया ज़ोर से या ग़ौस का है ना'रा
वोह दुश्मनों पे छा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

बेदार बख़्त वोह है ह़क़ीक़त में जिस को जल्वा
तू ख़्वाब में दिखा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

ईमान उस का बच गया शैत़ान से, जो तेरे
है "सिल्सिले" में आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

क्यूं नज़्ओ क़ब्रो ह़श्र का डर अब मुरीदों को हो
तू "ला तख़फ़" सुना गया बग़दाद वाले मुर्शिद

दीदार भी करा दे मुझे कल्मा भी पढ़ा दे
अब वक़्ते रिह़लत आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

अ़त्तार आ के काश ! येह दरबार में कहे फिर
बग़दाद मैं फिर आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

रौनके़ कुल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

रौनके़ कुल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
पेशवाए अस्फ़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर[1]

आप हैं पीरों के पीर और आप हैं रोशन ज़मीर
आप शाहे अत्क़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

औलिया की गरदनें हैं आप के ज़ेरे क़दम
या इमामल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

थरथराते हैं शहा जिन्नात तेरे नाम से
है तेरा वोह दबदबा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

पैदा होते ही रखे र-मज़ां में रोजे़, दिन में दूध
का न इक क़त्रा पिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

जिस त़रह़ मुर्दे जिलाए इस त़रह़ मुर्शिद मेरे
मुर्दा दिल को भी जिला, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

---

1 : दस्त या'नी हाथ, गीर या'नी थामने वाला, मददगार। दस्त-गीर पढ़िये अक्सर दस-तगीर पढ़ते हैं जो कि दुरुस्त नहीं।

अहले महशर देखते ही ह़श्र में यूं बोल उठे
मरहबा सद मरहबा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

आप जैसा पीर होते क्या ग़रज़ दर दर फिरूं
आप से सब कुछ मिला या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

गो ज़लीलो ख़्वार हूं बदकारो बद किरदार हूं
आप का हूं आप का, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

रास्ता पुरख़ार, मन्ज़िल दूर, बन सुनसान है
अल मदद ऐ रहनुमा ! या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

ग़ौसे आ'ज़म ! आइये मेरी मदद के वासिते
दुश्मनों में हूं घिरा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

आफ़तें भी दूर हों, रन्जो बला काफ़ूर हों
अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

इज़्न दो बग़दाद का हर इक अक़ीदत मन्द को
ग्यारहवीं वाले शहा या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

मीठे मुर्शिद ह़ाज़िरी को इक ज़माना हो गया
दर पे फिर मुझ को बुला, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

मेरे मीठे मीठे मुर्शिद आइये ना ख़्वाब में
वासित़ा सरकार का, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

अपनी उल्फ़त की पिला कर मै मुझे या मुर्शिदी
मस्त और बेखुद बना या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

लम्ह़ा लम्ह़ा बढ़ रहा है हाए ! इस्यां का मरज़
दीजिये मुझ को शिफ़ा, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

मुर्शिदी मुझ को बना दे तू मरीज़े मुस्त़फ़ा
अज़ पए अह़मद रज़ा ! या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

अपने रब से मुस्त़फ़ा का ग़म दिला दे मुर्शिदी
हाथ उठा के कर दुआ़ या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

अब सिरहाने आओ मुर्शिद और मुझे कल्मा पढ़ाओ
दम लबों पर आ गया या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

है येही अ़त्त़ार की ह़ाजत मदीने में मरे
हो इनायत सय्यिदा, या ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

निक़ाब अपने रुख़ से उठा ग़ौसे आ'ज़म

निक़ाब अपने रुख़ से उठा ग़ौसे आ'ज़म मुझे अपना जल्वा दिखा ग़ौसे आ'ज़म

मुझे ऐसा शैदा बना ग़ौसे आ'ज़म कि हो जाऊं तुझ पर फ़िदा ग़ौसे आ'ज़म

मेरे पीर रोशन ज़मीर आप को तो मेरे ह़ाल का है पता ग़ौसे आ'ज़म

तुम्हारे हैं जितने मुरीद उन सभी में बुरा हूं, बना दो भला ग़ौसे आ'ज़म

बरोज़े क़ियामत हमें अपने झन्डे तले दीजियेगा जगह ग़ौसे आ'ज़म

जो बीमारियों में घिरे हैं उन्हें तुम दिला दो ख़ुदा से शिफ़ा ग़ौसे आ'ज़म

मुरीदीन को जो सताते हैं जिन्नात ख़ुदारा उन्हें दो भगा ग़ौसे आ'ज़म

नज़र से या जादू से जो हैं परेशां हो उन पर भी चश्मे अ़ता ग़ौसे आ'ज़म

कलेजा शयातीं का थर्रा उठेगा पुकारो सभी मिल के या ग़ौसे आ'ज़म

सजाएं इमामा बढ़ाएं जो दाढ़ी उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

वोह बहनें जो पहनें सदा "म-दनी बुरक़अ़" उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

जो हैं वक़्फ़, सुन्नत की ख़िदमत की ख़ातिर उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

जो रोज़ाना देते हैं नेकी की दा'वत उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

सफ़र क़ाफ़िले में जो करते हैं हर माह उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

जो दें राहे मौला में बारह महीने उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

जो अपनाते हैं "म-दनी इन्आ़म" अक्सर उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

दमे नज़्अ़ पानी उतरता नहीं है पिला शरबते दीद या ग़ौसे आ'ज़म

है अ़त्तार को सल्बे ईमां का धड़का
बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म

हर कलिमे पर साल भर की इबादत का सवाब

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : मैं उस के हर हर कलिमे के बदले **एक एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।

(مُکاشَفۃُ القُلوب ص۴۸)

मेरे ख़्वाब में आ भी जा ग़ौसे आ'ज़म

मेरे ख़्वाब में आ भी जा ग़ौसे आ'ज़म
पिला जामे दीदार या ग़ौसे आ'ज़म

कभी तो ग़रीबों के घर कोई फेरा !
हमारी भी क़िस्मत जगा ग़ौसे आ'ज़म

कुछ ऐसी पिला दो शराबे मह़ब्बत
न उतरे कभी भी नशा ग़ौसे आ'ज़म

हैं ज़ेरे क़दम गरदनें औलिया की
तुम्हारा है वोह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

हैं सारे वली तेरे ज़ेरे नगीं[1] और
है तू सय्यिदुल औलिया ग़ौसे आ'ज़म

मदद कीजिये आह ! चारों त़रफ़ से
मैं आफ़ात में हूं घिरा ग़ौसे आ'ज़म

---

1 : मा तह़्त

बहार आए मेरे भी उजड़े चमन में
चला कोई ऐसी हवा ग़ौसे आ'ज़म

रहे शादो आबाद मेरा घराना
करम अज़ पए मुस्त़फ़ा ग़ौसे आ'ज़म

दमे नज़्अ़ शैत़ां न ईमान ले ले
ह़िफ़ाज़त की फ़रमा दुआ़ ग़ौसे आ'ज़म

मुरीदीन की मौत तौबा पे होगी
है येह आप ही का कहा ग़ौसे आ'ज़म

मेरी मौत भी आए तौबा पे मुर्शिद !
हूं मैं भी मुरीद आप का ग़ौसे आ'ज़म

करम आप का गर हुवा तो यक़ीनन
न होगा बुरा ख़ातिमा ग़ौसे आ'ज़म

मेरी क़ब्र में "ला तख़फ़" कहते आओ
अंधेरा रहा है डरा ग़ौसे आ'ज़म

गो अ़त्तार बद है बदों का भी सरदार
येह तेरा है तेरा, तेरा ग़ौसे आ'ज़म

नज़ारा हो दरबार का ग़ौसे आ'ज़म

नज़ारा हो दरबार का ग़ौसे आ'ज़म दिखा नीला गुम्बद दिखा ग़ौसे आ'ज़म

मुझे जामे उल्फ़त पिला ग़ौसे आ'ज़म रहूं मस्तो बेखुद सदा ग़ौसे आ'ज़म

करम कीजिये फिर मैं बग़दाद आऊं मेरे पीर का वासिता ग़ौसे आ'ज़म

मुझे अपनी चौखट का कुत्ता बना लो हमेशा रहूं बा वफ़ा ग़ौसे आ'ज़म

तेरे आस्तां का हूं मंगता गुज़ारा है टुकड़ों पे तेरे मेरा ग़ौसे आ'ज़म

गुनाहों का बार अपने सर पर उठा कर फिरूं कब तलक जा बजा ग़ौसे आ'ज़म

इलाज आख़िर ऐ मुर्शिदी कब करेंगे ! गुनाहों के बीमार का ग़ौसे आ'ज़म

गुनहगार हूं गर अज़ाबों ने घेरा तो होगा मेरा हाए ! क्या ग़ौसे आ'ज़म

नज़र मुर्शिदी तेरी जानिब लगी है अज़ाबों से लेना बचा ग़ौसे आ'ज़म

जहां में जियूं सुन्नतों के मुताबिक़ मदीने में हो ख़ातिमा ग़ौसे आ'ज़म

हो अ़त्तार की बे सबब बख़्शिश आक़ा

येह फ़रमाएं हक़ से दुआ ग़ौसे आ'ज़म

शहन्शाहे बग़दाद या ग़ौसे आ'ज़म

शहन्शाहे बग़दाद या ग़ौसे आ'ज़म सुनो मेरी फ़रियाद या ग़ौसे आ'ज़म
बुला लीजे बग़दाद या ग़ौसे आ'ज़म सुनानी है रूदाद या ग़ौसे आ'ज़म
लगा कर मुझे अपने क़दमों से मुर्शिद मेरा दिल करो शाद या ग़ौसे आ'ज़म
तेरे पाक जल्वों से या पीरो मुर्शिद मेरा दिल हो आबाद या ग़ौसे आ'ज़म
पिला जाम ऐसा सिवा तेरे आक़ा न कुछ भी रहे याद या ग़ौसे आ'ज़म
मेरे क़ल्ब से हुब्बे दुन्या की मुर्शिद उखड़ जाए बुन्याद या ग़ौसे आ'ज़म
रहे मुझ पे मीठी नज़र मुर्शिदी गर पड़े कुछ न उफ़्ताद[1] या ग़ौसे आ'ज़म
तेरे होते या पीर ! रन्जो अलम की करूं किस से फ़रियाद या ग़ौसे आ'ज़म
तेरे दर के मंगते सब अग़्वासो अक़्ताब और अब्दालो अवताद या ग़ौसे आ'ज़म
मुकर्रम शहा तेरे सारे के सारे हैं आबाओ अजदाद या ग़ौसे आ'ज़म
शहा काश ! दर का बना लेती कुत्ता मुझे तेरी औलाद या ग़ौसे आ'ज़म
रहें शादो आबाद आलम में मेरे सभी घर के अफ़राद या ग़ौसे आ'ज़म
मुझे प्यारे ग्यारह भी बारह भी पच्चीस के लगते हैं आ'दाद या ग़ौसे आ'ज़म
अदू क़त्ल करने के दर पै हुवा है मदद शाहे बग़दाद या ग़ौसे आ'ज़म

1 : मुसीबत

अ़दू तो मुख़ालिफ़ थे पहले ही से अब बढ़ा ज़ोरे हुस्साद[1] या ग़ौसे आ'ज़म

गुनाहों ने मुझ को कहीं का न छोड़ा न हो जाऊं बरबाद या ग़ौसे आ'ज़म

मुझे नफ़्से ज़ालिम पे कर दीजे ग़ालिब हो नाकाम हमज़ाद[2] या ग़ौसे आ'ज़म

दमे नज़्अ़ दीदार की भीक देना चले जां मेरी शाद या ग़ौसे आ'ज़म

गरिफ़्तारे रन्जो बला येह गदा है करो आ कर आज़ाद या ग़ौसे आ'ज़म

"येह अ़त्तार मेरा है" मुर्शिद ख़ुदारा
सुना दो येह इर्शाद या ग़ौसे आ'ज़म

ग़िब्ता की ता'रीफ़

ग़िब्ता से मुराद येह है कि इन्सान दूसरे की ने'मत का ज़वाल (या'नी ज़ाएअ़ हो जाना) न चाहे बल्कि वैसी ही ने'मत की अपने लिये तमन्ना करे तो येह **ग़िब्ता** (या'नी रश्क) कहलाता है, न येह **ह़सद** में दाखि़ल और न ही ह़राम। (طریقہ محمدیہ ج ۱ص ۶۱۰)

مدینہ

1 : ह़ासिद की जम्अ़ 2 : इन्सान के बच्चे के हमराह पैदा होने वाला शैत़ान जो कि बहकाने के लिये हर वक़्त साथ रहता है।

हो बग़दाद का फिर सफ़र ग़ौसे आ'ज़म

हो बग़दाद का फिर सफ़र ग़ौसे आ'ज़म
मुहय्या वसाइल वोह कर ग़ौसे आ'ज़म

शहन्शाहे जिन्नो बशर ग़ौसे आ'ज़म
हो वलियों के भी ताजवर ग़ौसे आ'ज़म

मैं पहले भी बग़दाद ह़ाज़िर हुवा था
इजाज़त दो बारे दिगर ग़ौसे आ'ज़म

मैं गलियों में बिस्तर जमा दूं फिर आ कर
दो बग़दाद में मुझ को घर ग़ौसे आ'ज़म

दिखा दो मज़ारे मुनव्वर के जल्वे
दिखा दो फिर अपना नगर ग़ौसे आ'ज़म

खुदा व नबी की जो उल्फ़त में रोए
अ़ता कर दो वोह चश्मे तर ग़ौसे आ'ज़म

अ़ता हो मुझे अपने अल्लाह का डर
दो इश्क़े शहे बह़रो बर ग़ौसे आ'ज़म

मेरे मीठे मुर्शिद मुझे फिर शरफ़ दे
येह सर हो तेरा संगे दर ग़ौसे आ'ज़म

मिला सिल्सिला क़ादिरी फ़ज़्ले रब से
मैं हूं किस क़दर बख़्त वर ग़ौसे आ'ज़म

हमेशा तेरा इश्क़ बेचैन रख्खे
अ़ता हो वोह सोज़े जिगर ग़ौसे आ'ज़म

मुझे अपनी उल्फ़त की ख़ैरात दे दो
मेरी ख़ाली झोली दो भर ग़ौसे आ'ज़म

मेरी डूबती नाउ को दो सहारा
ज़रा जल्द आओ इधर ग़ौसे आ'ज़म

यहां भी सहारा वहां भी सहारा
इधर ग़ौसे आ'ज़म उधर ग़ौसे आ'ज़म

मुझे दुश्मनों ने कहीं का न छोड़ा
है फ़रियाद ! टूटी कमर ग़ौसे आ'ज़म

अ़दू के मुक़ाबिल वोह हिम्मत अ़ता हो
रहूं काश ! सीना सिपर ग़ौसे आ'ज़म

मदद अल मदद मुर्शिदी वरना दुश्मन
चला जान से मार कर ग़ौसे आ'ज़म

ज़बां पर रहे मेरी या पीरो मुर्शिद
तेरा ज़िक्र आठों पहर ग़ौसे आ'ज़म

मेरा हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ा दे
अ़ता अपनी उल्फ़त तू कर ग़ौसे आ'ज़म

शहा नफ़्से अम्मारा मग़्लूब हो अब
हो शैत़ान का दूर शर ग़ौसे आ'ज़म

है इस्यां के बीमार का दम लबों पर
ख़ुदारा लो जल्दी ख़बर ग़ौसे आ'ज़म

तुम्हें मेरे ह़ालात की सब ख़बर है
परेशां हूं मैं किस क़दर ग़ौसे आ'ज़म

शहा ! काश कुफ़्ले मदीना लगा लूं
ज़बां पर भी और आंख पर ग़ौसे आ'ज़म

बयां सुन के तौबा गुनहगार कर ले
ज़बां में वोह दे दो असर ग़ौसे आ'ज़म

मैं बग़दाद का कोई सग होता और काश !
मुझे रखते तुम बांध कर ग़ौसे आ'ज़म

शहीदे मदीना हो अ़त्तारे आ़सी
मुराद इस की येह आए बर ग़ौसे आ'ज़म

मज़्हरे अ़ज़्मते ग़फ़्फ़ार हैं ग़ौसे आ'ज़म

मज़्हरे[1] अ़ज़्मते ग़फ़्फ़ार हैं ग़ौसे आ'ज़म
मुज़्हिरे[2] रिफ़्अ़ते जब्बार हैं ग़ौसे आ'ज़म

वाक़िफ़े ह़िक्मतो असरार हैं ग़ौसे आ'ज़म
दिल के भेदों से ख़बरदार हैं ग़ौसे आ'ज़म

नाइबे अह़मदे मुख़्तार हैं ग़ौसे आ'ज़म
और सब वलियों के सरदार हैं ग़ौसे आ'ज़म

गर फ़क़त आप के अख़्यार हैं ग़ौसे आ'ज़म
वोह कहां जाएं जो बदकार हैं ग़ौसे आ'ज़म

मेरे मुर्शिद मेरी सरकार हैं ग़ौसे आ'ज़म
मेरे रहबर मेरे ग़म ख़्वार हैं ग़ौसे आ'ज़म

न मुख़ालिफ़ फ़क़त अग़्यार हैं ग़ौसे आ'ज़म
दोस्त भी दे रहे आज़ार हैं ग़ौसे आ'ज़म

मदीना

1 : जाए ज़ुहूर, ज़ाहिर होने की जगह   2 : इज़्हार दिहिन्दा, इज़्हार करने वाला

हश्र तक गाएंगे हम गीत तुम्हारे मुर्शिद
हम तुम्हारे जो नमक ख़्वार हैं ग़ौसे आ'ज़म

दूध मां का न पिया आप ने र-मज़ानों में
आप बचपन से समझदार हैं ग़ौसे आ'ज़म

तुम ने मुर्दों को जिलाया है हमारे दिल भी
कर दो ज़िन्दा कि येह मुर्दार हैं ग़ौसे आ'ज़म

मुंह लगाता नहीं दुन्या में जिसे कोई भी
बिल-यक़ीं उस के त़रफ़ दार हैं ग़ौसे आ'ज़म

खोटे सिक्के जहां चल जाते हैं वोह है बग़दाद
वां निकम्मों के ख़रीदार हैं ग़ौसे आ'ज़म

मालो दौलत की त़लब हम को नहीं है मुर्शिद
हम फ़क़त़ तेरे त़लब गार हैं ग़ौसे आ'ज़म

राह भूला, मुझे या ग़ौस ! सहारा दे दो
थक गया पाउं भी अफ़्गार[1] हैं ग़ौसे आ'ज़म

1 : ज़ख़्मी

शाहे बग़दाद इधर भी ज़रा चश्मे रह़मत
हम बलाओं में गिरिफ़्तार हैं ग़ौसे आ'ज़म

चार जानिब से गुनाहों ने हमें घेरा है
तेरे होते हुए क्यूं ख़्वार हैं ग़ौसे आ'ज़म

अब दुआ़ के लिये हाथ अपने उठा दो मुर्शिद !
पल में इस पार से उस पार हैं ग़ौसे आ'ज़म

अब उठा भी दो निक़ाब अपने रुखे़ अन्वर से
कब से हम त़ालिबे दीदार हैं ग़ौसे आ'ज़म

हो करम ! हुस्ने अ़मल आह ! नहीं है कोई
न वज़ाइफ़ हैं न अज़्कार हैं ग़ौसे आ'ज़म

ह़श्र के रोज़ हमारी भी शफ़ाअ़त करना
आह ! हम सख़्त गुनहगार हैं ग़ौसे आ'ज़म

अपने अ़त्तार को चुमकार के दीजे टुकड़ा
दर पे ह़ाज़िर हुए अ़त्तार हैं ग़ौसे आ'ज़म

आ़शिके़ मुस्त़फ़ा ज़ियाउद्दीन

आ़शिके़ मुस्त़फ़ा ज़ियाउद्दीन ज़ाहिदो पारसा ज़ियाउद्दीन

दिलकशो दिलकुशा ज़ियाउद्दीन मेरे दिल की ज़िया, ज़ियाउद्दीन

तुम को क़ुत़्बे मदीना या मुर्शिद ! उ़-लमा ने कहा ज़ियाउद्दीन

येह शरफ़ कम नहीं है मेरे लिये हूं मुरीद आप का ज़ियाउद्दीन

मुझ को अपना बनाओ दीवाना वासित़ा ग़ौस का ज़ियाउद्दीन

चश्मे रह़मत बसूए मन[1] मुर्शिद अज़ तुफ़ैले रज़ा ज़ियाउद्दीन

ऐसा कर दे करम रहें या रब ! मुझ से राज़ी सदा ज़ियाउद्दीन

कैसे भटकूंगा मेरे हैं मेरे रहबरो रहनुमा ज़ियाउद्दीन

एक मुद्दत से आंख प्यासी है अपना जल्वा दिखा ज़ियाउद्दीन

मरज़े इ़स्यां से नीम जां हूं मैं मुझ को दे दो शिफ़ा ज़ियाउद्दीन

चश्मे तर और क़ल्बे मुज़्त़र दो सदक़ा ह़-सनैन का ज़ियाउद्दीन

मेरी सब मुश्किलें हों ह़ल मुर्शिद मेरे मुश्किल कुशा ज़ियाउद्दीन

---

1 : बसूए मन या'नी मेरी त़रफ़

पौन सो साल तक मदीने में तुम ने बांटी ज़िया, ज़ियाउद्दीन

जामे इश्क़े नबी पिला के मुझे मस्तो बेख़ुद बना ज़ियाउद्दीन[1]

मेरे दुश्मन हैं ख़ून के प्यासे मुझ को उन से बचा ज़ियाउद्दीन

आह ! तूफ़ां में है घिरी नय्या ऐ मेरे नाख़ुदा ज़ियाउद्दीन

मौत आए मुझे मदीने में कर दो ह़क़ से दुआ़ ज़ियाउद्दीन

मुझ को दे दो बक़ीए ग़रक़द में अपने क़दमों में जा ज़ियाउद्दीन

ह़श्र में देख कर पुकारूंगा मरह़बा मरह़बा ज़ियाउद्दीन

मुस्त़फ़ा का पड़ोस जन्नत में मुझ को ह़क़ से दिला ज़ियाउद्दीन

बे अ़मल ही सही मगर अ़त्त़ार

किस का है ? आप का ज़ियाउद्दीन

---

1 : येह मिस्रअ़ "मुफ़त्तिश" ने मौज़ूं किया।

"ज़िया पीरो मुर्शिद" मेरे रहनुमा हैं

ज़िया पीरो मुर्शिद मेरे रहनुमा हैं सुरूरे दिलो जां मेरे दिलरुबा हैं

कली हैं गुलिस्ताने ग़ौसुल वरा की येह बाग़े रज़ा के गुले ख़ुशनुमा हैं

शरीअ़त त़रीक़त हो या मा'रिफ़त हो येह ह़क़ है ह़क़ीक़त में ह़क़ आशना हैं

सहारा हैं बेकस का, दुखियों के वाली सख़ा के हैं मख़्ज़न तो काने अ़त़ा हैं

ख़ुदा की मह़ब्बत से सरशार हैं वोह दिलो जान से मुस्त़फ़ा पर फ़िदा हैं

मिला सब्ज़ गुम्बद का क़िस्मत से साया दियारे मुह़म्मद में जल्वा नुमा हैं

बुला लो मुझे अपने क़दमों में अब तो येह अय्यामे फ़ुरक़त बड़े जां गुज़ा हैं

मुझे रूए ज़ैबा ज़रा फिर दिखा दो ज़ियारत के लम्ह़े बड़े जां फ़िज़ा हैं

तसव्वुर जमाऊं तो मौजूद पाऊं करूं बन्द आंखें तो जल्वा नुमा हैं

न क्यूं अहले सुन्नत करें नाज़ उन पर कि वोह नाइबे ग़ौसो अह़मद रज़ा हैं

मुनव्वर करें क़ल्बे अ़त़्त़ार को भी

शहा आप दीने मुबीं की ज़िया हैं

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
हक़ीक़ी आशिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

बिला शक पैकरे सब्रो रिज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं
यक़ीनन मख़्ज़ने सिद्क़ो वफ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अत्क़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

जो यारे ग़ारे महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
वोही यारे मज़ारे मुस्तफ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

तबीबे हर मरीज़े ला दवा सिद्दीक़े अक्बर हैं
ग़रीबों बे कसों का आसरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

अमीरुल मुअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप
नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं

सभी अस्ह़ाब से बढ़ कर मुक़र्रब ज़ात है उन की
रफ़ीक़े सरवरे अर्ज़ो समा सिद्दीक़े अक्बर हैं

उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मां से भी हैं आ'ला
यक़ीनन पेश्वाए मुर्तज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

इमामे अह़मदो मालिक, इमामे बू ह़नीफ़ा और
इमामे शाफ़ेई के पेश्वा सिद्दीक़े अक्बर हैं

तमामी औलियाउल्लाह के सरदार हैं जो उस
हमारे ग़ौस के भी पेश्वा सिद्दीक़े अक्बर हैं

सभी उ़-लमाए उम्मत के, इमामो पेश्वा हैं आप
बिला शक पेश्वाए अस्फ़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

ख़ुदाए पाक की रह़मत से इन्सानों में हर इक से
फ़ुज़ूं तर बा'द अज़ कुल अम्बिया सिद्दीक़े अक्बर हैं

हलाकत ख़ैज़ तुग़यानी हो या हों मौजें तूफ़ानी

न डूबे अपना बेड़ा नाख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं

भटक सकते नहीं हम अपनी मन्ज़िल ठोकरों में है

नबी का है करम और रहनुमा सिद्दीक़े अक्बर हैं

गुनाहों के मरज़ ने नीम जां है कर दिया मुझ को

त़बीब अब बस मेरे तो आप या सिद्दीक़े अक्बर हैं

न घबराओ गुनहगारो तुम्हारे ह़श्र में ह़ामी

मुह़िब्बे शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

न डर अ़त्तार आफ़त से, ख़ुदा की ख़ास रह़मत से

नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीक़े अक्बर हैं

मैं हूं साइल मैं हूं मंगता
या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

मैं हूं साइल मैं हूं मंगता या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
हाथ बढ़ा कर डाल दो टुकड़ा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
जो भी साइल आ जाता है मन की मुरादें पा जाता है
मैं ने भी दामन है पसारा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
सुल्ताने कौनैन का सदक़ा मौला अ़ली ह़-सनैन का सदक़ा
सदक़ा ख़ातूने जन्नत का या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
मुझ को इश्क़े रसूल अ़ता हो ख़्वाजा नज़रे करम से बना दो
शाहे मदीना का दीवाना या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
रब की इबादत की दुश्वारी और गुनाहों की बीमारी
दोनों[2] आफ़तें दूर हों ख़्वाजा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

दे दो तुम अ़त्तार को ख़्वाजा
सुन्नत की ख़िदमत का जज़्बा
हर सू दीं का बजा दे डंका
या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

या ग़ौस बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ

या ग़ौस ! बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ
बग़दाद बुला कर मुझे जल्वा भी दिखाओ

दुन्या की महब्बत से मेरी जान छुड़ाओ
दीवाना मुझे शाहे मदीना का बनाओ

चमका दो सितारा मेरी तक़्दीर का मुर्शिद !
मदफ़न को मदीने में जगह मुझ को दिलाओ

नय्या मेरी मंजधार[1] में सरकार ! फंसी है
इमदाद को आओ ! मेरी इमदाद को आओ

ह़-सनैन के सदक़े हों मेरी मुश्किलें आसां
आफ़ातो बलिय्यात[2] से या ग़ौस ! बचाओ

---

1 : समुन्दर के बीच की धार   2 : बलिय्या की जम्अ़, बलाएं

या पीर ! मैं इस्यां के तलातुम[1] में फंसा हूं
लिल्लाह गुनाहों की तबाही से बचाओ
अच्छों के ख़रीदार तो हर जा पे हैं मुर्शिद !
बदकार कहां जाएं जो तुम भी न निभाओ
अह़कामे शरीअ़त रहें मल्हूज़[2] हमेशा
मुर्शिद ! मुझे सुन्नत का भी पाबन्द बनाओ
अ़त्तार जहन्नम से बहुत ख़ौफ़ज़दा है
या ग़ौस ! इसे दामने रह़मत में छुपाओ

ग़ैरत की ता'रीफ़

किसी शख़्स के पास ने'मत देख कर इस लिये ज़वाल (या'नी ज़ाएअ़ होने) **की तमन्ना करना कि वोह ने'मत दुन्या या आख़िरत में उस शख़्स के लिये नुक़्सान देह और गुनाह का बाइस हो।** (طریقۂ محمدیہ ج۱ ص۶۱۱)

1 : मौजों के थपेड़े 2 : लिह़ाज़ किया गया। ख़याल रखा गया

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या मुह़म्मद शाह[1]

तेरे दर से है मंगतों का गुज़ारा या मुह़म्मद शाह
येह सुन कर मैं ने भी दामन पसारा या मुह़म्मद शाह

मेरी क़िस्मत का चमका दो सितारा या मुह़म्मद शाह
दिखा दो अपना चेहरा प्यारा प्यारा या मुह़म्मद शाह

गुनाहों के मरज़ ने कर दिया है नीम जां मुझ को
तुम्हीं आ कर करो अब कोई चारा या मुह़म्मद शाह

ग़मे शाहे मदीना मुझ को तुम ऐसा अ़ता कर दो
जिगर टुकड़े हो दिल भी पारा पारा या मुह़म्मद शाह

हुई जाती है ऊजड़ अब मेरी उम्मीद की खेती
भरन[2] बरसा दो रह़मत की ख़ुदारा या मुह़म्मद शाह

मेरे दूल्हा मेरे उजड़े गुलिस्तां में बहार आए
ख़ज़ां का रुख़ फिरा दो अब ख़ुदारा या मुह़म्मद शाह

مدینہ

1: वाज़ेह़ रहे कि साबिक़ा सफ़ह़ात में येह कलाम कुछ तग़य्युर के साथ सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शान में अ़र्ज़ किया गया है। उम्मीद है कि ज़रूरी तफ़रीक़ के साथ दोनों कलाम अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा होने में क़ारिईन को सहूलत रहेगी। 2 : बारिश

मदीने का बना दो ऐसा दीवाना मुझे दूल्हा
फिरूं दीवानगी में मारा मारा या मुह़म्मद शाह

गरजते बादलों का शोर चलती आंधियों का ज़ोर
लरज़ता है कलेजा दो सहारा या मुह़म्मद शाह

मेरी कश्ती भंवर में फंस गई है हाए बरबादी
मैं डूबा तुम बचा लो अब ख़ुदारा या मुह़म्मद शाह

बचा लो दुश्मनों के वार से लिल्लाह मैं ने है
बड़ी उम्मीद से तुम को पुकारा या मुह़म्मद शाह

शहा ख़ैरात लेने को सलाती़ने ज़माना ने
तेरे दरबार में दामन पसारा या मुह़म्मद शाह

सुधारो मेरे दूल्हा मुझ निकम्मे और बिगड़े को
न जाने तुम ने कितनों को सुधारा या मुह़म्मद शाह

ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोए नबी के इश्क़ में रोए
अ़ता कर दो वोह चश्मे तर ख़ुदारा या मुह़म्मद शाह

अगर्चे लाख पापी है मगर अ़त्तार किस का है
तुम्हारा है तुम्हारा है तुम्हारा या मुह़म्मद शाह

हो नाइबे सरवरे दो आ़लम,
इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

हो नाइबे सरवरे दो आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा
सिराजे उम्मत फ़क़ीहे अफ़्ख़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

है नाम नो'मान इब्ने साबित, अबू ह़नीफ़ा है उन की कुन्यत
पुकारता है येह कह के आ़लम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

जो बे मिसाल आप का है तक़्वा, तो बे मिसाल आप का है फ़तवा
हैं इल्मो तक़्वा के आप संगम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

गुनह के दलदल में फंस गया हूं गले गले तक मैं धंस गया हूं
निकालो मुझ को बराए आदम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

ह़सद की बीमारी बढ़ चली है लड़ाई आपस में ठन गई है
शहा मुसल्मान हों मुनज़्ज़म इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

दियारे बग़दाद में बुला कर, मज़ार अपना दिखा जहां पर
हैं नूर की बारिशें छमाछम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

अ़ता हो ख़ौफ़े ख़ुदा ख़ुदारा दो उल्फ़ते मुस्त़फ़ा ख़ुदारा
करूं अ़मल सुन्नतों पे हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

है धूम चारों त़रफ़ सख़ा की भरी है झोली हर इक गदा की
अ़ता हो मुझ को भी त़यबा का ग़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

तुम्हारे दरबार का गदा हूं, मैं साइले इश्क़े मुस्तफ़ा हूं
करम पए शाहे ग़ौसे आ'ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

फ़ुज़ूल गोई की निकले आ़दत, हो दूर बे जा हंसी की ख़स्लत
दुरूद पढ़ता रहूं मैं हर दम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

बला का पहरा लगा हुवा है, मुसीबतों में घिरा हुवा है
तेरा मुक़ल्लिद इमामे आ'ज़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

शहा ! अ़दू का सितम है पैहम, मदद को आओ इमामे आ'ज़म
सिवा तुम्हारे है कौन हमदम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

न जीते जी मुझ पे आए आफ़त मैं क़ब्र में भी रहूं सलामत
बरोज़े मह़शर भी रखना बे ग़म, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

मरूं शहा ज़ेरे सब्ज़ गुम्बद, हो मदफ़न आक़ा बक़ीए ग़रक़द
करम बराए रसूले अकरम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

हुई शहा फ़र्दे जुर्म आ़इद, बचा फंसा है तेरा मुक़ल्लिद
फ़िरिश्ते ले के चले जहन्नम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

जिगर भी ज़ख़्मी है दिल भी घाइल, हज़ार[1000] फ़िक्रें हैं सो[100] मसाइल
दुखों का अ़त्तार को दो मरहम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

मुस्तफ़ा का वोह लाडला प्यारा
वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की

मुस्तफ़ा का वोह लाडला प्यारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
ग़ौसे आ'ज़म की आंख का तारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
सुन्नियों के दिलों में जिस ने थी शम्ए़ इ़श्क़े रसूल रोशन की
वोह ह़बीबे ख़ुदा का दीवाना वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
अल्लाह अल्लाह तबह़्ह़ुरे इ़ल्मी[1] अब भी बाक़ी है ख़िदमते क़-लमी
अहले सुन्नत का है जो सरमाया वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
इ़ल्मो इ़रफ़ां का जो कि सागर[2] था ख़ैर से ह़ाफ़िज़ा क़वी तर था
ह़क़ पे मब्नी था जिस का हर फ़तवा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
उस की हस्ती में था अ़मल जौहर सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन, साह़िबे तक़्वा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
जिस ने देखा उन्हें अ़क़ीदत से क़ल्ब की आंख से मह़ब्बत से
मरह़बा मरह़बा पुकार उठा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़्रत की
सुन्नतों को जिला दिया जिस ने दीं का डंका बजा दिया जिस ने

---

1 : निहायत वुस्अ़ते इ़ल्मी, 2 : समुन्दर

वोह मुजद्दिद है दीनो मिल्लत का वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

जो है अल्लाह का वली बेशक आ़शिके़ सादिके़ नबी बेशक

ग़ौसे आ'ज़म का जो है मतवाला वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

जिस ने एह़क़ाके़ ह़क़ किया खुल कर रद्दे बाति़ल किया सदा खुल कर

जो किसी से कभी न घबराया वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

सुन लो किल्के[1] रज़ा है वोह ख़न्जर आज भी जिस से लरज़ां अहले शर

बोलबाला है अहले सुन्नत का वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

फिर बरेली शरीफ़ जाऊं मैं ब-र-कतें मुर्शिदी की पाऊं मैं

कर लूं रौज़े का ख़ूब नज़्ज़ारा वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

मौला बहरे "ह़दाइके़ बख़्शिश" बख़्श अ़त्तार को बिला पुरसिश

ख़ुल्द में कहता कहता जाएगा

वाह क्या बात आ'ला ह़ज़रत की

1 : क़लम

शाहे बत़्हा का माहपारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

शाहे बत़्हा का माहपारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की
सय्यिदह फ़ाति़मा का प्यारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

येह तो सब औलिया का अफ़्सर है, इब्ने ज़हरा है इब्ने ह़ैदर है
और ह़-सनैन का दुलारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

ग़ौसे आ'ज़म हैं शाहे जीलानी, पीरे लासानी, क़ुत़्बे रब्बानी
उन के उ़श्शाक़ ने पुकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

शहरे बग़दाद मुझ को है प्यारा, ख़ूब दिलकश वहां का नज़्ज़ारा
मेरा मुर्शिद जो जल्वा आरा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

मिल गया मुझ को ग़ौस का दामन, फ़ज़्ले रब्बे करीम से रोशन
मेरी तक़्दीर का सितारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

जब कि दुन्या में मुर्शिदी आए, बत़्ने मादर से ही वली आए
जानो दिल उन पे सब निसारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

मेरे मुर्शिद ने "ला तख़फ़[1]" कह कर, दूर सब कर दिया है ख़ौफ़ और डर

उन का महशर में भी सहारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

गौस रन्जो अलम मिटाते हैं, उस को सीने से भी लगाते हैं

आ गया जो भी ग़म का मारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

ग़ौस पीरों के पीर हैं बेशक, और रोशन ज़मीर हैं बेशक

ह़ाले दिल उन पे आशकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

क्यूं न जाऊं मैं ग़ौस पर वारी, आफ़तें दूर हो गईं सारी

जब तड़प कर उन्हें पुकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

उस को मन की मुराद मिलती है, उस की बिगड़ी ज़रूर बनती है

जिस ने दामन यहां पसारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

مـــــــــدینہ

1 : या'नी "ख़ौफ़ न कर" येह क़सीदए ग़ौसिया के इस शे'र की तरफ़ इशारा है : مُرِیۡدِیۡ "لَاتَخَفۡ" اَللّٰہُ رَبِّیۡ तरजमा : ऐ मेरे मुरीद ! ख़ौफ़ न कर, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा परवर दगार है।

जी उठे मुर्दे ह़क़ की क़ुदरत से, हुक्मे वालाए रब्बे रह़मत से

रब को जब ग़ौस ने पुकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

दर्दो आलाम जब रुलाते हैं, ग़ौसे आ'ज़म मदद को आते हैं

हर जगह ग़ौस का सहारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

उन का दुश्मन ख़ुदा का है मक़्हूर, उस की रह़मत से हो गया वोह दूर

बुग़्ज़ में जिस ने सर उभारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

ग़ौस पर तो क़दम नबी का है, उन के ज़ेरे क़दम वली सारे

हर वली ने येही पुकारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

हम को "ग्यारह" का है अ़दद प्यारा, उन की तारीख़े उ़र्स है ग्यारा

यूं अ़दद हम को प्यारा ग्यारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

ख़ूब सूरत हैं गुम्बद और मीनार, उन पे रह़मत बरसती है अ़त्तार

ख़ूब दरबार का नज़ारा है, वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

सुन्नियों के दिल में है इ़ज़्ज़त "वक़ारुद्दीन"[1] की

सुन्नियों के दिल में है इ़ज़्ज़त "वक़ारुद्दीन" की
आज भी मम्नून है मिल्लत "वक़ारुद्दीन" की

आप अ़ल्लामा व मुफ़्ती और थे शैखुल ह़दीस
आज भी है क़ल्ब में अ़-ज़मत "वक़ारुद्दीन" की

सिर्फ़ आ़लिम ही नहीं थे आप आ़लिम गर भी थे
मरह़बा थी ख़ूब इ़ल्मिय्यत "वक़ारुद्दीन" की

बे अ़दद उ़-लमा ने ज़ानूए तलम्मुज़[2] तह किया
क्या बयां हो शाने इ़ल्मिय्यत "वक़ारुद्दीन" की

اِنْ شَاءَ اللّٰه काम आएगी मुझे रोज़े जज़ा
क़द्रदानी इ़ल्म की उल्फ़त "वक़ारुद्दीन" की

اِنْ شَاءَ اللّٰه वोह बरोज़े ह़श्र बख़्शा जाएगा
जिस को ह़ासिल हो गई निस्बत "वक़ारुद्दीन" की

---

1 : ह़ज़रत वक़ारुल मिल्लत मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का यौमे उ़र्स 20 रबीउ़ल अव्वल है लिहाज़ा बीसवीं की मुना-सबत से इस मन्क़बत में 20 अश्आ़र हैं। 2 : शागिर्दी

वोह मुजस्सम आ़जिज़ी थे और सरापा सादगी
इस लिये तो दिल में है हैबत "वक़ारुद्दीन" की

चारपाई और तक्या और लोटा जा नमाज़
थी सरापा सादा ही त़ीनत[1] "वक़ारुद्दीन" की

चारपाई पर वोह होते और हम भी रू बरू
याद आती है हमें सोह़बत "वक़ारुद्दीन" की

आए दिन ख़िदमत में आ कर हम मसाइल पूछते
याद आती है हमें सोह़बत "वक़ारुद्दीन" की

नुक्ता दानी, मू शिगाफ़ी[2] और गुल अफ़्शानियां
याद आती है हमें सोह़बत "वक़ारुद्दीन" की

ख़न्दा पेशानी तबस्सुम रेज़ मीठी गुफ़्त-गू
याद आती है हमें सोह़बत "वक़ारुद्दीन" की

1 : त़बीअ़त 2 : बारीक बीनी

उन को सीने से लगाया मुस्त़फ़ा ने ख़्वाब[1] में
क़ाबिले सद रश्क है क़िस्मत "वक़ारुद्दीन" की

बन्दए बदकार हूं ! अफ़्सोस मैं बेकार हूं
कुछ न मुझ से हो सकी ख़िदमत "वक़ारुद्दीन" की

सब मुरीदों के लिये सारे मुहिब्बों के लिये
सानिह़ा जां सोज़ था रिह़लत "वक़ारुद्दीन" की

---

1 : एक बार हम चन्द इस्लामी भाई **ह़ज़रते सय्यिदी वक़ारुल मिल्लत** رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ कार में कहीं जा रहे थे, सिलिसलए गुफ़्त-गू जारी था। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप ने कभी ख़्वाब में **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार किया हो तो इर्शाद फ़रमा कर हमारी ज़ौक़ अफ़्ज़ाई कीजिये। इर्शाद फ़रमाया : "एक बार मैं ने ख़्वाब में अपने आप को **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए पुर अन्वार पर ह़ाज़िर पाया, इतने में क़ब्रे अन्वर से **प्यारे प्यारे आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले आए और...... और...... **मुझे सीने से लगा लिया।**" सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

आख़िरी दीदार के वक़्त आंख मेरी रो पड़ी
देख कर ज़ेरे कफ़न सूरत "वक़ारुद्दीन" की

या इलाही ! वासित़ा तुझ को रसूले पाक का
नूर से मा'मूर कर तुरबत "वक़ारुद्दीन" की

वासित़ा ग़ौसो रज़ा का ऐ ख़ुदाए मुस्त़फ़ा
ख़्वाब में मुझ को दिखा सूरत "वक़ारुद्दीन" की

उन के फ़ैज़े ख़ास से अ़त्तार भी है फ़ैज़याब[1]
इस पे कुछ ज़ाइद ही थी शफ़्क़त "वक़ारुद्दीन" की

तू तो है अ़त्तार बद अत्वार, वोह आ़ली वक़ार
क्या लिखेगा मन्क़बत ह़ज़रत वक़ारुद्दीन की

---

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वक़ारुल मिल्लत** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे अपनी ख़िलाफ़त से नवाज़ा। बत़ौर तह़दीसे ने'मत मज़्कूरा शे'र में इस त़रफ़ इशारा किया है। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

मिली तक़्दीर से मुझ को सहाबा की सना ख़्वानी

मिली तक़्दीर से मुझ को सहाबा की सना ख़्वानी
मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी मिला है फ़ैज़े उ़स्मानी

रखा मह्सूर उन को, बन्द उन पर कर दिया पानी
शहादत ह़ज़रते उ़स्मान की बेशक है लासानी

नबी के नूर दो[2] ले कर वोह जुन्नूरैन कहलाए
उन्हें ह़ासिल हुई यूं कुरबते मह़बूबे रह़मानी

नबी ने तेरे बदले "बैअ़ते रिज़्वां" में की बैअ़त
कहा कुरआन ने दस्ते नबी को दस्ते यज़्दानी

तुम्हीं को जामेए़ कुरआन का ह़क़ ने दिया मन्सब
अ़ता कुरआं को कर के जम्अ़ की उम्मत को आसानी

ख़ुदा भी और नबी भी ख़ुद अ़ली भी उस से हैं नाराज़
अ़दू उन का उठाएगा क़ियामत में परेशानी

अ़दावत और कीना उन से जो रखता है सीने में
वोही बद बख़्त है मल्ऊ़न है मरदूद शैत़ानी

हम उन की याद की धूमें मचाएंगे क़ियामत तक
पड़े हो जाएं जल कर ख़ाक सब आ'दाए उ़स्मानी

इमामुल अस्ख़िया ! कर दो अ़त़ा ह़िस्सा सख़ावत का
क़नाअ़त हो इनायत, दें न दौलत की फ़िरावानी

मुझे अपनी सख़ावत के समुन्दर से कोई क़त़रा
अ़त़ा कर दो नहीं दरकार मुझ को ताजे सुल्त़ानी

उ़लुव्वे शान का क्यूंकर बयां हो आप की प्यारे
ह़या करती है मौला आप से मख़्लूक़े नूरानी

सुख़न आ कर यहां अ़त्त़ार का इत्माम को पहुंचा
तेरी अ़-ज़मत पे नात़िक़ अब भी हैं आयाते क़ुरआनी

या शहीदे करबला फ़रियाद है

या शहीदे करबला फ़रियाद है नूरे चश्मे फ़ातिमा फ़रियाद है

आह ! सिब्ते मुस्तफ़ा फ़रियाद है हाए ! इब्ने मुर्तज़ा फ़रियाद है

बेड़ा अम्वाजे तलातुम में फंसा आह ! मेरे नाखुदा फ़रियाद है

उस अ़ली अक्बर का सदक़ा जो कि हैं हम शबीहे मुस्तफ़ा फ़रियाद है

है मेरी ह़ाजत मैं त़यबा में मरूं ऐ मेरे ह़ाजत रवा फ़रियाद है

मुझ को दीवाना मदीने का बना नूरे चश्मे मुस्तफ़ा फ़रियाद है

साक़िये कौसर का सदक़ा साक़िया जाम, उल्फ़त का पिला फ़रियाद है

दुश्मनों की दुश्मनी से तंग हूं शह सुवारे करबला फ़रियाद है

ह़ासिदों का बढ़ गया ह़द से ह़सद और सुलूके ना रवा फ़रियाद है

थर-थराता है कलेजा ख़ौफ़ से दूर हो ख़ौफ़ आ भी जा फ़रियाद है

रास्ते ही में भटक कर रह गया रहबरी कर रहनुमा फ़रियाद है

दे दिया सारे त़बीबों ने जवाब बहरे ज़हरा दे शिफ़ा फ़रियाद है

मैं निकम्मा हूं निकम्मे को निभा	कौन है तेरे सिवा फ़रियाद है
नफ़्सो शैतां की पकड़ में आ गया	ज़ोरे इस्यां बढ़ चला फ़रियाद है
दे अ़ली असग़र का सदक़ा सरवरा	पैकरे जूदो सख़ा फ़रियाद है
जां कनी में सख़्तियों पर सख़्तियां	बढ़ रही हैं सय्यिदा फ़रियाद है
पार उतार ऐ राकिबे दौशे नबी	बह़्रे ग़म से नाख़ुदा फ़रियाद है
बे वफ़ा दुन्या की उल्फ़त दूर हो	पैकरे सिद्क़ो वफ़ा फ़रियाद है
बहरे ज़ैनब बे ह़याई का हुज़ूर	ख़ातिमा हो ख़ातिमा फ़रियाद है
या हुसैन इस्लामी बहनों को बना	पैकरे शर्मो ह़या फ़रियाद है
हर त़रफ़ से है बलाओं का हुजूम	दाफ़ेए़ कर्बो बला फ़रियाद है
सब्र का पैमाना अब लबरेज़ है	पैकरे सब्रो रिज़ा फ़रियाद है
मुफ़्लिसो नाचारो ख़स्ता ह़ाल हूं	मख़्ज़ने जूदो अ़त़ा फ़रियाद है
छा गई दिल पर ख़ज़ां प्यारे हुसैन !	दे बहारे जां फ़िज़ा फ़रियाद है

हुब्बे सादात ऐ ख़ुदा दे वासिता अहले बैते पाक का फ़रियाद है

आफ़तों पर आफ़तें हैं अल मदद सय्यिदो सरदारे मा फ़रियाद है

दीन की ख़िदमत का जज़्बा दीजिये सदक़ा नानाजान का फ़रियाद है

सुन्नतों की हर तरफ़ आए बहार सदक़ा मेरे ग़ौस का फ़रियाद है

चल गई बादे मुख़ालिफ़ अल ग़ियास ऐ हुसैने बा वफ़ा फ़रियाद है

काश ! हो जाऊं मदीने में शहीद आप फ़रमा दें दुआ फ़रियाद है

बख़्त की हैं जिस क़दर भी गुथ्थियां सारी सुलझा दो शहा फ़रियाद है

करबला की ह़ाज़िरी हो फिर नसीब बख़्ते ख़्वाबीदा जगा फ़रियाद है

ह़ाल है बेह़ाल शाहे करबला
आप के अ़त्तार का फ़रियाद है

तजस्सुस की ता'रीफ़

मुसल्मानों के उ़यूब और उन की छुपी बातों का खोज लगाना तजस्सुस कहलाता है।

(حدیقه ندیه شرح طریقۂ محمدیه ج۲ ص ۳۰۰ نوریه رضویه سردارآباد)

मुफ़्तिये आ'ज़म बड़ी सरकार है

मुफ़्तिये आ'ज़म बड़ी सरकार है　जब कि अदना सा गदा अ़त्तार है

मुफ़्तिये आ'ज़म से हम को प्यार है　اِنْ شَآءَ اللّٰه अपना बेड़ा पार है

मुफ़्तिये आ'ज़म रज़ा का लाडला　और मुह़िब्बे सय्यिदे अबरार है

आ़लिमो मुफ़्ती, फ़क़ीहे बे बदल　ख़ूब ख़ुश अख़्लाक़ो बा किरदार है

ताजदारे अहले सुन्नत अल मदद　बन्दए दर बे कसो नाचार है

तख़्ते शाही क्या करूं मेरे लिये　ताजे इ़ज़्ज़त आप की पैज़ार[1] है

आ'ला ह़ज़रत का रहूं मैं बा वफ़ा　इस्तिक़ामत की दुआ़ दरकार है

आस्ताने पर खड़ा है इक गदा　त़ालिबे इ़श्क़े शहे अबरार है

मुस्कुरा कर इक नज़र गर देख लो　मेरी शामे ग़म अभी गुलज़ार है

मेरे दिल को शाद फ़रमा दीजिये　रन्जो ग़म की क़ल्ब पर यलग़ार है

सय्यिदी अह़मद रज़ा का वासित़ा　तेरा मंगता त़ालिबे दीदार है

हूं गुनाहों के मरज़ से नीम जां　दर्दे इ़स्यां की दवा दरकार है

---

1 : जूती शरीफ़

हाथ फैला कर मुरादें मांग लो साइलो इन का सख़ी दरबार है
اِنْ شَاءَ الله मग़्फ़िरत हो जाएगी ऐ वली ! तेरी दुआ़ दरकार है
ख़ूब ख़िदमत सुन्नतों की मैं करूं सय्यिदी तेरी दुआ़ दरकार है

काश ! नूरी[1] के सगों में हो शुमार
येह तमन्नाए दिले अ़त्त़ार है

तोरिया की ता'रीफ़

"तोरिया" या'नी लफ़्ज़ के जो ज़ाहिर मा'ना हैं वोह ग़लत़ हैं मगर इस ने दूसरे मा'ना मुराद लिये जो सह़ीह़ हैं। म-सलन आप ने किसी को खाने के लिये कहा वोह बोला : मैं ने खाना खा लिया। इस के ज़ाहिर मा'ना येह हैं कि इस वक़्त का खाना खा लिया है मगर वोह येह मुराद लेता है कि कल खाया है येह भी झूट में दाख़िल है। **हुक्म :** ऐसा करना बिला ह़ाजत जाइज़ नहीं और ह़ाजत हो तो जाइज़ है। (فتاوٰی عالمگیری ج ۵ ص ۳۵۲)

---

1 : ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان का **तख़ल्लुस** "नूरी" है।

ग्यारहवीं शरीफ़ के ना'रे

ना'रा	जवाब
सुल्ताने विलायत	ग़ौसे पाक
वलियों पे हुकूमत	ग़ौसे पाक
शहबाज़े ख़िताबत	ग़ौसे पाक
फ़ानूसे हिदायत	ग़ौसे पाक
सरताजे शरीअ़त	ग़ौसे पाक
हैं रब की ने'मत	ग़ौसे पाक
अल्लाह की रह़मत	ग़ौसे पाक
हैं बाइसे ब-र-कत	ग़ौसे पाक
हैं साहिबे इ़ज़्ज़त	ग़ौसे पाक
हैं बह़्रे सख़ावत	ग़ौसे पाक
दरियाए करामत	ग़ौसे पाक
फ़रमाओ ह़िमायत	ग़ौसे पाक
टल जाए मुसीबत	ग़ौसे पाक
सर ता पा शराफ़त	ग़ौसे पाक
हैं मख़्ज़ने अ़-ज़मत	ग़ौसे पाक

ऐ माहे विलायत ग़ौसे पाक
हो हम पे इनायत ग़ौसे पाक
कमज़ोर की ताक़त ग़ौसे पाक
मजबूर की राहत ग़ौसे पाक
हो मेरी शफ़ाअत ग़ौसे पाक
दिलवाइये जन्नत ग़ौसे पाक
दो शौक़े इबादत ग़ौसे पाक
दो ज़ौक़े तिलावत ग़ौसे पाक
इस्यां से हो नफ़रत ग़ौसे पाक
नेकी की दो उल्फ़त ग़ौसे पाक
दो बदियों से नफ़रत ग़ौसे पाक
सरकार की उल्फ़त ग़ौसे पाक
दो अपनी महब्बत ग़ौसे पाक
बेकस की हिमायत ग़ौसे पाक
बेबस की हैं राहत ग़ौसे पाक
हो दूर येह फ़ुरक़त ग़ौसे पाक
दे दीजिये क़ुरबत ग़ौसे पाक

मिस्कीन की दौलत ग़ौसे पाक
मोह्ताज की सरवत ग़ौसे पाक
वोह आप की हैबत ग़ौसे पाक
जिन्नों पे हुकूमत ग़ौसे पाक
दो दीद का शरबत ग़ौसे पाक
मैं कर लूं ज़ियारत ग़ौसे पाक
दे दो येह सआदत ग़ौसे पाक
मैं देख लूं तुरबत ग़ौसे पाक
जब हो मेरी रिह्लत ग़ौसे पाक
देखूं तेरी सूरत ग़ौसे पाक
दो जज़्बए ख़िदमत ग़ौसे पाक
दूं नेकी की दा'वत ग़ौसे पाक

मरह़बा या ग़ौसे पाक
मरह़बा या ग़ौसे पाक

“अ़र्शे आ'ज़म पे रब” वाला शे'र पढ़ना कैसा ?

सुवाल : येह शे'र दुरुस्त है या नहीं ?

अ़र्शे आ'ज़म पे रब सब्ज़ गुम्बद में तुम क्यूं कहूं मेरा कोई सहारा नहीं
मैं मदीने से लेकिन बहुत दूर हूं येह ख़लिश मेरे दिल को गवारा नहीं

जवाब : इस शे'र के इब्तिदाई अल्फ़ाज़ : “अ़र्शे आ'ज़म पे रब” عَزَّوَجَلَّ में ब ज़ाहिर مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अ़र्शे आ'ज़म पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **मकान** माना गया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के लिये मकान मानना कुफ़्रे लुज़ूमी है** । अगर इस शे'र की इब्तिदा में “अ़र्शे आ'ज़म का रब” عَزَّوَجَلَّ पढ़ें तो शे'र शर-ई गिरिफ़्त से निकल जाएगा।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 242, मक-त-बतुल मदीना)

सलाम

ज़ाइरे त़यबा ! रौज़े पे जा कर तू सलाम उन से रो रो के कहना

ज़ाइरे त़यबा ! रौज़े पे जा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना
मेरे ग़म का फ़साना सुना कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तेरी क़िस्मत पे रश्क आ रहा है, तू मदीने को अब जा रहा है
आह ! जाता है मुझ को रुला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जब पहुंच जाए तेरा सफ़ीना, जब नज़र आए मीठा मदीना
बा अदब अपने सर को झुका कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जब कि आए नज़र प्यारा मक्का, चूम लेना नज़र से तू का'बा
हो सके गर तो हर जा पे जा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू अ़रब की ह़सीं वादियों को, रेगज़ारों को आबादियों को
मेरी जानिब से पलकें बिछा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जब कि पेशे नज़र जालियां हों, तेरी आंखों से आंसू रवां हों
मेरे ग़म की कहानी सुना कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

आमिना के दुलारे को पहले, बा'द शैख़ैन को भी तू कह ले
फिर बक़ीए़ मुबारक पे जा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

मांगना मत तू दुन्या की दौलत, मांगना उन से बस उन की उल्फ़त
ख़ूब दीवाने दिल को लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

मेरे आक़ा के मेह़राबो मिम्बर उन की मस्जिद के दीवार और दर
क़ल्ब की आंख उन पर जमा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

प्यारी प्यारी वोह जन्नत की क्यारी, चूम लेना निगाहों से सारी
बह़रे रह़मत में ग़ोत़ा लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

सब्ज़ गुम्बद के दिलकश नज़ारे, रूह़ परवर वहां के मनारे
उन के जल्वों में ख़ुद को गुमा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

वोह शहीदों के सरदार ह़म्ज़ा, और जितने वहां हैं सह़ाबा
तू सभी के मज़ारों पे जा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू नमाज़ों का पाबन्द बन जा और सरकार की सुन्नतों का
इन्क़िलाब अपने अन्दर बपा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

कूए मह़बूब की बकरियों को, मुर्ग़ियों, ककड़ियों, लकड़ियों को[1]
बल्कि तिन्के वहां के उठा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

مدینہ

1 : इस तरह़ के तमाम अश्आ़र जिन में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से निस्बत रखने वाली चीज़ों को सलाम किया है येह वोह सलाम नहीं जो ब वक़्ते मुलाक़ात मस्नून और उस का जवाब वाजिब होता है जिसे "**सलामे तह़िय्यत**" कहते हैं बल्कि आ़शिके़ सादिक़ मह़बूब और मह़बूब से निस्बत रखने वाली अश्या को "सलामे मह़ब्बत" पेश करता है =

बिल्लियां जब मदीने की देखे, ख़ूब अदब से उन्हें प्यार कर के
हाथ नरमी से उन पे फिरा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

सुन मदीने में बादल घिरें जब, उन से बेताब क़त्‌रे गिरें जब
बारिशे नूर में तू नहा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

अश्के उल्फ़त की महकी लड़ी से, रह़मतों की बरसती झड़ी से
अपना सीना मदीना बना कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

ज़ाइरे त़यबा ! मेरा फ़साना, ख़ूब रो रो के उन को सुनाना
सोज़े उल्फ़त से दिल को जला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

संगरेज़ों को और पथ्थरों को, ऊंट, घोड़ों, ख़रों, ख़च्चरों को
और परिन्दों पे नज़रें जमा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

रो रहा है हर इक ग़म का मारा, अ़र्ज़ करता है तुझ से बिचारा
मेरी भी ह़ाज़िरी की दुआ़ कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

مـــــــــدينه

= इस त़रह़ के सलामों से येही मक़्सूद होता है इस में कोई ह़रज नहीं जैसा कि आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने इस शे'र में विलादते मुबारक की मुक़द्दस घड़ी को सलाम पेश फ़रमा रहे हैं :

जिस सुहानी घड़ी चमका त़यबा का चांद   उस दिल अफ़रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 305)

(अज़ : अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

बागे़ त़यबा की महकी फ़ज़ा को, ठन्डी ठन्डी वहां की हवा को
हाथ लहरा के सर को झुका कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

चूम लेना मदीने की गलियां, पत्तियां और फूलों की कलियां
सब को आंखों से अपनी लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जब मदीने के सह़रा से गुज़रे, भूलना मत, ज़रा याद कर के
ख़ाके त़यबा ज़रा सी उठा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू मदीने के कोहसार को भी, ख़स को ख़ाशाक को ख़ार को भी
ज़र्रे ज़र्रे पे आंखें बिछा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

उन का दीदार हो गर मुयस्सर, होश भी तेरा क़ाइम रहे गर
जोड़ कर हाथ, सर को झुका कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

वोह मदीने के म-दनी नज़ारे, दिलकशो दिलकुशा प्यारे प्यारे
उन नज़ारों पे कु़रबान जा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

उन का देखे जो नक़्शे कफ़े पा, ख़ूब आंसू वहां पर बहाना
और पलकों से झाड़ू लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

बे बसों, ग़म के मारों को भाई ! बे कसों, दिल फ़िगारों को भाई !
ख़ुद भी रो कर, उन्हें भी रुला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

अश्कबार आंख वालों को भाई ! उन की आहों को नालों को भाई !

तू मज़ीद उन के ग़म में रुला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू मदीने की हरियालियों को, और फलों से लदी डालियों को

मीठी मीठी खजूरें मंगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

वोह मदीने के प्यारे कबूतर, जब नज़र आएं तुझ को बिरादर

उन को थोड़े से दाने खिला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू दरख़्तों को और झाड़ियों को, उन की गलियों की सब गाड़ियों को

हाथ अपना अदब से लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

बोतलों बल्कि तू ढक्कनों को, दाल, गन्दुम के दानों, चनों को

चूम कर आंख से भी लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

बेंगनों, भिन्डियों, तूरियों को, गोबियों, गाजरों, मूलियों को

आंख से लोकियों को लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

कहना सेबों को और आडूओं को, और केलों को ज़र्द आलूओं को

और तरबूज़ सर पर उठा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू क़नादील को कुमकुमों को, तू सुविच, तार को, कूलरों को
ठन्डा पानी किसी को पिला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

च्यूंटियों, खूंटियों, टूंटियों को हर त़रह़ की जड़ी बूटियों को
बार बार उन पे नज़रें जमा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

चावलों, रोटियों बोटियों को, मुर्ग़, अन्डों को और मछलियों को
सब्ज़ियों को वहां की पका कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

थालियों को पियालों को भाई ! मिर्च को और मसालों को भाई !
चाय की केतली को उठा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

ठन्डे पंखों को और हीटरों को बल्कि तारों को और मीटरों को
बत्तियों को वहां की जला कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जिस क़दर भी हैं पानी के नलके, फल तो फल बल्कि बीज और छिलके
हाथ उन की त़रफ़ भी बढ़ा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू मकानों को भी खिड़कियों को और दीवारो दर सीढ़ियों को
हां अ़क़ीदत से दिल में बिठा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

रस्सियों, क़ैंचियों और छुरियों, चादरों, सूई धागों को दरियों
सब को सीने से अपने लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

काश होता मैं सग सय्यिदों का, बन के दरबान पहरा भी देता
रब ने भेजा है इन्सां बना कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

मस्जिदे पाक के मुस्ह़फ़ों को, ख़ूब सूरत वहां की सफ़ों को
ख़ाक आंखों में अपनी लगा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

जब मदीने से तू होगा रुख़्सत, ग़म से होगी अ़जब तेरी ह़ालत
अपनी पलकों पे मोती सजा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

अ़र्ज़ करना कि है अ़र्ज़ इतनी, ह़ाज़िरी हो मदीने हमारी
सब की जानिब से येह इल्तिजा कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

अ़र्ज़ करना येह बेचारे बेबस, कहते थे सब येह रो रो के बेकस
हम को क़दमों में मदफ़न अ़ता कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

तू गुलामों पे कहना करम कर, या नबी दूर रन्जो अलम कर
इन को अपनी मह़ब्बत अ़ता कर, तू सलाम उन से रो रो के कहना

कहना अ़त्तार ऐ शाहे आ़ली ! है फ़क़त़ तुझ से तेरा सुवाली
तू सुवाल इस का पूरा शहा कर, तू सलाम मेरा रो रो के कहना

अम्बिया के सरवरो सरदार पर लाखों सलाम

अम्बिया के सरवरो सरदार पर लाखों सलाम　झूम कर सारे कहो सरकार पर लाखों सलाम

रब के मह़बूब अह़मदे मुख़्तार पर लाखों सलाम　सब पुकारो सय्यिदे अबरार पर लाखों सलाम

चारए बे चारगां पर हों दुरूदें सद हज़ार　बे कसों के ह़ामी व ग़म ख़्वार पर लाखों सलाम

पुर ज़िया[1] पुरनूर प्यारी प्यारी दाढ़ी पर दुरूद　मुस्त़फ़ा के गेसूए ख़मदार[2] पर लाखों सलाम

जुब्बए अक़्दस पे चादर पर इमामे पर दुरूद　जाने आ़लम ! आप की पैज़ार[3] पर लाखों सलाम

रह़मतें लाखों अबू बक्रो उ़मर उ़स्मान पर　मेरे मौला ह़ैदरे कर्रार पर लाखों सलाम

करबला के हर शहीदे बा वफ़ा पर रह़मतें　बीबियों पर, आ़बिदे बीमार पर लाखों सलाम

है यक़ीनन हर सह़ाबी जां निसारे मुस्त़फ़ा　हर मुहाजिर और हर अन्सार पर लाखों सलाम

मस्जिदे न-बवी के मेह़राब और मिम्बर पर दुरूद　सब्ज़ गुम्बद और हर मीनार पर लाखों सलाम

दश्तो कोहसारे मदीना, ख़ाके त़यबा पर दुरूद　पेड़, पथ्थर, फूल और हर ख़ार पर लाखों सलाम

महकी महकी भीनी भीनी है मदीने की फ़ज़ा　उस फ़ज़ाए पाक ख़ुश्बूदार पर लाखों सलाम

مدینہ

1 : रोशन　2 : मुड़े हुए, बल खाए हुए　3 : ना'ले पाक, जूती शरीफ़

खूब भेजो मिल के दीवानो ! अदब से झूम कर
तुम मदीने के ह़सीं गुलज़ार पर लाखों सलाम

क़ब्र में लहराएंगे जिस वक़्त जल्वे नूर के
हम पढ़ेंगे रूए पुर अन्वार पर लाखों सलाम

ऐ मदीने के मुसाफ़िर ! ले के जा मेरा पयाम
भेजना रो रो के तू सरकार पर लाखों सलाम

या नबी ! जितने भी दीवाने यहां मौजूद हैं
काश ! सब आ कर पढ़ें दरबार पर लाखों सलाम

मेरे प्यारे पीरो मुर्शिद सय्यिदी ग़ौसुल वरा
औलियाउल्लाह के सरदार पर लाखों सलाम

जो गया अजमेर में दिल की मुरादें पा गया
मेरे ख़्वाजा के सख़ी दरबार पर लाखों सलाम

सय्यिदी अह़मद रज़ा ने खूब लिक्खा है कलाम
उन के सारे ना'तिया अश्आ़र पर लाखों सलाम

हो चुके होंगे जहां में जिस क़दर भी औलिया
उन पे, हर इक उन के ख़िदमत गार पर लाखों सलाम

मग़्फ़िरत कर ऐ खुदा अ़त्तारे बद अत़्वार की
भेज या रब उम्मते सरकार पर लाखों सलाम

मीठे मुर्शिद ने बक़ीए़ पाक में पाया मज़ार
सारे भेजो मुर्शिदे अ़त्तार पर लाखों सलाम

ताजदारे ह़रम ऐ शहन्शाहे दीं
तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

ताजदारे ह़रम ऐ शहन्शाहे दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
हो करम मुझ पे या सय्यिदल मुरसलीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
दूर रह कर न दम टूट जाए कहीं काश ! त़यबा में ऐ मेरे माहे मुबीं
दफ़्न होने को मिल जाए दो[2] गज़ ज़मीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
कोई हुस्ने अ़मल पास मेरे नहीं फंस न जाऊं क़ियामत में मौला कहीं
ऐ शफ़ीए़ उमम लाज रखना तुम्हीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
दोनों[2] आ़लम में कोई भी तुम सा नहीं सब ह़सीनों से बढ़ कर के तुम हो ह़सीं
क़ासिमे रिज़्क़े रब्बुल उ़ला हो तुम्हीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
फ़िक्रे उम्मत में रातों को रोते रहे आ़सियों के गुनाहों को धोते रहे
तुम पे क़ुरबान जाऊं मेरे मह जबीं ! तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
फूल रह़मत के हर दम लुटाते रहे यां ग़रीबों की बिगड़ी बनाते रहे
हौज़े कौसर पे मत भूल जाना कहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम
ज़ुल्म, कुफ़्फ़ार के हंस के सहते रहे फिर भी हर आन ह़क़ बात कहते रहे

कितनी मेह़नत से की तुम ने तब्लीग़े दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

मौत के वक़्त कर दो निगाहे करम काश इस शान से येह निकल जाए दम

संगे दर पर तुम्हारे हो मेरी जबीं[1] तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

अब मदीने में हम को बुला लीजिये और सीना मदीना बना दीजिये

अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म इमामे मुबीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

इश्क़ से तेरे मा'मूर सीना रहे लब पे हर दम "मदीना मदीना" रहे

बस मैं दीवाना बन जाऊं सुल्त़ाने दीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

दूर हो जाएं दुन्या के रन्जो अलम[2] हो अ़त़ा अपना ग़म दीजिये चश्मे नम

मालो दौलत की कसरत का त़ालिब नहीं तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

अब बुला लो मदीने में अ़त्त़ार को
अपने क़दमों में रख लो गुनहगार को
कोई इस के सिवा आरज़ू ही नहीं
तुम पे हर दम करोड़ों दुरूदो सलाम

مــدینه

1 : पेशानी 2 : ग़म

करबला के जां निसारों को सलाम

करबला के जां निसारों को सलाम
फ़ातिमा ज़हरा के प्यारों को सलाम

मुस्तफ़ा के माहपारों को सलाम
नौ जवानों गुल इज़ारों[1] को सलाम

करबला तेरी बहारों को सलाम
जां निसारी के नज़ारों को सलाम

या हुसैन इब्ने अ़ली मुश्किल कुशा
आप के सब जां निसारों को सलाम

अक्बरो अस्ग़र पे जां कुरबान हो
मेरे दिल के ताजदारों को सलाम

क़ासिमो अ़ब्बास पर हों रह़मतें
करबला के शह सुवारों[2] को सलाम

مدینہ

1 : फूल जैसे रुख़्सार वाले 2 : माहिर घोड़े सुवार

जिस किसी ने करबला में जान दी
उन सभी ईमान दारों को सलाम

भूकी प्यासी बीबियों पर रह़मतें
भूके प्यासे गुल इज़ारों को सलाम

भेद क्या जाने शहादत का कोई
उन ख़ुदा के राज़दारों को सलाम

बे बसी में भी ह़या बाक़ी रही
सब हुसैनी पर्दादारों को सलाम

रह़मतें हों हर सह़ाबी पर मुदाम[1]
और ख़ुसूसन चार यारों को सलाम

बीबियों को आ़बिदे बीमार को
बे कसों को ग़म के मारों को सलाम

مدینہ

1 : हमेशा

हो गए क़ुरबां मुह़म्मद और औ़न
सय्यिदह ज़ैनब के प्यारों को सलाम

करबला में ज़ुल्म के टूटे पहाड़
जिन पे उन सब दिल फ़िगारों[1] को सलाम

आलो अस्ह़ाबे नबी के जिस क़दर
चाहने वाले हैं सारों को सलाम

या ख़ुदा ! ऐ काश ! जा कर फिर करूं
करबला के सब मज़ारों को सलाम

तीन[3] दिन के भूके प्यासे आप की
या नबी ! आंखों के तारों को सलाम

जो हुसैनी क़ाफ़िले में थे शरीक
कहता है अ़त्तार सारों को सलाम

1 : ज़ख़्मी दिल, दुखियारे

ऐ बयाबाने अ़रब तेरी बहारों को सलाम

(येह कलाम 1414 सि.हि. के मुबारक सफ़र में
मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعۡظِيۡمًا में लिखा गया)

ऐ बयाबाने अ़रब तेरी बहारों को सलाम
तेरे फूलों को तेरे पाकीज़ा ख़ारों को सलाम

ज-बले नूरो ज-बले सौर और उन के ग़ारों को सलाम
नूर बरसाते पहाड़ों की क़ितारों को सलाम

झूमते हैं मुस्कुराते हैं मुग़ीलाने[1] अ़रब
ख़ूब सूरत वादियों को रेगज़ारों को सलाम

रात दिन रह़मत बरसती है जहां पर झूम कर
उन त़वाफ़े का'बा के रंगीं नज़ारों को सलाम

इश्क़ में दीवारे का'बा से जो लिपटे हैं वहां
उन सभी दीवानों सारे बे क़रारों को सलाम

مدینہ

1: कांटे का दरख़्त

ह़-जरे अस्वद, बाबो मीज़ाबो मक़ामो मुल्तज़म
और गि़लाफ़े का'बा के रंगीं नज़ारों को सलाम

मुस्तजारो मुस्तजाबो बीरे ज़मज़म और मत़ाफ़
और ह़त़ीमे पाक के दोनों[2] कनारों को सलाम

रुक्ने शामी व इ़राक़ी व यमानी को भी और
जगमगाते नूर बरसाते मनारों को सलाम

जो मुसल्मां ख़ानए का'बा का करते हैं त़वाफ़
उन को भी और सारे ही सज्दा गुज़ारों को सलाम

ख़ूब चूमे हैं क़दम सौरो हि़रा ने शाह के
महके महके प्यारे प्यारे दोनों[2] ग़ारों को सलाम

म-दनी मुन्नों का भी ह़म्ला ख़ूब था बू जह्ल पर
बद्र के उन दोनों[2] नन्हे जां निसारों को सलाम

जगमगाते, गुम्बदे ख़ज़रा पे हो रह़मत मुदाम
मस्जिदे न-बवी के नूरानी मनारों को सलाम

मिम्बरो मेह़राबे जानां और सुनह्री जालियां
सब्ज़ गुम्बद के मकीं को दोनों[2] प्यारों को सलाम

सय्यिदी ह़म्ज़ा को, और जुम्ला शहीदाने उहुद
को भी और सब ग़ाज़ियों को शह सुवारों को सलाम

जिस क़दर जिन्नो बशर में थे सह़ाबा शाह के
सब को भी बेशक ख़ुसूसन चार यारों को सलाम

जिस जगह पर आ के सोए हैं सह़ाबा दस हज़ार
उस बक़ीए़ पाक के सारे मज़ारों को सलाम

शौक़े दीदारे मदीना में तड़पते हैं जो, उन
बे क़रारों, दिल फ़िगारों, अश्कबारों को सलाम

ग़ुस्ले का'बा[1] का भी मन्ज़र किस क़दर पुर कैफ़ है
झूम कर कहता है अ़त्तार उन नज़ारों को सलाम

1 : ग़ुस्ले का'बा उ़मूमन यकुम ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को होता है। येह 1414 सि.हि. की ह़ाज़िरी का ग़ुस्ले का'बा के वक़्त का मक़्तअ़ है।

हो मुबारक अहले इस्यां, हो गया बख़्शिश का सामां

يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ

हो मुबारक अहले इस्यां, हो गया बख़्शिश का सामां
आ गई सुब्हे बहारां, हो गया घर घर चरागां

يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ

जश्ने मीलादुन्नबी है, नूर की चादर तनी है
रोशनी ही रोशनी है, धूम हर जानिब मची है

يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ

आज है सुब्हे बहारां, झूमते हैं सब मुसल्मां
घिर चुका है अब्रे बारां, रह़मतों से भर लो दामां

يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ

आमिना बीबी के घर पर, आ गया नबियों का अफ़्सर
झुक गया है कुफ़्र का सर, पड़ गई है धूम घर घर

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

आमिना बी के दुलारे, ऐ दुखी दिल के सहारे
कौन है जो अब संवारे, मेरे बिगड़े काम सारे

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

तुम मकीने ला मकां हो, और हक़ के राज़ दां हो
इज़्ने रब से ग़ैब दां हो, क्या है जो तुम से निहां[1] हो

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

अव्वलो आख़िर तुम आक़ा, बातिनो ज़ाहिर तुम आक़ा
हाज़िरो नाज़िर तुम आक़ा, तय्यिबो ताहिर तुम आक़ा

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلَوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

1 : छुपा हुवा, पोशीदा

आप सुल्ताने जहां हैं, दर्द मन्दे बे कसां हैं
चारए बे चारगां हैं, बे अमानों की अमां हैं

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

तुम ह़बीबे किब्रिया हो, और इमामुल अम्बिया हो
दो[2] जहां के पेशवा हो, शाफ़ेए रोज़े जज़ा हो

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

या ह़बीबे रब्बे दावर, अज़ पए सिद्दीक़े अक्बर
और उ़मर उ़स्मानो ह़ैदर, चश्मे तर दो क़ल्बे मुज़्त़र

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

वासित़ा ग़ौसुल वरा का, ह़ज़रते अह़मद रज़ा का
और मेरे मुर्शिद पिया का, रुख़ बदल दो हर बला का

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

हुब्बे दुन्या से बचा लो, मुझ निकम्मे को निभा लो
दिल से शैतां को निकालो, अपना दीवाना बना लो

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

दर्दे इस्यां को मिटाना, नेक मुझ को तुम बनाना
राहे सुन्नत पर चलाना, अपनी उल्फ़त में गुमाना

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

बादशाहत और हुकूमत, दो न तुम दुन्या की दौलत
दो फ़क़त अपनी महब्बत, ऐ शहन्शाहे रिसालत

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

रह़मतुल्लिल आ-लमीं हो, और शफ़ीउ़ल मुज़्निबीं हो
फ़ज़्ले रब से क्या नहीं हो, बा'द रब के बस तुम्हीं हो

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

तुम मदीने में बुलाना, अपना जल्वा भी दिखाना
कल्मए त़य्यिब पढ़ाना, अपने क़दमों में सुलाना

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

ऐ शहन्शाहे मदीना, इश्क़ का देदो ख़ज़ीना
हो मेरा सीना मदीना, अ़र्ज़ करता है कमीना

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

रह़मतल्लिल आ़-लमीना, हो अ़त़ा ऐसा क़रीना
देख कर मीठा मदीना, इश्क़ में फट जाए सीना

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

नज़्अ़ में मह़बूबे दावर, काश ! देखूं रूए अन्वर
देखते ही जां निछावर, तुम पे कर दूं काश ! सरवर

[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

ऐ मदीने वाले आक़ा, जितने हैं मतवाले आक़ा
सब के सुन ले नाले आक़ा, सब को तू बुलवा ले आक़ा
[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

आख़िरी लम्हे जब आएं, काश ! वोह तशरीफ़ लाएं
अपने जल्वों में गुमाएं, झूम कर हम गुनगुनाएं
[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

गुम्बदे ख़ज़रा तुम्हारा, किस क़दर है प्यारा प्यारा
काश ! करते ही नज़ारा, जानो दिल कर दूं निसारा
[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

क़ब्र में हो जिस दम आना, तुम वहां तशरीफ़ लाना
चेहरए रोशन दिखाना, गोरे तीरह जगमगाना
[يا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یاحبیب سلامٌ علیکَ صَلوٰۃُ اللّٰہِ علیکَ]

अल अमां ! हंगामे मह़शर, प्यास की शिद्दत से सरवर
जब ज़बानें आएं बाहर, तुम पिलाना जामे कौसर

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

ह़श्र में सरकार आना, मेरे ऐ़बों को छुपाना
अपने रब से बख़्शवाना, साथ जन्नत में बसाना

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

काश ! अ़त्त़ारे ह़ज़ीं हो, और मदीने की ज़मीं हो
उस का वक़्ते वा-पसीं हो, और सिरहाने तुम्हीं हो

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

ह़श्र में अ़त्त़ार आएं, आप उन पर रह़्म खाएं
अपने दामन में छुपाएं, और रब से बख़्शवाएं

[یا نبی سلامٌ علیکَ یارسول سلامٌ علیکَ
یا حبیب سلامٌ علیکَ صَلٰوۃُ اللّٰہِ علیکَ]

ऐ मदीने के ताजदार तुझे अहले ईमां सलाम कहते हैं

ऐ मदीने के ताजदार तुझे | अहले ईमां सलाम कहते हैं
तेरे उ़श्शाक़ तेरे दीवाने | जाने जानां सलाम कहते हैं
जो मदीने से दूर रहते हैं | हिज्रो[1] फ़ुरक़त का रन्ज सहते हैं
वोह त़लब गारे दीद रो रो कर | ऐ मेरी जां सलाम कहते हैं
जिन को दुन्या के ग़म सताते हैं | ठोकरें दर बदर की खाते हैं
ग़म नसीबों के चारागर तुम को | वोह परेशां सलाम कहते हैं
दूर दुन्या के रन्जो ग़म कर दो | और सीने में अपना ग़म भर दो
उन को चश्माने तर अ़त़ा कर दो | जो भी सुल्त़ां सलाम कहते हैं
जो तेरे इश्क़ में तड़पते हैं | ह़ाज़िरी के लिये तरसते हैं
इज़्ने त़यबा की आस में आक़ा | वोह पुर अरमां सलाम कहते हैं

1 : जुदाई

तेरे रौज़े की जालियों के पास आक़ा रह़मो करम की ले कर आस
कितने दुखियारे रोज़ आ आ के शाहे ज़ीशां सलाम कहते हैं
आरज़ूए ह़रम है सीने में अब तो बुलवाइये मदीने में
तुझ से तुझ ही को मांगते हैं जो वोह मुसल्मां सलाम कहते हैं
रुख़ से पर्दे को अब उठा दीजे अपने क़दमों से अब लगा लीजे
आह ! जो नेकियों से हैं यक्सर[1] ख़ाली दामां सलाम कहते हैं

आप अ़त्तार क्यूं परेशां हैं ?
बद से बदतर भी ज़ेरे दामां हैं
उन पे रह़मत वोह ख़ास करते हैं
जो मुसल्मां सलाम कहते हैं

مدینہ

1 : बिल्कुल, मुकम्मल त़ौर पर

सुल्ताने औलिया को हमारा सलाम हो

सुल्ताने औलिया को हमारा सलाम हो
जीलां के पेश्वा को हमारा सलाम हो

प्यारे हसन हुसैन के, हैदर के लाडले
महबूबे मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो

वोह ग़ौस जिस के ख़ौफ़ से जिन्नात कांप उठें
उस दाफ़ेए बला को हमारा सलाम हो

छोड़ा है मां का दूध भी माहे सियाम[1] में
सरताजे अत्क़िया को हमारा सलाम हो

सब औलिया की गरदनें ज़ेरे क़दम हैं ख़म
सरदारे अस्फ़िया को हमारा सलाम हो

दिल की जो बात जान ले रोशन ज़मीर है
उस मर्दे बा सफ़ा को हमारा सलाम हो

भटके हुओं को रास्ता सीधा दिखा दिया
आलम के रहनुमा को हमारा सलाम हो

गिरते संभालें, डूबती किश्ती तिराएं जो
ग़म ख़्वारे ग़मज़दा को हमारा सलाम हो

पूरी मुराद जो करे और झोलियां भरे
उस मख़्ज़ने अता को हमारा सलाम हो

इज़्ने ख़ुदाए पाक से मुर्दे जिलाए जो
उस मज़्हरे ख़ुदा को हमारा सलाम हो

कह कर के "ला तख़फ़" हमें बे ख़ौफ़ कर दिया
उस रहमते ख़ुदा को हमारा सलाम हो

पढ़ते रहो मुदाम[2] येह अत्तार क़ादिरी
सुल्ताने औलिया को हमारा सलाम हो

---

1 : रोज़ों का महीना, र-मज़ानुल मुबारक   2 : हमेशा

"तू न हम को भूल जा" कहना कैसा ?

सुवाल : दुआ़ में येह अश्आ़र पढ़ना कैसा है ?

या ख़ुदा ! अपने न आईने करम को भूल जा
हम तुझे भूले हैं लेकिन तू न हम को भूल जा
है दुआ़ए बिस्मिले नीम जां, कि मेरी ख़त़ाओं को भूल जा
है मुझे तो तेरा ही आसरा, तू ग़फ़ूर है तू रह़ीम है

जवाब : "भूलना" के अस्ल मा'ना "याद न रहना" है तो अगर क़ाइल की येही मुराद है तब तो कुफ़्र है और कहने वाले ने लफ़्ज़ "भूलना" को "छोड़ना" के मा'ना में इस्ति'माल किया तो **कुफ़्र** नहीं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब स. 241, मक-त-बतुल मदीना)

मु–तफ़र्रिक़
कलाम

मसर्रत से सीना मदीना बना था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

(येह कलाम 5 शव्वालुल मुकर्रम 1431 सि.हि. को कम्पोज़ किया गया)

मसर्रत से सीना मदीना बना था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था
परे रन्जो ग़म का अंधेरा हुवा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

ख़बर जब कि र-मज़ां की आमद की आई
तो मुरझाए दिल की कली मुस्कुराई
और अब्रे करम नूर बरसा रहा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

नज़र चांद र-मज़ां का जिस वक़्त आया
हुवा रहमतों का ज़माने पे साया
उफ़ुक़ पर भी अब्रे करम छा गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

खुले बाबे जन्नत, जहन्नम को ताले
पड़े, हर त़रफ़ थे उजाले उजाले
वोह मरदूद शैत़ान क़ैदी बना था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

तराने ख़ुशी के फ़ज़ा गुनगुनाती
हवा भी मसर्रत के नग़्मे सुनाती
जिधर देखिये मरह़बा मरह़बा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

फ़ज़ाएं भी क्या नूर बरसा रही थीं
हवाएं मसर्रत से इठला रही थीं
समां हर त़रफ़ कैफ़ो मस्ती भरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

शबो रोज़ रह़मत की बरसात होती
अ़त़ाओं की झोली में ख़ैरात होती
मुसल्मां का दामन करम से भरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

जो उल्फ़त के पैमाने तक़्सीम होते
तो बख़्शिश के परवाने तरक़ीम[1] होते
ख़ुशा ! बह़ूरे रह़मत को जोश आ गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मसाजिद में हर सू बहार आ गई थी
ख़ुदा के करम की घटा छा गई थी
जिसे देखो सज्दे में आ कर गिरा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

---

1 : लिखे जाते, तह़रीर

फ़ज़ाएं मुनव्वर हवाएं मुअ़त्तर
ख़ुदा की क़सम था समां कैफ़ आवर
दिलों पर भी इक वज्द सा छा गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

कलेजे में ठन्डक थी, चेहरे पे पानी
दिलों में भी थी किस क़दर शादमानी
सुकूं माहे र-मज़ां में कैसा मिला था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुसल्मां थे ख़ुश रुख़ पे रौनक़ बड़ी थी
ख़ुदा के करम की बरसती झड़ी थी
इ़बादत में दिल किस क़दर लग गया था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

सरे शाम इफ़्तार की रौनक़ें थीं
ब वक़्ते सहर किस क़दर ब-र-कतें थीं
सुरूर आ रहा था मज़ा आ रहा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुक़द्दर ने की या-वरी साथ जिन के
मसाजिद में वोह **मो 'तकिफ़** हो गए थे
इबादत का क्या ख़ूब जज़्बा मिला था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

इबादत में उ़श्शाक़ लज़्ज़त थे पाते
अदब से तिलावत में सर को झुकाते
नमाज़ों का रोज़ों का भी इक मज़ा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुनाजाते इफ़्तार में रिक़्क़तें थीं
दुआ़ओं में भी किस क़दर लज़्ज़तें थीं
जिसे देखो वोह महूवे यादे ख़ुदा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

सना ख़्वान जिस वक़्त ना'तें सुनाते
तो आक़ा के उ़श्शाक़ आंसू बहाते
नशा ख़ूब इ़श्क़े नबी का चढ़ा था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

मुबल्लिग़ अ़ज़ाबों से जिस दम डराता
कोई कप-कपाता कोई थर-थराता
कोई गिड़-गिड़ाता कोई चीख़ता था
मज़ा ख़ूब र-मज़ान में आ रहा था

घड़ी जब कि र–मज़ां की रुख़्सत की आई
तड़पते थे सदमे से इस्लामी भाई
बिलक्ता था कोई, कोई ग़मज़दा था
मज़ा ख़ूब र–मज़ान में आ रहा था

दमे रुख़्सते माहे र–मज़ां मुसल्मां
थे ग़मगीनो हैरां, परेशां परेशां
शबे ईद देखो जिसे रो रहा था
मज़ा ख़ूब र–मज़ान में आ रहा था

मुझे माहे र–मज़ां का ग़म दे इलाही
मिटा हुब्बे दुन्या की दिल से सियाही
मज़ा फ़ानी सन्सार में क्या रखा था
मज़ा ख़ूब र–मज़ान में आ रहा था

जो थे **मो'तकिफ़** "म–दनी मर्कज़" के अन्दर
बिचारे थे अ़त्तार मग़मूमो मुज़्तर
दमे अल वदाअ़ उन का दिल जल रहा था
मज़ा ख़ूब र–मज़ान में आ रहा था

म-दनी सेहरा

(मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मौला बख़्श अ़त्तारी سلمہ الباری की शादी के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर उन्ही की फ़रमाइश पर 12 अश्आ़र पर मुश्तमिल दुआ़ओं भरा सेहरा लिखा गया था इस में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम की गई है)

आज मौला बख़्श फ़ज़्ले रब से है दूल्हा बना
ख़ुशनुमा फूलों का इस के सर पे है सेहरा सजा

इस की शादी ख़ाना आबादी हो रब्बे मुस्त़फ़ा
अज़ तुफ़ैले ग़ौसो ख़्वाजा अज़ पए अह़मद रज़ा

इन की ज़ौजा या ख़ुदा करती रहे पर्दा सदा
अज़ तुफ़ैले ह़ज़रते उ़स्मां ग़निय्ये बा ह़या

तू सदा रखना सलामत इन का जोड़ा किर्दिगार
इन को झगड़ों से बचाना अज़ तुफ़ैले चार यार

इन को ख़ुशियां दो[2] जहां में तू अ़त़ा कर किब्रिया
कुछ न छाए इन पे ग़म की रन्ज की काली घटा

तू नुहूसत से इन्हें फ़ेशन की ऐ मौला बचा
सुन्नतों पर येह अ़मल करते रहें या रब सदा
नेक औलाद इन को मौला आ़फ़ियत से हो अ़ता
वासित़ा या रब मदीने की मुबारक ख़ाक का

या इलाही जब तलक दोनों[2] यहां जीते रहें
सुन्नतों की ख़ूब ख़िदमत येह सदा करते रहें
इस त़रह़ महका करे येह घर का घर प्यारे ख़ुदा
फूल महका करते हैं जैसे मदीने के सदा

या इलाही ! दे सआ़दत इन को ह़ज की बार बार
बार बार इन को दिखा मीठे मुह़म्मद का दियार
हो बक़ीए़ पाक में दोनों[2] को मदफ़न भी अ़ता
सब्ज़ गुम्बद का तुझे देता हूं मौला वासित़ा

येह मियां बीवी रहें जन्नत में यक्जा ऐ ख़ुदा
या इलाही तुझ से है अ़त्तारे आ़जिज़ की दुआ़

दुआ़इया नज़्म

(दा'वते इस्लामी के "मद्र-सतुल मदीना" में हि़फ़्ज़े कु़रआन मुकम्मल करने वाले त़ालिबे इ़ल्म को मत़्लअ़ में उस का नाम मौज़ूं कर के पेश की जाने वाली 12 अश्आ़र पर मुश्तमिल दुआ़इया नज़्म)

फ़ज़्ल से मौला के खुर्रम हा़फ़िज़े कुरआं बना
अहले ख़ाना की शफ़ाअ़त के लिये सामां बना

हा़फ़िज़े कुरआं हुवा अब आ़मिले कुरआं बना
दीं पे चलना या ख़ुदा ! इस के लिये आसां बना

सुन्नतों पर इस्तिक़ामत दे पए अह़मद रज़ा
या इलाही ! इस को पुख़्ता साहि़बे ईमां बना

या इलाही ! इस के दिल में अपनी उल्फ़त डाल दे
अपना मस्ताना बना दीवानए जानां बना

मुर्शिदो उस्ताद का या रब बना इस को मुती़अ़[1]
और इसे मां बाप का भी ताबेए़ फ़रमां बना

---

1. फ़रमां बरदार

इस को रोज़ाना तिलावत की भी तू तौफ़ीक़ दे
क़ारिये क़ुरआं बना और ख़ादिमे क़ुरआं बना

इस को मौला तू गुनाहों से बचाना हर घड़ी
इस को बा अख़्लाक़ बा किरदार नेक इन्सां बना

बा जमाअ़त येह अदा करता रहे हर इक नमाज़
सुन्नतों का हो मुबल्लिग़ क़ह्र बर शैत़ां बना

या इलाही ! सुन्नतों की ख़ूब येह ख़िदमत करे
वासित़े नेकी की दा'वत इस के तू आसां बना

दे शरफ़ इस को ख़ुदाए पाक ह़ज का बार बार
बार बार इस को मदीने का भी तू मेहमां बना

या इलाही ! इस को फ़ेशन की नुहूसत से बचा
इस को पैकर सुन्नतों का अज़ पए ह़स्सां बना

तुझ से है अ़त्त़ार की ऐ म–दनी मुन्ने ! इल्तिजा
कर के क़ुरआं पर अ़मल जन्नत का तू सामां बना

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार
म-दनी चेनल से हमें क्यूं वालिहाना हो न प्यार

म-दनी चेनल से जिसे भी वालिहाना प्यार है
اِنْ شَاءَ الله दो[2] जहां में उस का बेड़ा पार है

नाच गानों और फ़िल्मों से येह चेनल पाक है
म-दनी चेनल ह़क़ बयां करने में भी बेबाक है

म-दनी चेनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَاءَ الله ए'तिराफ़

नफ़्से अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार
शर्मे इस्यां के सबब होगा गुनहगार अश्कबार

राहे सुन्नत पर चला कर सब को जन्नत की त़रफ़
ले चले बस इक येही है म-दनी चेनल का हदफ़

इस में मूसीक़ी न तुम हरगिज़ सुनोगे सामिईं
येह गुनह का काम है इस की इजाज़त है नहीं

छोड़ दो फ़िल्में डिरामे देखना तुम छोड़ दो
तोड़ दो इब्लीस से सब रिश्ता नाता तोड़ दो

इस में है फ़ैज़ाने कुरआं इस में फ़ैज़ाने ह़दीस
जल मरे और ख़ाक डाले सर पे शैत़ाने ख़बीस

ऐ गुनाहों के मरीज़ो ! चाहते हो गर शिफ़ा
ऑन करते ही रहो तुम म-दनी चेनल को सदा

इस में इस्यां से हिफ़ाज़त का बहुत सामान है
إِنْ شَاءَ اللّٰه ख़ुल्द में भी दाख़िला आसान है

म-दनी चेनल तुम को घर बैठे सिखाएगा नमाज़
और नमाज़ी दोनों[2] आ़लम में रहेगा सरफ़राज़

म-दनी चेनल में नबी की सुन्नतों की धूम है
और शैत़ाने लईं रन्जूर है मग़्मूम है

म-दनी चेनल हुब्बे अह़मद में रुलाता है तुम्हें
और नशा इश्क़े मुह़म्मद का चढ़ाता है तुम्हें

ख़ूब तड़पाता है येह ख़ौफ़े ख़ुदाए पाक में
और मिलाता है तकब्बुर का नशा भी ख़ाक में

म-दनी चेनल नारे दोज़ख़ से अमां दिलवाएगा
اِنْ شَاءَ اللّٰه आप को बागे़ जिनां दिलवाएगा

म-दनी चेनल म-दनी मुन्नों को भी हां दिखलाइये
दीन की बातें अभी से इन को भी सिखलाइये

कुफ़्र के ऐवां में मौला डाल दे येह ज़ल्ज़ला
या इलाही ! ता अबद जारी रहे येह सिल्सिला

म-दनी चेनल के सबब नेकी की दा'वत आ़म हो
आ़म दुन्या भर में या रब दीन का पैग़ाम हो

म-दनी चेनल के मुबल्लिग़, ना'त ख़्वां, ख़िदमत गुज़ार
जिस क़दर भी हैं सभी की मग़्फ़िरत हो किर्दिगार

म-दनी चेनल के लिये जो साथ दे अ़त्तार का
उस पे हो रह़मत ख़ुदा की और करम सरकार का

आओ म-दनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र

आओ म-दनी क़ाफ़िले में हम करें मिल कर सफ़र
सुन्नतें सीखेंगे इस में اِنْ شَآءَ اللّٰه सर बसर

तीस[30] तीस[30] और बारह[12] बारह[12] दिन के म-दनी क़ाफ़िले
में सफ़र करते रहो जब भी तुम्हें मौक़अ़ मिले

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर दगार
सुन्नतों की तरबिय्यत के क़ाफ़िले में बार बार

झूट ग़ीबत और चुग़ली से जो बचना चाहे वोह
ख़ूब म-दनी क़ाफ़िलों में दिल लगा कर जाए वोह

जो भी शैदाई है म-दनी क़ाफ़िलों का या ख़ुदा
दो जहां में उस का बेड़ा पार फ़रमा या ख़ुदा

तीन[3] दिन हर माह जो अपनाए म-दनी क़ाफ़िला
बे हि़साब उस का ख़ुदाया ! ख़ुल्द में हो दाख़िला

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
"म-दनी इन्आ़मात" पर करता है जो कोई अ़मल

जो गुनाहों के मरज़ से तंग है बेज़ार है
क़ाफ़िला अ़त्तार उस के वासिते़ तय्यार है

आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर

(येह नज़्म दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये म-दनी क़ाफ़िले की सफ़र से वापसी का वक़्त क़रीब आने पर सुन्नतों की तड़प रखने वाले हुस्सास आशिक़ाने रसूल के वल्वला अंगेज़ जज़्बात की अ़क्कास है)

आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर
कोई दिल थामे खड़ा है कोई है बा चश्मे तर

सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िलों के क़द्र दां
जब पलटते हैं घरों को रोते हैं वोह फूट कर

किस क़दर ख़ुश थे निकल कर चल दिये थे घर से जब
अब उदासी छा रही है हाए ! अपने क़ल्ब पर

फ़िक्र थी घर की न कोई फ़िक्र कारोबार की
लुत्फ़ ख़ूब आता था हम को मस्जिदों में बैठ कर

जाते ही दुन्या के झगड़े फिर गले पड़ जाएंगे
क्या करें नाचार हैं क़ाबू नहीं हालात पर

बा जमाअ़त सब नमाज़ें और तहज्जुद के मज़े
इतनी आसानी से फिर मिल जाएंगे क्या जा के घर ?

या ख़ुदा ! निकलूं मैं म-दनी क़ाफ़िलों के साथ काश !
सुन्नतों की तरबियत के वासित़े फिर जल्द तर ! !

हाए ! सारा वक़्त मेरा ग़फ़्लतों में कट गया
आह ! कब होगा मुयस्सर फिर मुबारक येह सफ़र

म-दनी माह़ोल और म-दनी क़ाफ़िले वालों की कुछ
भी न की है क़द्र हाए ! हूं मैं नादां किस क़दर

मस्जिदों का कुछ अदब हाए ! न मुझ से हो सका
अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा फ़रमा इलाही दर गुज़र

आह ! शैत़ां हर घड़ी हर वक़्त ग़ालिब ही रहा
आ़दते इस्यां ने रख दी तोड़ कर हाए ! कमर

खूब ख़िदमत सुन्नतों की हम सदा करते रहें
म-दनी माहोल ऐ ख़ुदा हम से न छूटे उ़म्र भर
इस अ़लाक़े वाले सारे भाइयों का शुक्रिया
साथ जो देते रहे हैं क़ाफ़िले का सर बसर
सुन्नतों की तरबियत के वासिते़ निकला था मैं
हाए पर सोता रहा ग़फ़्लत की चादर तान कर
या रसूलल्लाह अपने दर पे अब बुलवाइये
हो नसीब आक़ा हमें मीठे मदीने का सफ़र
है दुआ़ अ़त्तार की : "उस की हो ह़त्मी मग़्फ़िरत"
क़ाफ़िलों में उ़म्र भर करता रहे जो भी सफ़र

ला'नत की ता'रीफ़

"**अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से दूरी और मह़रूमी।" ख़याल रहे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत के मा'ना हैं : "रह़मत से दूर करना" बन्दों की ला'नत के मा'ना हैं : "इस दूरी की बद दुआ़ करना।" (मिरआत, जि. 6, स. 450)

आएंगी सुन्नतें जाएंगी शामतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(येह बा क़ाइदा नज़्म नहीं, फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "फ़ैज़ाने र-मज़ान" के जुज़ "फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़" की मुख़्तलिफ़ "म-दनी बहारों" वग़ैरा के आख़िर में लिखे हुए अश्आ़र कहीं कहीं तरमीम के साथ यक्जा किये गए हैं।)

आएंगी सुन्नतें जाएंगी शामतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम सुधर जाओगे, पाओगे ब-र-कतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
जल्वए यार की आरज़ू है अगर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा चाहो अगर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ आओ इधर आ भी जाओ इधर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से हिदायत भी जाएगी मिल, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से गुनाहों की कालक धुले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों का तुम्हें ख़ूब जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
गर्चे दिल में है फ़ेशन की उल्फ़त भरी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उ़म्र आयिन्दा गुज़रेगी सुन्नत भरी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

भाई गर चाहते हो "नमाज़ें पढूं", म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है "आगे बढूं", म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम को राहत की ने'मत अगर चाहिये, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बन्दगी की भी लज़्ज़त अगर चाहिये, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मतें लूटने के लिये आओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़त्म होगी शरारत की आ़दत चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होगी गुनाहों की शामत चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बिगड़े अख़्लाक़ सारे संवर जाएंगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

बस मज़ा क्या मज़े को मज़े आएंगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

जामे इ़श्क़े मुह़म्मद भी हाथ आएगा, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

सुन्नतें खाना खाने की तुम जान लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मान लो बात अब तो मेरी मान लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

लेने ख़ैरात तुम रह़मतों की चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

लूटने ब-र-कतें सुन्नतों की चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

प्यारे इस्लामी भाई चले आओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मीठे आक़ा की उल्फ़त का जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

दाढ़ी रखने की सुन्नत का जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

اِنْ شَاءَ الله हर काम होगा भला, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

दूर होगी ब फ़ज़्ले ख़ुदा हर बला, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

सीखने को मिलेंगी तुम्हें सुन्नतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

लूट लो आ कर अल्लाह की रह़मतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

बे जा बक बक की ख़स्लत भी टल जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

सारी फ़ेशन की मस्ती उतर जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

ज़िन्दगी सुन्नतों से निखर जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

गर मदीने का ग़म चश्मे नम चाहिये, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

म-दनी आक़ा की नज़्रे करम चाहिये म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

सुन्नतें सीख लो रह़मतें लूट लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

दीन के इ़ल्म की ब-र-कतें लूट लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

तुम गुनाहों से अपने जो बेज़ार हो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, लुत़्फ़े सरकार हो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

ज़िक्र करना ख़ुदा का यहां सुब्ह़ो शाम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

पाओगे ना'ते महबूब की धूमधाम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

कर के हिम्मत मुसल्मानो आ जाओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

उख़्रवी दौलत आओ कमा जाओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

दर्द टांगों में हो, दर्द घुटनों में हो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

पेट में दर्द हो या कि टख़्नों में हो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

सुन्नतों की तुम आ कर के सौग़ात लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

आओ बटती है रहमत की ख़ैरात लो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

गोरे तीरह को तुम जगमगाने चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

राहतें रोज़े महशर की पाने चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

छूट जाएगी फ़िल्मों डिरामों की लत, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

ख़ुश ख़ुदा होगा बन जाएगी आख़िरत, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

तंग दस्ती का हल भी निकल आएगा, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रोज़गार اِنْ شَآءَ الله मिल जाएगा, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

आ़शिक़ाने रसूल आओ देंगे बयां, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

दूर होंगी इबादात की ख़ामियां, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

बा जमाअ़त नमाज़ों का जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दिल का पज़मुर्दा गुन्चा ख़ुशी से खिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
اِنْ شَآءَ اللّٰہ भाई सुधर जाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दिल में बस जाएं आक़ा के जल्वे मुदाम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखो मक्के मदीने के तुम सुब्हो शाम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सोहबते बद में रहने की आ़दत छुटे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़स्लते जुर्मो इस्यां तुम्हारी मिटे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ इश्क़े मुहम्मद के पीने को जाम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मस्त हो कर करो ख़ूब तुम म-दनी काम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ज़िन्दगी का क़रीना मिलेगा तुम्हें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ दर्दे मदीना मिलेगा तुम्हें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ सुन्नत का फ़ैज़ान पाओगे तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

إِنْ شَاءَ اللّٰه जन्नत में जाओगे तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

तुम को तड़पा के रख दे गो दर्दे कमर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

पाओगे तुम सुकूं होगा ठन्डा जिगर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रंग रलियां मनाने का चस्का मिटे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रक़्स की महफ़िलों की नुहूसत छुटे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

ढोल बाजों को सुनने से बाज़ आओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

फ़िल्मी गाने न हरगिज़ कभी गाओ तुम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

छोड़ दो छोड़ दो भाई रिज़्क़े ह़राम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

फ़ज़्ले रब से हो दीदारे सुल्ताने दीं, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

शादमानी से झूमेगा क़ल्बे ह़ज़ीं[1], म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मान भी जाओ अ़त्तार की इल्तिजा
म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगा राज़ी ख़ुदा ख़ुश शहे अम्बिया,
म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

1 : ग़मगीन

अ़ता़ए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल

अ़ता़ए ह़बीबे ख़ुदा म-दनी माह़ोल
है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा म-दनी माह़ोल

ब फ़ैज़ाने अह़मद रज़ा اِنْ شَآءَ اللّٰه
येह फूले फलेगा सदा म-दनी माह़ोल

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा
तुम आ जाओ देगा सिखा म-दनी माह़ोल

तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले
नहीं है येह हरगिज़ बुरा म-दनी माह़ोल

बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर
के अच्छों के पास आ के पा म-दनी माह़ोल

तनज़्ज़ुल[1] के गहरे गढ़े में थे उन की
तरक़्क़ी का बाइ़स बना म-दनी माह़ोल

तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का
क़रीब आ के देखो ज़रा म-दनी माह़ोल

नबी की मह़ब्बत में रोने का अन्दाज़
चले आओ सिखलाएगा म-दनी माह़ोल

तू नरमी को अपनाना झगड़े मिटाना
रहेगा सदा ख़ुशनुमा म-दनी माह़ोल

तू गुस्से झिड़क्ने से बचना वगर्ना
येह बदनाम होगा तेरा म-दनी माह़ोल

ऐ इस्लामी भाई न करना लड़ाई
कि हो जाएगा बदनुमा म-दनी माह़ोल

जो कोई "मजालिस[2]" का होगा वफ़ादार
उसी को ही रास[3] आएगा म-दनी माह़ोल

संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَ اللّٰه
तुम अपनाए रख्खो सदा म-दनी माह़ोल

बहुत सख़्त पछताओगे याद रख्खो
न अ़त्तार तुम छोड़ना म-दनी माह़ोल

---

1 : तरक़्क़ी की ज़िद, कमी, घटाव 2 : यहां दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात की "मजालिस" मुराद हैं। 3 : मुवाफ़िक़

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माहोल

(दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे और नेकियों से लबरेज़ माहोल को "म-दनी माहोल" कहा जाता है)

तेरा शुक्र मौला दिया म-दनी माहोल
न छूटे कभी भी खुदा म-दनी माहोल

सलामत रहे या खुदा म-दनी माहोल
बचे बद नज़र से सदा म-दनी माहोल

खुदा के करम से खुदा की अता से
न दुश्मन सकेगा छुड़ा म-दनी माहोल

दुआ है येह तुझ से दिल ऐसा लगा दे
न छूटे कभी भी खुदा म-दनी माहोल

हमें आलिमों और बुजुर्गों के आदाब
सिखाता है हर दम सदा म-दनी माहोल

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई
है बेहद महब्बत भरा म-दनी माहोल

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर
जिसे खैर से मिल गया म-दनी माहोल

यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी
दिलाएगा ख़ौफ़े खुदा म-दनी माहोल

तू आ बे नमाज़ी, है देता नमाज़ी
खुदा के करम से बना म-दनी माहोल

गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी
चढ़ाएगा ऐसा नशा म-दनी माहोल

अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला म-दनी माह़ोल

ऐ बीमारे इस्यां तू आ जा यहां पर गुनाहों की देगा दवा म-दनी माह़ोल

अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माह़ोल

शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माह़ोल

गुनहगारो आओ, सियह कारो आओ गुनाहों को देगा छुड़ा म-दनी माह़ोल

पिला कर मए इश्क़ देगा बना येह तुम्हें आ़शिके़ मुस्त़फ़ा म-दनी माह़ोल

ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी सुनो है बहुत काम का म-दनी माह़ोल

तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम येह ता'लीम फ़रमाएगा म-दनी माह़ोल

क़ियामत तलक या इलाही सलामत
रहे तेरे अ़त्त़ार का म-दनी माह़ोल

आज हैं हर जगह आ़शिक़ाने रसूल

(18 मुह़र्रमुल ह़राम 1432 सि.हि. को येह कलाम मौज़ूं किया गया)

आज हैं हर जगह आ़शिक़ाने रसूल महवे ना'तो सना आ़शिक़ाने रसूल
जश्न, मीलाद का सब रहे हैं मना बन्दगाने ख़ुदा आ़शिक़ाने रसूल
जश्ने मीलाद से इ़श्क़ है प्यार है हैं मनाते सदा आ़शिक़ाने रसूल
माहे मीलाद में ख़ूब लहराइये घर पे झन्डा हरा आ़शिक़ाने रसूल
आमदे मुस्त़फ़ा मरह़बा मरह़बा सब लगाओ सदा आ़शिक़ाने रसूल
सीखने सुन्नतें, मस्जिद आओ चलें लाए हैं क़ाफ़िला आ़शिक़ाने रसूल
याद रखना सभी छोड़ना मत कभी दामने मुस्त़फ़ा आ़शिक़ाने रसूल
रह़मते किब्रिया तुम पे हो दाइमा है हमारी दुआ़ आ़शिक़ाने रसूल
तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, रह़मते मुस्त़फ़ा हो बरोज़े जज़ा आ़शिक़ाने रसूल
काश ! दुन्या में तुम दो ब फ़ज़्ले ख़ुदा दीं का डंका बजा आ़शिक़ाने रसूल
तुम पे हो क़ब्र में हर जगह ह़श्र में सायए मुस्त़फ़ा आ़शिक़ाने रसूल
बे नमाज़ी रहें कुछ न रोज़े रखें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
आ़लिमों पर हंसें, फब्तियां भी कसें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
जो कि गाने सुनें, फ़िल्म बीनी करें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
बद निगाही करें, बद कलामी करें उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल

खाएं रिज़्क़े ह़राम, ऐसे हैं बद लगाम	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
अ़ह्द तोड़ा करें, झूट बोला करें	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
जो सताते रहें दिल दुखाते रहें	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
चुग़लियों तोह्मतों, में जो मश्ग़ूल हों	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
गालियां जो बकें ऐब दरियां करें	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
दाढ़ियां जो मुंडाएं करें ग़ीबतें	उन को किस ने कहा ? आ़शिक़ाने रसूल
काश ! अ़त्तार का त़यबा में ख़ातिमा	हो करो येह दुआ़ आ़शिक़ाने रसूल

बुख़्ल की ता'रीफ़

هُوَ مَلَكَةُ اِمْسَاكِ الْمَالِ حَيْثُ يَجِبُ بَذْلُهُ بِحُكْمِ الشَّرْعِ اَوِالْمُرُوْءَةِ या'नी जिस चीज़ का ख़र्च करना शरअ़न या मुरव्वतन ज़रूरी हो वहां ख़र्च न करना।

(حديقه نديه شرح طريقه محمديه ج ۲ص ۲۷)

ग़ीबत की ता'रीफ़

किसी (ज़िन्दा या मुर्दा) **शख़्स के पोशीदा ऐब को** (जिस का वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना, पसन्द न करता हो) **उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।** (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 175, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची)

नौह़ा की ता'रीफ़

मय्यित के औसाफ़ मुबा-लग़ा के साथ (या'नी मय्यित की बढ़ा चढ़ा कर ता'रीफ़) **बयान कर के आवाज़ से रोना।** (बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, स. 854, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना)

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(इस कलाम में बीच में कहीं कहीं मिस्रए किसी ना मा'लूम शाइ़र के हैं, कलाम निहायत पुरसोज़ था इस लिये किसी की फ़रमाइश पर उसी कलाम की मदद से अपने मु-तलातिम जज़्बात को अल्फ़ाज़ के क़ालिब में ढालने की सअ़य की है)

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
कुल्फ़ते[1] हिज्रो फ़ुरक़त ने मारा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

तेरे आने से दिल ख़ुश हुवा था — और ज़ौक़े इ़बादत बढ़ा था
आह ! अब दिल पे है ग़म का ग़-लबा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

मस्जिदों में बहार आ गई थी — जूक़ दर जूक़ आते नमाज़ी
हो गया कम नमाज़ों का जज़्बा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

बज़्मे इफ़्तार सजती थी कैसी ! — ख़ूब स-ह़री की रौनक़ भी होती
सब समां हो गया सूना सूना — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

तेरे दीवाने अब रो रहे हैं — मुज़्तरिब सब के सब हो रहे हैं
हाए अब वक़्ते रुख़्सत है आया — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

तेरा ग़म हम को तड़पा रहा है — आ-तशे शौक़ भड़का रहा है

1 : रन्ज, तक्लीफ़

फट रहा है तेरे ग़म में सीना अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

याद र-मज़ां की तड़पा रही है आंसूओं की झड़ी लग गई है

कह रहा है येह हर एक क़त़रा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

दिल के टुकड़े हुए जा रहे हैं तेरे आ़शिक़ मरे जा रहे हैं

रो रो कहता है हर इक बिचारा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

ह़स्रता माहे र-मज़ां की रुख़्सत क़ल्बे उ़श्शाक़ पर है क़ियामत

कौन देगा इन्हें अब दिलासा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

कोहे ग़म आ़शिक़ों पर पड़ा है हर कोई ख़ून अब रो रहा है

कह रहा है येह हर ग़म का मारा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

तुम पे लाखों सलाम आह ! र-मज़ां अल वदाअ़ आह ! ऐ रब के मेहमां !

जाओ ह़ाफ़िज़ ख़ुदा अब तुम्हारा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

नेकियां कुछ न हम कर सके हैं आह ! इ़स्यां में ही दिन कटे हैं

हाए ! ग़फ़्लत में तुझ को गुज़ारा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

वासित़ा तुझ को मीठे नबी का ह़श्र में हम को मत भूल जाना

रोज़े महशर हमें बख़्शवाना | अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह | तेरी आमद का फिर शोर होगा
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा | अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
माहे र-मज़ां की रंगीं फ़ज़ाओ ! | अब्रे रह़मत से मम्लू हवाओ
लो सलाम आख़िरी अब हमारा | अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं | नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा | अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
हाए अ़त्तारे बदकार काहिल | रह गया येह इबादत से ग़ाफ़िल
इस से ख़ुश हो के होना रवाना | अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

साले आयिन्दा शाहे ह़रम तुम
करना अ़त्तार पर येह करम तुम
तुम मदीने में र-मज़ां दिखाना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

ऐ मेरे भाइयो सब सुनो धर के कां
ऐ़शो इ़शरत की उड़ जाएंगी धज्जियां

ऐ मेरे भाइयो सब सुनो धर के कां ऐ़शो इ़शरत की उड़ जाएंगी धज्जियां
आख़िरत की करो जल्द तय्यारियां मौत आ कर रहेगी तुम्हें बे गुमां

मौत का देखो ए'लान करता हुवा सूए गोरे ग़रीबां[1] जनाज़ा चला
कहता है, जामे हस्ती[2] को जिस ने पिया वोह भी मेरी त़रह़ क़ब्र में जाएगा

तुम ऐ बूढ़ो सुनो ! नौ जवानो सुनो ऐ ज़ईफ़ो सुनो ! पहलवानो सुनो !
मौत को हर घड़ी सर पे जानो सुनो जल्द तौबा करो मेरी मानो सुनो !

जिस का सन्सार में हो गया है जनम रब की नाराज़ियों से बचे दम बदम
वरना पछताएगा क़ब्र में ला जरम होगा बरज़ख़ में रन्ज उस को दोज़ख़ में ग़म

फ़िल्म बीनी का तुम मशग़ला छोड़ दो सारे आलाते लह्वो लइ़ब तोड़ दो
भाइयो ! सब गुनाहों से मुंह मोड़ दो नाता[3] तुम नेकियों ही से बस जोड़ दो

एक दिन मौत आ कर रहेगी ज़रूर इस को तुम मुजरिमो ! कुछ समझना न दूर
बा'दे मुर्दन[4] न पाओगे कोई सुरूर ऐसे हो जाएगा ख़ाक सारा ग़ुरूर

---

1 : क़ब्रिस्तान 2 : ज़िन्दगी का जाम 3 : रिश्ता 4 : मौत

कब तलक तुम हुकूमत पे इतराओगे
कब तक आख़िर ग़रीबों को तड़पाओगे

ज़ालिमो ! बा'द मरने के पछताओगे
याद रख्खो ! जहन्नम में तुम जाओगे

क़ब्ज़ पैके अजल[1] रूह कर जाएगा
जिस्मे बे जां तड़प कर ठहर जाएगा

क़ब्र में तू अकेला उतर जाएगा
साथ तेरे न कोई बशर जाएगा

बादशाहों की बिखरी हुई हड्डियां
कह रही हैं न बनना कभी हुक्मरां

एहतिसाब[2] इस का गुज़रेगा तुम पर गिरां
हश्र में जब कि जाओगे मर कर मियां

मौत का जानवर को हो इदराक[3] गर
गोश्त अच्छा न खाने को पाए बशर

ग़ाफ़िल इन्सान से बढ़ गया जानवर
मौत से आ-गही[4] है मगर बे ख़बर

छोड़ो आदत गुनाहों की जाओ सुधर
वरना फंस जाओगे क़ब्र में सर बसर

गर अज़ाबों को देखोगे जाओगे डर
तुम बताओ कहां जाओगे भाग कर

जो दुकानें ख़ियानत से चमकाएंगे !
क्या उन्हें ज़र[5] के अम्बार काम आएंगे ?

क़ह्‌रे क़ह्‌हार से क्या बचा पाएंगे ?
जी नहीं, नारे दोज़ख़ में ले जाएंगे

माले दुन्या है दोनों[2] जहां में वबाल
आएगा क़ब्र में साथ हरगिज़ न माल

---

1 : मौत का फ़िरिश्ता 2 : हिसाब किताब 3 : समझ
4 : वाक़िफ़िय्यत 5 : सोना, दौलत

आप दौलत की कसरत का छोड़ें ख़याल
हश्र में ज़र्रे ज़र्रे का होगा सुवाल

सांप बिच्छू जो देखोगे चिल्लाओगे
ग़ाफ़िलो ! क़ब्र में जिस घड़ी जाओगे

बेहद अपने गुनाहों पे पछताओगे
सर पछाड़ोगे पर कुछ न कर पाओगे

पीप में लाश तेरी लिथड़ जाएगी
क़ब्र में शक्ल तेरी बिगड़ जाएगी

कीड़े पड़ जाएंगे ना'श सड़ जाएगी
बाल झड़ जाएंगे खाल उधड़ जाएगी

भूल मत येह हक़ीक़त कि है ख़ाक तू
मत गुनाहों पे हो भाई बेबाक तू

सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू
थाम ले दामने शाहे लौलाक तू

वोह तो बाज़ी ख़ुदा की क़सम ले गया
जो भी दुन्या से आक़ा का ग़म ले गया

ख़ुल्द की वोह सनद ला जरम[1] ले गया
साथ में मुस्त़फ़ा का करम ले गया

रब के महबूब का आ़शिक़े ज़ार है
जो मुसल्मान बन्दा निकोकार है

बाग़े फ़िरदौस का भी वोह हक़दार है
क़ब्र भी उस की जन्नत का गुलज़ार है

जो मुक़द्दर से है आ़शिक़े मुस्त़फ़ा
क़ल्ब में जिस के रासिख़ है ख़ौफ़े ख़ुदा

मरते ही बिल-यक़ीं सूए जन्नत गया
उस को नारे जहन्नम से क्या वासित़ा

1 : यक़ीनन

है अ़मल जिस का हर "म-दनी इन्आ़म[1]" पर
जो भी "नेकी की दा'वत" पे बांधे कमर
तू बड़ा बा मुक़द्दर ऐ अ़त्तार है
हर क़दम पर मुहम्मद मददगार है

"क़ाफ़िलों[2]" में मुयस्सर है जिस को सफ़र
उस पे चश्मे करम या शहे बह़्रो बर !
तू गुलामे शहन्शाहे अबरार है
اِنْ شَاءَ الله बेड़ा तेरा पार है

"क़ाफ़िले" को जो हर वक़्त तय्यार है
मरह़बा उस से अ़त्तार को प्यार है
उस के ह़क़ में दुआ़ करता अ़त्तार है
इस को जन्नत में साथ उस का दरकार है

---

1 : दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में अपनी इस्लाहे़ ह़ाल के लिये दीनी त़-लबा को (92) दीनी त़ालिबात को (82) इस्लामी भाइयों को (72) और इस्लामी बहनों को (63) खु़सूसी (गूंगे बहरे) इस्लामी भाइयों को (27) "म-दनी इन्आ़मात" सुवालात की सूरत में पेश किये जाते हैं और तरग़ीब दी जाती है कि "फ़िक्रे मदीना" (या'नी अपना मुह़ा-सबा करने) के ज़रीए़ रोज़ाना इन सुवालात का रिसाला पुर करें और हर म-दनी माह की (10 तारीख़) तक जम्अ़ करवा दें। 2 : हर इस्लामी भाई को हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की रग़्बत दिलाई जाती है और कई खु़श नसीब ऐसे भी होते हैं जो अपने घरबार के हु़क़ूक़ निभाते हुए दा'वते इस्लामी के लिये वक़्फ़ हो जाते और हर वक़्त म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते रहते हैं।

तीन रोज़ा इज्तिमाए़ पाक के मुलतान में

तीन रोज़ा इज्तिमाए़ पाक के मुलतान में
हर त़रफ़ से आ रहे हैं क़ाफ़िले मुलतान में

आज "सह़राए मदीना" में है क्या आई बहार
चार सू हैं रह़मतों के गुल खिले मुलतान में

बैनल अक़्वामी हमारा इज्तिमाए़ पाक है
हैं कई मुल्कों से आए क़ाफ़िले मुलतान में

इज्तिमाए़ पाक या रब ! इब्तिदा ता इन्तिहा
ख़ैर से हो ख़ैर से हो ख़ैर से मुलतान में

मैले मन्सूबे अ़दू के ख़ाक में मिल जाएं सब
दे तह़फ़्फ़ुज़ या खुदा अशरार[1] से मुलतान में

---

1 : शरीर की जम्अ़

या रसूलल्लाह के ना'रों की हर सू धूम है
चार सू रह़मत के बादल छा गए मुलतान में

दर–गहो दरबार हो या कूचा व बाज़ार हो
जिस त़रफ़ देखो इ़मामे हैं हरे मुलतान में

घर में चूहे भी तो घुसते हैं ठगों से होशियार !
अपनी चीज़ों की ह़िफ़ाज़त भी रहे मुलतान में

निखरा निखरा है समां हर सम्त है छाई बहार
यां ख़ज़ां का काम क्या कैसे रहे मुलतान में

औलिया का है मदीना रह़मतें हैं हर क़दम
कोई भी मह़रूम फिर क्यूंकर रहे मुलतान में

إِنْ شَاءَ الله मैं भी जाऊंगा मेरे अह़बाब भी
तुम नहीं चलते हो क्यूं भाई अरे मुलतान में

हर त़रफ़ कहते फिरो एक एक को दा'वत येह दो
इज्तिमाए़ पाक में आप आइये मुलतान में

निय्यतें कर लो, करेंगे इन्फ़िरादी कोशिशें

और मिलेंगे बढ़ के खुद हर एक से मुलतान में

सब करो निय्यत, करेंगे क़ाफ़िलों में हम सफ़र

अब बहुत सारे बनेंगे क़ाफ़िले मुलतान में

"मजलिसे शूरा" का जो भी है वफ़ादार ऐ ख़ुदा

अब्रे रह़मत उस पे बरसा ज़ोर से मुलतान में

या ख़ुदा वोह ह़ज करे मीठा मदीना देख ले

ग़ौर से हर इक बयां जो भी सुने मुलतान में

चोर डाकू आ गए आ कर हिदायत पा गए

बे नमाज़ आ कर नमाज़ी बन गए मुलतान में

सुन्नतों से सब के चेहरे जगमगाएंगे यहां

اِنْ شَآءَ اللّٰه मुस्त़फ़ा के फ़ैज़ से मुलतान में

सुन्नतों की तरबियत के ख़ूब म-दनी क़ाफ़िले
चार सू होंगे रवाना ख़ैर से मुलतान में

"म-दनी इन्आ़मात" की धूमें मचाते जाएंगे
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले मुलतान में

फ़ज़्ले रब से अहले ह़क़ का बा'दे ह़ज सब से बड़ा
इज्तिमाए़ पाक है येह ख़ैर से मुलतान में

बख़्श दे या रब ! सभी को और उन को बिल ख़ुसूस
आए हैं करने सफ़र जो दूर से मुलतान में

काश ! इ़श्के़ मुस्त़फ़ा में या ख़ुदा तड़पा करूं
आंख तेरे ख़ौफ़ से रोती रहे मुलतान में

रुक्ने आ़लम और बहाउद्दीन के सदके़ ख़ुदा
हो क़बूल उस की दुआ़ जो भी करे मुलतान में

إِنْ شَاءَ الله हर दुआ़ अ़त्तार अब मक़्बूल है
हैं ख़ुदा की रह़मतों के दर खुले मुलतान में

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में

(हैदरआबाद बाबुल इस्लाम (सिन्ध) में "दा'वते इस्लामी" के म-दनी मर्कज़ "फ़ैज़ाने मदीना" में होने वाले इफ़्तिताही इज्तिमाअ़ (शबे जुमुआ़ 7 जुमादल ऊला 1413 सि.हि.) के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर येह कलाम पेश किया गया)

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में
रह़मत की घटा छाई फ़ैज़ाने मदीना में

इस शह्र के आए हैं बाहर से भी आए हैं
सरकार के शैदाई फ़ैज़ाने मदीना में

दाढ़ी है इमामे हैं ज़ुल्फ़ों की बहारें हैं
शैत़ान को शर्म आई फ़ैज़ाने मदीना में

लम्ह़ाते मसर्रत हैं दीवाने बड़े ख़ुश हैं
क्यूं झूमे न हर भाई फ़ैज़ाने मदीना में

सुन्नत की बहारों का कुछ ऐसा समां छाया
फ़ेशन को ह़या आई फ़ैज़ाने मदीना में

उल्फ़त के उख़ुव्वत के क्या ख़ूब मनाज़िर हैं
गोया हैं सगे भाई फ़ैज़ाने मदीना में

वोह लोग ही आते हैं और फ़ैज़ उठाते हैं
तक़्दीर जिन्हें लाई फ़ैज़ाने मदीना में
अपने हों या बेगाने यूं मिलते हैं दीवाने
जैसे हो शनासाई फ़ैज़ाने मदीना में
दर्द अपने दिलों में जो इस्लाम का रखते हैं
है उन की पज़ीराई फ़ैज़ाने मदीना में
अल्लाह करम कर दे तू बख़्श दे उन सब को
मौजूद हैं जो भाई फ़ैज़ाने मदीना में
सुन्नत का लिये जज़्बा आए जो यहां उस की
है ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़ैज़ाने मदीना में
इब्लीसे लईं सुन ले अब ख़ैर नहीं तेरी
शामत तेरी है आई फ़ैज़ाने मदीना में
"फ़ैज़ाने मदीना" में "फ़ैज़ाने मदीना" है
फ़ैज़ान है आक़ाई फ़ैज़ाने मदीना में

फ़ैज़ाने मदीना ही है "दा'वते इस्लामी"
फ़ैज़ान है मौलाई, फ़ैज़ाने मदीना में

मक़्बूल जहां भर में हो "दा'वते इस्लामी"
हर लब पे दुआ़ आई फ़ैज़ाने मदीना में

आक़ा हो करम सब पर बुलवाओ मदीने में
आए हैं तमन्नाई फ़ैज़ाने मदीना में

सरकार अ़ता कर दो ग़म सब को मदीने का
जितने हैं यहां भाई फ़ैज़ाने मदीना में

क़िस्मत का सिकन्दर है ज़ोरों पे मुक़द्दर है
जिस ने भी जगह पाई फ़ैज़ाने मदीना में

आज आक़ा के दीवाने क्या मस्त हैं मस्ताने
अ़त्तार है ईद आई फ़ैज़ाने मदीना में

फ़ज्र में जगाने के लिये

(गली वग़ैरा के अन्दर आवाज़ें लगा कर या फ़ोन कर के नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना दा'वते इस्लामी के म–दनी माहोल में ''सदाए मदीना'' लगाना कहलाता है। गली में ''सदाए मदीना'' लगाने में मेगाफ़ोन इस्ति'माल न कीजिये, आवाज़ लगाने में येह भी एहतियात कीजिये कि छोटे बच्चों, मरीज़ों और जो इस्लामी बहनें नमाज़ पढ़ कर सोई हों या तिलावत वग़ैरा में मश्ग़ूल हों उन्हें परेशानी न हो। मरीज़ या बच्चे वग़ैरा की तक्लीफ़ के उ़ज़्र के सबब कोई शख़्स ''सदाए मदीना'' की आवाज़ धीमी रखने का कहे तो फ़ौरन उस की बात मान लीजिये)

गली में सदाए मदीना का त़रीक़ा

بِسمِ اللّٰہِ الرَّحمٰنِ الرَّحِیم पढ़ कर दुरूदो सलाम के ज़ैल में दिये हुए सीग़े पढ़ कर इस के बा'द वाला मज़मून दोहराते रहिये :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ علیکَ یارسولَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصحٰبِک یاحبیبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ علیکَ یانبیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصحٰبِک یانورَ اللّٰہ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! और **इस्लामी बहनो !** फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त हो गया है, सोने से नमाज़ बेहतर है, जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को बार बार ह़ज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए, (मौक़ए की मुना–सबत

से नीचे दी हुई नज़्म में से मुन्तख़ब अश्आ़र भी पढ़िये ।)

(**र-मज़ानुल मुबारक** में **स-ह़री** के लिये उठाएं तो तहज्जुद की भी तरग़ीब दिलाएं)

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो !

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो ! ऐ गुलामाने मुस्त़फ़ा उठ्ठो !

जागो जागो ऐ भाइयो, बहनो ! छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठ्ठो !

तुम को ह़ज की ख़ुदा सआ़दत दे जल्वा देखो मदीने का उठ्ठो !

उठ्ठो ज़िक्रे ख़ुदा करो उठ कर ! दिल से लो नामे मुस्त़फ़ा उठ्ठो !

फ़ज्र की हो चुकीं अज़ानें वक़्त हो गया है नमाज़ का उठ्ठो !

भाइयो ! उठ कर अब वुज़ू कर लो ! और चलो ख़ानए ख़ुदा उठ्ठो !

नींद से तो नमाज़ बेहतर है अब न मुत़्लक़ भी लैटना उठ्ठो !

उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ ! आंख शैत़ां न दे लगा उठ्ठो !

जागो जागो नमाज़ ग़फ़्लत से कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठ्ठो !

अब "जो सोए नमाज़ खोए" वक़्त सोने का अब नहीं रहा उठ्ठो !

याद रख्खो ! नमाज़ गर छोड़ी क़ब्र में पाओगे सज़ा उठ्ठो !

बे नमाज़ी फंसेगा मह़शर में होगा नाराज़ किब्रिया उठ्ठो !

मैं "सदाए मदीना" देता हूं तुम को त़यबा का वासित़ा उठ्ठो !

मैं भिकारी नहीं हूं दर दर का मैं हूं सरकार का गदा उठ्ठो !

मुझ को देना न पाई पैसा तुम ! मैं हूं त़ालिब सवाब का उठ्ठो !

तुम को देता है येह दुआ अ़त़्त़ार

फ़ज़्ल तुम पर करे खुदा उठ्ठो !

इख़्लास की 2 ता'रीफ़ात

﴾1﴿ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करना और मख़्लूक़ की खुशनूदी या अपनी किसी नफ़्सानी ख़्वाहिश को उस में शामिल न होने देना ﴾2﴿ हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : इख़्लास इस चीज़ का नाम है कि बन्दा अ़मल से सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करने का इरादा करे, किसी क़िस्म का दुन्यावी नफ़्अ़ मक़्सूद न हो।

(اَلْحَدِیْقَۃُ النَّدِیَّۃ ج ۲ ص ۶۴۲)

वक़्त स-ह़री का हो गया जागो

वक़्त स-ह़री का हो गया जागो नूर हर सम्त छा गया जागो
उठ्ठो स-ह़री की कर लो तय्यारी रोज़ा रखना है आज का जागो
माहे रमज़ां के फ़र्ज़ हैं रोज़े एक भी तुम न छोड़ना जागो
उठ्ठो उठ्ठो वुज़ू भी कर लो और तुम तहज्जुद करो अदा जागो
चुस्कियां गर्म चाय की भर लो खा लो हलकी सी कुछ गिज़ा जागो
होगी मक़्बूल फ़ज़्ले मौला से खा के स-ह़री करो दुआ़ जागो
माहे रमज़ां की बरकतें लूटो लूट लो रह़मते ख़ुदा जागो
खा के स-ह़री उठो अदा कर लो सुन्नते शाहे अम्बिया जागो
तुम को मौला मदीना दिखलाए और ह़ज भी करो अदा जागो
तुम को र-मज़ां के सदक़े मौला दे उल्फ़तो इश्क़े मुस्त़फ़ा जागो
तुम को र-मज़ान का मदीने में दे शरफ़ रब्बे मुस्त़फ़ा जागो
कैसी प्यारी फ़ज़ा है र-मज़ां की देख लो कर के आंख वा जागो
रह़मतों की झड़ी बरसती है जल्द उठ कर के लो नहा जागो

तुम को दीदारे मुस्त़फ़ा हो जाए
है येह अ़त्त़ार की दुआ़ जागो

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो[1]

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
चाहो गर ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो पाओगे अ़-ज़-मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो
तौबा की जुस्त-जू ह़ज की गर आरज़ू है बता दूं तुम्हें क़ाफ़िले में चलो
उल्फ़ते मुस्त़फ़ा और ख़ौफ़े ख़ुदा चाहिये गर तुम्हें क़ाफ़िले में चलो
गर मदीने का ग़म चाहिये चश्मे नम लेने येह ने'मतें क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ होगा अदा आ के मांगो दुआ पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो
दुख का दरमां मिले आएंगे दिन भले ख़त्म हों गर्दिशें क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें ख़ूब ख़ुशियां मिलें दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो
हो क़वी ह़ाफ़िज़ा ठीक हो हाज़िमा काम सारे बनें क़ाफ़िले में चलो
इ़ल्म ह़ासिल करो जह्ल ज़ाइल करो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ का बार हो, बे कसी यार हो चाहो गर राह़तें क़ाफ़िले में चलो
गर्चे हों गर्मियां या कि हों सर्दियां चाहें हों बारिशें क़ाफ़िले में चलो
कूंदें गर बिजलियां या चलें आंधियां चाहे ओले पड़ें क़ाफ़िले में चलो
बारह[12] मह के लिये तीस[30] दिन के लिये बारह[12] दिन दे ही दें क़ाफ़िले में चलो

---

1 : एक इस्लामी भाई ने इस त़रह़ के कुछ अश्आ़र लिखे थे, उन में से बा'ज़ शामिल कर के اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं ने उसी बह़्र पर काफ़ी अश्आ़र मौज़ूं किये। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

सुन्नतें सीखने तीन[3] दिन के लिये हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो
ऐ मेरे भाइयो ! रट लगाते रहो क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो
फ़ोन पर बात हो या मुलाक़ात हो सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो
आप बाज़ार में हों या दफ़्तर में हों सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो
दर्स दें या सुनें या बयां जो करें उस में येह भी कहें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल[1] उन से हम म-दनी फूल आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल आए लेने दुआ आओ मिल कर चलें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल आए हैं मरहबा ख़ैर ख़्वाही[2] करें क़ाफ़िले में चलो
आप जब भी सुनें क़ाफ़िला आ गया ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
खाना ले के चलें ठन्डा शरबत भी लें ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
उन पे हों रह़मतें क़ाफ़िले का सुनें ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
बख़्श दे मेरे मौला तू उन को कि जो ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो

या ख़ुदा हर घड़ी रट हो अ़त्तार की
क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो

---

1 : **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में इस्लामी भाइयों को बिल ख़ुसूस म-दनी क़ाफ़िले वालों को "**आ़शिक़ाने रसूल**" कहते हैं। 2 : म-दनी मर्कज़ की हिदायत है कि जब आप के अ़लाक़े में आ़शिक़ाने रसूल का म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाए तो उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर दुआ के त़ालिब हों। अगर हैसिय्यत हो तो खाना, चाय वग़ैरा वरना सादा पानी ही पेश करें। इस त़रह ख़ात़िर मदारत करने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में "**ख़ैर ख़्वाही**" कहते हैं।

ग़म के बादल छटें क़ाफ़िले में चलो

ग़म के बादल छटें क़ाफ़िले में चलो ख़ूब ख़ुशियां मिलें क़ाफ़िले में चलो

माल चोरी हुवा, या कहीं गुम गया ख़ैर होगी सुनें, क़ाफ़िले में चलो

मांगो आ कर दुआ़, पाओगे मुद्दआ़ दर करम के खुलें, क़ाफ़िले में चलो

अच्छी सोह़बत मिले, ख़ूब ब-र-कत मिले चल पड़ो चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

लूट लें रह़मतें, ख़ूब लें ब-र-कतें ख़्वाब अच्छे दिखें, क़ाफ़िले में चलो

कुफ़्र की का-लकें, दूर हों ज़ुल्मतें आओ कोशिश करें, क़ाफ़िले में चलो

रब के दर पर झुकें, इल्तिजाएं करें बाबे रह़मत खुलें, क़ाफ़िले में चलो

है नबी की नज़र, क़ाफ़िले वालों पर पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

सादगी चाहिये, आ़जिज़ी चाहिये लेने येह ने'मतें, क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल, आए सुन्नत के फूल देने लेने चलें, क़ाफ़िले में चलो

देते हैं फ़ैज़ आ़म, औलियाए किराम लूटने सब चलें, क़ाफ़िले में चलो

औलिया का करम, तुम पे हो ला जरम खूब जल्वे मिलें, क़ाफ़िले में चलो

ख़्वाब में डर लगे, बोझ दिल पर लगे आइये चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

ग़ैबी इमदाद हो, घर भी आबाद हो लुत्फ़े हक़ देख लें, क़ाफ़िले में चलो

तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे लेने को ब-र-कतें, क़ाफ़िले में चलो

बे अ़मल बा अ़मल बन गए ख़ास कर आप भी देख लें क़ाफ़िले में चलो

ख़ूब होगा सवाब और टलेगा अ़ज़ाब पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो

बेशक आ'माले बद और अफ़्आ़ले बद की छुटें आ़दतें, क़ाफ़िले में चलो

कर सफ़र आएंगे, तो सुधर जाएंगे अब न सुस्ती करें, क़ाफ़िले में चलो

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो

ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो ख़ूब ख़ुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़े क़ाफ़िला बन के घर लो बना

क़ल्बे अ़त्तार में क़ाफ़िले में चलो

पाओगे बख़्शिशें क़ाफ़िले में चलो

पाओगे बख़्शिशें क़ाफ़िले में चलो
जन्नतें भी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

रिज़्क़ के दर खुलें, क़ाफ़िले में चलो
ब-र-कतें भी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

ज़ख़्म बिगड़े भरें, फोड़े फुन्सी मिटें
गर हों मस्से झड़ें, क़ाफ़िले में चलो

काले यरक़ान में, क्यूं परेशान हैं
पाएंगे सिह्हतें, क़ाफ़िले में चलो

टेढ़ी हों हड्डियां, होंगी सीधी मियां
दर्द सारे मिटें, क़ाफ़िले में चलो

दर्द गम्भीर हो, कोई दिलगीर हो
होंगी हल मुश्किलें, क़ाफ़िले में चलो

गर्चे बीमारियां, हों कहीं पथरियां
पाओगे सिह्हतें, क़ाफ़िले में चलो

तंगदस्ती हो घर में या ना चाक़ियां
आएंगी ब-र-कतें, क़ाफ़िले में चलो

जो कि मफ़्क़ूद[1] हो वोह भी मौजूद हो
إِنْ شَاءَ الله चलें, क़ाफ़िले में चलो

दूर होंगे अलम होगा रब का करम
ग़म के मारे सुनें क़ाफ़िले में चलो

दर्दे सर हो अगर दुख रही हो कमर
दर्द दोनों[2] मिटें, क़ाफ़िले में चलो

बाप बीमार हो, सख़्त बेज़ार हो
पाएगा सिह्हतें, क़ाफ़िले में चलो

मां जो बीमार हो, या वोह नाचार हो
रन्जो ग़म मत करें, क़ाफ़िले में चलो

वा[2] हो बाबे करम, दूर हों रन्जो ग़म
फिर से खुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो

---

1 : ग़ाइब, गुमशुदा 2 : वा होना या'नी खुलना

ज़ल्ज़ला आए गर, आ के छा जाए गर सिर्फ़ हक़ से डरें क़ाफ़िले में चलो
ज़ल्ज़ला आम था हर सू कोहराम था इस से लो इब्रतें क़ाफ़िले में चलो[1]
ज़ल्ज़ले से अमां, देगा रब्बे जहां सब दुआएं करें, क़ाफ़िले में चलो
हों बपा ज़ल्ज़ले, गर्चे आंधी चले सब्र करते रहें, क़ाफ़िले में चलो
है शिफ़ा ही शिफ़ा, मरहबा ! मरहबा ! आ के खुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो
पेट में दर्द हो रंग भी ज़र्द हो आ के लो सिह्हतें क़ाफ़िले में चलो
है त़लब दीद की, दीद की ईद की क्या अजब वोह दिखें क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो पाओगे फ़रहतें क़ाफ़िले में चलो
आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र लेने आसाइशें, क़ाफ़िले में चलो
आप को चारागर[2], ने गो मायूस कर भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो
घर में अनबन न हो कोई उलझन न हो ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं खुशी ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

---

1 : 3 र-मज़ानुल मुबारक 1426 हि. (8-10-05) बरोज़ हफ़्ता मशरिक़ी पाकिस्तान (कश्मीर, ख़ैबर पख़्तून ख़्वाह) वग़ैरा में आने वाले ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ले की त़रफ़ इस शे'र में इशारा है। इस ज़ल्ज़ले में लाखों अफ़राद फ़ौत हुए थे। ज़ख़्मियों, बिछड़ने वालों और माली नुक़्सानों का तो कोई शुमार ही नहीं। 2 : या'नी त़बीब, डॉक्टर

ज़ौजा बीमार है, बेटा "बेकार" है	ग़म तुम्हारे मिटें, क़ाफ़िले में चलो
नोकरी चाहिये, आइये आइये	क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
ग़म से रोते हुए, जान खोते हुए	मरह़बा ! हंस पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो	शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ उतर जाएगा, ख़ूब रिज़्क़ आएगा	सब बलाएं टलें, क़ाफ़िले में चलो
गर हो इर्क़ुन्निसा[1], आ़रिज़ा[2] कोई सा	दे ख़ुदा सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो
घर में "उम्मीद[3]" हो, इस की तम्हीद[4] हो	जल्द ही चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
ज़च्चा[5] की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो	उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां	होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब	म-दनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी	मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

सुन लें अ़त्तार की, अपने ग़म ख़्वार की

येह निदा "सब चलें", ! क़ाफ़िले में चलो

---

1 : चड्ढे या'नी रान के ऊपर के जोड़ से ले कर टख़ने तक पहुंचने वाला दर्द। 2 : बीमारी 3 : ह़म्ल 4 : किसी बात का आग़ाज़ 5 : वोह औ़रत जिस ने बच्चा जना हो 40 दिन तक "ज़च्चा" कहलाती है।

दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो

दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो रन्जो ग़म भी मिटें, क़ाफ़िले में चलो

फ़ज़्ल की बारिशें, रहमतें ने'मतें गर तुम्हें चाहिएं, क़ाफ़िले में चलो

काफ़िरों को चलें, मुश्रिकों को चलें दा'वते दीन दें, क़ाफ़िले में चलो

आइये आ़लिमो ! दीं की तब्लीग़ को मिल के सारे चलें, क़ाफ़िले में चलो

आओ ऐ आ़शिक़ों, मिल के तब्लीग़े दीं काफ़िरों को करें, क़ाफ़िले में चलो

काफ़िर आ जाएंगे, राहे ह़क़ पाएंगे اِنْ شَاءَ الله चलें, क़ाफ़िले में चलो

कुफ़्र का सर झुके, दीं का डंका बजे اِنْ شَاءَ الله चलें, क़ाफ़िले में चलो

चश्मे बीना मिले सुख से जीना मिले आओ सारे चलें, क़ाफ़िले में चलो

दिल की कालक धुले, दर्दे इस्यां टले आओ सब चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

ख़ूब ख़ुद-दारियां, और ख़ुश अख़्लाक़ियां आइये सीख लें, क़ाफ़िले में चलो

आ़शिक़ाने रसूल उन से ले लो जो फूल तुम को सुन्नत के दें, क़ाफ़िले में चलो

क़हूत साली टले, फ़स्ल फूले फले   ख़ूब हों बारिशें, क़ाफ़िले में चलो

क़ाफ़िले में ज़रा, मांगो आ कर दुआ   पाओगे ने'मतें, क़ाफ़िले में चलो

छोड़ें मै नोशियां, मत बकें गालियां   आएं तौबा करें, क़ाफ़िले में चलो

ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ   छूटें बद आ़दतें, क़ाफ़िले में चलो

होगा लुत्फ़े ख़ुदा, आओ भाई दुआ   मिल के सारे करें, क़ाफ़िले में चलो

दूर बीमारियां, और परेशानियां   होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

अल्सर और केन्सर अब या हो दर्दे कमर   चलिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

दर्द गर्चे तुम्हारे मसाने में है   दर्स फ़ारूक़[1] दें क़ाफ़िले में चलो

फ़ाएदा आख़िरत के बनाने में है   सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो

कहते अ़त्तार हैं, जो मेरे यार हैं
वोह हर इक से कहें, क़ाफ़िले में चलो

---

1 : या'नी मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی । इस शे'र में एक "म-दनी बहार" की त़रफ़ इशारा है, मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : "फ़ैज़ाने सुन्नत" जि. अव्वल, स. 1200

हुवा जाता है रुख़्सत माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

हुवा जाता है रुख़्सत माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह
रहा अब चन्द घड़ियों का येह मेहमां या रसूलल्लाह

खुशी की लहर दौड़ी हर त़रफ़ र-मज़ान जब आया
है अब रन्जीदा रन्जीदा मुसल्मां या रसूलल्लाह

मसर्रत ही मसर्रत और खुशी ही थी खुशी जिस दम
नज़र आया हिलाले माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

शहा ! अब ग़म के मारे ख़ून के आंसू बहाते हैं
चला तड़पा के हाए माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

चला अब जल्द येह र-मज़ां सताईस[27] आ गई तारीख़
फ़क़त़ दो[2] दिन का अब र-मज़ां है मेहमां या रसूलल्लाह

फ़ज़ाएं नूर बरसातीं हवाएं मुस्कुराती थीं
समां अब हो गया हर सम्त वीरां या रसूलल्लाह

रियाज़त कुछ न की हम ने इबादत कुछ न की हम ने
रहे बस हर घड़ी मश्ग़ूले इस्यां या रसूलल्लाह

मैं हाए जी चुराता ही रहा रब की इबादत से
गुज़ारा ग़फ़्लतों में सारा र-मज़ां या रसूलल्लाह

मैं सोता रह गया ग़फ़्लत की चादर तान कर अफ़्सोस
खुदारा मेरी बख़्शिश का हो सामां या रसूलल्लाह

जुदाई की घड़ी जां-सोज़ है उ़श्शाक़े र-मज़ां पर
चला इन को रुला कर माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

तड़पते हैं बिलक्ते हैं क़रार आता नहीं इन को
बहुत बेचैन हैं उ़श्शाक़े र-मज़ां या रसूलल्लाह

गुनाहों की सियाही छा रही है रुख़ पे महशर में
मेरा चेहरा पए र-मज़ां हो ताबां या रसूलल्लाह

महे र-मज़ां की रुख़्सत जाने आ़शिक़ पर क़ियामत है
गदा तेरे हैं हैरानो परेशां या रसूलल्लाह

खुदा के नेक बन्दे नेकियों में लग गए लेकिन
गुनह करता रहा अ़त्तारे नादां या रसूलल्लाह

रुख़्सती नामा

दुआओं और नसीहतों भरा रुख़्सती नामा अपनी म-दनी बेटी बिन्ते..... के नाम

फ़ज़्ले रब से बिन्ते........... दुल्हन बनी
फूल ख़ुशियों के खिले चादर हया की है तनी

तुझ को हो शादी मुबारक हो रही है रुख़्सती
रुख़्सती में तेरी पिन्हां[1] क़ब्र की है रुख़्सती

घर तेरा हो मुश्कबार और ज़िन्दगी भी पुर बहार
रब हो राज़ी ख़ुश हों तुझ से दो[2] जहां के ताजदार

म-दनी बेटी का ख़ुदाया घर सदा आबाद रख
फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा दो[2] जहां में शाद[2] रख

येह मियां बीवी इलाही मक्रे शैतां से बचें
येह नमाज़ें भी पढ़ें और सुन्नतों पर भी चलें

येह मियां बीवी चलें हज को इलाही ! बार बार
बार बार इन को मदीना भी दिखा परवर दगार

---

1 : पोशीदा 2 : ख़ुश

तेरा सुसराल अपने रब के फ़ज़्ल से ख़ुशहाल हो
तेरा मयका भी करम से रब के मालामाल हो

तू न ग़फ़्लत करना शोहर की इताअ़त से कभी
वरना तू ऐ प्यारी बेटी ह़श्र में पछताएगी

म-दनी बेटी या ख़ुदा ग़ुस्से की हो हरगिज़ न तेज़
येह करे सुसराल में हर दम लड़ाई से गुरेज़

याद रख ! तू आज से बस तेरा घर सुसराल है
सास नन्दों पर बिगड़ना आफ़तों का जाल है

मां समझ कर जो बहू करती है ख़िदमत सास की
राज करती है सदा सारे घराने पर वोही

सास नन्दों की तू ख़िदमत कर के हो जा काम्याब
इन की ग़ीबत कर के मत कर बैठना ख़ाना ख़राब

सास और नन्दें अगर सख़्ती करें तो सब्र कर
सब्र कर बस सब्र कर चलता रहेगा तेरा घर

सास और नन्दों का शिक्वा अपने मयके में न कर
इस त़रह़ बरबाद हो सकता है बेटी तेरा घर

मयके के मत कर फ़ज़ाइल तू बयां सुसराल में
अब समझ सुसराल ही को अपना घर हर ह़ाल में

याद रख तूने ज़बां खोली अगर सुसराल में
फंस के तू झगड़ों के सुन रह जाएगी जन्जाल में

सास चीख़ी तू भी बिफरी और लड़ाई ठन गई
है कहां भूल एक की दो[2] हाथ से ताली बजी

दर्स दे "फ़ैज़ाने सुन्नत" से सदा सुसराल में
म-दनी माह़ोल इस त़रह़ बन जाएगा सुसराल में

गर नसीह़त पर अ़मल अ़त्त़ार की होगा तेरा
اِنْ شَآءَ اللّٰه अपने घर में तू सुखी होगी सदा

आह ! र-मज़ान अब जा रहा है
हाए तड़पा के र-मज़ां चला है

आह ! र-मज़ान अब जा रहा है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
टुकड़े टुकड़े मेरा दिल हुवा है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
देख कर चांद मैं रो पड़ा था सामने हिज्र का ग़म खड़ा था
जल्द रुख़्सत का वक़्त आ गया है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
अश्क आंखों से अब बह रहे हैं हिज्र का ग़म जो हम सह रहे हैं
वोह दिले ग़मज़दा जानता है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
ग़म जुदाई का कैसे सहूंगा किस से ग़म का फ़साना कहूंगा
आंख पुरनम है दिल रो रहा है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
जां फ़िदा तुझ पे नानाए ह-सनैन क़ल्ब है ग़मज़दा और बेचैन
दिल पे सदमा बढ़ा जा रहा है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
कर के तक़्सीम बख़्शिश की अस्नाद आह ! रन्जीदा दिल कर के तू शाद
सब को रोता हुवा छोड़ता है हाए तड़पा के र-मज़ां चला है
तू येह करना खुदा से सिफ़ारिश, इस गुनहगार की कर दे बख़्शिश

तुझ से अ़त्तार की इल्तिजा है
हाए तड़पा के र-मज़ां चला है

मुझ को अल्लाह से महब्बत है

(22 रबीउल आख़िर 1435 हि.)

मुझ को अल्लाह से महब्बत है येह उसी की अता व रहमत है

जिस को सरकार से महब्बत है उस की बख़्शिश की येह ज़मानत है

दिल में कुरआं की मेरे अ-ज़मत है और प्यारी हर एक सुन्नत है

सब से अच्छी नबी की सीरत है चांद से भी हसीन सूरत है

मिल गई मुझ को तेरी निस्बत है येह शरफ़ है बड़ी सआदत है

आलो अस्हाब से महब्बत है और सब औलिया से उल्फ़त है

येह सब अल्लाह की इनायत है मिल गई मुस्तफ़ा की उम्मत है

ग़ौसो ख़्वाजा की दिल में उल्फ़त है क़ल्ब में इश्क़े आ'ला हज़रत है

मरहबा ! अपनी ख़ूब क़िस्मत है पीरो मुर्शिद की दिल में चाहत है

आशिक़ाने नबी से उल्फ़त है दुश्मनाने नबी से नफ़रत है

हाए दुन्या की दिल में चाहत है नफ़्स की येह खुली शरारत है

न तलब गारे मालो दौलत है — इस गदा को करम की हाजत है

दो जहां में वोही सलामत है — जिस मुसल्मां पे रब की रहमत है

या नबी ! फंस गया हलाकत है — येह गदा साइले शफ़ाअत है

हक़ से उम्मीदे अफ़्वो रहमत है — तेरे सदक़े में मिलनी जन्नत है

एक अर्से से दिल में रग़बत है — सूए तयबा चलूं येह हसरत है

एक मुद्दत से हिज्रो फ़ुरक़त है — क्या मदीने की अब इजाज़त है ?

आह ! पल्ले न कुछ तिलावत है — न दुरूदों की कोई कसरत है

आह ! इस्यां की ख़ूब कसरत है — या नबी ! इल्तिजाए रहमत है

ऐसी इस्यां की पड़ गई लत है — फिर वोही बा'दे तौबा हालत है

नेक बन्दों पे रब की रहमत है — हर गुनह बाइसे हलाकत है

आ गया आह ! वक़्ते रिहलत है — येह गदा तालिबे ज़ियारत है

आंख नम है न कुछ नदामत है — आह ! आ'माल की येह शामत है

मौत सर पर है तुझ पे हैरत है — जाग क्यूं महवे ख़्वाबे गफ़्लत है

तेरी अत्तार क्या हक़ीक़त है — जो है सरकार की बदौलत है

मो 'तमिर के लिये दुआ़ओं और नसीह़तों का गुलदस्ता

(मुसाफ़िरे मदीनए मुनव्वरह, आ़ज़िमे मक्कए मुकर्रमा मुह़म्मद यूनुस रज़ा नूरी की ख़िदमत में दुआ़ओं और पन्दो नसाइह़ की ख़ुश्बूओं से महक्ता म–दनी गुलदस्ता)

पाएगा यूनुस रज़ा उ़म्रे की ख़ैर उम्मीद है
गुम्बदे ख़ज़रा की दीद इस की बिला शक ई़द है

मरह़बा ! तुम को मुबारक हो मदीने का सफ़र
फ़ज़्ले रब से तुम पे नाज़िल रह़मतें हों हर डगर[1]

या ख़ुदा ! आसान हो इस के लिये प्यारा सफ़र
ज़ौक़ बढ़ता ही रहे इस का ख़ुदाए बह़रो बर

रोने वाली आंख दे और चाक सीना कर अ़ता
या रब ! इस को उल्फ़ते शाहे मदीना कर अ़ता

1 : रास्ता

ज़र्रे ज़र्रे का अदब अल्लाह इस को हो नसीब
सय्यिदी अह़मद रज़ा का वासित़ा रब्बे मुजीब !

इम्तिह़ां दरपेश हो राहे मदीना में अगर
सब्र कर तू सब्र कर हां सब्र कर बस सब्र कर

कोई धुत्कारे या झाड़े बल्कि मारे सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से सब्र कर

राहे जानां का हर इक कांटा भी गोया फूल है
जो कोई शिक्वा करे उस की यक़ीनन भूल है

तुम ज़बां का आंख का "कुफ़्ले मदीना" लो लगा
वरना बढ़ सकता है इस्यां का वहां भी सिल्सिला

गुफ़्त-गू सादिर न कुछ बेकार हो एह़राम में
लब पे बस लब्बैक की तकरार हो एह़राम में

जब करे तू ख़ानए का'बा का रो रो कर त़वाफ़
येह दुआ़ करना ख़ुदा मेरे गुनह कर दे मुआ़फ़

ह़ाज़िरी हो जब मदीने में तुम्हारी ज़ाइरो !
इ़श्क़े शह में ख़ूब करना आहो ज़ारी ज़ाइरो !

ऐ मदीने के मुसाफ़िर दर पे ले के मेरा नाम
दस्त बस्ता अ़र्ज़ करना उन से रो रो कर सलाम

रो के करना मेरे ईमां की ह़िफ़ाज़त की दुआ़
दे शहादत का शरफ़ मुझ को मदीने में ख़ुदा

हो मदीने का सफ़र तुम को मुयस्सर बार बार
और बक़ीए़ पाक में मदफ़न बने अन्जामे कार

करना तुम अ़त्त़ार के ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत
इस जहां में आ़फ़ियत हो उस जहां में आ़फ़ियत

ह़ाजी के लिये दुआ़ओं और नसीह़तों का गुलदस्ता[1]

(गुलाम ज़ादा ह़ाजी बिलाल रज़ा इब्ने अ़त्तार سَلَّمَهُ الغَفَّار के सफ़रे ह़ज मुबारक के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर पन्दो नसाइह़ पर मब्नी गुलदस्ता)

ह़ज का पाएगा शरफ़ मेरा बिलाल उम्मीद है
गुम्बदे ख़ज़रा की दीद इस की बिला शक ईद है

मरह़बा तुम को मुबारक हो मदीने का सफ़र
फ़ज़्ले रब से तुम पे नाज़िल रह़मतें हों हर डगर[2]

या ख़ुदा ! आसान हो इस के लिये ह़ज का सफ़र
ज़ौक़ बढ़ता ही रहे इस का ख़ुदाए बह़रो बर

रोने वाली आंख दे और चाक सीना कर अ़त़ा
या रब ! इस को उल्फ़ते शाहे मदीना कर अ़त़ा

ज़र्रे ज़र्रे का अदब अल्लाह इस को हो नसीब
सय्यिदी अह़मद रज़ा का वासित़ा रब्बे मुजीब !

---

1 : वाज़ेह़ रहे कि साबिक़ा सफ़ह़ात में येह कलाम कुछ तग़य्युर के साथ मो'तमिर के लिये कहा गया है उम्मीद है कि ज़रूरी तफ़रीक़ के साथ दोनों कलाम अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा होने में क़ारिईन को सहूलत रहेगी।

2 : रास्ता

इम्तिहां दरपेश हो राहे मदीना में अगर
सब्र कर तू सब्र कर हां सब्र कर बस सब्र कर

कोई धुत्कारे या झाड़े बल्कि मारे सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से सब्र कर

राहे जानां का हर इक कांटा भी गोया फूल है
जो कोई शिक्वा करे उस की यक़ीनन भूल है

तुम ज़बां का आंख का "कुफ़्ले मदीना" लो लगा
वरना बढ़ सकता है इस्यां का वहां भी सिल्सिला

गुफ़्त–गू सादिर न कुछ बेकार हो एहराम में
लब पे बस लब्बैक की तक्रार हो एहराम में

जब करे तू ख़ानए का'बा का रो रो कर त़वाफ़
येह दुआ करना ख़ुदा मेरे गुनह कर दे मुआफ़

प्यारे ह़ाजी ! जब हो तेरा दाख़िला अ़-रफ़ात में
करना नादिम हो के तू आहो बुका[1] अ़-रफ़ात में

ह़ालते एह़राम में यादे कफ़न हो क़ब्र हो
याद कर अ़-रफ़ात में तू ह़श्र के मैदान को

नव[9] को जब अ़-रफ़ात में ह़ाजी इकठ्ठे हों सभी
भूल मत जाना दुआ़ओं में मुझे तू उस घड़ी

जिस घड़ी करने लगे कुरबां मिना में जानवर
तू तसव्वुर ही में अपने नफ़्स को भी ज़ब्ह़ कर

ह़ाज़िरी हो जब मदीने में तुम्हारी ह़ाजियो !
इश्क़े शह में ख़ूब करना आहो ज़ारी ह़ाजियो !

ऐ मदीने के मुसाफ़िर दर पे ले के मेरा नाम
दस्त बस्ता अ़र्ज़ करना उन से रो रो कर सलाम

مدینہ

1 : रोना

रो के करना मेरे ईमां की हि़फ़ाज़त की दुआ़
दे शहादत का शरफ़ मुझ को मदीने में ख़ुदा

इस का ह़ज या रब ! नबी का वासित़ा कर ले क़बूल
दो[2] जहां में इस पे बरसा या ख़ुदा रह़मत के फूल

अपने मुंह से ख़ुद को "ह़ाजी" भाई तुम कहना नहीं
बे ज़रूरत अपनी नेकी का बयां अच्छा नहीं

हर बरस ह़ज का शरफ़ पाओ मदीने जाओ तुम
और बक़ीए़ पाक में आख़िर में मदफ़न पाओ तुम

करना तुम अ़त्तार के ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत
इस जहां में आ़फ़ियत हो उस जहां में आ़फ़ियत

झूट की ता'रीफ़

ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ बात करना ख़्वाह जान बूझ कर हो या ग़-लत़ी से । (فتح الباری ج۱ ص۱۸۲ تحت الحدیث۱۰۷)

हुज्जन के लिये दुआओं और नसीहतों का गुलदस्ता[1]

आमिना अत्तारिया हज को चले उम्मीद है
गुम्बदे ख़ज़रा की दीद इस की बिला शक ईद है

मरहबा तुम को मुबारक हो मदीने का सफ़र
फ़ज़्ले रब से तुम पे नाज़िल रहमतें हों हर डगर[2]

या ख़ुदा ! आसान हो इस के लिये हज का सफ़र
ज़ौक़ बढ़ता ही रहे इस का ख़ुदाए बहरो बर

रोने वाली आंख दे और चाक सीना कर अ़ता
या रब ! इस को उल्फ़ते शाहे मदीना कर अ़ता

ज़र्रे ज़र्रे का अदब अल्लाह इस को हो नसीब
अज़ तुफ़ैले सय्यिदी अहमद रज़ा रब्बे मुजीब !

इम्तिहां दरपेश हो राहे मदीना में अगर
सब्र कर तू सब्र कर हां सब्र कर बस सब्र कर

---

1 : वाज़ेह रहे कि साबिक़ा सफ़्हात में येह कलाम कुछ तग़य्युर के साथ मुज़क्कर के लिये कहा गया है उम्मीद है कि ज़रूरी तफ़्रीक़ के साथ दोनों कलाम अ़ला-हदा अ़ला-हदा होने में क़ारिईन को सहूलत रहेगी।

2 : रास्ता

कोई धुत्कारे या झाड़े बल्कि मारे सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से सब्र कर

राहे जानां का हर इक कांटा भी गोया फूल है
जो कोई शिक्वा करे उस की यक़ीनन भूल है

तुम ज़बां का आंख का "क़ुफ़्ले मदीना" लो लगा
वरना बढ़ सकता है इस्यां का वहां भी सिल्सिला

गुफ़्त-गू सादिर न कुछ बेकार हो एह़राम में
लब पे बस लब्बैक की तक्रार हो एह़राम में

जब करे तू ख़ानए का'बा का रो रो कर त़वाफ़
येह दुआ़ करना ख़ुदा मेरे गुनह कर दे मुआ़फ़

तेरा ह़ज्जन ! जिस घड़ी हो दाख़िला अ़-रफ़ात में
करना नादिम हो के तू आहो बुका[1] अ़-रफ़ात में

ह़ालते एह़राम में यादे कफ़न हो क़ब्र हो
याद कर अ़-रफ़ात में तू ह़श्र के मैदान को

नव[9] को जब अ़-रफ़ात में ह़ाजी इकट्ठे हों सभी
भूल मत जाना दुआ़ओं में मुझे तू उस घड़ी

1 : रोना

जिस घड़ी करने लगे क़ुरबां मिना में जानवर
तू तसव्वुर ही में अपने नफ़्स को भी ज़ब्ह़ कर
ह़ाज़िरी हो जब मदीने में तुम्हारी ह़ज्जनो !
इश्क़े शह में ख़ूब करना आहो ज़ारी ह़ज्जनो !
ले के ह़ज्जन ! बारगाहे मुस्त़फ़ा में मेरा नाम
दस्त बस्ता अ़र्ज़ करना उन से रो रो कर सलाम
रो के करना मेरे ईमां की ह़िफ़ाज़त की दुआ़
दे शहादत का शरफ़ मुझ को मदीने में ख़ुदा
इस का ह़ज या रब ! नबी का वासित़ा कर ले क़बूल
दो[2] जहां में इस पे बरसा या ख़ुदा रह़मत के फूल
अपने मुंह से ख़ुद को "ह़ज्जन" तू कभी कहना नहीं
बे ज़रूरत अपनी नेकी का बयां अच्छा नहीं
हर बरस ह़ज का शरफ़ पाओ मदीने जाओ तुम
और बक़ीए़ पाक में आख़िर में मदफ़न पाओ तुम
करना तुम अ़त्त़ार के ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत
इस जहां में आ़फ़ियत हो उस जहां में आ़फ़ियत

"दर्से निज़ामी" से फ़ारिग़ होने वालों के लिये 25 अश्आ़र

मरह़बा **साक़िब** के सर पर क्या सजी दस्तार है
है करम अल्लाह का और रह़मते सरकार है

तहनियत दस्तार बन्दी की करो भाई क़बूल
पेश करता हूं तुम्हें मैं तोह़फ़तन कुछ "म-दनी फूल"

गर्चे दस्तारे फ़ज़ीलत को है तुम ने पा लिया
बारगाहे ह़क़ में भाई ! क्या ख़बर है ह़ाल क्या

इ़ल्म जो पाया है तुम ने उ़म्र भर बाक़ी रखो !
तुम पढ़ाते भी रहो ता[1] भूल जाने से बचो

जो भुला दे इ़ल्म क्यूंकर वोह भला आ़लिम रहा
गो सनद है पास लेकिन नाम का आ़लिम रहा

आ'ला ह़ज़रत के न मस्लक को कभी भी छोड़ना
इन के आ'दा से न हरगिज़ कोई रिश्ता जोड़ना

---

1 : या'नी ताकि।

सल्बे ईमां पुरसिशे क़ब्रो क़ियामत से डरो
इल्म को काफ़ी न समझो नेकियां करते रहो

इल्मे दीं से हो फ़क़त् मक़्सूद मौला की रिज़ा
दूर रहना भाई नज़रानों के लालच से सदा

सुन्नी आ़लिम की सदा तज़्हील से बचते रहो
बे सबब तग़लीत़ और तन्क़ीद भी तुम मत करो

देखना मत तुम ह़क़ारत से किसी अनपढ़ को भी
क्या ख़बर पेशे ख़ुदा मक़्बूल बन्दा हो वोही

इल्म पर आने लगे तुझ को तकब्बुर भाई गर
दर्स ह़ासिल बद नसीब इब्ने सिक़ा जैसों से कर

क़ह्क़हे और यावह गोई में तेरा नुक़्सान है
बे ज़रूरत बोलने वाला बड़ा नादान है

भागते हैं सुन ले बद अख़्लाक़ इन्सां से सभी
मुस्कुरा कर सब से मिलना दिल से करना आ़जिज़ी

भाइयो ! हर दम बचो तुम हुब्बे जाहो माल से
हर घड़ी चोकस रहो शैत़ान की इस चाल से

मालदारों की ख़ुशामद में हलाकत है बड़ी
तू गुनाहों में पड़ेगा आएगी शामत तेरी

कान धर के सुन ! न बनना तू ह़रीसे मालो ज़र !
कर क़नाअ़त इख़्तियार ऐ भाई थोड़े रिज़्क़ पर

दिल में येह ख़्वाहिश न रखना सब करें मेरा अदब
डर कहीं नाराज़ हो जाए न तुझ से तेरा रब

क़ल्ब में ख़ौफ़े ख़ुदा रख कर तू सारे काम कर
काम्याबी होगी तेरी اِنْ شَاءَ اللّٰه हर डगर

दिल को इश्क़े मुस्त़फ़ा से भाई तू आबाद कर
तुझ पे होगी सरवरे कौनैन की मीठी नज़र

खूब ख़िदमत सुन्नतों की रात दिन करते रहो
तुम रिसाला **म-दनी इन्आ़मात** का भरते रहो

जाइये **नेकी की दा'वत** दीजिये जा जा के घर
कीजिये हर माह **म-दनी क़ाफ़िलों** में भी सफ़र

तू कमर बस्ता रहा कर ख़िदमते इस्लाम पर
राहे मौला में जो आफ़त आए उस पर सब्र कर

मालिकी हो ह़म्बली हो ह़-नफ़ी हो या शाफ़ेई
मत तअ़स्सुब रखना और करना न उन से दुश्मनी

सारे सुन्नी आ़लिमों से तू बना कर रख सदा
कर अदब हर एक का, होना न तू उन से जुदा

मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَاءَ اللّٰه दो[2] जहां में मेरा बेड़ा पार है

हम को अल्लाह और नबी से प्यार है

हम को अल्लाह और नबी से प्यार है ان شاءَ الله अपना बेड़ा पार है

उम्महातुल मुअमिनीनो चार यार सब सहाबा से हमें तो प्यार है

ग़ौसो ख़्वाजा दाता और अहमद रज़ा से भी और हर इक वली से प्यार है

”یَارَسُوْلَ اللّٰہِ اُنْظُرْ حَالَنَا“ तालिबे नज़रे करम बदकार है

”یَاحَبِیْبَ اللّٰہِ اِسْمَعْ قَالَنَا“ इल्तिजा या सय्यिदल अबरार है

”اِنَّنِیْ فِیْ بَحْرِ ھَمٍّ مُّغْرَقٌ“ नाउ डांवांडोल दर मंजधार है

”خُذْ یَدِیْ سَھِّلْ لَّنَا اَشْکَالَنَا“ नाखुदा आओ तो बेड़ा पार है

हो अदू ग़ारत वसीला उस का जो जाने आ़लम ! तेरा यारे ग़ार है

दुश्मनों की जो उड़ा दे गरदनें या उ़मर ! दरकार वोह तलवार है

वासिता उ़स्मां का आक़ा अल मदद दुश्मनों ने मुझ पे की यलग़ार है

दुश्मनाने दीन को कर दो तबाह अ़र्ज़ तुम से ह़ैदरे कर्रार है

दामने अह़मद रज़ा मुझ को मिला हां येह इन्आ़मे शहे अबरार है

हूं ज़ियाउद्दीन का अदना गदा मेरे मुर्शिद का सख़ी दरबार है

तुम को कुछ मा'लूम है यारो ! मुझे दा'वते इस्लामी से क्यूं प्यार है

है करम इस पर ख़ुदाए पाक का दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

इस पे है नज़रे करम सरकार की दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

बे अ़दद काफ़िर मुसल्मां हो गए दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

बे नमाज़ी भी नमाज़ी हो गए दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

चोर डाकू आए और ताइब हुए दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

ज़ानी व क़ातिल भी ताइब हो गए दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

और शराबी आए ताइब हो गए दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

सुन्नतों की हर त़रफ़ आई बहार दा'वते इस्लामी से यूं प्यार है

बख़्शवाना आप ही अ़त्तार को सब गुनहगारों का येह सरदार है

आख़िरी रोज़े हैं दिल ग़मनाक मुज़्तर जान है

आख़िरी रोज़े हैं दिल ग़मनाक मुज़्तर जान है
ह़स्रता वा ह़स्रता अब चल दिया र-मज़ान है

आ़शिक़ाने माहे र-मज़ां रो रहे हैं फूट कर
दिल बड़ा बेचैन है अफ़्सुर्दा रूह़ो जान है

दर्दो रिक़्क़त से पछाड़ें खा के रोता है कोई
तो कोई तस्वीरे ग़म बन कर खड़ा ह़ैरान है

अल फ़िराक़ आह अल फ़िराक़ ऐ रब के मेहमां अल फ़िराक़ !
अल वदाअ़ अब चल दिया तू ऐ महे र-मज़ान है

दास्ताने ग़म सुनाएं किस को जा कर आह ! हम
या रसूलल्लाह देखो चल दिया र-मज़ान है

ख़ूब रोता है तड़पता है ग़मे र-मज़ान में
जो मुसल्मां क़द्रदानो आ़शिक़े र-मज़ान है

रोते रोते हिचकियां बंध जाती हैं उ़श्शाक़ की
तुझ में कैसा सोज़ ऐ अल्लाह के मेहमान है

तेरी फ़ुरक़त में तेरे आ़शिक़ का दिल टुकड़े हुवा
और सीना चाक तेरे हिज्र में र-मज़ान है

वक़्ते इफ़्तारो सह़र की रौनक़ें होंगी कहां !
चन्द दिन के बा'द येह सारा समां सुनसान है

तेरी आमद से दिले पज़मुर्दा खिल उठ्ठे मगर
जल्द तड़पा कर हमें तू चल दिया र-मज़ान है

हाए सद अफ़्सोस ! र-मज़ां की न हम ने क़द्र की
बे सबब ही बख़्श दे या रब कि तू रह़मान है

माहे र-मज़ां तुझ में जो रोज़े नहीं रखता कोई
वोह बड़ा मह़रूम है बद बख़्त है नादान है

कर रहे हैं तुझ को रो रो कर मुसल्मां अल वदाअ़

आह ! अब तू चन्द घड़ियों का फ़क़त़ मेहमान है

रोक सकते ही नहीं हाए तुझे अब क्या करें !

सब को रोता छोड़ कर तू चल दिया र-मज़ान है

अस्सलाम ऐ माहे र-मज़ां तुझ पे हों लाखों सलाम

हिज्र में अब तेरा हर आ़शिक़ हुवा बे जान है

चन्द आंसू नज़्र हैं बस और कुछ पल्ले नहीं

नेकियों से आह ! येह ख़ाली मेरा दामान है

वासित़ा र-मज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे

नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

दस्त बस्ता इल्तिजा है हम से राज़ी हो के जा

बख़्शवाना ह़श्र में हां तू महे ग़ुफ़रान है

काश ! आते साल हो अ़त़्त़ार को र-मज़ां नसीब

या नबी ! मीठे मदीने में बड़ा अरमान है

मरह़बा सद मरह़बा ! फिर आमदे र-मज़ान है

मरह़बा सद मरह़बा ! फिर आमदे र-मज़ान है
खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है

या ख़ुदा हम आ़सियों पर येह बड़ा एह़सान है
ज़िन्दगी में फिर अ़त़ा हम को किया र-मज़ान है

तुझ पे सदक़े जाऊं र-मज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है
तुझ में नाज़िल ह़क़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर
फ़ज़्ले रब से मग़्फ़िरत का हो गया सामान है

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं ब-र-कतें
माहे र-मज़ां रह़मतों और ब-र-कतों की कान है

आ गया र-मज़ां इ़बादत पर कमर अब बांध लो
फ़ैज़ ले लो जल्द येह दिन तीस[30] का मेहमान है

आ़सियों की मग़्फ़िरत का ले कर आया है पयाम
झूम जाओ मुजरिमो ! र-मज़ां महे गुफ़रान[1] है
भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां
पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है
भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो
ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है
कम हुवा ज़ोरे गुनह और मस्जिदें आबाद हैं
माहे र-मज़ानुल मुबारक का येह सब फ़ैज़ान है
रोज़ादारो ! झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा
ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है
दो[2] जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को
जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है
या इलाही ! तू मदीने में कभी र-मज़ां दिखा
मुद्दतों से दिल में येह अ़त्तार के अरमान है

---

1 : मग़्फ़िरत, बख़्शिश, मग़्फ़िरत करना

बा'दे र-मज़ान ईद होती है

बा'दे र-मज़ान ईद होती है रब की रहमत मज़ीद होती है
जिस को आक़ा की दीद होती है उस पे कुरबान "ईद" होती है
ईद तुझ को मुबारक ऐ साइम[1] ! रोज़ादारों की ईद होती है
रोज़ाख़ोरो ! ख़ुदा की नाराज़ी सुन लो ! तुम पर शदीद होती है
तेरी शैतान ! माहे र-मज़ां में कैसी मिट्टी पलीद होती है !
रोज़ादारों के वासिते वल्लाह मग्फ़िरत की नवीद[2] होती है
ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर बोले : "नेकों की ईद होती है"
जो कोई रब को करते हैं नाराज़ उन से रहमत बईद[3] होती है
फ़िल्म बीनों[4] के ह़क़ में सुन लो येह ईद, यौमे वईद[5] होती है
बे नमाज़ों की रोज़ाख़ोरों की कौन कहता है ईद होती है !
जिस को आक़ा मदीने बुलवाएं उस मुसल्मां की ईद होती है
मुझ को "ईदी" में दो बक़ीअ़ आक़ा जाने कब मेरी ईद होती है !
जो बिछड़ जाए उन की गलियों से क्या भला उस की ईद होती है !

ईद अ़त्तार उस की है जिस को
ख़्वाब में उन की दीद होती है

---

1 : रोज़ादार 2 : ख़ुश ख़बरी 3 : दूर 4 : फ़िल्म देखने वाले 5 : सज़ा देने की धमकी, सज़ा देने का वा'दा

हो गया फ़ज़्ले ख़ुदा मूए मुबारक आ गए

हो गया फ़ज़्ले ख़ुदा मूए मुबारक आ गए
दिल ख़ुशी से झूम उठा मूए मुबारक आ गए

ऐ ख़ुशा सल्ले अ़ला मूए मुबारक आ गए
मरह़बा सद मरह़बा मूए मुबारक आ गए

मुस्त़फ़ा के मूए अक़्दस और मेरा ग़ुरबत कदा
मरह़बा सद मरह़बा मूए मुबारक आ गए

हम ग़रीबों के मुक़द्दर को जगाने के लिये
मरह़बा सद मरह़बा मूए मुबारक आ गए

मुझ ज़लीलो ख़्वार पर बदकारो बद किरदार पर
है करम सरकार का मूए मुबारक आ गए

नूर की बरसात होगी अ़न्क़रीब अब ज़ोरदार
अब्रे रह़मत छा गया मूए मुबारक आ गए

रन्जो ग़म काफ़ूर होंगे ग़मज़दो के इस की है
दीद में ग़म की दवा मूए मुबारक आ गए

जो करे ता'ज़ीम दिल से दों[2] जहां में काम्याब
हो गया हां हो गया मूए मुबारक आ गए

अपने रब से मांग लो दोनों[2] जहां की ने'मतें
रह़मतों का दर खुला मूए मुबारक आ गए

اِنْ شَآءَ الله आरज़ूएं आएंगी बर रू बरू
मांग लो आ कर दुआ़ मूए मुबारक आ गए

आओ दीवानो ! तुम आओ ले के चश्मे अश्कबार
उन से उन को मांगना मूए मुबारक आ गए

नज़्अ़ रूह़ो क़ब्र में और ह़श्र के मैदां में काम
बन गया अ़त्तार का मूए मुबारक आ गए

मस्नविये अ़त्त़ार (1)

हम्दे रब्बे मुस्त़फ़ा से इब्तिदा हो दुरूद उम्मी नबी पर दाइमा

इस जहां में हर त़रफ़ हैं मुश्किलें हर जगह हैं आफ़तें ही आफ़तें

कुछ घिरे ग़म में तो कुछ बीमार हैं तो कई क़र्ज़े के ज़ेरे बार हैं

हैं बहुत कम लोग दुन्या में सुखी अक्सर अफ़राद इस जहां में हैं दुखी

चल दिये दुन्या से सब शाहो गदा कोई भी दुन्या में कब बाक़ी रहा !

जीतने दुन्या सिकन्दर था चला जब गया दुन्या से ख़ाली हाथ था

लह-लहाते खेत होंगे सब फ़ना खुशनुमा बाग़ात को है कब बक़ा ?

तू खुशी के फूल लेगा कब तलक ? तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक ?

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आख़िरत में माल का है काम क्या ?

माले दुन्या दो[2] जहां में है वबाल
काम आएगा न पेशे जुल जलाल

रिज़्क़ में ब-र-कत की तो है जुस्त-जू
आह ! नेकी की करे कौन आरज़ू !

मत लगा तू दिल यहां पछताएगा
किस त़रह़ जन्नत में भाई जाएगा ?

लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे
बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर
दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर

अश्क मत दुन्या के ग़म में तू बहा
हां नबी के ग़म में ख़ूब आंसू बहा

हो अ़त़ा या रब ! हमें सोज़े बिलाल
माल के जन्जाल से हम को निकाल

या इलाही ! कर करम अ़त्त़ार पर
हुब्बे दुन्या इस के दिल से दूर कर

बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देना कैसा ?

जिस ने बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा दिया इस का गुनाह फ़तवा देने वाले पर है। (سُنَنِ ابوداوٗدج۳ ص٤٤٩ حدیث٣٦٥٧)

मस्नविये अ़त्त़ार (2)

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार
तू अचानक मौत का होगा शिकार

मौत आ कर ही रहेगी याद रख !
जान जा कर ही रहेगी याद रख !

गर जहां में सो[100] बरस तू जी भी ले
क़ब्र में तन्हा क़ियामत तक रहे

जब फ़िरिश्ता मौत का छा जाएगा
फिर बचा कोई न तुझ को पाएगा

मौत आई पहलवां भी चल दिये
ख़ूब सूरत नौ जवां भी चल दिये

दुन्या में रह जाएगा येह दबदबा
ज़ोर तेरा ख़ाक में मिल जाएगा

तेरी त़ाक़त तेरा फ़न ओ़हदा तेरा
कुछ न काम आएगा सरमाया तेरा

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार
मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार

याद रख मैं हूं अंधेरी कोठड़ी
तुझ को होगी मुझ में सुन वह़शत बड़ी

मेरे अन्दर तू अकेला आएगा
हां मगर आ'माल लेता आएगा

नर्म बिस्तर घर पे ही रह जाएंगे तुझ को फ़र्शे ख़ाक पर दफ़्नाएंगे

घुप अंधेरी क़ब्र में जब जाएगा बे अ़मल ! बे इन्तिहा घबराएगा

काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा

जब तेरे साथी तुझे छोड़ आएंगे क़ब्र में कीड़े तुझे खा जाएंगे

क़ब्र में तेरा कफ़न फट जाएगा याद रख नाज़ुक बदन फट जाएगा

तेरा इक इक बाल तक झड़ जाएगा ख़ूब सूरत जिस्म सब सड़ जाएगा

आह ! उबल कर आंख भी बह जाएगी खाल उधड़ कर क़ब्र में रह जाएगी

सांप बिच्छू क़ब्र में गर आ गए ! क्या करेगा बे अ़मल गर छा गए !

गोरे नेकां बाग़ होगी खुल्द का मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा

खिलखिला कर हंस रहा है बे ख़बर ! क़ब्र में रोएगा चीख़ें मार कर

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

वक़्ते आख़िर या ख़ुदा ! अ़त्तार को
ख़ैर से सरकार का दीदार हो

मस्नविये अ़त्त़ार (3)

हो गया तुझ से ख़ुदा नाराज़ अगर क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर

उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़ जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़

ऐ जुआरी तू जूए से बाज़ आ वरना फंस जाएगा जिस दिन तू मरा

ऐ मिलावट करने वाले मान जा ख़ौफ़ कर भाई अ़ज़ाबे नार का

छोड़ दो ऐ ताजिरो ! कम तोलना झूट छोड़ो बेचने में बोलना

भाइयों का दिल दुखाना छोड़ दो और तमस्ख़ुर[1] भी उड़ाना छोड़ दो

सूदो रिश्वत में नुहूसत है बड़ी नीज़ दोज़ख़ में सज़ा होगी कड़ी

दिल दुखाना छोड़ दें मां बाप का वरना है इस में ख़सारा[2] आप का

बद गुमानी, झूट, ग़ीबत चुग़्लियां छोड़ दे तू रब की ना फ़रमानियां

मत निकालो गन्दी गन्दी गालियां येह गुनह का काम है सुन लो मियां

---

1 : मज़ाक़ 2 नुक़्सान

तू नशे से बाज़ आ मत पी शराब दो[2] जहां हो जाएंगे वरना ख़राब

फ़िल्म बीं की आंख में महशर में आग आह ! भर जाएगी तू फ़िल्मों से भाग

बेंड बाजों से तू कोसों दूर भाग वरना दोज़ख़ की तुझे खाएगी आग

मत बजाओ भाइयो ! तुम तालियां इस त़रह़ की छोड़ दो नादानियां

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो

अपने देवर जेठ से पर्दा करो इन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो

वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

ऐ बहन अपने मियां को मत सता जब मरेगी पाएगी इस की सज़ा

भाई ह़क़ मत मारना घरबार का वरना होगा मुस्तह़िक़ तू नार का

या इलाही नेक कर अ़त्तार को

बख़्श दे तू बख़्श दे बदकार को

मस्नविये अ़त्तार (4)

सुन्नतों से भाई रिश्ता जोड़ तू नित नए फ़ेशन से मुंह को मोड़ तू
शादियों में मत गुनह नादान कर ख़ाना बरबादी का मत सामान कर
सादगी शादी में हो सादा जहेज़ जैसा बीबी फ़ातिमा का था जहेज़
नेकियां कर जल्द तू बदियों से भाग क़ब्र में वरना भड़क उठेगी आग
कीनए मुस्लिम से सीना पाक कर इत्तिबाए साहिबे लौलाक कर
छोड़ दे दाढ़ी मुंडाना है ह़राम एक मुठ्ठी से घटाना है ह़राम
सुन्नतों पर जो ह़क़ारत से हंसे वोह अ़ज़ाबे दाइमी[1] में जा फंसे
छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रवाज सुन्नतों पर चलने का कर अ़ह्द आज
ख़ूब कर ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा दिल मदीना याद से उन की बना
कर अ़त़ा या रब ग़मे शाहे उमम भूल जाएं रन्जो ग़म दुन्या के हम
सुन्नतों की लूटना जा के मताअ़[2] हो जहां भी सुन्नतों का इज्तिमाअ़
अज़ तुफ़ैले ग़ौसे आ'ज़म या ग़फ़ूर बख़्श दे हम आ़सियों के सब क़ुसूर
या ख़ुदा है इल्तिजा अ़त्तार की सुन्नतें अपनाएं सब सरकार की

या इलाही ! अज़ पए शाहे उमम
ह़श्र में अ़त्तार का रखना भरम

1 : हमेशा का अ़ज़ाब क्यूं कि सुन्नते रसूल की तौहीन सरीह़ कुफ़्र है। 2 : दौलत

हंसाने के लिये झूट बोलना
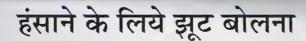
फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** हलाकत है उस शख़्स के लिये जो बात करता है तो **झूट** बोलता है ताकि इस के ज़रीए लोगों को **हंसाए**, उस के लिये हलाकत है, उस के लिये हलाकत है। (ابو داوٗد ج٤ ص٣٨٧ حديث ٤٩٩٠)

ग़ुस्सा पीने वाले के लिये हूर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो शख़्स **ग़ुस्सा** निकालने पर कुदरत के बा वुजूद उसे पी जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे लोगों के सामने बुला कर इख़्तियार देगा कि जिस हूर को चाहे ले ले।

(ابو داوٗد ص٣٢٥ حديث ٤٧٧٧ ، اِحياءُ العُلوم ج٣ ص ٢٤ ٥ مُلَخَّصاً)

जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बेशक जहन्नम में एक ऐसा दरवाज़ा है जिस से वोही शख़्स दाखि़ल होगा जिस का **ग़ुस्सा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी पर ही ठन्डा होता है। (شُعَبُ الْاِيمان ج٦ ص٣٢٠ حديث٨٣٣١، اِحياءُ العلوم ج٣ ص٢٤ ٥)

फ़ुज़ूल बोलने वाले की क़ियामत में पांच जगह परेशानी
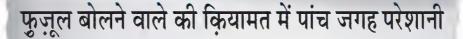
मन्क़ूल है कि हर हंसी मिज़ाह़ (या'नी मज़ाक़) या लग्व बात (या'नी फ़ुज़ूल बात) पर बन्दे को (मैदाने क़ियामत में) पांच मक़ामात पर झिड़क्ने और वज़ाह़त त़लब करने की ख़ात़िर रोका जाएगा :

﴾1﴿ तू ने बात क्यूं की थी ? क्या उस में तेरा कोई फ़ाएदा था ?

﴾2﴿ तू ने जो बात की थी क्या उस से तुझे कोई नफ़्अ़ ह़ासिल हुवा ?

﴾3﴿ अगर तू वोह बात न करता तो क्या तुझे कोई नुक़्सान उठाना पड़ता ?

﴾4﴿ तू ख़ामोश क्यूं न रहा ताकि अन्जाम से मह़फ़ूज़ रहता ?

﴾5﴿ तू ने इस की जगह سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ कह कर अज्रो सवाब क्यूं ह़ासिल न किया ? (क़ूतुल क़ुलूब, जिल्द अव्वल, स. 468, मक-त-बतुल मदीना)

जबड़े चीरने का अज़ाब
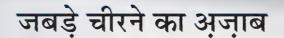
फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मैं ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स मेरे पास आया और मुझ से कहा : चलिये ! मैं उस के साथ चल दिया, मैं ने दो आदमियों को देखा, उन में से एक खड़ा था और दूसरा बैठा था, खड़े हुए शख़्स के हाथ में लोहे का ज़म्बूर[1] था जिसे वोह बैठे शख़्स के एक जबड़े में डाल कर उसे इतना खींचता कि गुद्दी तक पहुंचा देता फिर उसे निकालता और दूसरे जबड़े में डाल कर खींचता, इतने में पहले वाला (जबड़ा) अपनी पहली ह़ालत पर लौट आता, मैं ने लाने वाले शख़्स से पूछा : येह क्या है ? उस ने कहा : **येह झूटा शख़्स है इसे क़ियामत तक क़ब्र में येही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा ।**

(एह़याउल उ़लूम, जि. 3, स. 409, मुलख़्ख़सन, मक-त-बतुल मदीना, مساوی الاخلاق للخرائطی ص ۷۶ حدیث ۱۳۱)

مدینه

1 : या'नी लोहे की सलाख़ जिस का एक त़रफ़ का सिरा मुड़ा हुवा होता है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

फ़ुज़ूल बोलने की ख़्वाहिश ख़त्म करने का नुस्ख़ा

जो शख़्स अपनी ज़बान को ग़ीबत और फ़ुज़ूल कलाम से रोकना चाहता हो तो उस पर लाज़िम है कि वोह **ज़िक्रुल्लाह** और दीन की बातों के इलावा ख़ामोशी इख़्तियार किये रखे यहां तक कि उस से (फ़ुज़ूल) गुफ़्त-गू की ख़्वाहिश ख़त्म हो जाए और वोह सिर्फ़ हक़ बात ही करे।

(एहयाउल उलूम (मुतर्जम), जि. 3, स. 205, मक-त-बतुल मदीना)

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फूलाहे दौरन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्धोल कोम्पलेक्स, A.J. मुद्धोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना ®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net